''माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-संतुष्टि पर शैक्षिक-उपलब्धि एवं शिक्षण-अभिक्षमता के प्रभाव का अध्ययन''

"EFFECT OF EDUCATIONAL ACHIEVEMENT AND TEACHING APTITUDE IN RELATION TO JOB-SATISFACTION OF SECONDARY SCHOOL TEACHERS"

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी के शिक्षा संकाय
में पी-एच.डी. (शिक्षा शास्त्र)
उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

2008
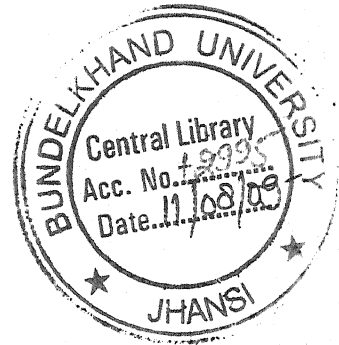
शोध निर्देशक :
डॉ. ओमकार चौरसिया
विभागाध्यक्ष
शिक्षक-शिक्षा विभाग
पं. जवाहर लाल नेहरू परास्नातक
महाविद्यालय, बाँदा

शोधार्थी :
संजय कुमार द्विवेदी
एम.ए. (राजनीति, इतिहास), एम.एड.

शोध केन्द्र

पं0 जवाहरलाल नेहरू परास्नातक महाविद्यालय, बाँदा (उ0प्र0)

डॉ. ओमकार चौरसिया
विभागाध्यक्ष
शिक्षक-शिक्षा विभाग
पं. जवाहरलाल नेहरू पी.जी. कॉलेज
बाँदा (उत्तर प्रदेश)

मोबाइल : 9415182169
सह-समन्वयक : इग्नू
कार्यक्रम प्रभारी : बी.एड. (इग्नू)
केन्द्र संख्या : 2767 पं. जे.एन. पी.जी. कॉलेज,
बाँदा (उत्तर प्रदेश)

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री संजय कुमार द्विवेदी ने ***"माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर शैक्षिक-उपलब्धि एवं शिक्षण-अभिक्षमता के प्रभाव का अध्ययन"*** विषय पर मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम, लगन व अध्यवसाय से 200 दिन से अधिक उपस्थित रहकर प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध पूर्ण किया है। इसकी विषय सामग्री मौलिक है और यह पूर्ण या आंशिक रूप से किसी अन्य परिक्षा के लिये प्रयोग नहीं की गई है।

यह शोध-प्रबन्ध बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी की पी-एच.डी. परीक्षा की नियमावली के सभी उपबन्धों की पूर्ति करता है। मैं संस्तुति करता हूँ कि यह इस योग्य है कि मूल्यांकन हेतु विश्वविद्यालय को प्रस्तुत किया जाये।

दिनांक : 27.9.2008

डॉ. ओमकार चौरसिया
विभागाध्यक्ष
शिक्षक-शिक्षा विभाग
पं. जवाहरलाल नेहरू परास्नातक
महाविद्यालय, बाँदा (उ.प्र.)

घोषणा-पत्र
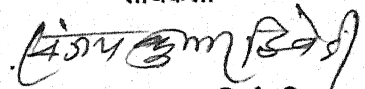
मैं संजय कुमार द्विवेदी घोषित करता हूँ कि ***"माध्यमिक विद्यालयोंके शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर शैक्षिक उपलब्धि एवं शिक्षण-अभिक्षमता के प्रभाव का अध्ययन"*** विषय पर प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध डॉ. ओमकार चौरसिया, विभागाध्यक्ष शिक्षक-शिक्षा विभाग, पं. जे.एन.पी.जी. कालेज, बाँदा के कुशल निर्देशन में मैने 200 दिन से अधिक उपस्थित रहकर बड़ी ही मेहनत एवं लगन से पूर्ण किया है।

यह शोध-प्रबन्ध मेरा मौलिक कार्य है। इसकी विषय सामग्री पूर्ण या आंशिक रूप से किसी अन्य परीक्षा के लिये प्रयोग नहीं की गई है।

शोधकर्ता

संजय कुमार द्विवेदी

दिनांक : 27.9.08

(संजय कुमार द्विवेदी)

एम.ए. (राज., इति.), एम.एड.

अभारोक्ति

परमपिता परमेश्वर की असीम अनुकम्पा, श्रद्धेय गुरुजनवृन्दों की कृपा दृष्टि एवं पूज्यनीय माता-पिता के शुभ आशीर्वाद के परिणाम स्वरूप मेरी रूचि एवं सम्मान, अद्यावधि शिक्षा के क्षेत्र में बनी हुई है, और इस लगन एवं परिश्रम का यह प्रतिफल है कि मैं पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त करने के लिए यह शोध प्रबन्ध सम प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरा यह शोध कार्य मात्र अपना ही प्रयास नहीं बल्कि कुछ सुहृद व्यक्तियों का एवं श्रद्धेय गुरुजनों की असीम अनुकम्पा का परिणाम है। मैं उन सभी के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रगट करता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष इस कार्य मे मुझे सहयोग एवं सानिध्य प्रदान किया है।

प्रस्तुत शोध कार्य के विषय चयन *"माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर शैक्षिक-उपलब्धि एवं शिक्षण-अभिक्षमता के प्रभाव का अध्ययन"* एवं लेखन में अपने निर्देशक डा. ओमकार चौरसिया विभागाध्यक्ष (शिक्षक-शिक्षा विभाग) पं. जवाहरलाल नेहरू परास्नातक महाविद्यालय, बाँदा का आजीवन ऋणी रहूँगा, जिन्होंने प्रारम्भ से अन्त तक इस कार्य को पूर्ण कराने में अपना अमूल्य समय देकर मेरा पथ-प्रदर्शन एवं उत्साहवर्धन किया है।
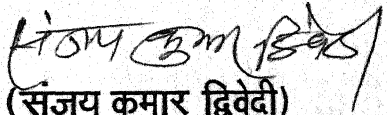
मैं श्री अरूण कुमार दुबे-हमीरपुर, प्रो. चन्द्रप्रकाश शर्मा पूर्व विधायक-बाँदा, डा. डी.एस.श्रीवास्तव विभागाध्यक्ष (शिक्षक-शिक्षा विभाग) अतर्रा पी.जी.कालेज-अतर्रा का हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने हमेशा मुझे कठिन परिश्रम करने हेतु प्रेरित किया है।

वर्तमान अध्ययन की पूर्णता के अवसर पर मैं अपनी पत्नी श्रीमती तारा द्विवेदी, पुत्र चि. राहुल द्विवेदी, पुत्री कु. अनामिका द्विवेदी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने समय-समय पर मुझे सहयोग प्रदान किया है।

मैं अपने मित्र डा. किशोर बाजपेई, डा. अनिल मिश्रा, श्री चमत्कार शर्मा, रवि चौरसिया, श्री शिव प्रकाश सिंह, श्री बी.के. सिंह, श्रीमती गायत्री सिंह, मीना यादव, ज्योत्सना पुरवार का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनका स्नेह व सहयोग मुझे हमेशा प्राप्त हुआ है।

मैं झांसी और चित्रकूट मण्डल के उन सभी प्रधानाचार्यों एवं अध्यापकों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने आंकड़े एकत्र करने में अमूल्य सहयोग प्रदान किया है। शुद्ध एवं स्वच्छ टंकण हेतु श्री विपिन सक्सेना, सहारा प्रिन्टर्स-बाँदा के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने ससमय टंकण कर शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करने में अपना सहयोग दिया है।

शोधकर्ता

संजय कुमार द्विवेदी

(संजय कुमार द्विवेदी)

एम.ए. (राज., इति.), एम.एड.

अध्याय-प्रथम

(समस्या की पृष्ठभूमि तथा शोध उद्देश्य)

द्वितीय अध्याय

(सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन)

तृतीय-अध्याय

(अनुसंधान विधि तंत्र)

चतुर्थ-अध्याय
(प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या)

पंचम-अध्याय
(निष्कर्ष एवं सुझाव)

सारणी-सूची

ग्राफ-सूची

अध्याय-प्रथम

(समस्या की पृष्ठभूमि तथा शोध उद्देश्य)

1.1 प्रस्तावना -

अज्ञोनतिमिराच्छन्न ज्ञान दीपेन चक्षुषा।
यः सर्वार्थ दर्शयति तत्परो नैव बान्धवः।।

'गुरु' अज्ञानान्धकार से आच्छन्न प्राणी को अपने ज्ञान दीपक नेत्र से सभी वस्तुओं का दर्शन कराता है, अतः उससे बढ़कर कोई अन्य बन्धु नहीं है।

ज्ञान ज्योति से पूरे विश्व को प्रकाशित करने वाले हमारे देश में प्राचीनकाल से ही गुरु को बड़ी श्रद्धा से सर्वोच्च स्थान दिया जाता रहा है। राजा भी गुरु के समक्ष सदैव याची बनकर प्रस्तुत हुआ है। आज भी पूरे विश्व में शिक्षा-व्यवस्था के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में शिक्षक को मान्यता प्राप्त है।

शिक्षा समाज का दर्पण है। बालकों के विकास में शिक्षा की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः प्रत्येक समाज का ये दायित्व है कि वह अपने बच्चों के लिये अच्छी से अच्छी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था करें। शिक्षा का संस्कृति से भी बड़ा ही गहरा जुड़ाव रहा है और वस्तुतः शिक्षा हमारी संस्कृति के संरक्षण, परिपोषण, उन्नयन और अगली पीढ़ी के हस्तांतरण की एक प्रक्रिया मानी जाती रही है।

वास्तव में शिक्षा की भारतीय अवधारणा पाश्चात्य विचारों से कुछ अलग, मौलिक तथा गहन है, मूलरूप से शिक्षा बालक अथवा विद्यार्थी के अन्दर छिपी दिव्यता को प्रकट एवं पुष्ट करने का उद्देश्य लिये हुये है। भारत के विश्वविख्यात शिक्षक, दार्शनिक सन्त स्वामी रामतीर्थ का भी यही कहना है कि वास्तविक शिक्षा तो उस समय प्रारम्भ होती है जब मनुष्य सभी प्रकार की बाह्य्य सहायताओं से मुंह मोड़कर अपने अन्दर के स्रोत की ओर अग्रसर होता है।

शिक्षा का कार्य ऐसे मनुष्य तैयार करना है जो सम्पूर्ण समन्वित व प्रज्ञाशील हो तथा जो जीवन का समग्रता से सामना कर सकें। शिक्षा का कार्य व्यक्ति को न तो समाज के अनुरूप बनने के लिये प्रोत्साहन करना है, और न ही समाज के साथ नकारात्मक सामंजस्य बनाने के लिये वरन् शिक्षा का कार्य वास्तविक जीवन मूल्यों की खोज में व्यक्ति की सहायता करना है।

शिक्षा के सम्बन्ध में महान शिक्षाविद् के.जी. सैयदीन[1] ने कहा है -

"शिक्षा वह साधन है जो मनुष्य जाति ने अपनी सांस्कृतिक परम्परा की रक्षा करने और अतीत के वरदानों की सहायता से भविष्य को समृद्धशाली बनाने के लिये तैयार किया है।"

देश के महान क्रान्तिकारी दार्शनिक एवं शिक्षाविद् जे.कृष्णामूर्ति [2] ने विश्व शान्ति के लिये तथा विश्व समाज के कल्याण के लिये शिक्षा की भूमिका के सन्दर्भ में लिखा है कि शिक्षा ऐसी हो जो-

"सृजनशील व संवेदनशील व्यक्तियों का निर्माण करे।

---

1. के.जी. सैयदीन 'शिक्षा की पुनर्रचना', दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1960, पृष्ठ-246-247
2. जे.कृष्ण मूर्ति, 'शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य', वाराणसी, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इंडिया राजघाट फोर्ट, 2005

प्रज्ञापूर्ण मस्तिष्क व प्रेमपूर्ण हृदययुक्त विद्यार्थियों का निर्माण करे।

समस्त पूर्वाग्रहों व संस्कारबद्धता से मुक्त होकर नवीन मूल्यों के निर्माण में विद्यार्थियों को सक्षम बनाए।

विद्यार्थियों को अंश के स्थान पर समग्र जीवन का बोध कराए।

भयमुक्त विद्यालीय परिवेश के माध्यम से आत्मबोध कराए।

ज्ञानात्मक विकास व तकनीकी प्रशिक्षण के साथ-साथ विद्यार्थी को जीवन के प्रति एक समन्वित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करे तथा उसमें वैश्विक समझ विकसित कर सके।"

शिक्षा के जो कार्य हैं, जो भूमिका है या शिक्षा के द्वारा बच्चों को जो भी संस्कार दिए जाने हैं या जो विद्या या मूल्य प्रदान किये जाने हैं, शिक्षक का उन सभी में पारंगत होना बहुत ही आवश्यक है। शिक्षा के दायित्वों को भली-भांति सहन करने वाला व्यक्ति ही सच्चा शिक्षा हो सकता है।

महान दार्शनिक एवं विचारक अरविन्द घोष[1] ने भी शिक्षक के बारे में कहा है कि -

"अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के चतुरमाली होते हैं, जो संस्कारों की जड़ों में अपने ज्ञान की खाद देते हैं और अपने श्रम से सींच-सींच कर उन्हें महाप्राण शक्तियाँ बना देते हैं।"

शिक्षक पूरी शिक्षा-प्रक्रिया की धुरी है। शिक्षक पूरे समाज के उत्थान में अपनी शक्ति लगाता है क्योंकि उसका जीवन राष्ट्र निर्माण में समर्पण के लिए ही है। महान शिक्षाविद् एवं भारत के राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन[2] ने 5 सितम्बर 1964 को शिक्षक-दिवस के मौके पर शिक्षकों को एक संदेश देते हुये कहा कि-

"अध्यापक केवल अपने आपके लिये ही उत्तरदायी नहीं होता, बल्कि वह पूरे समाज के लिये उत्तरदायी होता है। वह उन उच्चतम मान्यताओ का परिरक्षक होता है। जो कि उसके अपने ही लोगों द्वारा स्थापित की जाती हैं और संजोकर रखी जाती हैं अध्यापकों का यह मिशन और जिम्मेदारी है कि वे आजाद लोगों के निर्माण के सबसे अधिक सार्थक कार्य के लिये वचनबद्ध हैं।"

प्राचीनकाल में बालक जब गुरु ग्रह में पढ़ने के लिये जाता था तो वह अपनी शिक्षा-अवधि में

---

1. उद्धृत, नरेश कुमार, 'प्राइमरी शिक्षक' (त्रैमासिक पत्रिका), नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, अक्टूबर, 2003 पृष्ठ 48
2. रूही फातिमा, 'भारतीय आधुनिक शिक्षा' (त्रैमासिक पत्रिका), नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, अक्टूबर 2005, पृष्ट-44

सम्पूर्ण जीवन को सफलतापूर्वक जीने के लिये आवश्यक समस्त ज्ञानार्जन कर लेता था। अपने गृहस्थ, वानप्रस्थ व सन्यासी जीवन के लिये जिस ज्ञान की आवश्यकता उसे भविष्य में पड़ती है, उसका सम्पूर्ण ज्ञान गुरु दे देते थे। ताकि उसे अपने जीवन की समस्त परिस्थितियों का सामना करने का साहस बना रहे तथा वह सफल जीवन जीकर अपना, समाज का तथा राष्ट्र का उद्धार करे। इस कार्य हेतु गुरु भी तन्मयता से उसे सच्चा मार्गदर्शन देते थे। आज भी यही माना जाता है कि शिक्षक को अपने छात्रों को केवल पुस्तकीय ज्ञान देकर ही अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं समझ लेना चाहिये बल्कि उन्हें जीवन जीने की कला में पारंगत करना चाहिये। इस सन्दर्भ में अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन[1] का एक प्रधानाध्यापक को प्रेषित पत्र प्रसंग कि 'बच्चे को कैसे सिखाया जाये' अध्यापकों के उत्तरदायित्वों को इंगित कर रहा है -

"विद्यालय में बच्चे को पढ़ाइये कि फेल हो जाना बेइमानी करने के बजाय अधिक सम्मानजनक है...... उसे अपने विचारोंमें विश्वास रखना सिखाइये, भले ही लोग उन्हें गलत बतायें ..... उसे भले के साथ भला एवं कठोर के साथ कठोर रहना सिखाइये। मेरे बच्चे को शक्ति देने का प्रयत्न करें कि वह भेड़ चाल न चले। उसे सभी की बात सुनना सिखाइये लेकिन सुनी हुयी बातों को सच्चाई की कसौटी में रखकर इससे प्राप्त अच्छाई को ही अपनाएं। यदि आप सिखा सकें तो उसे उदासी में भी हंसना सिखाइये और बताइयें कि आंखो में आँसू का छलकाना शर्म की बात नहीं है। ..... वह मानवीय गुणों में आस्थाविहीन लोगों की उपेक्षा करे और चाटुकारों से सावधान रहे। ..... उसे बताइये कि अपने बाहुबल एवं बुद्धि का मूल्य लगाए लेकिन अपने हृदय व आत्मा का कदापि नहीं। निरर्थक शोर बचाने वालों की भीड़ पर कान न दें ....। जिसे वह सही समझता है उस पर दृढ़ रहकर संघर्ष करे। उसके साथ नरम व्यवहार करे किन्तु अधिक लाड़-प्यार नहीं क्योंकि अग्नि परीक्षा ही श्रेष्ठ इस्पात बनाती है। उसमें धैर्यवान बनने का साहस और शक्मिान बनने का धीरज आने दीजिए, अपने आप में उत्कृष्ट एवं अटूट विश्वास रखना उसे सिखाइये तब वह सदैव मानवता मात्र में श्रेष्ठ विश्वास रखेगा।"

1.2 शिक्षक का महत्व -

शिक्षक ही विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति है। यह सत्य है कि विद्यालय भवन, पाठ्यक्रम, पाठ्य-सहगामी क्रियायें, निर्देशन-कार्यक्रम, पाठ्य पुस्तकें आदि सभी वस्तुयें शैक्षिक कार्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं परन्तु जब तक उनमें अच्छे शिक्षकों द्वारा जीवन शक्ति प्रदान नहीं की जायेगी तब तक वे निर्जीव रहेंगी इसलिये तो जब शिक्षा को दो ध्रुवीय प्रक्रिया कहा गया तब उसका एक ध्रुव विद्यार्थी और दूसरा शिक्षक कहा गया।

---

1. उद्धृत, राजेन्द्र सिंह पथनी, 'आधुनिक भारतीय शिक्षा' (तैमासिक पत्रिका), नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं शिक्षण परिषद, अप्रैल 2005, पृष्ट-74-75

प्रयोजनवादियों के अनुसार शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है जिनके अनुसार इस प्रक्रिया के तीन अंग है - शिक्षक, शिक्षार्थी एवं समाज अथवा पाठ्यक्रम। इस दृष्टि से शिक्षक को न केवल अपने विषय तथा बालक का ज्ञान होना चाहिये वरन उसे सामाजिक वातावरण तथा सामाजिक आवश्यकताओं का भी ज्ञान होना चाहिए।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षक एक महत्वपूर्ण पहलू है। अर्थात् वह शिक्षा की धुरी के रूप में कार्यरत है। शिक्षक के महत्व को आदि शंकराचार्य जी द्वारा गुरु के लिए की गयी निम्न वंदना से समझा जा सकता है -

गुरुः ब्रम्हा गुरुर्विष्णु गुरुः देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रम्हा तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

संत कबीरदास जी[1] ने शिक्षक की महत्ता को प्रगट करते हुए कहा -

गुरु पारस को अन्तरो, जानत हैं सब सन्त।
वह लोहा कंचन करे, ये करि लेय महन्त।।

गुरु में और पारस पत्थर में अन्तर है, यह सब सन्त जानते हैं (लोक कथन-अनुसार) पारस तो लोहा को सोना ही बनाता है, परन्तु गुरु शिष्य को अपने समान महान बना लेते है।

संत कबीर[2] ने यह भी कहा है कि -

गरु मुरति गति चन्द्रमा, सेवक नैन चकोर।
आठ पहर निरखत रहे, गुरु मूरति की ओर।।

गुरु की मूर्ति चन्द्रमा के समान् है, और सेवक ने नेत्र चकोर के तुल्य है। अतः आठो पहर गुरु-मूर्ति की ओर ही देखते रहो।

"शिक्षा की पुनर्रचना का जिस व्यक्ति को आधार बनाया जा सकता है, वह व्यक्ति है - अध्यापक। भारतीय ग्रन्थों में आचार्य के विषय में गहन विचारों को व्यक्त किया गया है। मनु स्मृति में लिखा है -

"आचार्य (अध्यापक) छात्र को सम्पूर्ण सत्य एवं ज्ञान का साक्षात्कार कराता है और उसका मार्ग प्रशस्त करता है।"

एक आदर्श अध्यापक मनुष्यों का निर्माता, राष्ट्र निर्माता, शिक्षा-पद्धति की आधार शिला, समाज को गति प्रदान करने वाला आदि माना गया है, एक शिक्षक में बालकों के समझने की शक्ति, उनके साथ उचित रूप से कार्य करने की क्षमता, शिक्षण योग्यता, कार्य करने की इच्छा शक्ति और

---

1 एवं 2.अभिलाषदास, 'कबीर अमृतवाणी', इलाहाबाद; कबीरदास पारख संस्थान, 2001, पृष्ठ 10-11

सहकारिता आदि गुणों की अपेक्षा की जाती है। वस्तुतः यह कार्य, वह व्यक्ति कर सकता हे, जिसमें कुछ विशिष्ट शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक गुण विद्यमान हों।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के डॉ. एफ.एल. क्लेप द्वारा सन् 1913 मं एक अध्ययन किया गया, जिसके आधार पर उन्होंने अध्यापक की निम्नलिखित योग्यताओं का उल्लेख किया है -

1. नमनीयता 2.संयम 3 मानसिक निष्पक्षता 4. सहानुभूति 5. विद्वता
6. रुचि की व्यापकता 7. आशावादिता 8. उत्साह 9. शुभचिन्तन
10. जीवन शक्ति 11. बाह्य सज्जा 12. व्यापक दृष्टिकोण

सन् 1962 में अमेरिका[1] में ही 'सुपीरियर टीचर' विषय पर सम्मेलन हुआ था, जिसमें सफल और प्रभावी शिक्षण के लिये शिक्षक में निम्नलिखित योग्यताओं की आवश्यकता पर बल दिया गया -

प्रभावी शिक्षण के लिये शिक्षकों को चाहिए कि -

1. अपने विषय को जानें।
2. विषय से सम्बन्धित विषयों को जाने।
3. नये ज्ञान से समायोजित हों।
4. निर्दिष्ट उद्देश्यों तक पहुंचने के प्रक्रम को समझें।
5. वैयक्तिक भिन्नता को पहचानें।
6. अच्छे संचारक हों।
7. खोजपूर्ण मन विकसित करें।
8. छात्रों के लिए उपलब्ध हों।
9. शिक्षण-कार्य में प्रतिबद्ध हों।
10. उत्साहपूर्ण हों।
11. हास्य-विनोदपूर्ण हों।
12. विनम्र हों।
13. अपनी वैयक्तिकता को बनाए रखने वाले हों।
14. सुदृढ़ धारणा और विश्वास वाले हों।
15. निष्कपट और ईमानदार हों।
16. दूसरे की देखभाल करने वालें हो।

---

1. उद्धृत, डॉ. अमरनाथ दत्त गिरि, "भारतीय आधुनिक शिक्षा" नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, जनवरी 1996, पृष्ठ 5-6

17. दयावान हों।
18. साहसी हों।
19. आत्मसुरक्षा की भावना से युक्त हों।
20. सृजनशील हों।
21. बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न हों।
22. प्रयत्न करने के लिए इच्छुक हों।
23. अनुकूलनशील हों।
24. ईश्वर में विश्वास करने वाले हों।

बासिंग ने बालकों की राय को अपने अध्ययन का विषय बनाया और उसके निष्कर्षों के आधार पर अध्यापक के व्यक्तित्व में विनोद प्रियता तथा छात्रों के प्रति मैत्रीपूर्ण दृष्टिकोण को स्थान दिया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' में कहा है -

"मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव।"

अध्यापक की सम्पूर्ण क्रियायें देश एवं समाज की उन्नति के लिए होती है। वह छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए अपना सम्पूर्ण प्रयास करता है फिर भी उसे अपने जीवन में अत्याधिक विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। जो अध्यापक अपने को उत्सर्ग करने को तत्पर रहते हैं, वह किन परिस्थितियों में अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं, इसको देखने के लिए किसी के पास समय नहीं होता। सारा समाज सम्पूर्ण आदर्शों का चोला धारण कराकर अध्यापक से एक कठपुतली की तरह सम्पूर्ण शैक्षिक क्रियाओं का सम्पादन करने की अपेक्षा करते हैं। समाज एवं राष्ट्र उतना महत्वपूर्ण स्थान अध्यापक को आज तक नहीं प्रदान कर सके, जिसका वह सच्चा अधिकारी है। आर्थिक, मानसिक परिस्थितियों से जूझता हुआ वह फिर भी अपने कर्तव्य का पालन करता आ रहा है और शायद करता रहेगा। अध्यापकों के भीतर आर्थिक नैराश्य की भावना का जिक्र करते हुए आयोग ने लिखा है -

"हमें इस तथ्य से बहुत ही दुःख हुआ है कि शिक्षकों की सामाजिक स्थिति वेतन, सामान्य दशायें बहुत ही असन्तोषजनक हैं। वस्तुतः हमारी सामान्य धारणा है कि उनकी स्थिति अतीत की अपेक्षा बहुत ही खराब है। यदि उनकी स्थिति की तुलना की जाये तो वह उन लोगों की स्थिति में पर्याप्त रूप से निम्न हैं जो उनके समान ही योग्यता रखते हैं तथा जिनको कम महत्वपूर्ण दायित्व सौंपें गये हैं।

1.3 माध्यमिक शिक्षा तथा उसका महत्व -

माध्यमिक शिक्षा का तात्पर्य कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा से है। प्राचीन भारत में गुरुकुल प्रणाली के अन्तर्गत यह उपनयन संस्कार के बाद दी जाने वाली शिक्षा में ही सम्मिलित थी। इसी तरह

बौद्ध-काल में मठों एवं विश्वविद्यालय की शिक्षा का वर्णन है। यहाँ पर भी माध्यमिक शिक्षा का अलग से कोई उल्लेख नहीं किया गया हैं मुस्लिम शासकों ने भी मकतबों को प्राथमिक शिक्षा का केन्द्र तथा मदरसों को उच्च शिक्षा का केन्द्र सम्बोधित किया है, यहाँ भी माध्यमिक शिक्षा की व्यवस्था का अलग से उल्लेख नहीं किया गया है।

भारत वर्ष में माध्यमिक शिक्षा के विकास का इतिहास उस समय से प्रारम्भ होता है जब से मिशनरीज हमारे देश में आये। कहा भी जाता है कि हमारे देश में माध्यमिक शिक्षा का सूत्रपात यूरोपियन मिशनरियों ने किया। अंग्रेजी सरकार ने अपने देश की शिक्षा प्रणाली के आधार पर इस देश की शिक्षा-पद्धति को विकसित करने में रुचि दिखाई। ईस्ट इण्डिया कम्पनी सन् 1599 में स्थापित की गयी, किन्तु सन् 1765 से इसने इस देश के शासन की बागडोर संभालना प्रारम्भ कर दी और इस वर्ष से ही इसने इस देश की शिक्षा में रुचि लेनी शुरू कर दी। सन् 1813 में ब्रिटिश पार्लियामेन्ट ने इस कम्पनी को आदेश दिया कि वह भारतीयों की शिक्षा का भी उत्तरदायित्व ले और शिक्षा के लिए एक लाख प्रतिवर्ष की धनराशि का प्रावधान किया। यह धनराशि सन् 1833 में एक लाख से बढ़ाकर 10 लाख कर दी गयी। हमारे देश में माध्यमिक शिक्षा की संस्थायें - राजाराममोहन राय, डेविड हेयर, राधाकान्तो देव तथा कुछ अन्य भारतीयों ने एक ऐसे विद्यालय को स्थापित कर पहल की जिसमें पाश्चात्य शिक्षा उन शिक्षकों द्वारा प्रदान की जाने लगी जो कि यूरोपियन संस्कृति में प्रशिक्षित थे।

सन् 1854 का वुड का घोषणा पत्र इस देश की शिक्षा नीति के विकास में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है। इस घोषणा पत्र ने विश्वविद्यालयों की स्थापना की नींव रखी और विद्यालयी शिक्षा को दिशा एवं लक्ष्य प्रदान किये तथा शिक्षा के विभिन्न स्तर निर्धारित किये। माध्यमिक शिक्षा को व्यवस्थित करना प्रारम्भ हुआ।

हम माध्यमिक शिक्षा पर उचित बल तथा इसे शिक्षा के स्तर के रूप में उभारने का श्रेय सन् 1882 के हण्टर कमीशन को दे सकते हैं। यह कमीशन वुड के प्रतिवेदन के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों एवं शैक्षिक कार्यक्रमों का पुनर्वलोकन करने तथा ऐसी सिफारिशें देने के लिए नियुक्त किया गया था जो कि वुड के घोषणा पत्र में निर्धारित की हुई नीतियों, जिन्हें यह कमीशन वांछित समझता हों, उन्हें कार्यात्मक बनाया जा सके।

हण्टर कमीशन के अनुसार माध्यमिक शिक्षा ऐसी शिक्षा थी जो 12 से 18 वर्ष के आयु के बालकों को दी जाती थी, किन्तु इस कमीशन ने माध्यमिक शिक्षा को केवल एक ऐसा स्तर माना जो उच्च शिक्षा के लिए तैयारी के लिए था। यह कोई प्रगतिशील विचारधारा नहीं थी। हण्टर कमीशन की सिफारिशों ने माध्यमिक शिक्षा के स्तर को पहली बार एक अलग पहचान वाला स्तर मानने की पहल

की। पहले न तो घोषणा पत्र और न किसी अन्य समिति ने इसका अलग से वर्णन किया। हालांकि यह कहा जा सकता है कि मैकॉले के विवरण-पत्र में सन् 1835 में माध्यमिक शिक्षा के लिए कुछ निर्देश अवश्य दिये थे और 1854 के वुड के घोषणा पत्र के कारण माध्यमिक शिक्षा में कुछ प्रगति भी हुई थी, किन्तु सन् 1882 के बाद ही माध्यमिक शिक्षा की प्रगति में तेजी आ पायी।

मैकाले के कार्यवृत्त जो कि भारतीय शिक्षा के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण पद-चिन्ह कहे जा सकते हैं उन्होंने सिफारिश की कि अंग्रेजी शिक्षा देने से भारतीयों का एक ऐसा वर्ग उभर आयेगा जो रंग और रक्त में भारतीय होगा, किन्तु अपनी मनोवृत्ति, चिन्तन, व्यवहार एवं बुद्धि में अंग्रेज की भांति होगा। इसी उद्देश्य को सामने रखकर पादरियों ने माध्यमिक विद्यालय स्थापित किये। इन विद्यालयों में अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दी जाती थी, क्योंकि सरकारी सेवाओं के लिए अंग्रेजी का ज्ञान अनिवार्य था। अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने वाले विद्यालयच उच्च मध्य वर्ग के भारतीयों में लोकप्रिय हो गये। सन् 1854 में ऐसे 169 विद्यालय थे, जिनमें से कुछ पादरियों द्वारा और कुछ भारतीयें द्वारा स्थापित किये गये थे। इन्हें सरकार द्वारा अनुदान मिलता था।

वुड के घोषणा पत्र ने निजी संस्थाओं को अनुदान देने के लिए और अधिक धनराशि के आंवटन की सिफारिश की। ताकि वह और अच्छी शिक्षा प्रदान कर सकें। इसने भारतीय भाषाओं को अंग्रेजी के साथ ही प्राथमिक और मिड़िल स्तर तक शिक्षा का माध्यम बनाने की भी सिफारिश की। इसके परिणाम स्वरूप बर्नाकुलर मिड़िल स्कूल खोले गये। क्योंकि हाईस्कूल में अंग्रेजी ही शिक्षा का माध्यम बनी रही। इस स्तर पर केवल ऐग्लों बुर्नाकुलर स्कूल ही स्थापित रहे। समस्त ब्रिटिश काल में माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में निजी संस्थायें अंग्रेजी ही रहीं। ऐसे माध्यमिक विद्यालयों की संख्या जो पूर्ण रूप से सरकारी थे, बहुत कम थी। इस प्रकार कहा जा सकता है, कि स्वतंत्रता से पूर्व 1882 में माध्यमिक शिक्षा के विषय में हण्टर आयोग ने अध्ययन किया और माध्यमिक शिक्षा में सुधार हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिये थे। इसके बाद 1919 में सैडलर कमीशन का गठन, माध्यमिक शिक्षा के प्रारूप में परिवर्तन के लिए किया गया। इस आयोग की संस्तुतियों के सम्पादन में माध्यमिक शिक्षा परिषदों की स्थापना हुई। जाकिर हुसैन समिति द्वारा 1937 में माध्यमिक स्तर तक बुनियादी शिक्षा की योजना प्रस्तुत की गई। आचार्य नरेन्द्र देव शिक्षा समिति (1939) ने माध्यमिक शिक्षा में प्रथम उत्तर प्रदेश बुनियादी शिक्षा योजना को लागू किया और इलाहाबाद में अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना हुई। भारतीय शिक्षा के लिए हिन्दुस्तानी भाषाओं को अनुदेशन का माध्यम रखा। सन् 1944में सार्जेन्ट शिक्षा प्रतिवेदन में शिक्षा की व्यापक योजना प्रस्तुत की गई।

आजादी के पश्चात माध्यमिक शिक्षा का गुणात्मक तथा संख्यात्मक विकास तेजी से हुआ है।

अब हम उस महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन कर रहे हैं जो माध्यमिक शिक्षा के विकास से सम्बन्धित है। सन् 1947 में जब भारत स्वतंत्र हुआ, उस समय केवल 315 (कुल माध्यमिक विद्यालयों का केवल 8.6 प्रतिशत) सरकारी माध्यमिक विद्यालय थे। 14 से 17 वर्ष की आयु के बालकों की संख्या माध्यमिक विद्यालयों में केवल 15,71,541 थी और माध्यमिक शिक्षा पर व्यय केवल 8.9 करोड़ था।

1948 में ताराचन्द्र कमेटी नियुक्त की गयी, जिसने अपनी सिफारिशों में बहुउद्देशीय माध्यमिक शिक्षा पर बल दिया। कमेटी ने यह भी सिफारिश की कि एक कमीशन नियुक्त किया जाये जो माध्यमिक शिक्षा में सुधारों की ओर ध्यान दें। इस सिफारिश के परिणाम स्वरूप 1952-53 में एक माध्यमिक शिक्षा आयोग, डॉ.लक्ष्मण स्वामी मुदालियर की अध्यक्षता में नियुक्त किया गया। इसीलिये इसको मुदालियर कमीशन भी कहा जाता है।

"सन् 1950 में भारतीय संविधान लागू किया गया। इसके नीति निर्देशक सिद्धान्त में यह वर्णन किया गया है कि "राज्य इस संविधान के ... प्रदान करने की चेष्टा करेगा। यहाँ राज्य से तात्पर्य केन्द्रीय और राज्यों की सरकारों से था। इसके परिणाम स्वरूप तेज गति से प्रगति प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में हुई और कुछ सीमा तक माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में भी, किन्तु अनिवार्य शिक्षा का लक्ष्य अब तक प्राप्त नहीं किया जा सका है।" [1]

माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952-53 ने माध्यमिक शिक्षा के एक नवीन ढांचे की सिफारिश की। इस आयोग की सिफारिशों को सरकार ने स्वीकार कर लिया और माध्यमिक शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन लाने की ओर कदम उठाने में पहल करनी प्रारम्भ कर दी। इस आयोग की संस्तुति भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक महान क्रान्तिकारी घटना मानी जाती है। आयोग ने माध्यमिक शिक्षा की महत्ता इसके उद्देश्य स्पष्ट करते हुए बतलायी है - *"स्वतंत्र भारत में माध्यमिक शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण तथा नेतृत्व का प्रशिक्षण होना चाहिए। जिससे विद्यार्थी प्रगतिशील, प्रजातांत्रिक, सामाजिक प्रणाली में सृजनात्मक रूप से भाग लेने में समर्थ हो सकें।"* [2]

कोठारी आयोग (1964-66) ने माध्यमिक शिक्षा को दो भागों में विभाजित किया - निम्न माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च माध्यमिक शिक्षा। सन 1968 में भारत सरकार ने शिक्षा की राष्ट्रीय नीति की घोषणा की। इसमें कहा गया कि समस्त देश के लिए एक समान शिक्षा की रूपरेखा लाभप्रद होगी। इसने शिक्षा की 10+2+3 संरचना की सिफारिश की। सन् 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने इस ओर ध्यान

---

1. डॉ. के.जी. रस्तोगी एवं एम.एल. मित्तल, 'भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्यायें', मेरठ; रस्तोगी पब्लिकेशन, पाँचवा संशोधित संस्करण, पृष्ठ 233
2. आर.ए. शर्मा, 'भारतीय शिक्षा प्रणाली विकास', मेरठ; आर.एल. बुक डिपो, 2006 पृष्ठ 544

दिलाया कि माध्यमिक शिक्षा का और विस्तार किया जाये और जिन क्षेत्रों में यह उपलब्ध नहीं है, वहाँ तक इसे पहुंचाया जाये। उसने यह भी सुझाव दिया कि विशिष्ट योगदान एवं अभिरूचि वाले बालकों को तेज गति से शिक्षा प्राप्त करने के अवसर मिलना चाहिए और ऐसे छात्रों के लिए गति-निर्धारक विद्यालयों को स्थापित करने पर बल दिया गया। शिक्षा की संरचना के सम्बन्ध में इस नीति में कहा गया कि सम्पूर्ण देश में शिक्षा की 10+2+3 संरचना को स्वीकार किया जाना चाहिए। इस संरचना में प्रथम पांच वर्ष प्राथमिक शिक्षा के लिए, तीन वर्ष उच्च प्राथमिक शिक्षा के लिए और दो वर्ष माध्यमिक शिक्षा के लिए मिलाकर, कुल 10 वर्ष विद्यालयी शिक्षा के लिए निर्धारित हों। इसके बाद के 2 वर्ष उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के लिए और अगले तीन वर्ष डिग्री स्तर की शिक्षा के लिए हों।

सन् 1990 में गठित राममूर्ति समीक्षा समिति ने माध्यमिक स्तर तक सार्वजनिक स्कूल प्रणाली को 10 वर्ष के अन्दर लागू करने तथा माध्यमिक स्तर तक शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषा कर अंग्रेजी के वर्चस्व को समाप्त करने का सुझाव दिया। सन् 1992 में जनार्दन रेड्डी पुनर्व समीक्षा समिति ने सुझाव दिया कि माध्यमिक शिक्षा पाठ्यक्रम में ऐसे वैकल्पिक विषयों को सम्मिलित किया जाना चाहिए। जिससे छात्र श्रमकार्य स्वीकार कर कुछ आय प्राप्त कर सकें तथा सभी माध्यमिक विद्यालय में कम्प्यूटर उपयोग प्रशिक्षण हेतु प्रबन्ध किया जाना चाहिए।

सन् 1993 में एस.पाल शिक्षा समिति ने कक्षा 10 एवं 12 के बोर्ड परीक्षा परिणामों की समीक्षा की बात की तथा यह सुझाव दिया कि इन परीक्षाओं को प्रत्यय केन्द्रित बनाया जाये जो कि अभी पुस्तक केन्द्रित है।

उपर्युक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी होने के कारण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसकी महत्ता को दर्शाने के लिए निम्न तीन प्रमुख कारणों का उल्लेख किया जा सकता है -

प्रथम-माध्यमिक शिक्षा सामान्य शिक्षा की परिसमाप्ति है। बालक के विकास की किशोरावस्था से सम्बन्धित होने के कारण तथा युवा शक्ति के नेतृत्व प्रशिक्षण का केन्द्र होने के कारण माध्यमिक शिक्षा राष्ट की सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी तथा सांस्कृतिक क्षमता को सर्वाधिक प्रभावित करती है।

द्वितीय-माध्यमिक शिक्षा रोजगार तथा जीवनयापन के क्षेत्र में प्रवेश का द्वार खोलती है। किसी भी राष्ट्र की मानव शक्ति का एक बहुत बड़ा भाग माध्यमिक शिक्षा स्तर से ही प्राप्त होता है।

तृतीय-माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा स्तरों की गुणवत्ता को निर्धारत करती है। प्राथमिक स्कूलों के अधिकांश अध्यापक माध्यमिक शिक्षा प्राप्त होते हैं तथा उनकी शिक्षा की गुणवत्ता काफी सीमा तक प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। इसी प्रकार से महाविद्यालयों

विश्वविद्यालयों तथा अन्य उच्च शिक्षा केन्द्रों के लिए छात्रों की पूर्ति का कार्य भी माध्यमिक शिक्षा करती है। उच्च शिक्षा के लिए माधयिमक शिक्षा आधार शिक्षा का कार्य करती है। स्पष्ट है कि इन तीनों दृष्टियों से माध्यमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है। माध्यमिक शिक्षा के इस महत्व के कारण ही इसे शिक्षा रूपी जीवन की रीढ़ की हड्डी भी कहा जाता है। जिस प्रकार से रीढ़ की हड्डी मनुष्य के सम्पूर्ण शरीर को सम्भाले रहती है, ठीक उसी प्रकार से माध्यमिक शिक्षा भी सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को संभालती है। यदि माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता श्रेष्ठ होती है तो प्राथमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा तथा तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा भी गुणात्मक दृष्टि से श्रेष्ठ होती है।

1.4 व्यावसायिक संतुष्टि तथा उसे प्रभावित करने वाले कारक -

आदिकाल से विद्वानों का मत यही रहा है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है, मानसिक क्रियायें सुचारू रूप से कार्य करती हैं, शरीर और मानसिक क्रियाओं में तालमेल बना रहता है। कठिन एवं विषम परिस्थितियों में स्वस्थ शरीर मानसिक क्रियाओं में समायोजन बनाये रखने में समर्थ होता है। कभी-कभी यह भी पाया जाता है कि दोनों (शरीर तथा मानसिक क्रियाएं) में तालमेल ठीक से बना हुआ है, पर्याप्त सन्तुलन है, फिर भी व्यक्ति अपने को ऐसी स्थिति में पाता है कि वह उतना प्राप्त नहीं कर पा रहा है जितना उसे मिलना चाहिए था कभी-कभी वह यह भी सोचता है कि उसके जीवन में कहीं कोई कमी है, कभी-कभी उसे यह अनुभूति होती है कि अब वह और अधिक पाने के लिए संघर्ष करने में असमर्थ है और अन्त में उसकी यह धारणा बन जाती है कि अब इतना सब करने की कोई आवश्यकता नहीं है। जो है वह पर्याप्त है, अर्थात जीवन के छोटे से रास्ते को तय करने के लिए अब मै वह नहीं करूँगा जो सभी कर रहे हैं। इस प्रकार व्यक्ति के सोचने और चिन्तन करने की प्रकृति बदल जाती है और वह यथार्थ से दूर होता चला जाता है तथा धीरे-धीरे मानसिक तनाव के जाल में स्वयं फंसता चला जाता है। उसे वह सब कुछ मिल जाने पर भी जो उसे उसकी क्षमताओं और योग्यताओं के अनुकूल मिलना चाहिए था, दुःखी रहने लगता है। उसे ऐसा लगता है, जैसे अब कहीं चैन नहीं मिलेगा। मन की यह स्थिति असन्तोष है।

आज की दौड़ में युवा-युवती शिक्षित समाज और विशेषकर मध्यम वर्ग, असन्तोष के नजले से पीड़ित हैं। साधन और पर्याप्त क्षमता न होते हुए भी वह दौड़ में आगे निकलने के लिए अपने मूल लक्ष्य को भूल जाता है। छोटे-छोटे समूह से लेकर बड़े-बड़े समाज में अग्रिम स्थान ग्रहण करने के लिए वह उतावला हो जाता है तथा चारों हाथ पैर फेंकता है कभी-कभी उसके स्वयं का ठीक मूल्यांकन हो जाता

है और कभी उसे पीछे धकेल देने के लिए उसके साथी उसे एक ऐसे मार्ग की ओर उन्मुख कर देते हैं कि भटकने की स्थिति में आ जाता है। अब उसके असन्तोष की श्रृंखला और मजबूत हो जाती है यह स्थिति उसके पूर्ण असन्तोष की है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इसे 'आवेग की अवस्था' की संज्ञा दी जायेगी। इस अवस्था में वह जो कर रहा है वह उसकी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति कराने में सहायक तो हो सकता है, किन्तु चेतन और अचेतन में वह असन्तुष्ट ही रहता है।

तो अब प्रश्न यह उठता है कि आखिर सन्तोष क्या है? मनोवैज्ञानिक भाषा में सन्तोष एक ऐसी साधारण अनुभूति की अवस्था है जो व्यक्ति को अनुकूल उद्देश्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। यह अनेक मनोवृत्तियों का परिणाम है, जिन्हें व्यक्ति अपने सम्पूर्ण जीवन के प्रति बनाये रखता है। इस प्रकार सन्तुष्टि वही है, जहाँ उद्देश्य है। बिना लक्ष्य के भाग-दौड करने वाला व्यक्ति सदैव असन्तुष्ट रहता है उसकी प्यास नहीं बुझती है। वह कार्य बदलता है, स्थान बदलता है, साथी बदलता है लक्ष्य को प्राप्त करने के माध्यम बदलता है, साधन बदलता है। और एक स्थिति वह आ जाती है कि वह इस बदलने के प्रक्रम में स्वयं बदल जाता है। अब उसे अपने कार्य से सन्तोष नहीं मिलता। वह कार्य व्यवसाय, जिसे वह जीविकोपार्जन हेतु कर रहा है उसे ऐसा लगता है कि जिस कार्य को वह कर रहा है उसमें एकरसता है वह केवल पेट भरने के लिए है तथा उसमें जीवन तत्व की समाविष्टि नहीं है।

आज के प्रगतिशील समाज ने व्यक्ति को बहुत कुछ दिया है। लेकिन इसके साथ-साथ उसने अनेक समस्याओं को जन्म दिया है और उलझने बढ़ाई हैं। जिस व्यक्ति से मिले वह अपनी वर्तमान स्थिति और विशेषकर व्यवसाय से असन्तुष्ट दिखाई देता है। चाहे उसे उसकी क्षमताओं से अधिक मिल रहा हो, चाहे उसे कितनी ही सुविधाएँ प्रदान की जा रही हों, कार्य या स्थान अनेक हो सकते हैं, यदि पूंछा जाये कि तुम इतना परिश्रम कर रहे हो, क्यों? तो वह उत्तर देता है - "पेट भरने के लिए" जिसका परिश्रम केवल इतने मात्र के लिए होगा, जिसमें उद्देश्य का एक भी तत्व सम्मिलित न हो, वह निश्चय ही सन्तोष की एक-एक बूंद के लिए भटकेगा।

(अ) व्यावसायिक सन्तुष्टि की प्रकृति एवं परिभाषा -

व्यावसायिक सन्तुष्टि का अर्थ विभिन्न अभिवृत्तियों के परिणाम से हैं, जिनका सम्बन्ध कर्मचारी के व्यवसाय से होता है। इसके साथ-साथ अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए जो अभिवृत्ति वह रखता है, वह व्यावसायिक सन्तुष्टि का परिणाम ही होती है। हालांकि इस सन्दर्भ में और अनेक कारक भी हो सकते हैं, किन्तु प्रमुखतः कर्मचारी की वह अभिवृत्ति ही है जो उसने अपने व्यवसाय के प्रति बनाई है।

ब्लम तथा नेलर[1] के अनुसार -

"व्यावसायिक सन्तुष्टि कर्मचारी की उन अभिवृत्तियों का परिणाम है, जिन्हें वह अपने कार्य या व्यवसाय से सम्बन्धित अनेक कारकों एवं सामान्य जीवन के प्रति बनायें रखता है।"

जो कर्मचारी अपने कार्य से सन्तुष्ट हैं वे स्वस्थ मानसिक सन्तुलन रखते हैं। स्वस्थ मानसिक सन्तुलन कर्मचारी को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, उसके मनोबल को बनाये रखता है तथा उसकी उत्पादन क्षमता में किसी प्रकार का ह्रास नहीं आने देता है। अनेक अध्ययनों ने यह सिद्ध कर दिया है कि जो कर्मचारी अपने कार्य से असन्तुष्ट होते हैं, उनकी उत्पादन क्षमता गिरती चली जाती है। इसलिए कर्मचारी को कार्य असन्तोष से बचाए रखने के लिए आवश्यक है कि औसत-स्तर के कर्मचारी को इस प्रकार कार्य (व्यवसाय) मिले कि वह केवल जीविकोपार्जन का साधन मात्र ही न हो, बल्कि उसे अपने कार्य से उद्देश्य प्राप्त करने की प्रेरणा मिले तथा जीवन को सुखमय बनाने के सभी तत्व उसमें सम्मिलित हों।

व्यावसायिक सन्तुष्टि की परिभाषा को सीमाबद्ध करना इतना सुलभ नहीं है, जितना कि लगता है, क्योंकि इस शब्द से मिलते-जुलते और भी शब्द हैं, जैसे - कार्य-सन्तोष को अभिवृत्ति एवं मनोबल के अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता है। अध्ययन की दृष्टि से यही कह सकते हैं कि व्यावसायिक सन्तुष्टि कर्मचारी की एक प्रवृत्ति है, जो अनेक कारकों के साथ उसकी कार्य-क्षमता को प्रभावित करती है।

चाहे दर्शनशास्त्र की दृष्टि से देखिए या विज्ञान की दृष्टि से, तथ्य एक से ही प्राप्त होते हैं। किसी भी संस्कृति या सभ्यता का मूल्यांकन केवल उसके भौतिक पक्ष के अवलोकन मात्र से ही नहीं किया जा सकता और न ही यह सम्भव है कि केवल आध्यात्मिक पक्ष को आधार मान लिया जाये। कर्मचारी के सर्वांगीण विकास के लिए अधिक वेतन, अच्छा रहन-सहन आवश्यक कारण हो सकते हैं लेकिन उसका बौद्धिक विकास और संवेगात्मक अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं। बौद्धिक विकास समझने की क्षमता प्रदान करता है और संवेगात्मक अभिव्यक्ति जीवन से सम्बन्धित समस्याओं के साथ तालमेल करने में सहायक होती है। ये स्थितियाँ कर्मचारी को कार्य में रुचि रखने के लिए प्रेरित करती हैं और वह अपने व्यावसायिक क्षेत्र के सभी तत्वों से सन्तुष्ट रहता है।

अब भी बहुत से व्यक्ति पुरानी परम्पराओं में विश्वास रखते हैं। उनके विचार में कार्य के घंटे आर्थिक एवं सामाजिक सुविधाएँ, औद्योगिक वातावरण और अच्छी मशीनें कर्मचारी के व्यावसायिक सन्तुष्टि हेतु पर्याप्त हैं। इन्ही कारणों से कार्य इतने विशिष्टगत हो गए हैं कि कर्मचारी को कार्य करते

---

1. उद्धृत, डॉ. आर.के. ओझा, औद्योगिक मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, 1986, पृष्ठ 100

समय कोई प्रलोभन नहीं मिलता है। वह तो केवल उसे जीविका हेतु करता है। अधिकांश उद्योगपति तथा सरकारी संस्थाओं के संचालक कार्य-सन्तोष को कोई विशेष महत्व नहीं देते हैं, जिनके कारण कर्मचारी सम्बन्धी मूल समस्या का निराकरण नहीं हो पाता है।

(ब) व्यावसायिक सन्तुष्टि को प्रभावित करने वाले कारक -

व्यावसायिक सन्तुष्टि सम्बन्धी समस्त कारकों को तीन प्रधान वर्गों में बांटा जा सकता है -

1. व्यक्तिगत कारक।
2. कार्य - सम्बन्धी कारक।
3. प्रबन्धकों से सम्बन्धित कारक।

इन तीनों को भी उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता है। सभी महत्वपूर्ण कारकों का वर्णन नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है -

(1) वैयक्तिक कारण (Individual Factors) -

वैयक्तिक कारकों का सम्बन्ध कर्मचारी से होता है। उसके शीलगुण तथा भौतिक पक्ष कार्य-सन्तोष को निश्चय ही प्रभावित करता है। इनमें प्रमुख अग्रलिखित हैं -

(i) लिंग (Sex) -

अनेक अनुसंधानात्मक निष्कर्षों ने यह सिद्ध कर दिया है कि प्रायः स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा अपने कार्य से अधिक सन्तुष्ट रहती हैं। मार्स (Morse) नामक विद्वान ने 1953 में इसी प्रकार का अध्ययन किया। उसने उच्च व्यवसाय में लगे हुए 635 कर्मचारियों पर एक अध्ययन किया और यह पाया कि 65 प्रतिशत पुरुष अपने व्यवसाय या कार्य से असन्तुष्ट थे, जबकि स्त्रियाँ केवल 35 प्रतिशत ही असन्तुष्ट पाई गईं। हालांकि स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा कम सुविधाएँ दी गई थीं। वेतन, कार्य के घंटो, प्रतियोगिता तथा प्रलोभन आदि में उनके साथ भेदभाव रखा जाता था। फिर भी वे अपने-अपने कार्य से अपेक्षाकृत अधिक सन्तुष्ट थी। शैक्षिक अनुसंधानों में भी अधिकांशतः यही परिणाम प्राप्त हुए हैं। परिणाम बताते हैं कि अध्यापिकाएँ, अध्यापकों की तुलना में अपने कार्य से अधिक सन्तुष्ट रहती हैं। इसका मूल कारण यह है कि स्त्रियों की आकांक्षाएँ तथा आवश्यकताएँ अत्याधिक सीमित होती हैं तथा उत्तरदायित्व की अनुभूति भी उनमें कम होती है।

(ii) आयु (Age) -

यह भी निश्चित है कि सम्पूर्ण चिन्तन की धारा व्यक्ति के आयु-स्तर से नियंत्रित होती है। आयु का कार्य-सन्तोष की मात्रा पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। कुछ अध्ययन इसके विपरीत यह निष्कर्ष प्रकट करते हैं कि व्यावसायिक सन्तुष्टि और आयु का कोई सम्बन्ध नहीं होता। कुछ व्यवसाय ऐसे हैं

कि जहां आयु, व्यावसायिक सन्तुष्टि को प्रभावित करती है और कुछ ऐसे है जहां आयु का कोई महत्व नहीं है। कुछ विद्वानों का कहना है कि 25 से 34 या 45 से 54 वर्ष की आयु से लोग प्रायः अपने कार्य से असन्तुष्ट रहते हैं, जबकि कुछ का विचार है कि आयु-वृद्धि के साथ-साथ व्यावसायिक सन्तुष्टि की मात्रा बढ़ती जाती हैं कुल मिलाकर यह कह सकते हैं कि आयु और व्यावसायिक सन्तुष्टि में कोई विशेष सीधा सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता है।

(iii) बुद्धि (Intelligence) -

प्रत्येक कार्य में बुद्धि की आवश्यकता पड़ती है। बुद्धि की कमी में किसी भी प्रकार का सफल प्रशिक्षण भी नहीं दिया जा सकता है। अनेक अनुसंधान यह बताते हैं कि बुद्धि-लब्धि और कार्य कुशलता में एक विशेष सम्बन्ध है। अनुसंधानों के आधार पर बुद्धि-लब्धि और कार्य कुशलता का सह सम्बन्ध प्रायः बहुत अधिक पाया गया है। औद्योगिक क्षेत्रों में कार्य करने वालों में यह पाया गया कि कार्य-सन्तोष और बुद्धि में भी एक घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। हालांकि परिणाम कोई विशेष उपयोगी सिद्ध नहीं हुए हैं कुछ शोधों में यह भी पाया गया है कि उच्च बुद्धि-लब्धि वाले लिपिकों ने निम्न कार्य मनोवृत्तियों की ओर अपनी रूचि प्रकट की। इसी प्रकार अन्य शोधकर्ताओं ने भी यही परिणाम निकाले कि कार्य के प्रति मनोवृत्ति और बुद्धि में कोई विशेष सम्बन्ध नहीं होता है।

(iv) आकांक्षा स्तर (Level of Aspiration) -

कर्मचारी के असमायोजन और असन्तोष का मूल कारण उसका ऊँचा आकांक्षा स्तर है। वह अपने साधन, वातावरण और क्षमताओं की सीमा को बिना देखे ही उन्नति-शिक्षर पर चढ़ने के लिए सोचने लगता है, कल्पना में खो जाता है और परिस्थितियों को नजरअन्दाज कर देता है। जिन लोगों की जितनी अधिक आकांक्षाएँ होंगी उनके अन्दर सन्तोष की मात्रा उतनी ही कम होगी। प्रायः यह पाया गया है कि जिन कर्मचारियों में आकांक्षा स्तर सीमित था उनमें कार्य के प्रति रूचि थी तथा वे अपने कार्य से सन्तुष्ट थे।

(v) शिक्षा (Education) -

व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा शिक्षा के सम्बन्ध पर भी कार्य किये गये हैं। जिनके परिणाम कुछ पक्ष में कुछ विपक्ष में मिले हैं। सामान्यतया यह पाया गया है कि जो कर्मचारी अधिक शिक्षित होते हैं उनमें कार्य-सन्तोष की मात्रा अधिक पायी जाती है। किन्तु सैद्धान्तिक रूप से यह भी पाया गया है कि अधिक पढ़े-लिखे कर्मचारी कम पढ़े-लिखे कर्मचारियों की अपेक्षा अपने कार्य से अधिक असन्तुष्ट रहते हैं।

(vi) व्यक्तित्व (Personality) -

व्यक्तित्व एक दर्पण है। व्यक्ति की समग्रता का आभास उसके व्यक्तित्व से होता है। मानसिक प्रक्रियाओं का मूल्यांकन व्यक्तित्व के अध्ययन बिना अधूरा रहता है। जो व्यक्ति व्यवहार में असामान्य होते हैं और जिनका व्यक्तित्व मनस्तापीय (Neurotic) प्रकार का होता है, वे अपने से तथा अपने कार्य से असन्तुष्ट ही रहते हैं। इसी प्रकार जिन कर्मचारियों में व्यक्तित्व सम्बन्धी अनेक दोष उत्पन्न हो जाते हैं, वे प्रायः अपने वातावरण, अपने कार्य और अन्त में अपने से असन्तुष्ट होते चले जाते हैं। इस सन्दर्भ में यह निष्कर्ष निकले हैं कि कार्य-असन्तोष के लिए व्यक्तित्व के कुछ शीलगुण उत्तरदायी होते हैं।

(vii) समायोजन (Adjustment) -

आज की वैज्ञानिक, आर्थिक तथा सौन्दर्यात्मक दौड़ में किसी को पछाड़ कर आगे निकल जाना आसान नहीं है।यदि परिस्थितियों का मूल्यांकन किये बिना आपने भी उसी दिशा में भागने का प्रयास किया, जिस दिशा में बहुत से लोग भाग रहे हैं तो यह निश्चित नहीं है कि आप आगे निकल ही जायेंगे। इसलिए पहले अपनी क्षमताओं की सीमाओं का और परिस्थितियों का अवलोकन अति आवश्यक है। एक प्रकार का अवलोकन समायोजन का प्रथम चरण है। मानसिक असन्तुलन से और अन्य विकृतियों से अपने को बचाये रखने के लिए व्यक्ति में समायोजन क्षमता अधिक-से-अधिक होनी चाहिए। जो कर्मचारी अपने कार्य, सहयोगियों, मालिकों तथा प्रबन्धकों के साथ समायोजन स्थापित रखने में जितने अधिक समर्थ होते हैं, वे उतने ही अधिक सन्तुष्ट रहते हैं। समायोजन सन्तुष्टि की धुरी है और व्यक्तित्व उसके पहिये।

(viii) पारिवारिक उत्तरदायित्व (Family Responsibility) -

जिन कर्मचारियों पर जितना अधिक पारिवारिक भार होगा वह उतना ही अधिक परेशान रहेगा। आमदनी सीमित होगी, वह अकेला कमाने वाला होगा और आश्रितों की संख्या अधिक होगी तो फिर वह एक प्रकार के दबाव से दबता चला जायेगा। आश्रितों का बोझ मानसिक सन्तुलन को बिगाड़ देता है। कर्मचारी इसी चिन्ता में डूबता हुआ कार्य से जी चुराने लगता है। धीरे-धीरे उसे असन्तोष होने लगता है।

(2) कार्य सम्बन्धी कारक (Factors Related to Job) -

कार्य सम्बन्धी कारकों के अन्तर्गत कार्य प्रकृति, कारखाने की रचना, भौगोलिक दशाएँ, व्यावसायिक प्रतिष्ठा एवं सुरक्षा, ये पांच महत्वपूर्ण पक्ष आते हैं। इनका विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है -

(i) कार्य की प्रकृति (Nature of Work) -

एक सा कार्य लगातार करते रहने से अरोचकता, थकान आदि उत्पन्न होती है और कार्य के प्रति रूचि कम होने के साथ-साथ असन्तोष की मात्रा बढ़ती जाती है। यदि कार्यों में विविधता लाई जाये या कार्य को बदल-बदल कर कराया जाय तो कर्मचारी को कार्य-सन्तोष अधिक होगा। अनुसंधानों से भी यही निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं, कि वे कर्मचारी जो एक-सा कार्य करते हैं उनमें से 60 प्रतिशत अपने कार्य से असन्तुष्ट रहते हैं। इसी प्रकार यदि कर्मचारियों के कार्य के प्रकार में परिवर्तन करते रहें तो कार्य-सन्तोष की मात्रा शत-प्रतिशत पाई जाती है। एक तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट किया गया कि शिक्षकों में लगभग 95 प्रतिशत ऐसे थे जो अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट थे, किन्तु इसके ठीक विपरीत एक कपड़े के कारखाने में लगे कर्मचारियों में से 98 प्रतिशत ने अपने कार्य के लिए असन्तोष प्रकट किया। इस प्रकार यह आवश्यक है कि यदि कर्मचारियों में कार्य-सन्तोष की मात्रा बढ़ानी है तो कार्य की प्रकृति को बदलते रहना चाहिए।

(ii) कारखाने की रचना (Structure of the Factory) -

बड़े कारखाने तथा छोटे कारखाने का तुलनात्मक अध्ययन करने के बाद ये तथ्य सामने आये हैं कि बड़े कारखाने के कर्मचारियों की अपेक्षा छोटे कारखाने में सुविधायें तथा अवसर अधिक होते हैं। कर्मचारियों को प्रबन्धकों के समक्ष अपने विचार प्रकट करने का पूरा अवसर मिलता है। वे अपने सुझाव दे सकते हैं कारखाने के छोटे आकार के कारण कर्मचारियों का आपस में निकट सम्बन्ध होता हैं वे एक दूसरे की मनोवृत्ति को प्रभावित कर सकते हैं। सामाजिकता का पूर्ण अवसर मिलता है, जिसके कारण प्रबन्धक कर्मचारी को, कर्मचारी प्रबन्धक को तथा कर्मचारी अपने कार्य को भली-भाँति एवं समीप से समझ लेता है। बड़े कल-कारखानों में ये सभी असम्भव है। आकार बड़ा होने के कारण समीपता कम होती चली जाती है। कर्मचारी एक-दूसरे को अपनी मनोवृत्ति से प्रभावित नहीं कर पाते हैं। कुल मिलाकर यह कह सकते हैं कि जहाँ कारखाने का आकार छोटा होगा, वहाँ का कर्मचारी अधिक सन्तुष्ट होगा और जहाँ बड़ा होगा वहां कार्य के प्रति अरूचि पैदा होगी तथा असन्तोष की भावना तो बढ़ेगी ही, साथ ही साथ कर्मचारी अपने कार्य के प्रति उत्तरदायित्व से विमुख होता जायेगा।

(iii) भौगोलिक दशाएँ (Geographical conditions) -

यह बात तो हम अपने निजी अनुभव से ही जानते हैं कि बड़े शहरों में रहने वाले लोग असन्तुष्ट तथा कुण्ठाओं के शिकार अधिक होते हैं, अपेक्षाकृत छोटे शहरों के। इसी प्रकार समुद्री तटों के पास रहने वाले पहाड़ों पर रहने वालों की अपेक्षा अधिक सन्तुष्ट होते हैं यही बात कर्मचारियों पर लागू होती है। बड़े-बड़े औद्योगिक शहरों में कार्य करने वाले कर्मचारी अपने-अपने कार्य से कम सन्तुष्ट रहते हैं,

जबकि छोटे शहरों के उद्योग धन्धों में लगे हुए कर्मचारी अपेक्षाकृत अधिक सन्तुष्ट होते हैं। इस विषय में अनेक तथ्य सामने आये हैं। अधिक जनसंख्या के कारण मानसिक सन्तुलन के लिए जो सुविधाएँ मिलनी चाहिए वे नहीं मिल पाती हैं। होड़, झूंठी शान, भाग-दौड़, भौतिक वातावरण सभी मानव के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं, जिसके कारण वे अपने लक्ष्य को निर्धारित नहीं कर पाते हैं और जो लक्ष्य बना भी लेते हैं वे उस तक पहुँच नहीं पाते है और बड़ी बात यह है कि बड़े शहरों में प्रेरणा की अपेक्षा ईर्ष्या मिलती है, जबकि छोटे शहरों में एक विशेष प्रकार का मनोवैज्ञानिक वातावरण मिलता रहता है, जो संतोष का मूल स्रोत है।

(iv) व्यावसायिक प्रतिष्ठा (Job Prestige) -

कर्मचारी उन कार्यों के प्रति अत्याधिक सन्तोष व्यक्त करते हैं, जिनका प्रतिष्ठा मूल्य अधिक होता है। विशेषकर जिस कार्य की सामाजिक प्रतिष्ठा जितनी अधिक होगी, कर्मचारी उसे उतना ही अधिक पसन्द करते हैं। अनेक कार्य ऐसे हैं जिनमें वेतन बहुत मिलता है, भविष्य की गारन्टी है, सुरक्षा है, कार्य के घण्टे भी कम हैं तथा जो भी आवश्यक सुविधाएँ मिलनी चाहिए, मिलती हैं, फिर भी उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा उतनी नहीं जितनी अन्य व्यवसायों की है। दूसरी ओर कुछ ऐसे व्यवसाय है जिनमें वेतन कम मिलता है, मेहनत भी अधिक करनी पड़ती है, अन्य सुविधाएँ भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं होती है, फिर भी लोग उन्हें अपनाना चाहते हैं। इसका कारण सामाजिक प्रतिष्ठा ही है। नौकरी करने वाले की अपेक्षा छोटे से छोटा कारोबार करने वाले को समाज में विशेष मान-सम्मान नहीं मिलता है। इस प्रकार समाज जिन कार्यों को श्रेष्ठ मानता है, उसी को प्रत्येक व्यक्ति अपनाना चाहता है। जो भी हो, यह निश्चित है कि जो व्यवसाय सामाजिक प्रतिष्ठा से वंचित है, उनमें कर्मचारी को संतोष प्राप्त नहीं होता है।

(3) प्रबन्धकों से सम्बन्धित कारक (Factors Related to the Management) -

इसके अन्तर्गत अनेक महत्वपूर्ण पक्ष आते हैं, जैसे-वेतन, पदोन्नति, सहकर्मी, उत्तरदायित्व तथा सुरक्षा आदि।

(i) वेतन (Salary) -

आज के आर्थिक युग में जीवन में धन की महत्ता अत्याधिक बढ़ गई है। इसलिये कर्मचारियों का वेतन एक महत्वपूर्ण पक्ष बन गया है। जहां तक अध्ययनों के निष्कर्ष का प्रश्न है, वे एक ओर वेतन को महत्वपूर्ण मानते हैं और दूसरी ओर वे अन्य कारकों को अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण मानते हैं। कभी वेतन कार्य सन्तोष के लिए प्रधान कारक होता है, तो कभी गौणं कुछ उद्योगपतियों और प्रबन्धकों का

विचार है कि धन औषधि है और पाया भी ऐसा ही गया है। उस कम्पनी के कर्मचारी कार्य असन्तोष के अधिक शिकार पाये गये हैं, जहाँ वेतन कम था, चाहे उन्हें अन्य सुविधाएँ प्राप्त थीं, जैसे-चिकित्सा, पेन्शन, रहने के लिए मकान, बच्चों के लिए शिक्षा की सुविधा, भविष्य के लिए अन्य गारन्टी, किन्तु उस कम्पनी के कर्मचारी अपने-अपने कार्य से सन्तुष्ट थे जहाँ वेतन अधिक था, किन्तु अन्य सुविधाएँ नाम मात्र की उपलब्ध थीं। अध्ययन द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि अधिक वेतन पाने वाले व्यवसायों का सामाजिक प्रतिष्ठा मूल्य अधिक होता हैं, जिसके कारण कर्मचारी को अधिकाधिक कार्य सन्तोष की अनुभूति होती है।

(ii) पदोन्नति (Promotion) -

जहां पदोन्नति के पर्याप्त अवसर उपलब्ध होंगे वहाँ कर्मचारी कार्य सन्तोष की अनुभूति अवश्य करेगा, चाहे अन्य दशाएँ कुछ विपरीत हों। दूसरी बात यह भी है कि पदोन्नति से व्यक्ति को भविष्य और प्रत्यक्ष रूप में वेतन प्रभावित होता है और ये दोनो (वेतन तथा भविष्य) कर्मचारी के सन्तोष की रीढ़ हैं। जिस कारखाने में सभी साधन उपलब्ध हों किन्तु पदोन्नति का अवसर न मिले वहां के कर्मचारी का मनोबल कम होता जाता है तथा दिन पर दिन वह अपने कार्य के प्रति असन्तुष्ट होता जाता है। शोध अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकला है कि कम आयु के कर्मचारी पदोन्नति के लिए अधिक चिन्तित होते हैं अपेक्षाकृत अधिक आयु के कर्मचारी के। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह भी है कि बौद्धिक व्यवसायों में कार्य करने वाले लोग पदोन्नति के लिए अधिक लालायित होते हैं, अपेक्षाकृत शारीरिक कार्य करने वालों के। पदोन्नति की भावना से, चाहे अपने लिए और चाहे दूसरों के लिए, प्रत्येक कर्मचारी प्रभावित होता है। जो कर्मचारी पदोन्नति के लिए योग्य नहीं हैं, वह यह भी देखता हैं कि उसके सहयोगी जो पदोन्नति के लिए योग्य हैं, उन्हें पदोन्नति दी गई है या नहीं? यदि वह समझता है कि उसके सहकर्मी को जो सर्वोत्तम है, पदोन्नति नहीं दी गई है, तो भी उसे असन्तोष होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्रत्येक कर्मचारी पदोन्नति की मूल भावना को कार्य सन्तोष का कारण मानता है। यदि कर्मचारी को ऐसा अवसर नहीं मिलता है तो उसकी मनोवृत्ति बदलती जाती है जो कार्य सन्तोष में बाधा डालती है।

(iii) सहकर्मी की प्रकृति (Nature of the Colleague) -

मानसिक तनाव कार्य सन्तोष की श्रृंखला को तोड़ देता है। जिस विभाग में व्यक्ति नौकरी करता है, वहाँ के लोगों के साथ उसके कैसे सम्बन्ध है? यह एक ऐसा पक्ष है कि जिसका सम्बन्ध व्यक्ति के मानसिक सन्तुलन से होता है। कहीं ऐसा तो नहीं है कि जितने कार्य करने वाले हैं उनमें से अधिकांश अपने कार्य में तो कम रुचि रखते हैं और सुधार, उन्नति तथा प्रगति के नाम पर हर समय उखाड़-पछाड़ में लगे रहते हैं। कहीं ऐसा तो नहीं है कि वे समाज-सेवा, मानवता, शोषण, समानता आदि के

भावनात्मक पक्ष को लेकर कर्मचारियों को गुमराह करने में लगे रहते हैं। एक उदाहरण से इसे समझाया जा सकता है मान लीजिए आप एक कालेज अध्यापक हैं और आपके साथ ऐसे कई व्यक्ति नौकरी करते हैं जो पिछले 20 वर्ष से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। वे 20 वर्ष पहले एम.ए. की योग्यता लेकर आये थे और आज भी सिर्फ एम.ए. ही हैं। आज तक उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में न तो कोई पुस्तक लिखी, न अनुसंधान किये और न कराये, न कोई लेख लिखा और न अपनी योग्यता में किसी प्रकार प्रगति की, किन्तु वे उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ बन गये हैं। शिक्षा संस्थाएँ उनके इशारों पर चलती हैं। जहाँ की संस्था में अशान्ति और अनियमितताएँ हैं, वे वहाँ के लोगों को इन कारणों के निराकरण हेतु कार्य-विमुख कर ऐसे कार्यों में लगा देते हैं कि पुरानी समस्याएँ सुलझती हैं तो नई पैदा हो जाती हैं और जहाँ चैन से कार्य हो रहा है वहाँ छोटी-छोटी सी बातों को लेकर विवाद पैदा करा देते हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि इस प्रकार के कर्मचारी दूसरे उन कर्मचारियों को कैसे प्रभावित करते हैं, जो अपने कार्य में लगे रहते हैं और उन्हें किसी प्रकार के असन्तोष की अनुभूति नहीं होती। सत्य तो यह है कि ऐसे कर्मचारी जो कार्य से दूर हैं संस्था या कारखाने में ऐसा वातावरण उत्पन्न कर देते हैं कि अच्छा-खासा कर्मचारी भी दलगत राजनीति में फंस जाता है और कार्य से भागने लगता है। यह भागने की प्रवृत्ति अन्त में कार्य असन्तोष में बदल जाती है।

(iv) उत्तरदायित्व की भावना (Feeling of Responsibility) -

वाटसन ने एक अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकाला कि जिन कर्मचारियों को जितने कम उत्तरदायित्व का कार्य दिया गया वे उतने ही अधिक मात्रा में अपने-अपने कार्य से असन्तुष्ट थे, जबकि वे कर्मचारी, जिन्हें उत्तरदायित्व का भार सबसे अधिक सौंपा गया था, अपने कार्य से अत्याधिक सन्तुष्ट थे। इस प्रकार के अध्ययन से यह तथ्य सामने आया कि उत्तरदायित्व एक प्रकार की प्रवृत्ति को बल प्रदान करता है जो मनोबल के लिए प्रेरक का कार्य करती है। कर्मचारी में उत्तरदायित्व की भावना उसके मनोबल को उच्चतम बनाए रखती है, और उच्चतम मनोबल कर्मचारी में सन्तोष की भावना को स्थायी बनाता है। सन्तोष की भावना कर्मचारी को कार्य के प्रति सक्रिय रखती है और सक्रियता कार्य-सन्तोष का स्रोत होती है।

(v) सुरक्षा (Security) -

यह व्यक्ति की मूल प्रवृत्ति है प्रत्येक व्यक्ति में सुरक्षा का भाव रहता है। यदि व्यक्तियों को अपने कार्य के बदले जीवन तथा नौकरी सम्बन्धी सुरक्षा मिल रही हो तो वह अपने कार्य से सन्तुष्ट रह सकता है। इसके लिए यदि व्यक्ति की नौकरी में नियमित वेतन वृद्धि, पदोन्नति, पेंशन, चिकित्सा बीमा, जीवन बीमा, पारिवारिक चिकित्सा सुरक्षा मिल रही है तो ये सभी चीजें उसकी व्यावसायिक सन्तुष्टि को

सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगी साथ ही उन कार्य क्षेत्रों में जहाँ व्यक्ति के जीवन सम्बन्धी खतरे अधिक हैं - ऐसे कल कारखानें, पुलिस सेवा, प्रशासनिक सेवा, न्यायिक सेवा, मिलिट्री सेवा आदि यहाँ पर व्यक्ति को अपने जीवन को भी कभी-कभी खतरों में डालकर अपने कर्तव्य का पालन करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में उसे अपने तथा परिवार के सदस्यों के जीवन की सुरक्षा सम्बन्धी क्या सुविधाएँ उपलब्ध हैं? इनसे भी उसकी व्यावसायिक सन्तुष्टि प्रभावित होती है। अतः कहा जा सकता है कि व्यक्ति के जीवन तथा नौकरी की सुरक्षा हेतु जितनी व्यवस्थायें की जायेगी वह अपने कार्य से उतना ही अधिक सन्तुष्टि का अनुभव करेगा।

(vi) अवकाश (Leave) -

शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से अवकाश का महत्व प्रत्येक व्यक्ति के लिए अत्याधिक है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है उसकी अपने संस्थान जिसमें वह सेवा कर रहा है, अपने परिवार, रिश्तेदार, समाज तथा देश के प्रति तमाम जिम्मेदारियाँ होती हैं, नियमित दिनदर्या में वह इन सब उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने का प्रयास करता रहता है। लेकिन कभी-कभी उसे शारीरिक रूप से तथा मानसिक रूप से आराम की आवश्यकता होती है, जिसके लिए अवकाश उसके हित में रहता है। कहीं साप्ताहिक अवकाश की व्यवस्था रहती है, कहीं-कहीं महीने में कुछ निश्चित अवकाश की व्यवस्था रहती है, कहीं-कहीं पूरे वर्ष में कुछ निश्चित अवकाश की व्यवस्था रहती है। किसी-किसी सेवा में आकस्मिक अवकाश, चिकित्सीय अवकाश, विशेष अवकाश, अर्नलीव एकेडमिक प्रोग्रेस हेतु अवकाश, अवैतनिक अवकाश इत्यादि की व्यवस्था होती हैं इन अवकाशों का उसकी व्यावसायिक सन्तुष्टि पर प्रभाव अवश्य पड़ता है। क्योंकि यदि व्यक्ति को अपने पारिवारिक सामाजिक कर्तव्यों की पूर्ति हेतु तथा अपने शारीरिक एवं मानसिक आराम हेतु समय-समय पर अवकाश प्राप्त हो जाता है तो वह मानसिक तनावों से बचा रहता है, जिससे उसकी व्यावसायिक सन्तुष्टि का स्तर ऊँचा बना रहता है और यदि उसे समय पर अवकाश नहीं मिलता तो वह मानसिक सन्तुलन बनाये रखने में परेशानी का अनुभव करता है जिससे कभी-कभी उसका व्यवहार असामान्य हो जाता है। अवकाश व्यक्ति को रूटीन कार्य से अलग प्रकृति के कार्य का भी अवसर देता है। जिससे उसे जीवन में नीरसता घर नहीं कर पाती है।

1.5 शैक्षिक उपलब्धि तथा उसे प्रभावित करने वाले कारक-

(अ) अर्थ एवं परिभाषा -

शिक्षा एक सोद्देश्य प्रक्रिया है। शिक्षा प्रक्रिया के द्वारा छात्रों के व्यवहार में कुछ पूर्व निर्धारित संशोधन करने का प्रयास किया जाता है। शिक्षा प्रक्रिया में संलग्न व्यक्ति विभिन्न स्तरों के छात्रों के लिए शिक्षण उद्देश्य निर्धारित करते हैं तथा इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षण अधिगम क्रियाओं का

आयोजन करते हैं। शैक्षिक सम्प्राप्ति से तात्पर्य इन शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति से है। छात्रों ने शैक्षिक उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया है, यही उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति को बताता है।

डॉ. आत्मानन्द मिश्र[1] ने शैक्षिक-उपलब्धि को निम्न तरह परिभाषित किया है -

"शैक्षिक उपलब्धि, प्राप्त ज्ञान या शालेय विषयों में विकसित प्रवीणता या कुशलता है, जो कि प्रायः परीक्षणों में प्राप्त अंको द्वारा या शिक्षक द्वारा दिये अंको या दोनों द्वारा निश्चित की गयी हो।"

(ब) शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारक -

शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक निम्नलिखित है -

(1) बुद्धि -

ऐसा माना जाता है कि मनुष्य के अन्दर बुद्धि जन्मजात होती है वातावरण या प्रभाव से इसमें एक सीमा तक ही विकास किया जा सकता है। व्यक्ति अपने आपको जितना जल्दी वातावरण के साथ समायोजित कर लेता है उसे उतना ही तीव्र बुद्धि का समझा जाता है। अतः उस व्यक्ति के अन्दर अधिक क्षमता है बुद्धि से व्यक्ति को विवेकशील चिन्तन तथा अमूर्त चिन्तन करने में मदद मिलती है। इसका मतलब यह हुआ कि जो व्यक्ति बुद्धिमान होता है, उसके सोंचने एवं चिन्तन करने का तरीका विवेकपूर्ण, तर्कपूर्ण एवं युक्तिसंगत होता है। ऐसे व्यक्तियों में अमूर्त चिन्तन की क्षमता भी अधिक होती है तथा ऐसे व्यक्तियों का शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भी ऊँचा होता है, वहीं कम बुद्धि वाले व्यक्ति का चिन्तन अविवेक पूर्ण तथा तर्कहीन होता है तथा ऐसे व्यक्तियों का शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निम्न होता है। अतः कहा जा सकता है कि बालक की बुद्धि उसकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। शोध बताते हैं कि अधिक बुद्धिमान बालकों की शैक्षिक उपलब्धि, कम बुद्धि वाले बालकों की अपेक्षा अधिक होती है।

(2) सामाजिक आर्थिक स्थिति -

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज का बालक के ऊपर महती प्रभाव पड़ता है। जिस परिवेश में बालक रहता है उसी के अनुकूल उसका रहन-सहन, खान-पान, पढ़ाई-लिखाई आदि होती है। यदि बालक अच्छे परिवार से हे, जहाँ कि आर्थिक स्थिति सामाजिक स्थिति अच्छी होती है तो बालक का शैक्षिक स्तर भी अच्छा होगा, क्योंकि वर्तमान में अच्छी पढ़ाई लिखायी के लिए धन की आवश्यकता पड़ती है। धन के अभाव में अच्छी पढ़ाई करना सम्भव नहीं है तथा जिन बालकों का सामाजिक-आर्थिक स्तर निम्न रहता है उनका शैक्षिक स्तर भी प्रायः निम्न होगा। क्योंकि उनके प्रगति के पर्याप्त साधन नहीं होते, जिसके अभाव के कारण शैक्षिक स्तर उच्च नहीं हो पाता हालांकि इसके अपवाद भी देखे गये हैं।

---

1. डॉ. आत्मानन्द मिश्र, 'शिक्षा कोश', कानपुर; ग्रन्थम, 1977 पृष्ठ 29

(3) आकांक्षा स्तर -

बालक की जो सोच होती है वह उसके अनुरूप बनने का प्रयास करता है यदि बालक मेहनत और ईमानदारी से प्रयास करता है तो उसे प्राप्त भी कर लेता है यदि आकांक्षा नहीं होगी, बालक की सोच नहीं होगी तो उसके लिए वह सार्थक प्रयास भी नहीं करेगा। भारत के पूर्व राष्ट्रपति माननीय अब्दुल कलाम जी का कहना सार्थक है कि व्यक्ति की सोंच ऊँची होनी चाहिए तथा सोंच यदि ऊँची होगी तो वह उसे प्राप्त करने का सार्थक प्रयास भी करेगा। अतः यह पाया गया है कि बालक दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ यदि पद स्थान प्राप्त करने के लिए प्रयास करता है तो वह उसे प्राप्त करने में सफल भी हो जाता है।

(4) आत्म सम्प्रत्यय -

आत्म सम्प्रत्यय से तात्पर्य उन प्रतिभाओं से होता है जिन्हें स्वयं बालक अपने बारे में विकसित करता है बालक अपने बारे में शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दो प्रकार की छवि विकसित करता है। मनोवैज्ञानिक छवि का सम्बन्ध अन्य बातों के अलावा बालक के आत्मविश्वास से भी होता है। जब भी बालक कोई कार्य करता है, और उसमें आत्मविश्वास है, तो वह बड़े ही सहजता से उस कार्य को पूरा कर लेता है। यही बात बालक के शैक्षिक-उपलब्धि के सम्बन्ध में भी लागू होती है। बालक जो कुछ पढ़ता है यदि उसमें आत्मविश्वास है तो वह सफल हो जाता है और यदि उसके अन्दर उस विषय के सम्बन्ध में ऐसी अवधारणा विकसित हो जाती हे कि वह इसको नहीं समझ सकता तो ऐसे विषय में उसका शैक्षिक-निष्पादन निम्न स्तर का रहेगा। इस प्रकार बालक का आत्म सम्प्रत्यय किसी न किसी रूप में उसकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

(5) लक्ष्य प्रेरित व्यवहार -

बालक ज्यों-ज्यों शारीरिक व मानसिक रूप से परिपक्व होता जाता है त्यों-त्यों उसमें जो कुछ भी वह करता है उसका लक्ष्य स्पष्ट होता जाता है, बालक ने जो भी प्राप्त किया है, यदि उसका लक्ष्य उससे ऊँचा है तो वह उतने से सन्तुष्ट नहीं होगा और अपना वांछित पाने का प्रयास करता रहेगा। ऐसी स्थिति में कहा जायेगा कि बालक का आकांक्षा स्तर ऊँचा है। बालक जो भी अध्ययन करता है या जिन विषयों या पाठ्यक्रमों को अपनाता है उसके पीछे वह कोई न कोई लक्ष्य निर्धारित कर लेता है। यदि उसने पाठ्यक्रम को बहुत ही सफलतापूर्वक पूर्ण करने का या विषय में सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन कर लक्ष्य बनाया है तो उसकी सारी क्रिया-कलाप उसकी पूर्ति में रहेंगे और जब बालक परिश्रम लगन और स्वप्रेरणा से अध्ययन करेगा तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि स्वतः ही उच्च स्तर की होगी और यदि बालक का लक्ष्य किसी विषय में उत्तीर्ण होना या किसी पाठ्यक्रम को औपचारिक रूप से पूर्ण करना होगा तब उसके सारे प्रयास निम्न स्तर के रहेंगे। अतः उसकी शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भी निम्न ही होगा।

(6) उपलब्धि-अभिप्रेरण -

उपलब्धि अभिप्रेरण को सामान्य रूप से किसी योग्यता पर अधिकार पाने या अच्छे ढंग से काम करने की इच्छा के नाम से जाना जाता है उपलब्धि अभिप्रेरण और स्वयत्ता, स्वतंत्रता और उत्पादनशीलता के समान सम्प्रत्ययों में बहुत कुछ समानता है उपलब्धि निर्देशित बालक का अन्तर विवेक काफी विकसित होता है उसके लिए नियंत्रण आत्मप्रेरित या भीतर से उद्भूत होता है इस स्थिति के विकास के लिए सम्भवतः यह आवश्यक है कि वह अपने माता पिता में किसी एक को या दोनों को ही सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से सक्षम मान सकें, उन्हें भरोसे के योग्य व्यक्ति मान सके अर्थात वह उनके व्यवहार का पूर्वानुमान कर सकता हो - वे उसके लिए ऐसे व्यक्ति सिद्ध हों जो उससे प्रेम करते हों और उसकी सफलता को अपने लिए महत्वपूर्ण मानने के साथ ही उसके लिए भी मूल्यवान मानते हैं ऐसा बालक विद्यालय में अपनी सफलता की चिन्ता करने लगता है, इसीलिए वह कठिन परिश्रम करता है। लगन और तत्परता से प्रत्येक विषय को समझता है। जिस कारण उसकी शैक्षिक-उपलब्धि उच्च स्तर की हो जाती है। जो ऐसा नहीं करता वह निम्न निष्पादक होकर रह जाता है। विद्यालय में प्राप्त सफलता और माता-पिता द्वारा निर्धारित मूल्यों का घनिष्ठ सम्बन्ध इसी से हो जाता है। इसीलिए माता-पिता का लक्ष्य यह होना चाहिए कि उनके बच्चे जीवन में उनसे भी श्रेष्ठ सिद्ध हो सकें।

(7) शिक्षक -

बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का सम्बन्ध इससे भी है कि विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों की नजर में वहाँ के शिक्षक किस तरह के हैं। जिन विद्यालयों में बालक तथा शिक्षक एक ही स्तर के सामाजिक-आर्थिक परिवेश के होते हैं वहाँ पर बालक के अभिभावक और शिक्षकों की सोंच में समानता होने के कारण, बालक की शैक्षिक प्रगति ठीक होती है क्योंकि उन दोनों के मूल्य, जीवन के प्रति दृष्टिकोण लगभग एक समान होते हैं और जिन विद्यालयों में बालक और शिक्षक अलग-अलग सामाजिक आर्थिक स्तर के होते हैं वहाँ बालिकों की सोंच शिक्षकों की सोंच से मेल नहीं खा पाती जिस कारण बालकों की शैक्षिक प्रगति बाधित होती है।

बालकों की शैक्षिक-उपलब्धि में शिक्षक के व्यवहार, उसका अपने विषय का ज्ञान, छात्रों के साथ अन्तर-क्रिया, उनकी सहयोगात्मक प्रवृत्ति, उनका शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण, उनका जीवन के प्रति दृष्टिकोण आदि बातों से प्रभावित होती हैं। जिस विषय का शिक्षक जितना शिक्षकोचित गुणों से परिपूर्ण होता है उस विषय में बालकों की शैक्षिक-उपलब्धि उच्च स्तर की देखी गयी है जिस विषय के शिक्षक में शिक्षकोचित गुणों का अभाव होता है, उस विषय की शैक्षिक-उपलब्धि कम होती है।

(8) समवयस्क समूह -

बालक के सामाजीकरण में उसके पियरग्रुप का अत्याधिक महत्व है। भारतीय समाज में समवयस्क समूह के अधिकांश संगी साथी बालक के अपने सगे या रिश्ते के भाई बहन होते हैं। कभी-कभी पास पड़ोस के लड़के-लड़कियां उनके समूह में सम्मिलित रहते हैं, जो कि कई वर्षों से एक ही विद्यालय में उनके साथ पढ़ रहे होते हैं। कभी-कभी विद्यालय में ही उन्हें अपनी उम्र के बालकों का साथ मिल जाता है। गांव स्तर पर इन तीनों स्तर के समूहों के सदस्य साथ-साथ बड़े होते हैं जब कि शहरों में सगे सम्बन्धी भाई-बहन, पास-पड़ोस के लडके तथा विद्यालय के साथी प्रायः अलग-अलग समूह में आते हैं।

बालक का समवयस्क समूह जिस मानसिक स्तर, सोंच व सामाजिक आर्थिक वर्ग का होता है ठीक वैसी ही स्थिति बालक की भी होती है। यदि उसके साथी उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले होते हैं तो उसमें भी ऐसी प्रेरणा जागृत होती है और यदि उसका समूह कमजोर व निम्न उपलब्धि वाला होता है तो वह भी कमोवेश वैसा ही बन जाता है। कहा भी गया है -

संगत ही गुन उपजे, संगत ही गुन जाय।
बांस-फांस और मीसरी, एकय भाव विकाय।।

(9) सफलता -

एक व्यक्ति जो कार्य करता है यदि उसमें उसे सफलता प्राप्त होती है तो वह उस कार्य को और अच्छी तरह करने के लिए प्रेरित होता है। यही बात बालक पर भी लागू होती है। बालक जिस कक्षा में अध्ययन करता है यदि वर्ष पर्यन्त होने वाली साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षाओं में उसे क्रमशः सफलता मिलना शुरू हो जाती है तो वह अगली परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित होता चला जाता है। अधिगम सिद्धान्त भी इसी तथ्य को प्रदर्शित करते हैं कोई भी बालक जिस क्रिया को सीखना प्रारम्भ करता है यदि उस क्रिया के प्रारम्भिक चरणों में सफलता मिलती जाती है तो यह सफलता उसे और तत्परता के साथ क्रिया के अगले चरणों को पूरा करने के लिए प्रेरित करती है और अन्त में वह क्रिया को सीख लेता है। ठीक इसके विपरीत यदि किसी कार्य को सीखने में बालक को प्रारम्भिक चरणों में असफलता का सामना करना पड़ता है तो उसके अन्दर हताशा उत्पन्न होती है। और वह इस काम को सफलता पूर्वक पूर्ण नहीं कर पाता। अतः कहा जा सकता है कि बालक के द्वारा किये गये प्रयासों में मिली सफलता या असफलता उसके शैक्षिक उपलब्धि के स्तर को उच्च या निम्न करती है।

(10) रूचि -

मनोवैज्ञानिक सत्य है कि व्यक्तिगत विभिन्नताओं के कारण हर एक बालक की योग्यताएँ, क्षमताएँ, रूचियाँ, अभिवृत्तियाँ, अलग-अलग होती हैं यदि बालक अपने रूचि के विषयों का अध्ययन करता है तो वह ध्यान लगाकर गम्भीरता के साथ उस विषय की बारीकियों को समझता है परिणाम स्वरूप उसका निष्पादन उस विषय में उच्च स्तर का रहता है। क्योंकि कहावत है - "रूचि ध्यान की माँ है।" अधिगम के लिए बालक का विषय वस्तु पर केन्द्रित होना अति आवश्यक है। बालक कोई भी विषय जब ध्यान से पढ़ता है तो वह उसको जल्दी सीख लेता है और यदि वह पढ़ने में ध्यान नहीं देता तो उसे अधिगम में परेशानी का सामना करना पड़ता है। प्रत्येक बालक की अलग-अलग विषयों में रूचि हो सकती है। कोई बालक उच्च वैज्ञानिक प्रवृत्ति का हो सकता है कोई साहित्यिक रूचि का कोई सौन्दर्य बोध सम्बन्धी विषयों का जो बालक जिन विषयों की तरफ रूचि रखता है वह बालक उन्हीं विषयों में उच्च स्तर की सफलता प्राप्त कर पाता है। यदि विपरीत रूचि के विषय पढ़ने के लिए मजबूर किया गया तो उनमें उसकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की होगी।

1.6 शिक्षण-अभिक्षमता तथा इसे प्रभावित करने वाले कारक -

(अ) अर्थ एवं परिभाषा -

दिन प्रतिदिन के जीवन में प्रायः विभिन्न व्यक्तियों यथा अध्यापकों, अभिभावकों, प्रशासकों, अधिकारियों, समीक्षकों आदि को यह कहते सुना जा सकता है कि अमुक छात्र की यांत्रिक कार्यों में विशेष रूचि है, अमुक छात्र में बड़ा होकर अच्छा संगीतकार बनने की सम्भावना है, अमुक बालिका बड़ी होकर गृहणी के रूप में सफल सिद्ध होगी अथवा अमुक व्यक्ति एक प्रतिभाशाली व योग्य प्रशासक बन सकेगा। इस प्रकार के कथनों से व्यक्तियों का तात्पर्य होता है कि सम्बन्धित छात्र, बालिका या व्यक्ति में वर्तमान में कुछ ऐसी प्रतिभा, योग्यता या क्षमता दृष्टिगोचर हो रही है जो उसे भविष्य में किसी विशिष्ट क्षेत्र में सफलता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी। ऐसी प्रतिभा, योग्यता या क्षमता प्रायः जन्मजात होती है तथा मनोविज्ञान की भाषा में इसे अभिक्षमता कहा जाता है।

डॉ. आत्मानन्द मिश्र[1] के अनुसार -

"किसी कार्य या क्रिया को सीखने की सहज क्षमता, जिसमें स्वाभाविक रूझान व रूचि हो। किसी व्यक्ति में पाये जाने वाले वे जन्मजात या अर्जित लक्षण, जिनसे यह संकेत मिले कि प्रशिक्षण के द्वारा व्यक्ति अमुक कार्य या क्षेत्र में कुशलता प्राप्त कर सकता है।"

---

1. डॉ. आत्मानन्द मिश्र, 'शिक्षा कोश', कानपुर; 1977, पृष्ठ-8

डॉ. मिश्र ने इस परिभाषा में अभिक्षमता को जन्मजात या अर्जित लक्षण कहा है। इसी प्रकार 'एकेडमिक डिक्शनरी आफ एजुकेशन'[1] में अभिक्षमता का अर्थ इस प्रकार बतलाया गया है -

"एक व्यक्ति की नया कौशल अर्जित करने की सामर्थ्य अथवा अवसर एवं प्रशिक्षण के समय उस कौशल को अर्जित करने का सशक्त प्रदर्शन, अभिक्षमता कहलाता है। किसी छात्र की अभिक्षमता को जानकर शिक्षक आसानी से उसके भविष्य के निष्पादनों के बारे में पूर्वानुमान लगा सकते हैं।"

अभिक्षमता को फ्रीमैन (1962)[2] ने परिभाषित करते हुए कहा है,

"उन गुणों के संयोग जिनसे कुछ विशिष्ट ज्ञान एवं संगठित अनुक्रियाओं के सेट की कौशलता जैसे कोई भाषा बोलना, गायक बनाना, यांत्रिक कार्य करना आदि को (प्रशिक्षण के साथ) सीखने की क्षमता का पता चलता है, अभिक्षमता कहा जाता है"

टुकमैन[3] के अनुसार -

"क्षमताओं एवं अन्य गुणों, चाहें जन्मजात हों या अर्जित हों, का एक ऐसा संयोग जिससे व्यक्ति में सीखने की क्षमता या किसी खास क्षेत्र में निपुणता विकसित करने की क्षमता का पता चलता है, अभिक्षमता कहलाता है।"

इन परिभाषाओं से कुछ ऐसे तथ्य मिलते हैं जिनसे अभिक्षमता के स्वरूप पर प्रकाश पड़ता है। इन तथ्यों में निम्नांकित प्रमुख है -

1. अभिक्षमता व्यक्ति के भीतर एक तरह की अन्तः शक्ति होती है।
2. यह अन्तः शक्ति अर्जित भी हो सकती है या जन्मजात भी।
3. अभिक्षमता में चूंकि किसी विशेष क्षेत्र में कौशलता को सीखने की क्षमता होती है, अतः इसके आधार पर यह पूर्वानुमान आसानी से लगाया जा सकता है कि व्यक्ति उस क्षेत्र में भविष्य में कैसा निष्पादन प्राप्त कर पायेगा।

अतः स्पष्ट है कि अभिक्षमता विशिष्ट क्षेत्र में व्यक्ति द्वारा कोई गुण या कौशल सीखने की अन्तः शक्ति होती है। शैक्षिक, व्यावसायिक तथा मनोवैज्ञानिक परामर्श व मार्गदर्शन के कार्य में अभिक्षमताओं

---

1. राकेश चोपड़ा (एडीटर) 'एकेडमिक डिक्शनरी ऑफ एजूकेशन' देलही; ईशा बुक्स, 2005, पृष्ठ 24
2. फ्रीमेन 'थ्योरी एण्ड प्रक्टिस ऑफ सायकोलाजीकल टेस्टिंग', 1962, पृष्ठ 43
   उद्धृत, डॉ. अरुण कुमार सिंह, "शिक्षा मनोविज्ञान", पटना; भारती भवन, (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स), 2007, पृष्ठ 486
3. टुकमैन मीजरिंग एजुकेशनल आउट कम्स, 1975, पृष्ठ 475
   उद्धृत डॉ. अरुण कुमार सिंह, "शिक्षा मनोविज्ञान" (पूर्वोक्त) पृष्ठ 486

के ज्ञान का विशेष महत्व है। बालकों की अभिक्षमताओं को पहचान कर उन्हें उन्हीं क्षेत्र विशेष में शिक्षित व प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, जिनमें उनकी सफलता प्राप्त करने की सम्भावना है। अभिक्षमता विहीन क्षेत्रों में बालकों को आगे बढ़ने के लिए बाध्य करना समय व शक्ति का अपव्यय ही होगा। प्रवेश तथा रोजगार के लिए चयन करते समय अभिक्षमताओं का ध्यान रखना आवश्यक होता है।

अभिक्षमता से तात्पर्य व्यक्ति के उस रूझान, रूचि योग्यता से है जो किसी विशिष्ट कार्य पाठ्यक्रम या व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक व महत्वपूर्ण होती है। यहाँ अभिक्षमता तथा कुशलता (दक्षता) के बीच में अन्तर समझ लेना जरूरी है। कुशलता से तात्पर्य किसी दिये कार्य को सुगमता तथा परिशुद्धता से करने की योग्यता से होता है। दक्षता शब्द का अर्थ भी बहुत कुछ यही है, परन्तु यह कुशलता से अधिक व्यापक है। दक्षता में न केवल कुछ गायक व हस्त क्रियाओं में कुशलता सम्मिलित रहती है, वरन अन्य क्रियाओं में कुशलता, जैसे-भाषा, इतिहास, अर्थशास्त्र, गणित, विज्ञान आदि में व्यक्ति की योग्यताएँ सन्निहित रहती हैं। अभिक्षमता से अभिप्राय उपयुक्त परिस्थितियाँ में किसी क्षेत्र विशेष में दक्षता अर्जित करने की क्षमता से होता है। दूसरे शब्दों में अभिक्षमता किसी क्षेत्र विशेष में सफलता प्राप्त करने का पूर्व कथन करने वाली मूलभूत योग्यता को इंगित करती है। सामान्यतः इसका उपयोग दो तरह से होता है -

(i) जब हम यह कहें कि अमुक व्यक्ति के अन्दर कला के प्रति महान क्षमता है, तो इसका अर्थ यह होता है, कि उस व्यक्ति के अन्दर कई मायनों में ज्यादा योग्यता है जो उसे कलात्मक क्रिया कलापों में सफल बना सकती है।

(ii) जब हम यह कहें कि एक व्यक्ति में अभिक्षमता की कमी है, तो इसका तात्पर्य यह है कि उसमें इस विशिष्ट योग्यता की कमी है, जो कि विभिन्न पेशों के लिए महत्वपूर्ण है। पहले के सन्दर्भ में अभिक्षमता शब्द का प्रयोग इकाई सम्बन्धी विशेष लक्षण की ओर निर्दिष्ट नहीं करता है, न ही किसी प्रकार के अस्तित्व का, लेकिन वस्तुतः यह लक्षण और योग्यता/क्षमता का संसर्ग है, जिसका परिणाम बतलाता है, कि व्यक्ति कुछ विशिष्ट प्रकार के पेशा और क्रिया-कलापों हेतु योग्य है। बाद के प्रकरण में शब्द अभिक्षमता का अभिप्राय पृथक विशेष लक्षण के विचारों को प्रेषित करना, जो कि विभिन्न प्रकार के पेशा,क्रिया-कलापों में महत्वपूर्ण हैं। अभिक्षमता की दोनों धारणाओं का व्यवसाय में महत्व है। यद्यपि अर्थ स्पष्ट होना चाहिए। सामान्य रूप से उपदेशक व्यक्तिगत पेशा और व्यवसाय के सम्बन्ध में विचार करते हैं इसीलिए इसका प्रयोग विस्तृत अर्थों में लेते हैं, जबकि मनोवैज्ञानिक, व्यक्तिगत के सन्दर्भ में विचार करते है, इसीलिए इस शब्द का प्रयोग संकीर्ण वैज्ञानिक अर्थों में उपयोग करते हैं।

यहाँ अभिक्षमता का प्रयोग संकीर्ण अर्थों में किया गया है। यहाँ अभिक्षमता को योग्यता सम्बन्धों के रूप में विचार किया गया है न कि योग्यता, क्षमता, पेशा सम्बन्धी विद्वता आदि धारणाओं के रूप में।

कोई भी व्यक्ति जो शिक्षक बनना चाहता है, उसे अपने विषय एवं उसकी पाठ्यक्रम में स्थिति के अलावा शिक्षा के उद्देश्य एवं शिक्षा की प्रक्रिया की जानकारी होना आवश्यक है। मान लिया जाये कि कोई व्यक्ति, जो अध्ययन करता है तो उसे पढ़ता है और ग्रहण करता है, लेकिन प्रश्न यह उठता है कि क्या वह अन्य कोई अच्छी तरीके से पढ़ा भी सकता है? यह अभिक्षमता तब प्रदर्शित होती है जब उसका सहपाठी मदद के लिए आता है तब यदि वह उन कठिन बिन्दुओं को स्पष्ट करने में आनन्द महसूस करता है और अपने सहपाठी को अच्छे तरीके से समझाता है और साथी को अच्छी तरह समझ में आ भी जाता है तब ही यह कहा जा सकता है कि उसमें सम्भवतः शिक्षण अभिक्षमता है।

(ब) प्रभावित करने वाले कारक -

एक व्यक्ति जिसमें निम्नगुण हों विद्वान कहा जा सकता है कि उसमें शिक्षण-अभिक्षमता है, दूसरे शब्दों में शिक्षण-अभिक्षमता को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं -

(1) सहयोगात्मक के रूप -

शिक्षकों को विद्यार्थियों, समाज एवं राष्ट्र के विकास के लिए हर सम्भव सहयोग को तत्पर रहना चाहिए। शिक्षक का यह गुण शिक्षक और शिक्षार्थी, विद्यालय एवं समुदाय, समाज एवं राज्य के बीच सम्बन्ध बनाने के लिए आवश्यक है।

(2) दयालुता -

यह विद्यार्थियों के कठिनाइयों, उनके पंगुता विकास में वृद्धि, व्यक्तित्व में वृद्धि के प्रति शिक्षकों का समर्पित होना प्रदर्शित होता है, शिक्षकों में दयालुता का गुण होना चाहिए तभी वह विद्यार्थियों की कठिनाइयों को दूर कर उनके विकास में सहयोग कर पायेगा।

(3) धैर्य -

यह शिक्षक के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण अंग है। कभी ऐसी विकट परिस्थिति होती है। जहां पर धैर्य रखना अत्यन्त आवश्यक होता है।

(4) व्यापक हित -

केवल यह पर्याप्त नहीं कि कोई शिक्षक अपने विषय को पढ़ाने के प्रति कटिबद्ध है, बल्कि संस्था के बाहर अन्य क्रिया-कलापों में भी उसकी सहभागिता होना आवश्यक है। उसे चाहिए कि वह देखे कि विद्यार्थी शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आदि समस्त रूप से वृद्धि कर रहा है कि नहीं।

(5) न्यायपूर्णता -

किसी भी शिक्षक के व्यक्तित्व का न्यायपूर्ण होना और अपने विद्यार्थियों के साथ एक समान व्योहार करना अत्यन्त आवश्यक है।

(6) नैतिक चरित्र -

किसी भी व्यक्ति में नैतिक चरित्र का होना अत्यन्त आवश्यक है। जब शिक्षकों में नैतिक चरित्र होगा तभी वह शिष्य समाज एवं देश को दिशा दे पायेगा।

(7) आशावादी -

शिक्षक के व्यक्तित्व में इस लक्षण का होना आवश्यक है यह समझा जाता है कि वह आशावादी होगा। उसे हमेशा छात्रों के समुचित विकास के सन्दर्भ में आशावादी दृष्टिकोण रखना चाहिए।

(8) योग्यता -

किसी शिक्षक के लिए ज्ञान का होना जरूरी है। ज्ञान को पाने हेतु उसके अन्दर भूख हो। उसे जो वह जानता है, उससे कभी सन्तुष्ट होकर नहीं बैठना चाहिए बल्कि हमेशा नवीन ज्ञान अर्जित कर अपना ज्ञान भण्डार बढ़ाते रहना चाहिए।

(9) अनुशासन -

किसी शिक्षक के लिए अनुशासन नितान्त आवश्यक गुण होता है। कक्षा व्यवस्था, व्यवस्थित शिक्षण तथा कठिनाइयों को दूर करने के तरीके अनुशासन की श्रेणी में आते हैं। यदि शिक्षक अनुशासित होगा तो उसके शिष्य भी इस गुण को आत्मसात करेंगे।

(10) उत्साह -

एक अच्छे शिक्षक के व्यक्तित्व में उत्साह का होना एक महत्वपूर्ण तत्व है। वर्तमान युग में इस गुण का महत्ता कुछ अधिक ही है।

1.7 बुन्देलखण्ड एक परिदृश्य -

यमुना चम्बल टौंस नर्मदा नदियों से है घिरा हुआ।
केन धसान बेतवा की निर्मल लहरों से मिला हुआ।।
तानसेन संगीत विद बैजू की मोहक तानलिए।
झांसी गढ़कुण्डार गढ़कोट, दृढ़ दुर्गों की शान लिए।।
हीरा पन्ना नर रत्नों की खान यही अद्भुत अखण्ड है।
विन्ध्याचल के प्रांगण में बसा हुआ बुन्देलखण्ड है।।
यही देवगढ़ खजुराहो की मूर्तिकला का वैभव है।
वीर भूमि बुन्देलखण्ड सम्पूर्ण देश का गौरव है।।

(रामदास, इचौली)

ग्राफ क्रमांक – 1

भारत में उत्तर प्रदेश तथा बुन्देलखण्ड की स्थिति को दर्शाता चित्र
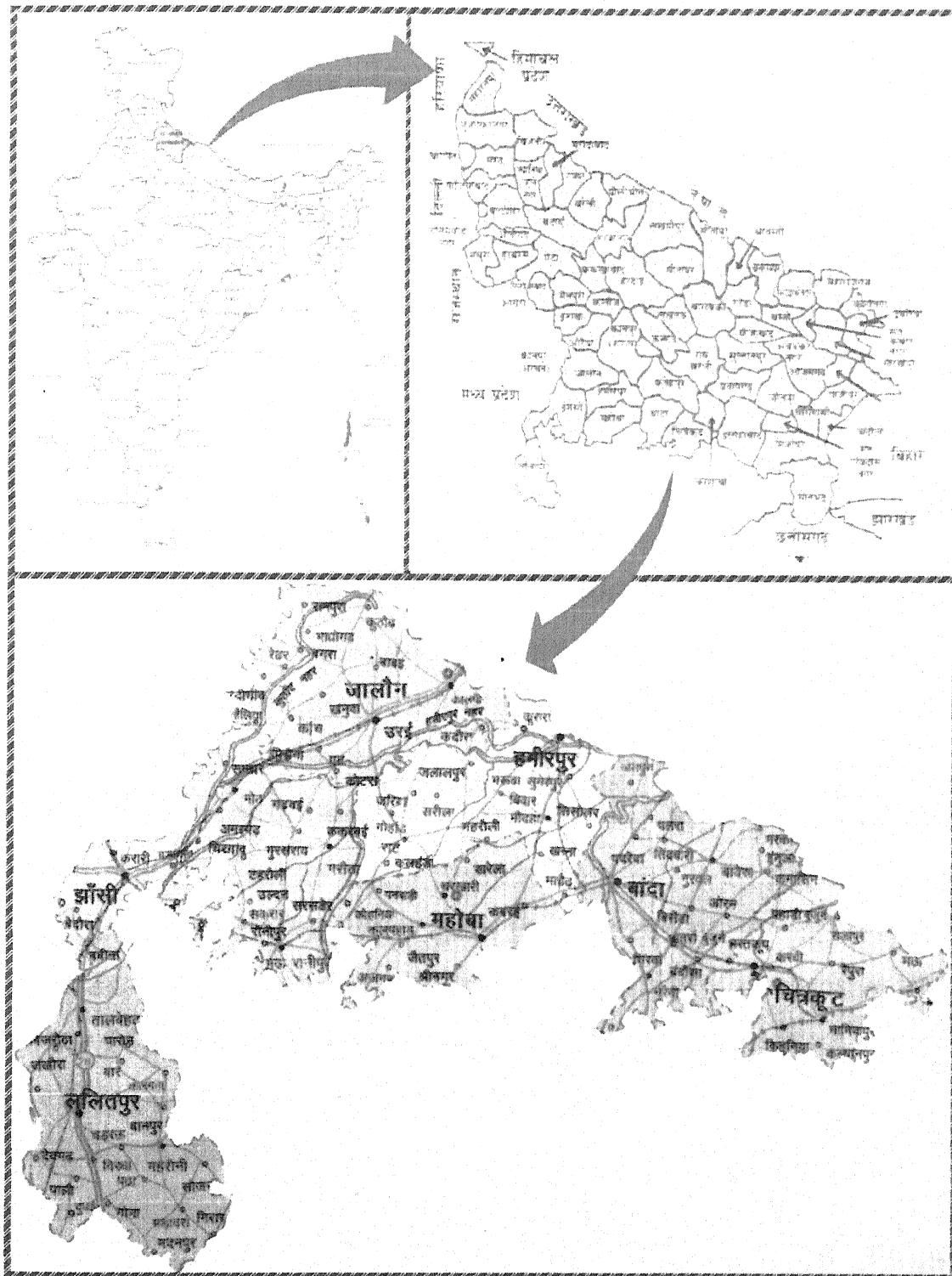
बुन्देलखण्ड का प्राचीन नाम दशार्ण रहा है, बुन्देलखण्ड का वास्तविक नाम विन्ध्य इलाखण्ड है और उसका यह नाम विन्ध्याचल की तराई में बसने के कारण पड़ा है। संस्कृत में इला का अर्थ पृथ्वी है। ईसा से पूर्व कात्यायन, कौटिल्य तथा कालिदास आदि ने अपने-अपने ग्रन्थों में "दर्शाण" नाम का उल्लेख किया है। "दर्शाण" शब्द का अर्थ है 'दश जल वाला' या दश दुर्ग भूमि वाला। "ऋण शब्द दुर्ग भूमौजले च इति यादव" इस प्रकार बुन्देलखण्ड का दशार्ण नाम दश नदियों के कारण पड़ा जो इस प्रकार है - धसान, पार्वती, सिन्ध, बेतवा, चम्बल, जमुना, नर्वदा, केन, टोंस और जामनेर। बुन्देलखण्ड जिसे हम आज जानते हैं उसका प्राचीन नाम चेदिराज था बुन्देलखण्ड के उत्तर दिशा में यमुना नदी है और इस सीमा रेखा को भूगोलविदों, इतिहासकारों, भाषाविदों आदि सभी ने स्वीकार किया है। पश्चिमी सीमा चम्बल नदी को भी अधिकांश विद्वानों ने माना है। निचली चम्बल इसके निकट पड़ती है मध्य और निचली चम्बल के दक्षिण में स्थित मध्य प्रदेश के मुरैना और भिण्ड जिलों में बुन्देली संस्कृति और भाषा का मानक रूप समाप्त हो जाता है। भाषा और संस्कृति की दृष्टि से ग्वालियर और शिवपुरी का पूर्वी भाग बुन्देलखण्ड में आता है और साथ ही उत्तर प्रदेश के जालौन जिले से लगा हुआ भिण्ड का पूर्वी हिस्सा (लहर तहसील का दक्षिण भाग) जो दतिया जिले का अंश बन गया है।

इतिहासवेत्ता के अनुसार बुन्देलखण्ड की स्थापना सम्वत् 1288 विक्रमी के लगभग हुई। जब से बुन्देला क्षत्रियों ने इसे अपनाया उस समय से यह बुन्देलखण्ड कहलाने लगा।

भौतिक भूगोल में बुन्देलखण्ड की दक्षिण सीमा विन्ध्य पहाड़ी श्रेणियाँ बताई गयी हैं जो नर्मदा नदी के उत्तर में फैली हुयी है। लेकिन संस्कृति और भाषा की दृष्टि से यह उपयुक्त नहीं है क्योंकि सागर प्लेटो के दक्षिण पूर्व से जनपदीय संस्कृति और भाषा का प्रसार विन्ध्य श्रेणियों के दक्षिण मे हुआ है। सम्भवतः छत्रशाल बुन्देला के राज्य सीमा को केन्द्र में रखकर लेकिन जनपदीय संस्कृति और भाषा विन्ध्य श्रेणियों और नर्मदा नदी के प्राकृतिक अवरोध पाकर होशंगाबाद और नरसिंहपुर जिलों द्वारा पहुँच गयी हैं। अतैव प्रदेश की दक्षिण सीमा महादेव पर्वत श्रेणी (गोण्डवाना हिल्स) और दक्षिण पूर्व में मैकल पर्वत श्रेणी उचित ठहरती है। इस आधार पर होशंगाबाद और सोहागपुर तहसीलें तथा नरसिंहपुर का पूरा जिला बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत आता है।

बुन्देलखंण्ड प्रदेश में निम्नलिखित जिले और उसके भाग आते हैं और उनसे इस प्रदेश की भौगोलिक भाषिक एवं सांस्कृतिक इकाई बनती है -

1. उत्तर प्रदेश के जालौन, झांसी, ललितपुर, हमीरपुर, महोबा और बाँदा की नरैनी और चित्रकूट की कर्वी तहसीलों का दक्षिणी पश्चिमी भाग।
2. मध्य प्रदेश के पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़, दतिया, सागर, दमोह, नरसिंहपुर जिले

तथा जबलपुर जिले की पाटन और जबलपुर तहसीलों को दक्षिणी और दक्षिणी पश्चिमी भाग होशंगाबाद जिले की होशंगाबाद और सोहागपुर तहसीलें, रायसेन जिले की उदयपुर सिलवानी गैरतगंज बेगमगंज बरेली तहसील तथा रायसेन गौहरगंज तहसीलों का पूर्वी भाग विदिशा जिले की करबई तहसील और विदिशा, बसौदा सिरोज तहसीलों के पूर्वी भाग गुना जिले की अशोक नगर (पिछोर) और मुगावली तहसीलें शिवपुरी जिले की पिछोर और करैरा तहसीलें ग्वालियर की भान्डेर तहसील और ग्वालियर गिर्द का उत्तर पूर्वी भाग, भिण्ड जिले की लहर तहसील का दक्षिणी भाग।

उपर्युक्त भू-भाग के अतिरिक्त उसके चारों ओर की पेटी मिश्रित भाषा और संस्कृति की है। कुछ जिलों के निवासी आज भी स्वतः को बुन्देलखण्ड का अंश मानते हैं और उनकी भाषा और संस्कृति पहले बुन्देली ही रही है पर बाद में परिवर्ती सम्पर्कों के कारण मिश्रित हो गयी है। ऐसे जिलों में बाँदा, गुना आते हैं। बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत आने वाले जिलों के बारे में संक्षिप्त महत्वपूर्ण तथ्यों का वर्णन करना आवश्यक है।

झांसी -

ओरछा के राज्य के अतिरिक्त राजा वीर सिंह का अधिकार पश्चिम में लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थिति एक कस्बे बलबन्त नगर पर भी था। जिसके समीप ही एक विशाल पहाड़ी थी। उन्होंने इस पहाड़ी पर सन 1613 ई. में एक दुर्ग का निर्माण करवाया जो झांसी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

झांसी की उत्पत्ति विवादास्पद एवं स्थानीय परम्परा पर आधारित है। इसके अनुसार एक दिन जैतपुर के राजा, राजावीर सिंह देव के पास भ्रमण हेतु आये। जब वे ओरछा के महल में सबसे ऊपर की छत पर बैठे हुए थे तब राजावीर सिंह देव में जैतपुर के राजा से पूंछा कि क्या वह नये दुर्ग की बाह्य आकृति को पहचान सकते हैं राजा के मुंह से निकला झांईसी (छाया) अतएव यह दुर्ग झांइसी कहा जाने लगा जो कालान्तर में अप्रतिशत होकर झांसी हो गया। अतः झांसी शब्द की उत्पत्ति झांईसी शब्द से हुई है। यद्यपि यह अज्ञात है कि प्राचीन नाम बलबन्त नगर झांसी में कैसे परिवर्तित हो गया।

चित्रकूट -

मर्यादा पुरुषोत्तम राम, भाई लक्ष्मण तथा पत्नी जगत्जननी सीता के साथ वनवास के लगभग 12 वर्ष यहाँ वितीत किये। चित्रकूट मंदाकिनी नदी तट पर स्थित (उत्तर प्रदेश-मध्य प्रदेश) है। कामदगिरि पर्वत पर उनका पवित्र निवास था, जहां भाई भरत शत्रुघ्न मातायें- कौशिल्या, कैकेयी, सुमित्रा, कुल पुरोहित वशिष्ठ स्वसुर विदेह राज जनक आदि को साथ लेकर पधारे थें यह तीर्थ चित्रकूट तथा सतना जनपद के अन्तर्गत आता हैं चित्रकूट का उल्लेख महर्षि बाल्मीकि कृत रामायण में है। यहाँ

बहुत से ऋषि निवास करते थे, जो सैकड़ो वर्ष से तपस्यारत थे। पुराणों में पयस्वनी नदी का नाम मन्दाकिनी माल्यवती तथा पिप्पल श्रेणी भी दिया है। चित्रकूट का साहित्यक विवरण उत्तर रामचरित में प्राप्त हैं चित्रकूट जनपद का मुख्यालय कर्वी है पिप्पल श्रेणी, माल्यवती, मंदाकिनी पयस्विनी तट पर स्थित कर्वी 6 मई 1997 को निर्मित चित्रकूट जनपद का मुख्यालय है। महाभारत काल में कारूष जनपद का अथवा मराठा सेना अधिकारी कर्वे से सम्बन्धित कर्वी नाम प्रतीत होता है। गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मभूमि राजापुर इसी जनपद में है।

जालौन -

यह जनपद त्रिकोणांकार भू-भाग में यमना, वेतवा, पहुज नदियों के घिरा हुआ है। यह जिला $25^{0}46'$-$26^{0}27'$ अक्षांश 4565 वर्ग किलोमीटर है। उरई के बारे में प्रसिद्ध है कि उद्दालक ऋषि के जन्म यहीं हुआ था। आल्हा-ऊदल के मामा माहीं की राजधानी उरई थी। जालवन ऋषि के नाम से जालौन जिले का नाम जाना जाता है। जालौन का राज्य मराठों को प्राप्त था। गंगाधर गोविन्द सनद प्राप्त राजा थे। पेशवा नाना साहब के यह तपस्थली है। किंवन्दती के अनुसार इसे जालिम नामक ब्रह्मामण ने बसाया था।

ललितपुर-

इसका अर्थ सुन्दर है। जल की बहुलता अन्न, साग, सब्जी, सुलभता के कारण कहावत प्रसिद्ध है। "ललितपुर कबहुँ न छांडिये जब तक मिले अधार।" ललितपुर जनपद $24^{0}11$-$25^{0}13$ अक्षांश तथा $78^{0}11$-79^{0} देशान्तर के मध्य है। इसका क्षेत्रफल 5039 वर्ग किलोमीटर है सन् 1844 ई. में चन्देरी राज्य का मुख्यालय ललितपुर बना। सन् 1891 ई. में इसे झांसी का उप जिला तथा सन् 1974 में पूर्ण स्वतंत्र जिला हो गया। जनपद का संस्थापक दकन का राजा सुमेर सिंह माना राजा है।

बाँदा -

बाँदा जनपद (चित्रकूट सहित) $24^{0}53$ से $25^{0}55$ आरी अक्षांश तथा $80^{0}7$ से $81^{0}34$ पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल 7624 वर्ग किलोमीटर है। इसके आर में फतेहपुर, इलाहाबाद दक्षिण में रीवां, सतना, पन्ना तथा पश्चि में छतरपुर, महोबा, हमीरपुर जनपद है। बाँदा नगर का सम्बन्ध महर्षि, वामदेव अथवा कल्चुरि वंश के संस्थापक वामराज देव से जुड़ा हुआ है। केन नदी के तट पर तथा वामदेवेश्वर महादेव की तलहटी पर बसा हुआ है नगर चन्देल कालीन माना जा सकता है इसकी पुष्टि महेश्वरी देवी मन्दिर से भी होती है। बाँदा नगर, चित्रकूट सम्भाग का मुख्यालय 19 अक्टूबर 1987 ई0 से है। इसमें चार जनपद बाँदा, चित्रकूट, महोबा, हमीरपुर का समावेश है। पेशवा वाजीराव तथा मस्तानी से उत्पन्न पौत्र नवाब अली बहादुर प्रथम ने लगभग 62 लाख वार्षिक आय का भू-भाग जीतकर इसे अपना मुख्यालय बनाया।

हमीरपुर -

चन्देलवंश के शासक हम्मीरवर्मन से हमीरपुर का नामकरण संभावित है। जनपद का मुख्यालय यमुना और वेतवा नदी से घिरा हुआ है। ईष्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा बुन्देलखण्ड जनपद के दो भाग किये जाने पर उत्तरी बुन्देलखण्ड हमीरपुर कहलाया। हमीरपुर (महोबा सहित) $25^{0}7'$-26^{0}-7' उत्तरी अक्षांश तथा $79^{0}17'$-$80^{0}21'$ के मध्य है। मकरबई में वैदिक कालीन अवशेष 1000-200 ई0 पूर्व तक के प्राप्त है। भीष्म की माता मकरवाहनी (गंगा) के नाम का सम्भवतः कौरववंशी वत्सों के आधीन थी। घूसरपात्रों के टुकडे, आरीप श्याम, परिष्कृत पात्र लौह वाणों के नोक, मनके गोमेध (कुषाण कालीन) प्राप्त हुए है। राठ का सम्बन्ध महाभारत कालीन विराट नगरी से जुड़ा हुआ है।

महोबा -

यह एक ऐतिहासिक नगरी है। इसका प्राचीन नाम महोत्सव नगरी था। यह नगरी आल्हा, ऊदल और पान उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। जैन ग्रन्थ में इसका नाम महोबक प्राप्त है। जगनिक के वीर काव्य आल्हाखण्ड ने तो इसे लोकप्रिय बना दिया है। जनश्रुतियों एवं चिन्हावशेषों में गोरवागिरि के रामकुण्ड तथा सीता रसोई गुफा रामायण- कालीन मानी जाती है। महाभारत काल में यह नगरी महाबली के नाम से प्रसिद्ध था। सन 740 से 830 ई का काल चन्देलों के उदय का समय था। चन्देल वंश के आदि पुरुष चन्द्रवर्मन ने यहां पर एक महोत्सव किया था तभी से इसका नाम महोत्सव नगर पड़ा, जो कालान्तर में महोबा कहलाया।

बुन्देलखण्ड में गर्मी, सर्दी और बरसात तीनों ही मौसम होते हैं। सामान्यतः यहां की जलवायु शुष्क और स्वास्थ्य वर्द्धक हैं परन्तु गर्मी का मौसम अधिक निर्दयी है। जो कि सम्भवतः वृक्षों की कमी तथा नंगी चट्टानों एवं अनुपजाऊ मैदानों के विकरणों के कारण है। गर्मी के मौसम में पेयजल का अभाव रहता है। बुन्देलखण्ड की सर्दी के मौसम की रातें अत्याधिक शीतल, सुखद एवं सुहावनी होती हैं। यहाँ खाद्यान्न अच्छी मात्रा में होते हैं। जैसे चावल, गेहूँ, ज्वार, मोटे अनाज, कपास, दालें, तिलहन आदि।

'बुन्देलखण्ड खनिज सम्पदा विहीन है' यह एक उपेक्षा जनित मिथ्या धारणा है। सन् 1906 में ई. ब्रेडनवर्ग के उपरान्त सन् 1950 में इस क्षेत्र का सर्वेक्षण कार्य प्रारम्भ हुआ। जिसके परिणाम सन्तोषजनक प्राप्त हो रहे हैं।

बाँदा जिले के कालिंजर क्षेत्र में पर्याप्त हीरा प्राप्त होने की सम्भावना है। जिससे सरकार को पर्याप्त आय हो सकती है। वास्तु पत्थर के अक्षय भण्डार हैं। बालू का पत्थर आदि काल से अपने सुहावने रंगो, एक समान कणों, नियमित संस्करण, सुगम सुकरणीता तथा चिर स्थायित्व के लिए समूचे उत्तर भारत में वास्तु पत्थर के रूप में प्रसिद्ध है। ग्रेनाइट पत्थर अपनी गठन, कठोरता, अक्षयता

तथा सुन्दरता के कारण अलंकरण पत्थर के रूप में प्रसिद्ध है। विदेशों में जर्मनी, जापान, इटली में इसकी बड़ी मांग है। निर्माण कार्य में प्रयुक्त होने वाली रेत के यहाँ असीम भण्डार है। कांच उद्योग में प्रयोग होने वाली बालू के निपेक्ष इतने बड़े है। कि सम्पूर्ण भारत की 80 प्रतिशत यही से पूर्ति हो सकती है। अनेक स्थानो में सिलिका की मात्रा 99.2 प्रतिशत है। कूडियों और प्यालियों के निर्माण में गोरा पत्थर कई स्थानों में प्रचुर मात्रा में मिलता हैं। इसका प्रयोग मृत्तिका शिल्प तथा दुर्गलनीय ईटों के उद्योग में होता है। इसके ज्ञात निक्षेपों का आंकलन 43 लाख टन किया गया है। बाँदा जनपद और समीपस्थ क्षेत्रों में एल्यूमीनियम आयस्क बाक्साइट के वृहद भण्डार का पता चला है। यह निक्षेप प्रतिवर्ष एक लाख टन एल्यूमीनियम उत्पादन की क्षमता वाले कारखाने को कम से कम 35 वर्षों तक अयस्क प्रदान कर सकता है।

बुन्देलखण्ड में पाये जाने वाले खनिजों में फोस्फोराइड, गैरिक जिप्सम, ग्लैकोनाइट, लौह अयस्क, अल्प मूल्य रत्न आदि है। सम्भावित खनिजों की सूची में तांबा, सीसा, निकिल, टिन, टंगस्टन, चांदी, सोना आदि है। बुन्देलखण्ड के एक बड़े भू-भाग चौरई में ग्रेनाइट चट्टाने पाई जाती है। यह चट्टाने अधिकतर रेडियो कर्मी यूरेनियम युक्त होती है तथा इसकी मात्रा 30 ग्राम प्रतिटन तक हो सकती है। ललितपुर में हुए सर्वे के द्वारा इस सम्भावना को बल मिला है। लौह अयस्क के भण्डार मानिकपुर (चित्रकूट) बेरवार (बेराट) ललितपुर में अनुमानतः 10 करोड टन खनिज के है। इसमें 35 से 67 प्रतिशत लौह प्राप्त है। जो स्पंज आयरन हेतु उपयोगी है। सोनरई (ललितपुर) में 400 मीटर से 1000 मीटर लम्बे तथा 1 से 3 मीटर मोटे ताम्र अयस्क भण्डार है जिनमें 0.5 प्रतिशत तांबा है। शीशे के बालू बरगढ़ (चित्रकूट) में अनुमानतः 5 करोड हैं। जो विभिन्न स्तरीय है। नरैनी (बाँदा) में स्वर्ण की प्राप्ति 2 ग्राम प्रतिटन है। बाक्साइड भण्डार बाँदा में 83 करोड़ टन अनुमानित है।

बुन्देलखण्ड में अनेक ऐतिहासिक धरोहर है जिसमें देवगढ़, जो ललितपुर जिले में स्थित है, दशावतार मन्दिर के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ अनेक मूर्तियाँ है, जिसमें नरसिंह, वामन की लघु आकृतियाँ, शेषशायी विष्णु की मूर्ति, देवगढ़ में जैन मूर्तियों का विशाल भण्डार है। इनका निर्माण नवीं शताब्दी में हुआ है। झांसी में रानी लक्ष्मीबाई का किला बना है जो कि सन् 1817 की संधि के अनुसार श्रीरामचन्द्र राव झांसी के राजा बनाये गये थे इस वंश मे गंगाधर राव सन 1838 ई0 में शासक बने। 1 जून सन् 1857 ई0 को झांसी में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह हुआ, जिसमें अंग्रेजो से मुकाबला करते हुए लक्ष्मीबाई वीरगति को प्राप्त हुई। आज भी यह ऐतिहासिक धरोहर सुरक्षित है।

चित्रकूट मर्यादा पुरुषोत्तम राम के वनवास से जुड़ा हुआ है। यहाँ सती अनुसुइया एवं महर्षि अत्रि का आश्रम, गुप्त गोदावरी, स्फटिकशिला एवं जानकी कुण्ड, हनुमानधारा, भरतकूप, भारत

मन्दिर, मुखारबिन्द, निर्मोही अखाडा आदि स्थान एतिहासिक धरोहर है। चित्रकूट जिले के राजापुर स्थान पर गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म स्थान माना जाता है।

चित्रकूट के विषय में कहा गया है कि -

चित्रकूट गिरि जहाँ प्रकृति प्रमुदाद्‌भत।
वनवासी श्रीराम रहे सीता लक्ष्मण युत।
हुआ जनकजा स्नान नीर से जो अति पावन।
जिसे लक्ष्य कर रचा गया धराधर धखन।
यह प्रभु पद रजमयी पुनीत प्रणम्य भूमि हैं।
रमेराम बुन्देलखण्ड यह रम्य भूमि हैं।

(अजमेरी जी)

अजेय दुर्ग कालिंजर बाँदा जनपद के मुख्यालय से दक्षिण पूर्व में 57 किलोमीटर की दूरी में एक पहाड़ी चोटी पर स्थित है। इस किले को जीतने के लिए शेरशाह सूरी ने गोलाबारी की थी, स्वतः जलकर खाक हो गया था। कालिंजर का उल्लेख वेद पुराण महाकाव्य तथा संस्कृत ग्रन्थों में तपस्यास्थल के रूप में प्राप्त है। सन् 249 ई. में हैहथवंशी कृष्णराज का शासन था। चौथीशती ई0 में यहाँ नागराजाओं की सत्ता थी। यह राजा शैव मतावलम्बी थे।

महोबा का नाम आल्हा, ऊदल से जुड़ा है जो बड़े ही वीर योद्धा थे। यहाँ ऐतिहासिक स्थलों में कीरतसागर, सूर्यमन्दिर, खकड़ामठ जैन तीर्थांकर, मनियादेव का मन्दिर, चण्डिका देवी का मन्दिर प्रसिद्ध है। यह स्थान पान की खेती के लिये भी जाना जाता है। यहाँ का देशावरी पान एक समय विदेशों में भी निर्यात हुआ करता था। शहर के आस-पास के क्षेत्रों में अनेक प्राचीन मन्दिर है।

बुन्देलखण्ड की राजनीति डाकू, लुटेरों से प्रभावित थी एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए लुटेरों को संरक्षण प्रदान किया जाता था। सिंधिया, होल्लकर के राजवंश पिंडारियों को संरक्षण देते थे। देशी राजाओं के मंत्री और सामंत भी इसी प्रकार लुटेरों को धोडा और तलवार प्रदान कर लूटपाट का एक भाग प्राप्त करते थे।

बुन्देलखण्ड में धार्मिक सहष्णुता थी। अधिकांश बुन्देले राजा वैष्णव थे किन्तु जैन सेठो और व्यापारियों ने स्थान-स्थान पर जैन मन्दिर बनवाये। मुसलमान आक्रमण के समय मन्दिर देवालय नष्ट हुए किन्तु मराठो और अंग्रेज कम्पनी ने इन्हें क्षति नहीं पहुंचाई। ईसाई मिशनरियों ने स्थान-स्थान पर गिर्जाघरों का निर्माण कराया।

सन् 1857 के उपरान्त अंग्रेज शासन ने डाकतार एवं रेलवे लाइन की व्यवस्था की। यह मुख्यतः सैनिक कार्यों में सहायतार्थ थी इनका अनुपात भी क्षेत्रफल एवं जनसंख्या की दृष्टि से न्यून था। विद्यालयों में अंग्रेजी शिक्षा तथा अस्पतालों में ऐलोपैथी का विकास हुआ। अदालतों में उर्दू तथा अंग्रेजी का प्रयोग प्रचलित हुआ बुन्देलखण्ड की भूमि पथरीली और कम उपजाऊ है। खनिज सम्पदा प्रचुर मात्रा में है। सिन्ध, पहुंज, धसान, केन, बागै, बेतवा, यमुना, चम्बल आदि नदियों से अक्सर बाढ़ तबाही मचाती है। वर्षा का औसत काफी कम है। सातों जिलों की आबादी लगभग 8232071 है। स्वतंत्रता के बाद हालात धीरे धीरे सुधर रहे है। साक्षरता साढ़े 54 फीसदी पहुंच गयी है। 1000 पुरुषों पर 865 महिलाओं का औसत है। बुन्देलखण्ड आर्थिक, सामाजिक, दृष्टि से पिछड़ा उपेक्षित था। वह अभी भी इसी स्थिति में है लेकिन वर्तमान में उत्तर प्रदेश की वर्तमान शासन के द्वारा बुन्देलखण्ड के विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण कदम उठाये गये हैं जिसका असर वर्तमान में चित्रकूट मण्डल में देखा जा सकता है। इस उपेक्षित क्षेत्र को विकसित करने के लिए तालाबों, नहरों, कृषि अनुसंधान, सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेडिकल कालेज, नदियों में पुल, राज्यमार्गों का निर्माण शासन प्रशासन को चुस्त व दुरुस्त करने तथा क्षेत्र को डकैत विहीन करने की अहम जरूरत है।

वर्तमान शासन ने उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड के सात जिलों के विकास के लिए विकास प्राधिकरण का गठन करके इस क्षेत्र को विकसित करने का वीणा उठाया है। इस विकास में शासन का अतुलनीय योगदान है।

(अ) बुन्देलखण्ड की भौगोलिक एवं आर्थिक स्थिति -

वर्तमान के आंकडों के आधार पर बुन्देलखण्ड की भौगोलिक आर्थिक स्थिति के बारे में सम्पूर्ण जानकारी निम्न सारिणी में प्रदर्शित की गई है -

सारणी - 1.1

बुन्देलखण्ड क्षेत्र की भौगोलिक आर्थिक स्थिति

	बाँदा	चित्रकूट	हमीरपुर	महोबा	झांसी	जालौन	ललितपुर	बुन्देलखण्ड
क्षेत्रफल (वर्ग किमी.)	4460	3164	4282	2884	5024	4565	5039	29418
जनसंख्या पुरुष	807325	428416	536756	406790	932825	786647	519410	4418169
जनसंख्या महिला	692928	372176	505618	302041	813890	669212	458037	3813902
कुल जनसंख्या	1500253	800592	1042374	708831	1746715	1455859	977447	8232071
ग्रामीण परिवारों की संख्या (गरीबी रेखा)	105663	78047	80834	37109	71962	102962	55215	531792
शहरी परिवारों की संख्या (गरीबी रेखा)	17721	2594	16029	6123	- - - - -	11171	10781	64419
जनसंख्या वृद्धि दर	18.49	34.33	29.98	21.8	17.85	19.39	23.23	29.47
जनसंख्या घनत्व	340	250	194	249	241	319	348	280
साक्षरता प्रतिशत	54.84	66.06	49.93	54.23	58.10	66.14	66.69	60.22

स्रोत-मण्डल पत्रिका चित्रकूट एवं झांसी 2007)

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि बुन्देलखण्ड का कुल क्षेत्रफल 29418 वर्ग किलोमीटर है। जिसमें सबसे अधिक क्षेत्रफल ललितपुर जिले का 5039 वर्ग किलोमीटर तथा सबसे कम 2884 वर्ग

बुन्देलखण्ड की जनपदवार जनसंख्या वृद्धि तथा साक्षरता की स्थिति
80
70
60
50
40
30
20
10
0
जनसंख्या वृद्धि
साक्षरता प्रतिशत
बाँदा
चित्रकूट
हमीरपुर
महोबा
झाँसी
जालौन
ललितपुर
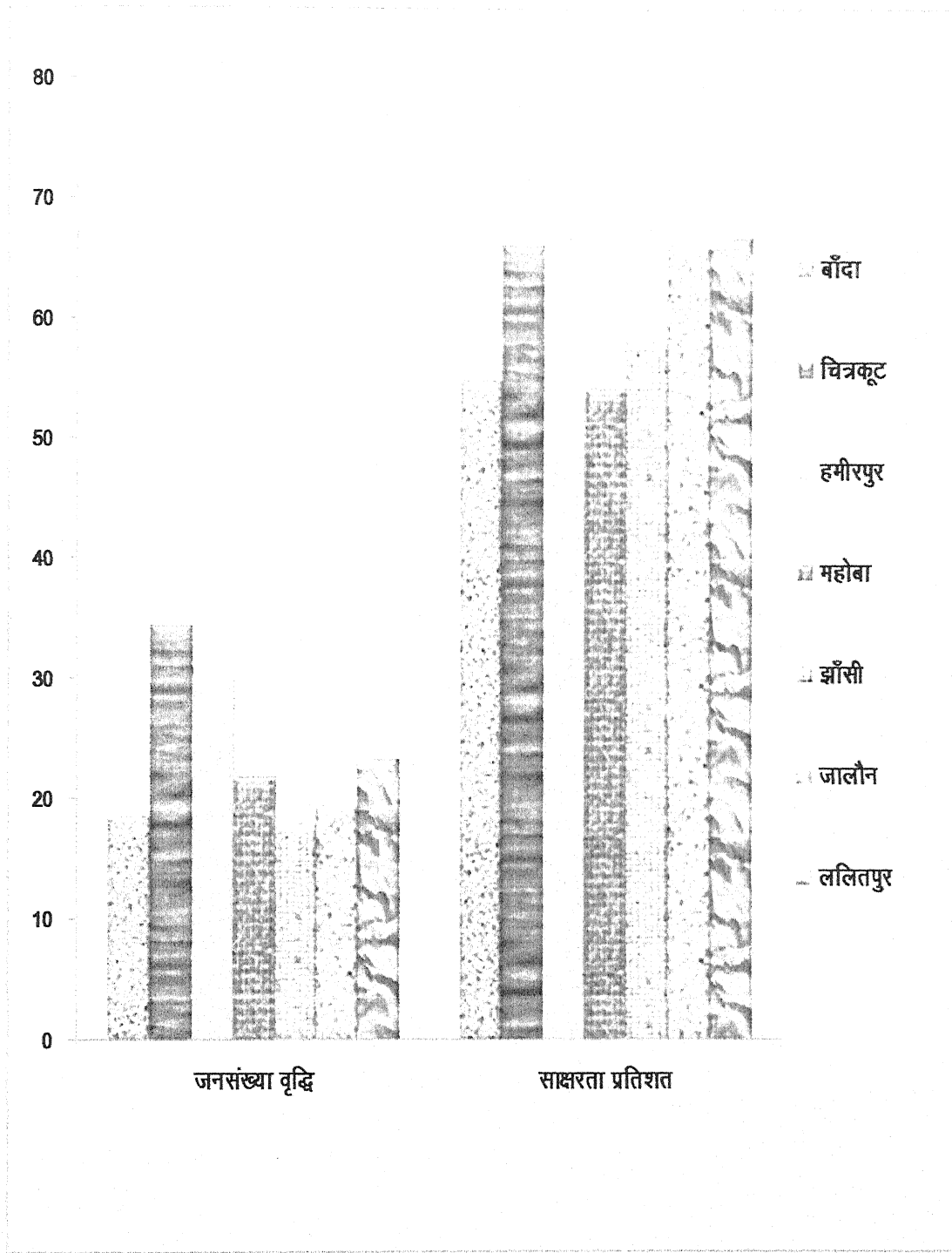
ग्राफ – 1.1

किलोमीटर महोबा का है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में पुरुषों की कुल संख्या 4418169 है, जिसमें सबसे अधिक पुरुष झांसी में 932825 है तथा सबसे कम पुरुष 406790 महोबा में है। इस क्षेत्र में महिलाओं की कुल संख्या 3813902 है जिसमें सबसे अधिक महिलाएं झांसी में 813890 है तथा सबसे कम महोबा में 302041 है। इस प्रकार क्षेत्र की कुल जनसंख्या 8232071 है जिसमें सबसे अधिक जनसंख्या झांसी की 1746715 है तथा सबसे कम जनसंख्या महोबा की 708831 है। बुन्देलखण्ड में गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वालों ग्रामीण परिवारों की कुल संख्या 531792 है, जिसमें सबसे अधिक बाँदा में ऐसे परिवार 105663 है तथा सबसे कम ऐसे परिवार महोबा में 37109 है शहरी परिवारों की संख्या जो गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं कुल 64419 है, जिसमें बसे अधिक ऐसे परिवार बाँदा में 17721 है तथा सबसे कम ऐसे परिवार महोबा में 6123 है। झांसी जिले में गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले शहरी परिवारों की संख्या शून्य है। क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि दर कुल 29.47 है जिसमें सबसे अधिक दर चित्रकूट में 34.33 है तथा सबसे कम झांसी में 17.85 है। क्षेत्र का जनसंख्या घनत्व 280 है जिसमें सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व ललितपुर में 348 है तथा सबसे कम जनसंख्या घनत्व हमीरपुर में 194 है बुन्देलखण्ड क्षेत्र में साक्षरता प्रतिशत 60.22 है, जिसमें सबसे अधिक जनसंख्या साक्षरता प्रतिशत ललितपुर में 66.69 तथा सबसे कम हमीरपुर में 49.93 है।

(ब) बुन्देलखण्ड की वर्तमान राजनैतिक स्थिति -

बुन्देलखण्ड क्षेत्र की राजनैतिक स्थिति की जानकारी नीचे की सारिणी में दी गई है -

सारणी - 1.2

वर्तमान बुन्देलखण्ड क्षेत्र की राजनैतिक स्थिति

	बाँदा	चित्रकूट (बाँदा में सम्मिलित)	हमीरपुर	महोबा हमीरपुर में सम्मिलित	झांसी	जालौन	ललितपुर झांसी में सम्मिलित)	बुन्देलखण्ड
लोकसभा	1	-	1	-	1	1	-	4
विधानसभा	4	2	3	2	4	4	2	21
तहसील	4	2	4	3	5	5	3	26
सामुदायिक	8	5	7	4	8	9	6	47
विकासखण्ड								
न्याय पंचायत	71	47	59	39	64	81	48	409
ग्राम सभा	437	330	314	247	437	564	340	2669
कुल ग्राम	694	654	627	521	933	1151	778	5358
नगर एवं	8	3	7	5	18	10	4	55
नगर समूह								
नगरपालिका	2	1	3	2	6	4	1	19
नगरपंचायत	6	2	4	3	7	6	3	31
उप नगर पंचायत	-	-	-	-	2	-	-	2
छावनी क्षेत्र	-	-	-	-	2	-	-	2

मण्डल पत्रिका चित्रकूट एवं झांसी "वही"

उपर्युक्त सारिणी से स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सात जिलों बाँदा, चित्रकूट, हमीरपुर, महोबा, झांसी, ललितपुर तथा जालौन आते हैं। इन जिलों में 4 लोक सभा सीटें - बाँदा, चित्रकूट, हमीरपुर, महोबा, झांसी-ललितपुर तथा जालौन हैं। बुन्देलखण्ड में 21 विधान सभा सीटें हैं। बाँदा जिले में बाँदा, नरैनी, बबेरू, तिन्दवारी चित्रकूट जिले में - कर्वी, मऊ-मानिकपुर, हमीरपुर जिले में हमीरपुर, मौदहा, राठ, महोबा जिले में महोबा, चरखारी, झांसी जिले में - झांसी, बबीना, मऊरानीपुर, गरौठा, जालौन जिले में - उरई, जालौन, माधौगढ़, कालपी, कोंच ललितपुर जिले में - ललितपुर, महरौनी हैं।

बुन्देलखण्ड में 26 तहसीलें है बाँदा जिले में चार-बाँदा, अतर्रा, नरैनी, बबेरू चित्रकूट जिले में दो - कर्वी, मऊ-मानिकपुर, महोबा जिले में तीन - महोबा, कुलपहाड, चरखारी, हमीरपुर जिले में चार - हमीरपुर, राठ, मौदहा, सरीला। जालौन में चार - जालौन, उरई, कोंच, कालपीं झांसी जिले में पांच- झांसी, मोंठ, मऊरानीपुर, गरौठा तथा टहरोली। ललितपुर जिले में तीन - ललितपुर, महरौनी तथा तालवेहट। सातों जिलों में एक-एक जिला पंचायत गठित है। सामुदायिक विकासखण्ड की संख्या कुल 47 है। जालौन में सबसे अधिक 9 तथा महोबा में सबसे कम 4 विकासखण्ड हैं। न्यायपंचायतों की कुल संख्या 409 है सबसे अधिक न्याय पंचायतें जालौन में 81 तथा सबसे कम महोबा में 39 हैं। ग्राम सभाओं की कुल संख्या 2669 है। जिसमें सबसे अधिक ग्राम सभायें जालौन में 564 तथा सबसे कम महोबा में 247 हैं। बुन्देलखण्ड में कुल ग्रामों की संख्या 5358 है। जिसमें सबसे अधिक ग्राम जालौन में 1151 तथा सबसे कम महोबा में 521 है। नगर तथा नगर समूहों की संख्या कुल 55 है जिसमें सबसे अधिक नगर झांसी में 18 तथा सबसे कम चित्रकूट मे 3 है। नगर पालिकाओं की कुल संख्या 19 हैं जिसमें सबसे अधिक नगरपालिकाएं झांसी में 6 तथा सबसे कम चित्रकूट में तथा ललितपुर में भी 1-1 है। नगर पंचायतों की कुल संख्या 31 है। जिसमें सबसे अधिक नगर पंचायतें झांसी में 7 तथा सबसे कम चित्रकूट में 2 हैं उपनगर पंचायतों की संख्या कुल 2 है। जो झांसी जिले में स्थापित है तथा 2 छावनीयाँ भी झांसी में ही स्थापित है।

(स) बुन्देलखण्ड की वर्तमान शैक्षिक स्थिति -

बुन्देलखण्ड शैक्षिक रूप से अभी काफी पिछड़ा क्षेत्र है। इसके लिये यहाँ निर्धनता तथा यहां की भौगोलिक, राजनैतिक स्थिति इसके लिये जिम्मेदार कारक है पूरे क्षेत्र की शिक्षा की स्थिति को स्पष्ट रूप से समझने के लिये यहाँ की प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा सम्बन्धी वृहत जानकारी आगे सारिणियों के द्वारा स्पष्ट की जा रही है -

(i) बुन्देलखण्ड में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति -

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति निम्न सारिणी से स्पष्ट है -

सारणी - 1.3

बुन्देलखण्ड की जिलेवार परिषदीय प्राथमिक शिक्षा की स्थिति

	बाँदा	चित्रकूट	हमीरपुर	महोबा	झांसी	जालौन	ललितपुर	बुन्देलखण्ड
विद्यालय	1240	835	761	628	1115	1248	876	6703
छात्र	120535	70077	56718	51108	86162	74946	79416	538962
छात्रा	115953	69692	59161	50800	85214	74995	79041	534856
कुल विद्यार्थी	236488	139769	115879	101908	171376	149941	158457	1073818
शिक्षक	2008	745	1420	1112	2561	2436	1284	11566
शिक्षामित्र	2138	1323	869	745	1724	985	1476	9260
कुल शिक्षक शिक्षामित्र सहित	4146	2068	2289	1857	4285	3421	2760	20826
शिक्षक -छात्र अनुपात	1:57	1:57	1:51	1:55	1:40	1:44	1:57	1:52
शिक्षक-छात्र अनुपात (बिना शिक्षामित्र)	1:118	1:188	1:82	1:92	1:67	1:62	1:123	1:93
क्लासरूम	5825	3664	3905	3127	6248	5870	4350	32589
संकुल	72	49	65	41	71	86	49	433
वंचित छात्र	1067	759	493	504	657	606	696	4782
अनुसूचित विद्यार्थी	67249	45943	43989	29389	79806	83619	42156	392151

स्रोत - (सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत जिला कार्ड विवरण सूची)

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि बुन्देलखण्ड की जिलेवार परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों की कुल संख्या 6703 है जिसमें सबसे अधिक विद्यालय जालौन में 1248 तथा सबसे कम महोबा में 628 है। पूरे बुन्देलखण्ड में परिषदीय विद्यालयों में कक्षा पांच तक अध्ययनरत कुल छात्रों की संख्या 538962 है। जिसमें सबसे अधिक छात्र बाँदा में 120535 तथा सबसे कम छात्र महोबा में 51108 है। ऐसी ही छात्राओं की कुल संख्या 534856 है, जिसमें सबसे अधिक छात्राएं बाँदा में 115953 तथा सबसे कम छात्राएं महोबा में 50800 है। इन प्राथमिक विद्यालयों में कुल विद्यार्थियों की संख्या 1073818 है, जिसमें सबसे

बुन्देलखण्ड की जिलेवार परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति
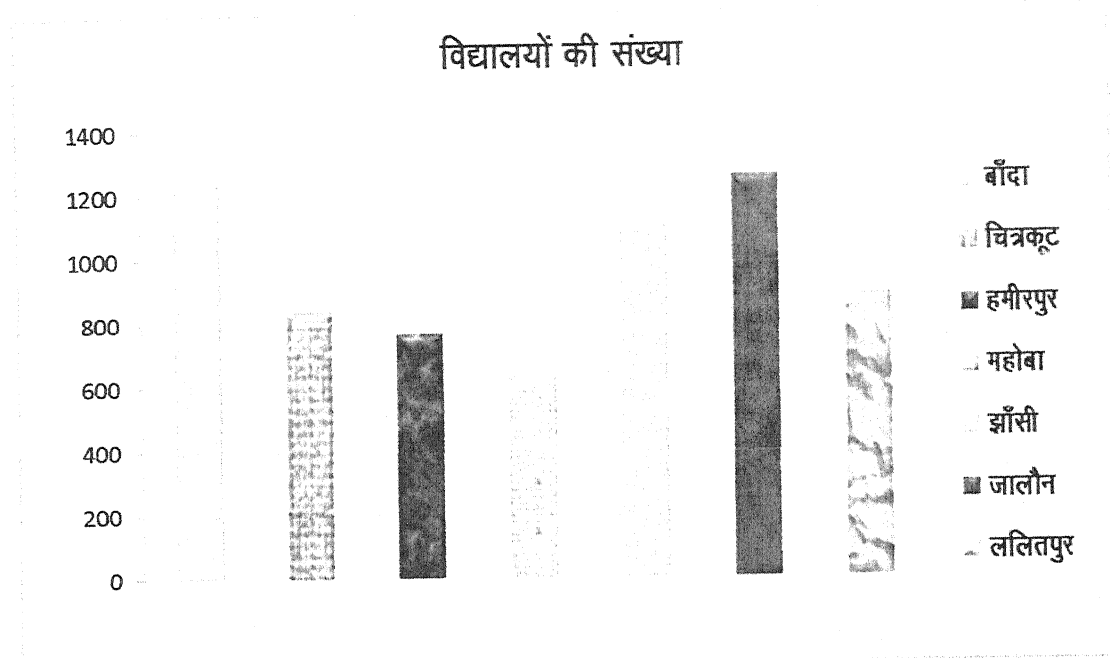
ग्राफ – 1.3.1

बुन्देलखण्ड की जिलेवार परिषदीय प्राथमिक विद्यार्थियों की स्थिति
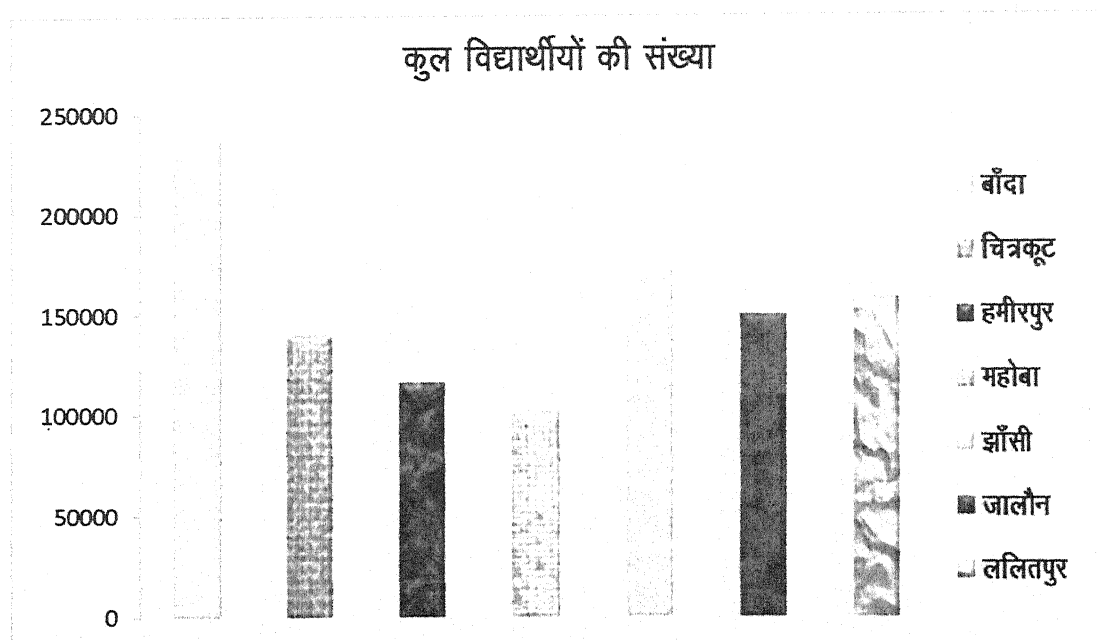
ग्राफ – 1.3.2

अधिक बाँदा में 236488 तथा सबसे कम महोबा में 101908 है।

उपर्युक्त सारणी द्वारा स्पष्ट है कि पूरे बुन्देलखण्ड में परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में कुल शिक्षकों की संख्या 11566 है, जिसमें सबसे अधिक शिक्षक झांसी में 2561 तथा सबसे कम चित्रकूट में 745 है। इन विद्यालयों में शिक्षा मित्रों की कुल संख्या 9260 है जिसमें सबसे अधिक शिक्षामित्र बाँदा में 2138 तथा सबसे कम महोबा में 745 है। कुल शिक्षक (शिक्षा मित्र सहित) संख्या 20826 है, जिसमें सबसे अधिक झांसी में 4285 तथा सबसे कम महोबा में 1857 है। तथा शिक्षक छात्र अनुपात 1 : 52 है, जिसमें ललितपुर, बाँदा और चित्रकूट में एक समान 1 : 57 है तथा सबसे कम शिक्षक छात्र अनुपात झांसी में 1 : 40 है। शिक्षक-छात्र अनुपात बिना शिक्षा मित्र के कुल 1 : 93 है। जिसमें सबसे अधिक चित्रकूट में 1 : 188 तथा सबसे कम जालौन में 1 : 62 है।

उपर्युक्त सारणी से यह भी स्पष्ट है कि पूरे बुन्देलखण्ड में परिषदीय प्राथमिक विद्यालय में कक्षा-कक्षों की संख्या 32589 है। जिसमें सबसे अधिक कक्षा कक्ष झांसी में 6248 तथा सबसे कम महोबा में 3127 है। यहाँ कुल संकुल की संख्या 433 है। जिसमें सबसे अधिक संकुल जालौन में 86 तथा सबसे कम महोबा में 41 हैं इस क्षेत्र में वंचित छात्रों की कुल संख्या 4782 है जिसमें सबसे अधिक बाँदा में 1067 तथा सबसे कम हमीरपुर में 493 है। कुल अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की संख्या 39215 है। जिसमें सबसे अधिक अनुसूचित जाति के छात्र जालौन में 83619 तथा सबसे कम महोबा में 29389 है।

बुन्देलखण्ड में परिषदीय विद्यालयों के साथ ही 2031 प्राइवेट प्राथमिक विद्यालय भी हैं, जिसमें कुल 334583 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं इनमें 193094 छात्र तथा 141489 छात्राएँ हैं। इस क्षेत्र में परिषदीय उच्च प्राथमिक शिक्षा की स्थिति निम्न सारणी से स्पष्ट है -

सारणी - 1.4

बुन्देलखण्ड में जिलेवार परिषदीय उच्च प्राथमिक शिक्षा की स्थिति

	बाँदा	चित्रकूट	हमीरपुर	महोबा	झांसी	जालौन	ललितपुर	बुन्देलखण्ड
विद्यालय	477	327	283	247	493	397	359	2583
छात्र संख्या	25854	19430	15987	13542	27052	19292	22113	143270
छात्रा संख्या	23216	15932	14891	10775	22709	17907	20086	125516
कुल विद्यार्थी	49070	35362	30878	24317	49761	37199	42199	268786
शिक्षक शिक्षा-मित्र सहित	1268	823	841	515	1174	1260	805	6685
शिक्षक-छात्र अनुपात	1:39	1:43	1:37	1:47	1:42	1:30	1:52	1:40
वंचित विद्यार्थी	362	236	157	200	221	215	242	1633
अनुसूचित विद्यार्थी	14352	11761	12989	7043	23713	21785	11614	103257

मण्डल पत्रिका चित्रकूट एवं झांसी "वही"

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत आने वाले सात जिलों में उच्च प्राथमिक शिक्षा प्रदान कर रहे कुल परिषदीय विद्यालय 2583 हैं, जिसमें सबसे अधिक विद्यालय झांसी में 493 तथा सबसे कम महोबा में 247 हैं। इन विद्यालयों में छात्रों की कुल संख्या 143270 है। जिसमें सबसे अधिक छात्र झांसी में 27052 तथा सबसे कम महोबा में 1354 हैं तथा छात्राओं की कुल संख्या 125516 है, जिसमें सबसे अधिक छात्राएँ बाँदा में 23216 तथा महोबा में सबसे कम 10775 है। इन स्कूलों में कुल विद्यार्थियों की संख्या 268786 है जिसमें सबसे अधिक विद्यार्थी झांसी में 49761 है तथा सबसे कम महोबा में 24317 है। इन विद्यालयों में कुल शिक्षक-शिक्षा मित्र सहित 6685 है जिसमें सबसे अधिक जालौन में 1260 शिक्षक तथा सबसे कम महोबा में 515 है। इस स्थिति में परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक-छात्र अनुपात 1 : 40 है, जिसमें सबसे अधिक ललितपुर में 1 : 52 तथा सबसे कम जालौन में 1 : 30 है। इन स्कूलों में वंचित विद्यार्थियों की कुल संख्या 1633 है, जिसमें सबसे अधिक

बुन्देलखण्ड में जिलेवार परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यार्थियों की स्थिति
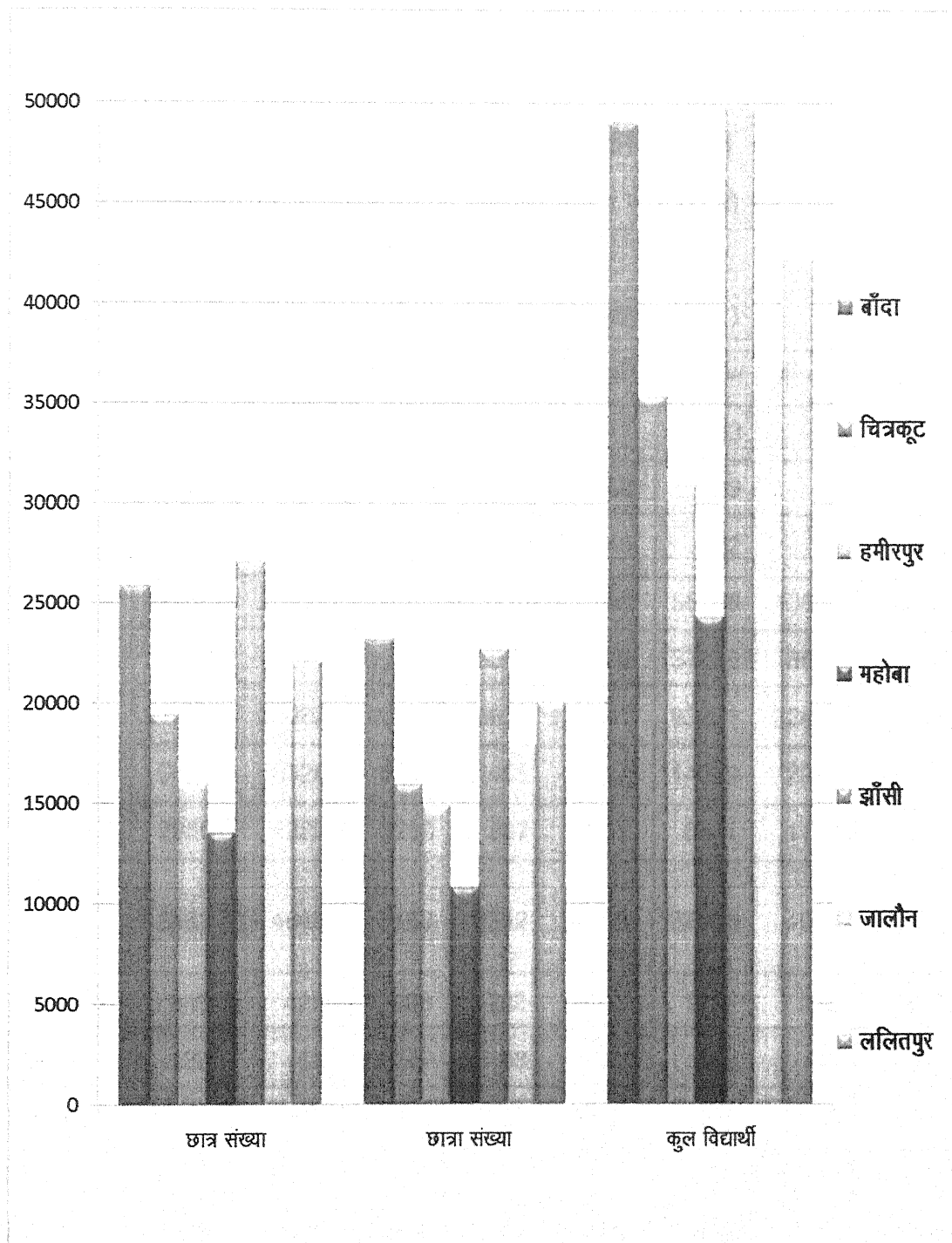
ग्राफ – 1.4.1

बाँदा में 362 सबसे कम महोबा में 157 है। अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की कुल संख्या 103257 है। जिसमें सबसे अधिक अनुसूचित जाति के छात्र झांसी में 23713 तथा सबसे कम महोबा में 7043 है।

परिषदीय विद्यालयों के अतिरिक्त बुन्देलखण्ड क्षेत्र में उच्च प्राथमिक शिक्षा प्रदान कर रहे प्राइवेट स्कूलों की कुल संख्या689 है। इन विद्यालयों में कुल विद्यार्थी संख्या 157325 है जिनमें 95293 छात्र तथा 62032 छात्राएँ हैं।

(ii) बुन्देलखण्ड की वर्तमान माध्यमिक शिक्षा की स्थिति -

बुन्देलखण्ड में माध्यमिक शिक्षा की स्थिति निम्न तालिका से स्पष्ट हो रही है -

सारणी - 1.5

बुन्देलखण्ड में माध्यमिक शिक्षा की स्थिति (2007)

	बाँदा	चित्रकूट	हमीरपुर	महोबा	झांसी	जालौन	ललितपुर	बुन्देलखण्ड
बालक विद्यालय	66	44	46	29	112	123	23	443
बालिका विद्यालय	21	7	15	8	28	29	9	117
कुल विद्यालय	87	51	61	37	140	152	32	560
छात्र	42268	21252	26262	10328	88262	56136	13839	258347
छात्रा	9548	8710	17737	6304	40079	37085	8615	128078
कुल विद्यार्थी	51816	29962	43999	16632	128341	93221	22454	386425
अनुसूचित छात्र	9476	3326	5865	2455	27777	14022	2970	65891
अनुसूचित छात्रा	2986	1322	3298	897	10331	8541	1117	28492
कुल अनुसूचित विद्यार्थी	12462	4648	9163	3352	38108	22563	4087	94383
शिक्षक	949	425	808	288	643	1735	249	5097
शिक्षिका	182	42	147	98	577	699	66	1811
कुल शिक्षक	1131	467	955	386	1220	2434	315	6908
प्रतिशिक्षक विद्यार्थियों की संख्या	1:46	1:64	1:46	1:43	1:105	1:38	1:71	1:56

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि बुन्देलखण्ड में माध्यमिक शिक्षा प्रदान कर रहे कुल बालकों के विद्यालयों की संख्या 443 है, जिसमें सबसे अधिक ऐसे विद्यालय जालौन में 123 तथा सबसे कम

बुन्देलखण्ड में जनपदवार माध्यमिक विद्यालयों की स्थिति (2007)
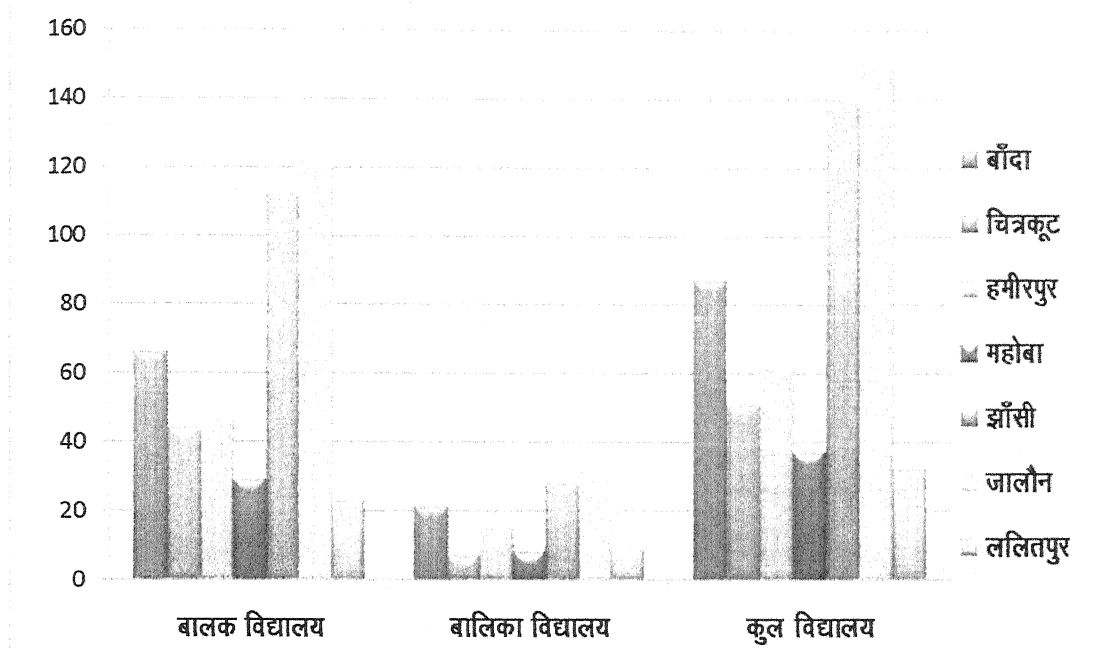
ग्राफ – 1.5.1

बुन्देलखण्ड में जनपदवार माध्यमिक शिक्षा के विद्यार्थियों की स्थिति (2007)
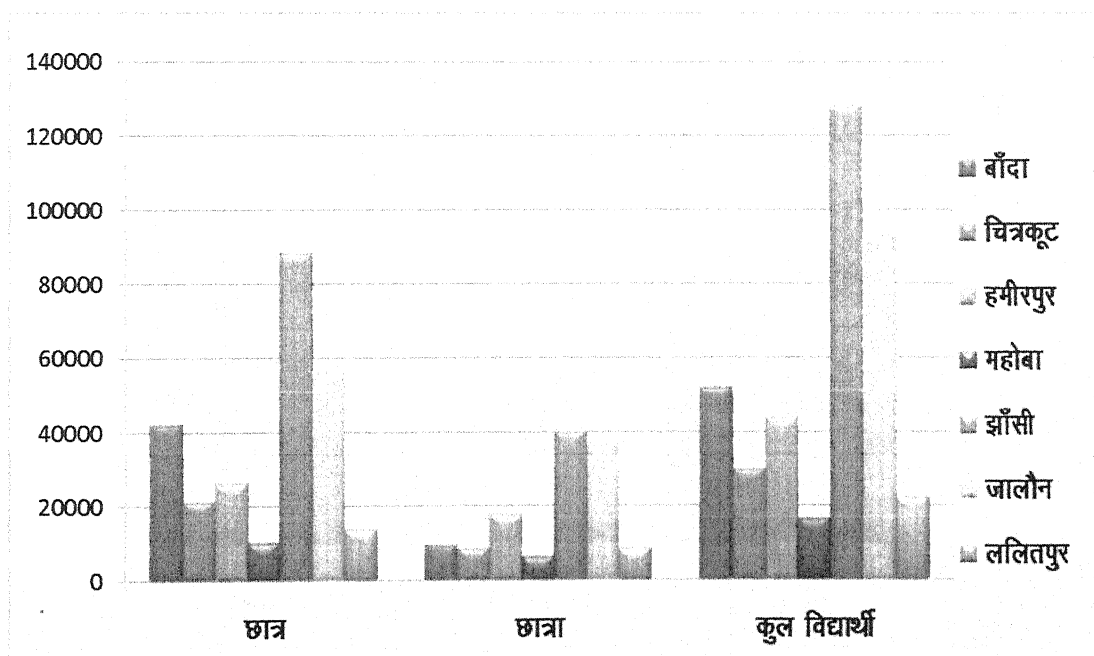
ग्राफ – 1.5.2

बुन्देलखण्ड में जनपदवार माध्यमिक शिक्षकों की स्थिति (2007)
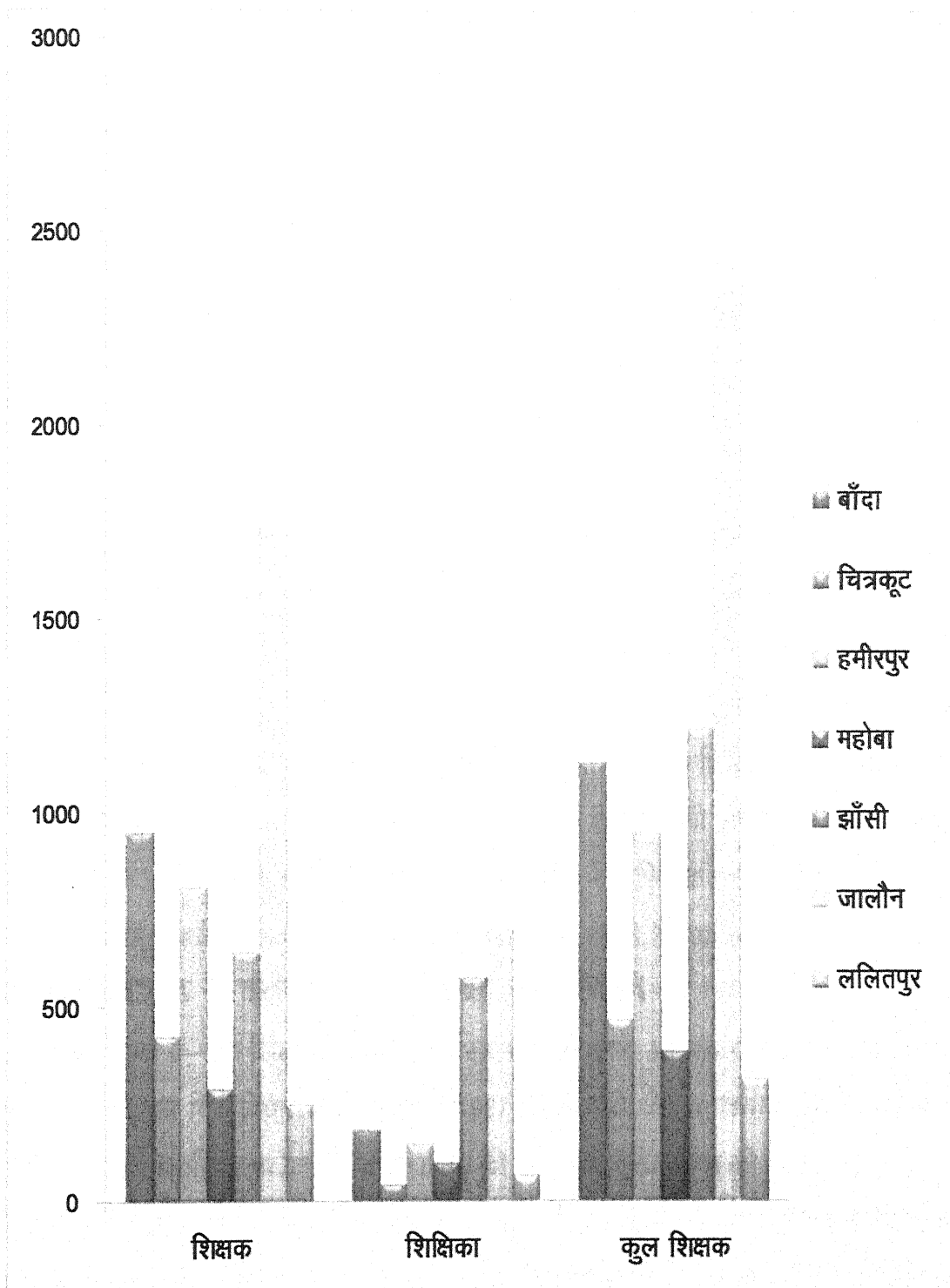
ग्राफ – 1.5.3

ललितपुर में 23 हैं इसी तरह से बालिकाओं के विद्यालयों की कुल संख्या इस क्षेत्र में 117 है। जिसमें सबसे अधिक बालिका विद्यालय जालौन में 29 तथा सबसे कम चित्रकूट में 7 हैं इस प्रकार इस क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा प्रदान कर रहे कुल विद्यालयों की संख्या 560 है जिसमें सबसे अधिक विद्यालय जालौन में 152 तथा सबसे कम ललितपुर में 32 हैं इन विद्यालयों में कुल नामांकित छात्रों की संख्या 258347 है जिसमें सबसे अधिक छात्र झांसी में 88262 हैं तथा सबसे कम ललितपुर में 13839 है इसी तरह कुल छात्राओं की संख्या 128078 है जिसमें सबसे अधिक छात्राएँ झांसी में 40079 तथा सबसे कम ललितपुर में 8615 है इस प्रकार माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे कुल विद्यार्थियों की संख्या 386425 पूरे बुन्देलखण्ड क्षेत्र में है जिसमें सबसे अधिक विद्यार्थी झांसी में 128341 तथा सबसे कम ललितपुर में 22454 है। अनुसूचित जाति के छात्रों की संख्या यहाँ कुल 65891 है, जिसमें सबसे अधिक अनुसूचित जाति के छात्र झांसी में 27777 तथा सबसे कम महोबा में 2455 है। अनुसूचित जाति की छात्राओं की संख्या यहाँ कुल 28492 हैं जिसमें सबसे अधिक अनूसचित जाति छात्राएँ झांसी में 10331 तथा सबसे कम ललितपुर में 1117 है। इस प्रकार इस क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की कुल संख्या 94383 है, जिसमें सबसे अधिक अनुसूचित जाति के विद्यार्थी झांसी में 38108 तथा सबसे कम चित्रकूट में 4648 है, माध्यमिक शिक्षा से जुड़े शिक्षकों की कुल संख्या 5097 है जिसमें सबसे अधिक शिक्षक जालौन में 1735 तथा सबसे कम ललितपुर में 249 है। ऐसी ही शिक्षिकाओं की कुल संख्या 1811 है जिसमें सबसे अधिक जालौन में 699 शिक्षिकाएँ तथा सबसे कम चित्रकूट में 42 शिक्षिकाएँ है। अतः पूरे क्षेत्र में कुल माध्यमिक शिक्षकों की संख्या 6908 है, जिसमें सबसे अधिक 2434 जालौन में तथा सबसे कम 315 ललितपुर में हैं शिक्षक छात्र अनुपात पूरे क्षेत्र का 1 : 56 है, जिसमें सबसे अधिक झांसी में 1 : 105 है, जिसमें सबसे अधिक झांसी में 1 : 38 है।

(iii) बुन्देलखण्ड में वर्तमान उच्च शिक्षा की स्थिति -

बुन्देलखण्ड के सात जिलों की उच्च शिक्षा प्रारम्भ में भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय आगरा से संचालित थी। इस विश्वविद्यालय की स्थापना 1927 में की गयी थी। तत्पश्चात 1965 में छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर की स्थापना की गयी तथा बुन्देलखण्ड की उच्च शिक्षा व्यवस्था कानपुर विश्वविद्यालय से संचालित होने लगी। वर्तमान में इस क्षेत्र की उच्च शिक्षा बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी से संचालित है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना सन् 1975 में हुई थी। स्थापना के समय इस विश्वविद्यालय का स्वरूप पूर्णतया सम्बद्धकारी था तथा विश्वविद्यालय से केवल 17 महाविद्यालय सम्बद्ध थे। सर्वप्रथम 1986 में विश्व विद्यालय के शैक्षणिक परिसर में निम्नांकित चार विभागों की स्थापना हुई।

1. गणित एवं कम्प्यूटर अनुप्रयोग विभाग
2. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
3. व्यापार प्रशासन विभाग
4. बैंकिग अर्थशास्त्र एवं वित्त विभाग

इन विभागों की स्थापना के पश्चात विश्व विद्यालय का स्वरूप सम्बद्धकारी तथा आवासीय हो गया। कुछ समय पश्चात निम्नांकित तीन और विभागों की स्थापना की गयी।

1. भूगर्भ विज्ञान विभाग
2. पर्यटन एवं होटल प्रबन्धन विभाग
3. फूड टैक्नालॉजी विभाग

वर्तमान में विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों की संख्या 54 है जिनका वर्गीकरण निम्नवत है -

सारणी - 1.6

बुन्देलखण्ड में महाविद्यालयों की स्थिति

क्रमांक	महाविद्यालय का प्रकार	संख्या
1.	सहायता प्राप्त महाविद्यालय	13
2.	शासकीय महाविद्यालय	13
3.	स्ववित्त पोषित महाविद्यालय	27
4.	घटक महाविद्यालय (रानी लक्ष्मीबाई मेडिकल कालेज झांसी	01
	कुल	54

(स्रोत-बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय झांसी एकेडमिक बुलिटिन 2005-06)

सत्र 2005-06 विश्व विद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के 81660 नियमित छात्र एवं 10251 व्यक्तिगत छात्र के रूप में परीक्षा में सम्मिलित हुए।

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के कैम्पस में आज 205 कोर्सेस संचालित हो रहे हैं जो निम्नवत हैं-

1. इन्स्टीट्यूट आफ बेसिक साइन्स — 11
2. इन्स्टीट्यूट आफ एटलाइड साइंस — 06
3. इन्स्टीट्यूट आफ फूड साइंस टेक्नालॉजी — 02
4. जे.सी.बोस इन्स्टीट्यूट आफ लाइफ साइंस — 15

बुन्देलखण्ड में महाविद्यालयों की स्थिति

ग्रफ 1.6
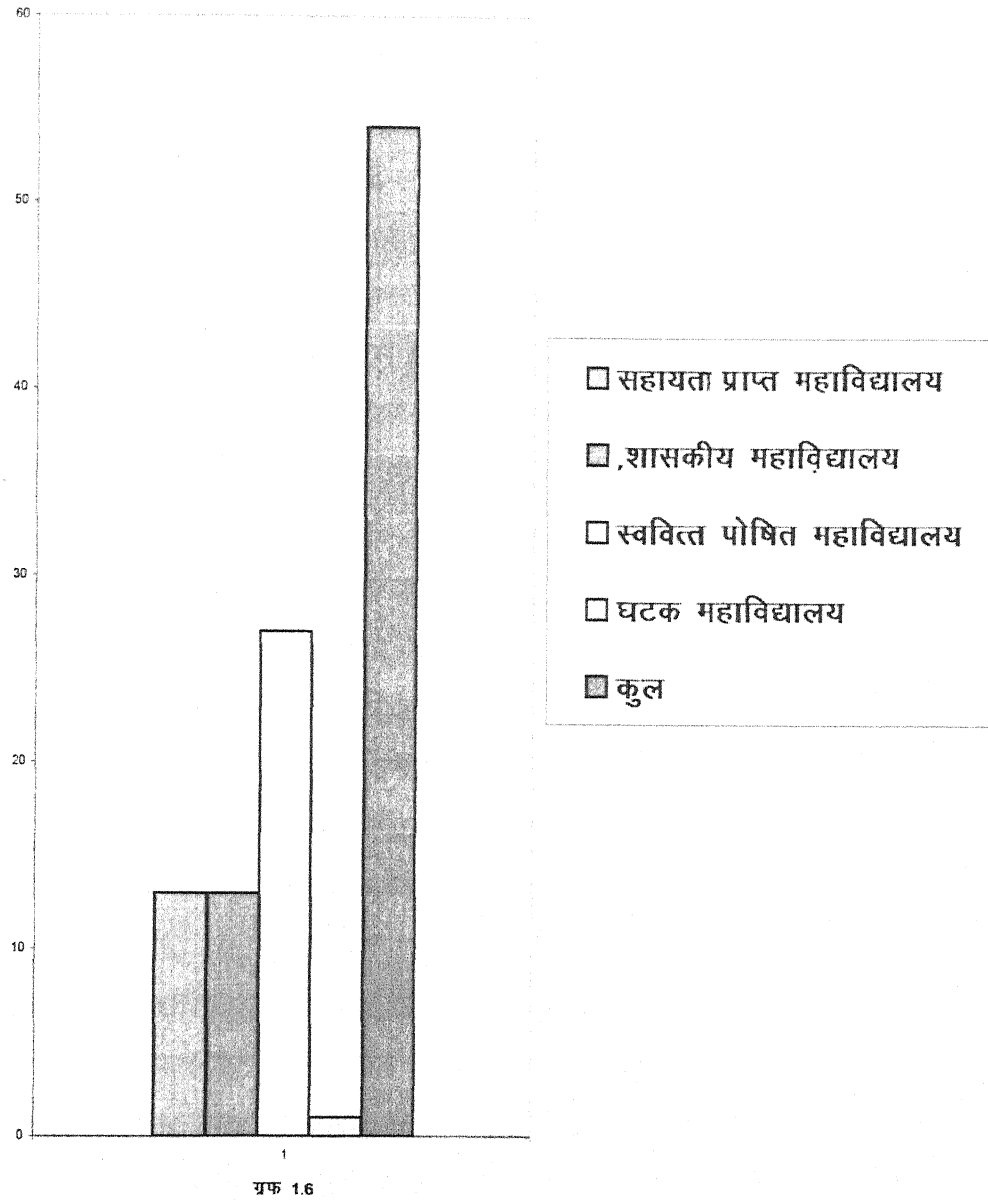
5.	इन्स्टीट्यूट आफ फारमेशी	06
6.	डॉ. रंगनाथन इन्स्टीट्यूट आफ लाइब्रेरी एण्ड इन्फारमेसन साइंस	02
7.	इन्स्टीट्यूट आफ कम्प्यूटर एण्ड सिस्टम साइंस	05
8.	इन्स्टीट्यूट आफ होम साइंस	04
9.	इन्स्टीट्यूट आफ इकोनॉमिक्स एण्ड फाइनेन्स	09
10.	इन्स्टीट्यूट आफ मैनेजमेन्ट स्ट्डीज	08
11.	बाबू जगजीवन राम इन्स्टीट्यूट आफ लॉ	15
12.	डॉ. के.आर. नारायनन इन्स्टीट्यूट आफ इन्टरनेशनल स्ट्डीज	01
13.	भास्कर इन्स्टीट्यूट आफ मास कम्यूनीकेशन एण्ड जनरलिज्म	04
14.	डॉ. भीमराव अम्बेदकर इन्स्टीट्यूट आफ सोसल साइंस	04
15.	इन्स्टीट्यूट आफ वोकेशनल स्ट्डीज	04
16.	इन्स्टीट्यूट आफ टूरिज्म एण्ड होटल मैनेजमेन्ट	08
17.	पं. रामनारायण इन्स्टीट्यूट आफ आयुर्वेद एण्ड अल्ट्रानिट मेडिकल एजूकेशन एण्ड रिसर्च	05
18.	इन्स्टीट्यूट आफ वायो मेडिकल साइंस	05
19.	इन्स्टीट्यूट आफ बुद्धिज्म स्ट्डीज	02
20.	इन्स्टीट्यूट आफ फोरेन्सिक साइन्स एण्ड क्रिमिनोलॉजी	06
21.	मेजर ध्यान चन्द्र इन्स्टीट्यूट आफ फिजिकल एजूकेशन	02
22.	इन्स्टीट्यूट आफ लैग्वेज	14
23.	इन्स्टीट्यूट आफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नालॉजी	08
24.	इन्स्टीट्यूट आफ आर.टी. ट्रेक्टर एण्ड टाउन प्लानिंग	02
25.	इन्स्टीट्यूट आफ फैशन टेक्नालॉजी	01
26.	इन्स्टीट्यूट आफ इनफारमेशन टेक्नालॉजी	03
27.	इन्स्टीट्यूट आफ एग्रीकल्चर साइंस	12
28.	इन्स्टीट्यूट आफ मियूजिक एण्ड फाइन आर्ट	10
29.	इन्स्टीट्यूट आफ एजूकेशन	04
30.	इन्स्टीट्यूट आफ रिहैविलिटेशन	01
31.	इन्स्टीट्यूट आफ अर्थ साइंस	03
32.	इन्स्टीट्यूट आफ एडल्ट कान्टीनिविंग एजूकेशन स्क्सपेन्सन एण्ड फील्ड आउटरीच	13
33.	वीरांगना झलकारी बाई इन्स्टीट्यूट आफ वोमेन स्टडीज एण्ड डेबलपमेन्ट	11

बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों में 4 संकाय संचालित हो रही हैं।

(I) कला वर्ग (II) विज्ञान वर्ग (III) कामर्स (IIII) कृषि वर्ग

उपर्युक्त संकायों में बुन्देलखण्ड क्षेत्र के छात्र/छात्रायें अध्ययन करते हैं।

बुन्देलखण्ड की उच्च शिक्षा की स्थिति को नीचे की सारिणी में और वृहत तरीकें से प्रस्तुत किया गया है -

सारिणी -1.7

बुन्देलखण्ड में उच्च शिक्षा की स्थिति (2007)

		बाँदा	चित्रकूट	हमीरपुर	महोबा	झाँसी	जालौन	ललितपुर	बुन्देलखण्ड
स्नातक महाविद्यालय	सहशिक्षा	5	3	2	-	10	10	3	33
	बालिका	-	-	1	-	3	3	-	7
परास्नातक महाविद्यालय	सहशिक्षा	2	-	2	2	4	5	1	16
	बालिका	1	-	-	-	1	-	-	2
कुल महाविद्यालय		8	3	5	2	18	18	4	58
स्नातक विद्यार्थी	छात्र	12016	1308	4971	1771	14635	4939	3578	43218
	छात्रा	5432	626	2430	1213	8434	4092	3435	25662
परास्नातक विद्यार्थी	छात्र	2154	-	472	213	5063	1051	563	9516
	छात्रा	1077	-	198	150	2830	1294	125	5674
कुल विद्यार्थी		20679	1934	8071	3347	30962	11376	7701	84070
स्नातक शिक्षक	पुरुष	59	10	51	19	131	93	38	401
	महिला	9	-	18	4	72	59	5	167
परास्नातक शिक्षक	पुरुष	115	-	30	1	22	74	5	247
	महिला	25	-	6	1	9	13	7	61
कुल शिक्षक		208	10	105	25	234	239	55	876
शिक्षक-छात्र अनुपात		1:99	1:193	1:77	1:134	1:132	1:48	1:140	1:96

(स्रोत-मण्डल पत्रिका चित्रकूट एवं झांसी "वही")

उपुर्यक्त सारणी से स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड के सातों जिलो में सह शिक्षा प्रदान

बुन्देलखण्ड में स्थित जिलेवार महाविद्यालयों की स्थिति (2006)
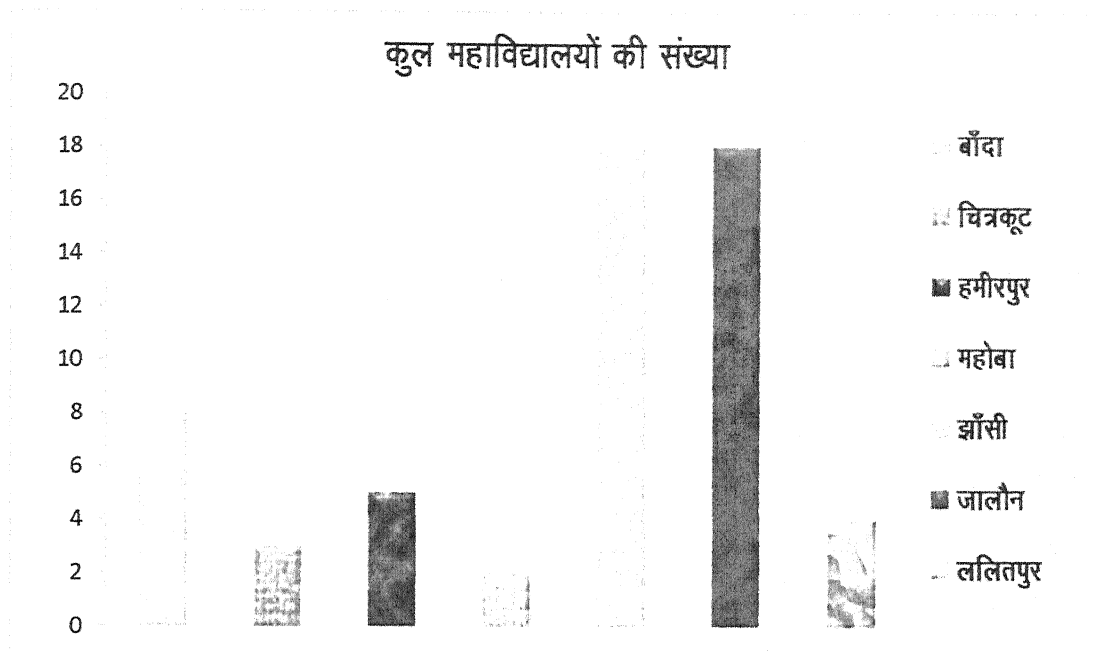
ग्राफ – 1.7.1

बुन्देलखण्ड में स्थित जिलेवार महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की स्थिति (2006)
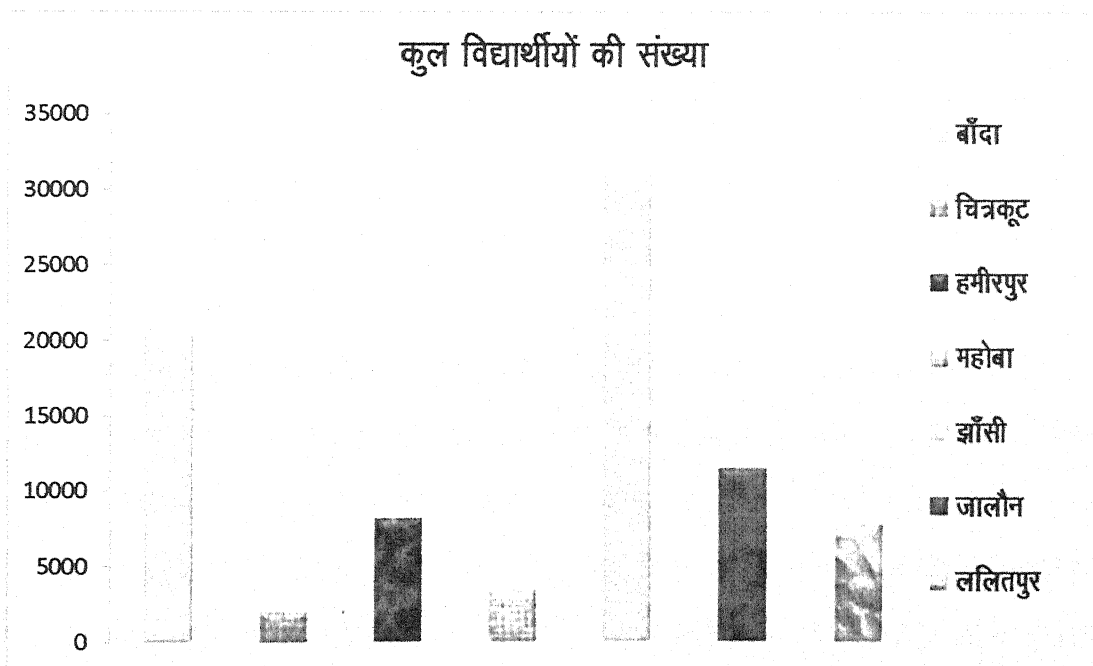
ग्राफ – 1.7.2

कर रहे स्नातक महाविद्यालयों की कुल संख्या 33 है। ऐसे महाविद्यालय सबसे अधिक झांसी तथा जालौन में 10-10 है तथा सबसे कम हमीरपुर में 2 है। स्नातक बालिका महाविद्यालय की कुल संख्या क्षेत्र में 7 है। जिसमें सबसे अधिक झांसी और जालौन में 3-3 है तथा सबसे कम हमीरपुर में 1 है। सहशिक्षा प्रदान करने वालों परास्नातक महाविद्यालयों की बुन्देलखण्ड में कुल संख्या 16 है,जिसमें सबसे अधिक जालौन में 5 तथा ललितपुर में 01 है ऐसे विद्यालय चित्रकूट में अभी नहीं है। पूरे क्षेत्र में परास्नातक बालिका महाविद्यालयों की कुल संख्या 2 है। जिसमें एक झांसी में और एक बाँदा में है। अन्य जिलों में अभी बालिकाओं के परास्नातक महाविद्यालय नहीं है। बुन्देलखण्ड में कुल महाविद्यालयों की संख्या 58 है जिसमें सबसे अधिक महाविद्यालय झांसी और जालौन में 18-18 है तथा सबसे कम महोबा में 2 है।

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि स्नातक विद्यार्थियों की कुल संख्या 43218 है जिसमें सबसे अधिक स्नातक छात्र 14635 झांसी में अध्ययनरत है तथा सबसे कम 1771 महोबा में अध्ययनरत है। यहाँ स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की कुल संख्या 25662 है, जिसमें सबसे अधिक झांसी में 8432 तथा सबसे कम चित्रकूट मे 626 है। परास्नातक महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की संख्या कुल 9516 है, जिसमें सबसे अधिक झांसी में 5063 तथा सबसे कम महोबा में 313 है। यहाँ परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की कुल संख्या 5674 है, जिसमें सबसे अधिक झांसी में 3830 तथा सबसे कम 150 महोबा में है। इस प्रकार पूरे बुन्देलखण्ड क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे कुल विद्यार्थियों की संख्या 84070 है, जिसमें सबसे अधिक विद्यार्थी झांसी में 30962 तथा सबसे कम चित्रकूट में 1934 है।

चित्रकूट में एक भी परास्नातक महाविद्यालय न होने की वजह से वहाँ परास्नातक कक्षाओं में पढ़ने वाले एक भी विद्यार्थी नहीं है।

उपर्युक्त सारणी से यह भी स्पष्ट है कि पूरे बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्नातक महाविद्यालय में पुरुष शिक्षकों की संख्या कुल 401 है जिसमें सबसे अधिक शिक्षक झांसी में 131 तथा सबसे कम चित्रकूट में 10 हैं। स्नातक महाविद्यालयों में महिला शिक्षकों की कुल संख्या 167 है, जिसमें अधिक झांसी में 72 तथा सबसे कम चित्रकूट में 0 है। इस क्षेत्र में परास्नातक महाविद्यालयों में पुरुष शिक्षकों की कुल संख्या 247 है, जिसमें सबसे अधिक बाँदा में 115 तथा सबसे कम महोबा में 01 है। परास्नातक महिला शिक्षकों की कुल संख्या 61 है जिसमें सबसे अधिक 25 बाँदा में तथा सबसे कम महोबा में 01 है। चित्रकूट जिले में एक भी परास्नातक महाविद्यालय न होने के कारण वहाँ इस प्रकार के शिक्षक नहीं है। इस प्रकार पूरे बुन्देलखण्ड में उच्च शिक्षा से जुडे कुल शिक्षकों की संख्या 876 है जिसमें सबसे अधिक

शिक्षक जालौन में 239 है तथा सबसे कम चित्रकूट में मात्र 10 शिक्षक ही कार्यरत है। शिक्षक-छात्र अनुपात देखा जाये तो पूरे क्षेत्र में यह 1: 96 है। जिसमें सबसे अधिक चित्रकूट का 1 : 193 है तथा सबसे कम जालौन 1 : 48 है।

1.8 समस्या कथन -

बुन्देलखण्ड में विभिन्न क्षेत्रों में अवस्थित माध्यमिक विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की कार्यदशाओं में शिक्षा की ज्योति जला रहे शिक्षक-शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि, शिक्षण-अभिक्षमता तथा व्यावसायिक-सन्तुष्टि का पता लगाने तथा यह जानने की जिज्ञासा कि क्या अच्छे शैक्षिक रिकार्ड और अच्छी शिक्षण अभिक्षमता, वाला व्यक्ति यदि शिक्षण व्यावसाय में आ गया है तो क्या वह उन व्यक्तियों से जिनका शैक्षिक रिकार्ड कमजोर है या जिनमें शिक्षण-अभिक्षमता अधिक नहीं है, उनसे ज्यादा सन्तुष्ट है? शोधार्थी के मन में थी। इसी लिये अध्ययन हेतु निम्न समस्या का चयन किया गया।

(अ) समस्या का शीर्षक -

शोध हेतु चयनित समस्या का शीर्षक है - ***''माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर शैक्षिक-उपलब्धि एवं शिक्षण-अभिक्षमता के प्रभाव का अध्ययन।''***

(ब) समस्या का परिभाषीकरण -

प्रस्तुत शोध समस्या में प्रयुक्त शब्दावली का अर्थ निम्नवत् है -

माध्यमिक विद्यालय -

प्रस्तुत अध्ययन में इनसे तात्पर्य उत्तर प्रदेश में 10+2 की शिक्षा प्रदान करने वाले सरकारी, अर्द्धसरकारी एवं प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों से है।

शिक्षक -

यहाँ शिक्षकों से तात्पर्य 10+2 की शिक्षा प्रदान करने वाले माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों से है।

व्यावसायिक-सन्तुष्टि -

यहाँ इसका तात्पर्य डॉ. आर.एस.मिश्रा, डॉ. मनोरमा तिवारी तथा डी.एन. पाण्डेय द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत 'व्यावसायि सन्तुष्टि मापन यंत्र' के प्रशासन से प्राप्त अंको से है।

शैक्षिक-उपलब्धि -

इसका तात्पर्य माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक/शिक्षिकाओं के हाईस्कूल इण्टरमीडिएट, स्नातक, परास्नातक, बी.एड., एम.एड. में प्राप्त श्रेणियों पर आधारित गुणांक से है।

शिक्षण-अभिक्षमता -

प्रस्तुत अध्ययन में इसका तात्पर्य डॉ. जय प्रकाश एवं डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत परीक्षण 'टीचिंग एप्टीट्यूड टेस्ट' के प्रशासन से प्राप्त अंकों से है।

(स) समस्या का सीमांकन -

प्रत्येक व्यक्ति की तरह शोधकर्ता का भी समय एवं श्रम दोनों महत्वपूर्ण होते हैं अतः उसे यह भलीभांति निश्चित कर लेना पड़ता है कि वह अपना अध्ययन किस प्रकार पूर्ण करेगा। इसके लिए उसे अपने अध्ययन से सम्बन्धित तमाम बातें निश्चित करनी पड़ती है। इसीलिए शोधकर्ता द्वारा अपने अध्ययन की समस्या का सीमांकन किया गया है।

प्रस्तुत शोध उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत आने वाले 'बुन्देलखण्ड क्षेत्र के अन्तर्गत संचालित सरकारी, अर्द्धसरकारी एवं प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक-शिक्षिकाओं के न्यादर्श पर आधारित है। अध्ययन की सीमायें निम्नवत हैं -

1. प्रस्तुत शोध उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं पर सम्पन्न किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध में बुन्देलखण्उ क्षेत्र में आने वाले झांसी एवं चित्रकूट मण्डल के सात जिलों झांसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर महोबा, बाँदा एवं चित्रकूट के अन्तर्गत संचालित सरकारी, अर्द्धसरकारी एवं प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों को लिया गया है।
3. इसमें माध्यमिक विद्यालयों के उन शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया है जो कक्षा 9, 10, 11, 12 में शिक्षण कार्य कर रहे हैं।
4. इस अध्ययन में अनुभवहीन एवं अनुभवी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं में कोई अन्तर नहीं किया गया।
5. अध्ययन में शहरी तथा ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं में कोई अन्र नहीं किया गया है।
6. इस अध्ययन में विवाहित एवं अविवाहित शिक्षक/शिक्षिकाओं में कोई अन्तर नहीं किया गया है।

1.9 शोध उद्देश्य -

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नलिखित हैं -

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक-शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि, शिक्षण-अभिक्षमता तथा व्यावसायिक-सन्तुष्टि का अध्ययन करना।

2. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि, शिक्षण-अभिक्षमता तथा व्यावसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि एवं शिक्षण-अभिक्षमता के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. सरकारी, अर्द्धसरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक-शिक्षिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि, शिक्षण-अभिक्षमता तथा व्यावसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.10. शोध की प्रबन्ध योजना -

इस शोध प्रबन्ध को पांच अध्ययनों में विभक्त किया गया है -

प्रथम अध्याय -

इसमें शिक्षक तथा माध्यमिक शिक्षा के महत्व को दर्शाते हुए व्यावसायिक-सन्तुष्टि, शैक्षिक-उपलब्धि शिक्षण-अभिक्षमता एवं बुन्देलखण्ड एक दृष्टि का अध्ययन किया गया, शोध की समस्या तथा शोध के उद्देश्यों का वर्णन किया गया है।

द्वितीय अध्याय -

इसमें समस्या से सम्बन्धित साहित्य का विधिवत विवेचन करते हुए उत्तर प्रदेश, भारतवर्ष एवं विदेशों में हुए शोधों की समीक्षा तथा प्रस्तुत शोध से तुलना की गयी है।

तृतीय अध्याय -

इसमें शैक्षिक अनुसंधान तथा परिकल्पना के निर्माण एवं न्यादर्श पर प्रकाश डालते हुए शोध में प्रयुक्त उपकरण तथा परीक्षण प्रशासन और प्रदत्त संकलन का वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय -

इसमें सांख्यिकीय विश्लेषण, परिकल्पनाओं का सत्यापन करते हुए परिणामों की व्याख्या की गयी है।

पंचम अध्याय -

इसमें अध्ययन की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए अध्ययन के निष्कर्ष तथा प्रभावोत्पादक सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं।

द्वितीय अध्याय
(सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन)

2.1 सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं उपयोगिता
2.2 समस्या से सम्बन्धित शोध
2.3 सामग्री का विवेचन तथा प्रस्तुत शोध से तुलना

2.1 सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं उपयोगिता -

मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो अनुभवों को संचित करता है और फिर आवश्यकता पड़ने पर उसका स्मरण करके उसका लाभ उठाता है। ऐसे व्यक्तिगत अनुभवों के अतिरिक्त समाज के अन्य सदस्यों के भी अनुभव होते हैं, जिन्हें हम युग-युग से प्राप्त करते आये हैं। यह हमारी सामाजिक विरासत (सोशल हेरेडिटी) कहलाती है। यह पुस्तकों, ग्रन्थों, प्रतिवेदनों और दस्जावेजों के रूप में सुरक्षित रखी जाती है।

सम्बन्ध साहित्य से हमारा तात्पर्य उस साहित्य से है जिसमें प्रस्तावित समस्या अथवा उससे सम्बन्धित किसी पक्ष की विवेचना की गयी है। शोधकर्ता को सम्बन्धित साहित्य के विषय में ज्ञान प्राप्त कर लेना अति आवश्यक होता हैं इस प्रकार का ज्ञान समस्या के निदान एवं सुझाव प्रस्तुत करने में भी सहायक होता है, साथ ही साथ यह भी ज्ञात होता है कि अभी तक इस क्षेत्र में कितना कार्य किया गया है और अभी कितना करने की संभावनाएँ हैं।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन एवं सर्वेक्षण शोधार्थी को नवीनतम ज्ञान के शिखरों में ले जाता है। जहाँ से उसे अपने क्षेत्र से सम्बन्धित निष्कर्षों एवं परिणामों का मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है, तथा यह ज्ञात होता है कि ज्ञान के क्षेत्र में कहाँ रिक्तियाँ है, कहाँ निष्कर्ष विरोध है, कहाँ अनुसंधान की पुनः आवश्यकता है। जब वह दूसरे शोधकर्ताओं के अनुसंधान कार्य की जाँच एवं मूल्यांकन करता है तो उसे बहुत सी अनुसंधान विधियों, बहुत से तथ्यों, सिद्धान्तों, संकल्पनाओं एवं सन्दर्भ ग्रन्थों का ज्ञान होता है, जो उसके अपने अनुसंधान में उपयोगी सिद्ध होते हैं। सर्वेक्षण द्वारा बहुत अनुसंधान, प्रतिवेदनों की अच्छाइयों एवं कमियों का ज्ञान होने के बाद इस बात की संभावना बहुत कम होती है कि यह स्वयं स्तरीय अनुसंधान करेगा अथवा अनुसंधान प्रक्रिया सम्बन्धित उन गलतियों की पुनरावृत्ति करेगा, जो उसके पूर्व वाले शोधकर्ता कर चुके हैं।

सम्बन्धित साहित्य के अन्तर्गत समस्या से सम्बन्धित उन सभी पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र-पत्रिकाओं से सम्बन्धित सभी प्रकार के पूर्व अध्ययन एवं प्रतिवेदनों के अध्ययन से जिन पर अभी हाल में या कभी पूर्व में कुछ कार्य, विचार या शोध अध्ययन हो चुका है शोधकर्ता को इसकी जानकारी हो जाती है सम्बन्धित साहित्य के अभाव में अनुसंधान तब तक अन्धे तीर के समान होता है जब तक यह ज्ञात न हो कि पूर्व में क्या कार्य सम्बन्धित समस्या पर हो चुका है।

गुड तथा स्केट्स[1] ने लिखा है -

"एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि

---

1. कार्टर बी.गुड., ए.एस. बार एण्ड डी.ई. स्केट्र्स, "मेथडालॉजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च न्यूयार्क, आप्लिटन, सेच्युटी क्राफ्ट्स, 1941 पृष्ठ 165।

सम्बन्धित आधुनिकतम् खोजों से परिचित रहे उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र, अनुसंधान के क्षेत्र मेंकार्य करने वाले अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।"

उन्होंने[1] साहित्य के पुनरावलोकन के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखा है -

"यह मुद्रित साहित्य के अपार भण्डार की कुंजी, अर्थपूर्ण समस्या और विश्लेषणीय परिकल्पना के स्रोत का द्वार खोल देती है तथा समस्या के परिभाषीकरण अध्ययन की विधि के चुनाव तथा प्राप्त सामग्री के तुलनात्मक विश्लेषण में सहायता करती है।" वास्तव में रचनात्मकता, मौलिकता एवं चिन्तन के विकास हेतु विस्तृत एवं गम्भीर अध्ययन आवश्यक है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन कर लेने से नयी विधियों एवं उपकरणों का ज्ञान होता है। सन्दर्भित साहित्य के अध्ययन से हमें अनेक लाभ हुए हैं। पहले शोध हेतु लिए गये विषयों की सीमाओं का ज्ञान प्राप्त हुआ और अनावश्यक पुनरावृत्तियों से बचने का अवसर मिला, साहित्य अध्ययन से शोधकर्ता को जो अन्तःदृष्टि प्राप्त हुई उससे समस्या के परिसीमन, परिभाषीकरण एवं अनुसंधान विधि के चयन करने में सहायता मिली।

इस दृष्टि को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया गया है जो विदेशों तथा भारत के विभिन्न विश्व विद्यालयों, संस्थाओं, शिक्षाविदों एवं अनुसंधानकर्ताओं के द्वारा अनुसंधान करके प्राप्त किये गये हैं।

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के उद्देश्यों एवं उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए इस अध्याय में प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित ऐसे साहित्य का विशद् विवेचन किया है जो कि प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च तथा अन्य तरह की शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत शिक्षकों की शैक्षिक उपलब्धि शिक्षण अभिक्षमता और व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्धित है। अधिकांश शोध अध्ययन शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्धित है।

शिक्षकों की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित जो शोध सम्पन्न हुए हैं उनका कालक्रमानुसार विवरण निम्नवत है -

1. एस. लक्ष्मी (1977) -
2. एस. चटर्जी एम. मुखर्जी (1978) -

---

1. कार्टर बी.गुड., ए.एस. बार एण्ड डी.ई. स्केट्स, "मेथडालॉजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च न्यूयार्क, आप्लिटन, सेच्युटी क्राफ्ट्स, 1941 पृष्ठ 165।

3. के.एस. नरूला (1979)

4. आर.वी.वी गोपाल चन्द्र युलू (1984)

5. टी.सी.मिस्त्री (1985)

6. रीना भट्टाचार्य (1989) -

7. स्वामी श्रीकांता (1995) -

शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता से सम्बन्धित सम्पन्न शोधों में प्रमुख शोधों का विवरण निम्न है -

1. आर.पी.श्रीवास्तव (1965)

2. के.पी.पाण्डेय (1968)

3. एस.एन. शर्मा (1969)

4. चंचल भसीन (1988)

5. एन.भूम रेड्डी (1991)

6. आर.के.पाण्डेय (1993)

7. एस.पी. रंगाली (1993)

8. रोहित कुमार कृष्णलाल पाण्डेय (1993)

9. एम.यू. तमालिया (2003)

शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि से सम्बन्धित शोध अध्ययनों की संख्या सर्वाधिक है।

व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन में पाया गया कि वर्तमान समस्या से कतिपय विभिन्नता के साथ अनेक (डी.लिट., पी-एच.डी., एम.फिल, आर्टकिल, प्रोजेक्ट एवं शोध-पत्र) विदेशों तथा भारत वर्ष में सम्पन्न हुए हैं, जिनका संक्षिप्त विवरण कालक्रमानुसार निम्नवत है -

विदेश में कृत्य - संतोष से सम्बन्धित अध्ययन आर.होपाक (1935), एच.वाई. मैकल्स्की (1940), आर.जी.कुहलेन (1963), ए.लेसी (1969), एच.ई.युंग (1969), एम.एल. मोजियर (1970), पी.पी. मैरिल (1970), टी.एस. बिशप (1970), जे.सी. एडमंडसन (1970), जी.पी. ला माटिया (1970), जे.बी. मन (1971), बी.ओ. हाफेन (1971), जी.बी. प्रोबे (1971), आर.ई. हैमर (1971), एल.डब्ल्यू. प्राइस (1971), बी.बी. स्पार्कमैन (1971), बी.जे.पजलाकूवा (1971), आर.जे. टालबेट (1975), टी.डी. मारगेन (1975), डब्ल्यू.एन.एम. पाउण्ड (1975), जे.डी. विगिन्स (1975), एच.एल. थामस (1975), टी.जी. सचकमूथ (1975), टी.ए.डी. हलूम (1975), एफ. मैकलीन (1975), टी.जी.ओ. सच (1975), एफ.जे. क्वाइटगू (1975), पी.एम. मार्टिन (1975), एस.ए. वेमैन (1975), एच.आर.

गवेंटिया (1975), एस. हिमलस्टेन (1975), सी.जे. रिर्चाड्स (1975), ई.एम. वाशिंगटन (1975), जे.आर. रोमेरो (1975), डब्ल्यू.एफ. वेबर (1975), एन.पी. रॉस (1975), जे.ई. रिटर (1975), आर.डी. मान्थे (1976), बी.एफ. फिन्डले (1976), जे.एम. बेसवेल (1976), सी.ई.सा. (1976), एस.ए. बेमबरी (1976), एन.ई. इन्गस्ट्रन हिन्कले (1976), जे.आर. जॉनसन (1976), आर.फ्रांसिस हर्षबेरगर (1976), टी.जे. सिलवेस्टर (1976), ए.एम. इस्पे (1976), डब्ल्यू.सी. कोरटिस (1976), एफ.डब्ल्यू हंटिगशन तृतीय (1976), जे.ई. मिफलिन (1976), पी.डी. पुसटेरी (1976), एल.एफ. हैन्डरसन (1976), एल.एफ.हैन्डरसन (1976), डी.एल.एच. मर्फी (1976), ए.डी.पुट (1976), जे.जे.स्मिथ (1977), एम.जी. एट्ब्रेरी (1977), सी.एम.होडगे (1977), ई.एच. बेहरमैन (1977), जे.एल.पेरी (1977), टी.जी. रॉसइन्थाल (1977), एच.एम. हाफोर्ड (1977), डब्ल्यू एम.कैफर (1977), आर.आर. सिम्मान्स (1978), एफ.जे. हाडवे (1979), जु.जी.लिन (1991), हेनड्रिक्स मैरीबेथ (1992), एडीशन इर्यल लुईस (1992), झाओ चैंगझियांग(1992), दीबोस हरमन लियॉन (1992), विलियम ओला मूरी (1992), मॉक रिबेका जॉय (1992), वाल्बर्ट जैनिट ई (1993), हचिंस डेनी ट्रिमोन (1996), राबिन वर्ली स्मिथ (1996), वाल्कर महेला लुईस (1996), स्नेप्स रॉबिन ले (1996), फिटजराल्ड रोनॉल्डइ इयूजिने (1996), टन पेंग फिलिप (1996), ली यून यू (2003), इग्वा पुलाइन इफोमा जॉय (2003), हिंकल नार्मन डब्ल्यू (2004), किडवेल जेम्स (2004), राबर्ट फ्लोरेंस (2005), सैंड मेरी हर्क (2005), मिर्जा सलीम (2005), हाकिंस केन ए (2005), वीवर नैन्सी एल (2005), सोफिआँस थिवडोरे (2005), केनियन कार्ल एम डी बी ए (2005), मॉर्गन डिबेरा (2005), ईस्ट थॉमस जे (2005), ली जाँग ह्वा (2005), चेन लिन तंग (2005), एक्सी डी (2005), स्टेविन ड्रयू जैफ्री (2005), सुनेशन चार्लिन (2005), फेनाट बेरहन एकलॉग (2005), मैकलेन जेनिफर (2005), विकीलिन व्हील्सि (2005), रामीरेज गार्शिया (2005) ने किया।

भारत में व्यावसायिक-सन्तुष्टि से सम्बन्धित प्राथमिक शिक्षा में एस.जी. मेंहदी (1971), एस.पी. आनन्द (1972), के.यू. लविगियों (1974), डी.एस. बाबू (1976), एस.पी.आनन्द (1977), एन.वी. कोलटे (1978), एम.शर्मा (1980), एन.के.पोरवाल (1980), के.शाह (1982), एस.अग्रवाल (1988), पी.बालकृष्ण रेड्डी (1989), आशा शर्मा (1992), मीरा दीक्षित (1993), वी. राम मोहन व अन्य (1995), उमा कुलसुम (1998), ज्योति एवं रेड्डी (1998), एन.बी. ब्यास (2003), रमन दीप कौर (2003), कृष्णा कुमारी त्रिपाठी (2004), वेंकट रमा रेड्डी (2004), राजेन्द्र कौर (2004), विनीता श्रीवास्तव (2004), प्रियदर्शिनी निवेदिता (2005), सुखविन्दर कौर (2005), वी. सादिग असीफा अबहुम्ना (2006), शिवाली नागराज मुरीगप्पा (2006) ने अध्ययन किया।

भारत में व्यावसायिक-सन्तुष्टि से सम्बन्धित माध्यमिक शिक्षा में अंजली यूलू (1968), बेजवा और फुटेला (1972), एस.पी. गुप्ता एवं जे.पी.श्रीवास्तव (1980), आई.ए. जुबेरी (1984), टी.सी. मिस्त्री (1985), आरा नसरीन (1986), बलविन्दर कौर (1986), एस.पद्मनाभैया (1986), त्रिवेणी सिंह (1988), एम.एस.आर. शर्मा (1991), एस.रावत (1992), नानग्रम मीडालिन (1992), शिप्रा राय (1992), बी.सिन्हा एवं आर.के.प्रभात (1993), नसीमा (1994), सुधीर (1994), सुनीता गोडियाल एवं आर.के. श्रीवास्तव (1995), प्रतिभा ओसेकर (1996), ठाकर (1996), सज्जाबी फ्लोरेंस बाबिगों (2001), सरिताफूम बूनचोब (2002), समद क़्नीज फातिमा मुहम्मद अब्दुल (2003), वाला रेजा (2004), चंकराजंक चत्रा (2006), पॉल रोजी (2006), नायकर शोभावती बसप्पा (2006), के.टी. नायक नागराज (2007) ने अध्ययन किया।

भारत में व्यावसायिक-सन्तुष्टि उच्च शिक्षा में एल.एन. बर्नाड एवं कुलन्डेवाल (1976), एस.के.जिन्दल (1977), एस.बाला सुब्रामण्यम एवं (एस.नारायन) (1977), डी.रामकृष्णा (1980), एस. कुमारी (1981), पी.एल. सक्सेना (1990), एम. सुब्रामण्यम रेड्डी (1990), एल. बेगम (1994), चन्द्रेश (1994), अमित अब्राहम (1994), के0चद्रियाह (1994), एल.दास. एवं पण्डा (1995), शाहपुर व अन्य (1996), अन्नामलाई (1999), दास शुक्ला (2003), जी.वी. नरसिम्हप्पा (2003), गुरमीत सिंह (2004) ने अध्ययन किया।

भारत में व्यावसायिक-सन्तुष्टि सम्बन्धी अन्य शोध एम.वर्मा (1971), जे.इन्द्रसेन (1973), जय लक्ष्मी (1973), बी.आर. ठक्कर (1977), एस.बाला सुब्रामण्यम (1977), एन.वी. कोलटे (1978), एस.परमाजी (1978), डी.पी. भट्टाचार्य (1978), ए.वैंकट रामारेड्डी एवं कृष्णा रेड्डी (1978), डी. सत्यदास (1979), जे.इन्द्रसेन (1979), के.डी. नायक (1982), वेद कक्कड (1983), अमर सिंह (1985), विजयलक्ष्मी दास (1988), टी वी एन गोस्वामी (1988), जी. शेखर एं एस.रंगनाथन (1988), टी.सिंह (1988), टी.सिंह (1988), उषा धौलिया (1989), एफ.गोनसाल्वेस (1989), एस0एम. क्लेमैन्स (1989), बी.पी. रेड्डी (1989), जे.एस. अतरेया (1989), एस.सोहानवीर चौधरी (1990), एन.सी. धोतया (1990), विनोदिनी श्रीवास्तव (1990), जी.सी. नायक (1990), एन.सक्सेना (1990), एस.राय (1990), मीनाक्षी अग्रवाल (1991), सतपाल कौर बासी (1991), आर. नटराजन (1992), बी.राममोहन बाबू (1992), उषाश्री (1993), नसीमा अयशबी (1995), सुशील प्रकाश गुप्ता (1995), डी.जे.भट्ट (1997), धरम प्रभा बरूह (1997), रतनप्पा (1998), ए.आर. अन्नामलाई (1999), सिद्धू कंवलजीत (2001), संधू सुखजीवन कौर (2001), वेंकट शिवकुमार खेल्ला (2002), चौधरी मिन्टी (2003), सरिता परही (2003), ए.के. अनिल कुमार (2004), वर्मा मधुलिका (2004), मुजाहिद अली (2004),

लेंका झरनमहजरी (2005), जी.पदमा तुलसी (2006), शेशा श्री (2006) ने अध्ययन किया।

उपर्युक्त शोध अध्ययनों में कुछ अध्ययन पी-एच.डी. स्तर के, कुछ एम.फिल. स्तर के तथा कुछ प्रोजेक्ट एवं शोध-पत्र हैं।

प्रस्तुत शोध से सीधा सम्बन्ध रखने वाला कोई भी शोध सम्पन्न नहीं हुआ है फिर भी जो शोध प्रस्तुत शोध से ज्यादा मिलते जुलते हैं, उन शोध अध्ययनों का विवरण काल क्रमानुसार व्यवस्थित करके नीचे दिये जा रहे हैं -

2.2 समस्या से सम्बन्धित शोध -

(अ) विदेशों में सम्पन्न अध्ययन-

प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित जो अध्ययन विदेशों में हुये हैं उनका विवरण निम्न प्रकार है -

आर-होपॉक (1935)[1]-

असन्तुष्ट अध्यापक और सन्तुष्ट अध्यापक की तुलना की गई। 51 ग्रामीण और शहरी समुदायों के 500 अध्यापकों के प्रश्नावली एवं साक्षात्कार में प्राप्तांक काज ब होपॉक ने विश्लेषण किया तो यह पाया गया कि अध्यापक की सन्तुष्टि का स्तर-कृत्य सन्तुष्टि और भावात्मक प्रबन्ध, धर्म, सामाजिक स्तर, रुचि, आयु, थकान, समुदाय का आकार और अन्य कारकों के मध्य उनके महत्वपूर्ण कार्य प्राप्ति से सम्बन्धित थी।

पी.पी.मैरिल द्वितीय (1970)[2] -

द्वारा अपने एक अध्ययन में प्राथमिक अध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों के कृत्य-सन्तुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण किया।

उसने इशारा किया कि अध्यापिकाओं, अध्यापकों की अपेक्षा अधिकांशतः सन्तुष्ट रहती हैं। उसने पाया कि अधिक आयु, अधिक प्रशिक्षण और उच्च सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि कम होती है। गांवो और कस्बा क्षेत्र के अध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों की कृत्य सन्तुष्टि के सम्बन्ध में उनकी निवास परिस्थितियाँ महत्वपूर्ण कारक नहीं थी।

---

1. आर.होपॉक (1935) कम्परेटिव ऑफ सेटिसफाइड एण्ड डिससेटिसफाइड टीचर साइकोलॉजिकल बुलेटिन, 32, पेज 681
2. पी.पी. मैरिल (1970) द्वितीय "ए स्टडी कान्सरनिंग द जॉ सेटिसफेक्शन ऑफ इलेमेन्ट्री टीचर्स एण्ड प्रिंसिपल्स डाक्टोरल डिजरटेशन, डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल (ए), 31, पेज 1547 ए।

ए.डी.पुट (1976)[1] -

द्वारा राज्य विश्व विद्यालयों के लोक प्रशासन के प्राध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन किया गया।

इसमें उन्होंने पाया कि (1) व्यक्तिगत चरों जैसे-शिक्षकों की आयु और उनका व्यावसायिक आकांक्षा स्तर उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि के स्तर से सह सम्बन्धित था। (2) संस्था सम्बन्धी चरों जैसे-नीतिगत निर्णयों में उनकी भागीदारी का स्तर, शैक्षिक योग्यता, प्रति सप्ताह, कालांशो की संख्या तथा वार्षिक वेतन उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि से सार्थक रूप से सम्बन्धित थे।

जे.एम. बेसवेल (1976)[2] -

द्वारा टेक्साल के एकान्त गाँव में प्राथमिक विद्यालय शिक्षक के शिक्षण-सन्तुष्टि का अध्ययन किया गया।

उन्होंने अपने अध्ययन के समय यह प्रदर्शित किया कि वे अध्यापक जिनकी अयु तीस वर्ष से अधिक थी, जिनका तीन वर्ष या अधिक वर्षों का अनुभव था और जो ग्रामीण समुदायों के विशिष्ट भागों से सम्बन्धित थे, जिनके निजी घर थे और जो विवाहित थे, वे अधिक सन्तुष्ट थे, अपेक्षाकृत उनके जो तीस वर्ष के नीचे की आयु के थे, तीन वर्षों से कम का शिक्षण अनुभव था, शहरों में विशिष्ट भागों से सम्बन्धित थे एवं किराये के घरों में निवास करते थे तथा जो अविवाहित थे।

टी.जे. सेल्वेस्टर (1976)[3]-

द्वारा दो विभिन्न प्रकार के संगठनों में कार्यरत साउथ कारोलिना के अध्यापकों की कृत्य-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

उन्होंने अध्ययन मे पाया कि विभिन्न प्रकार की व्यवस्था वाले विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं था। उन्होंने अपने अध्ययन में परम्परागत व्यवस्था वाले विद्यालयों और आई.ई.डी. मल्टी यूनिटी विद्यालयों के शिक्षकों को सम्मिलित किया था।

---

1. ए.डी.पुट (1976) "ए स्टडी जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ प्रोफेसर्स ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन इन स्टेट यूनीवर्सिटी" डाक्टोरल डिजरटेशन एबसट्रेक्स इन्टरनेशनल (ए)
2. जे.एम.बेसबेल (1976) "टीचिंग सेटिसफेक्शन ऑफ एलीमेन्ट्री स्कूल टीचर्स इन इसोलेटेड रूरल टैक्सेस काउन्टीज डाक्टोटल डिजरटेशन, डिजरटेशन आब्सट्रेक्सट्स इंटरनेशनल (ए), 36, 12 पेज 7848, 7849
3. टी.जे. सिल्वेस्टर (1976) "ए कम्परीजन ऑफ जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ साउथ कारोलिना टीचर्स इनवाल्वड इन टू डिफरेन्ट सिस्टम्स ऑफ इन्सट्रक्सनल आरगनाइजेशन", डॉक्टोरल डिजरटेशन, डिजरटेशन, एबसट्रैक्ट्स इन्टरनेशनल (ए)

उन्होंने अध्ययन में यह भी पाया कि दोनों प्रकार के विद्यालयों में काले शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि गोरे शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि से अधिक थी।

सी.एम. हॉक (1977)[1] -

द्वारा 1954 से संचालित उच्च शिक्षा के चुने हुए संस्थानों के नीग्रो प्रोफेसर और गोरे प्रोफेसरों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि के प्रति धारणा का विश्लेषण किया गया।

उन्होंने नीग्रो और गोरे प्रोफेसरों सम्बन्धी अपने खण्ड-विश्लेषण अध्ययन द्वारा यह पाया कि -

(1) नीग्रो संस्थाओं में कार्यरत गोरे अध्यापकों की तुलना में गोरों की सस्थाओं में कार्यरत नीग्रो प्राध्यापकों की व्यावसायिक-संतुष्टि का स्तर ऊँचा था।

(2) जैसे-जैसे नीग्रो प्राध्यापकों की शैक्षिक योग्यता बढ़ती गयी, उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि का स्तर भी बढ़ता गया। लेकिन गोरे प्राध्यापकों की शैक्षिक योगयता बढ़ने से उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि कम हुई।

(3) नीग्रो प्राध्यापकों तथा गोरे प्राध्यापकों का अपनी संस्थाओं में जितने वर्षों की सेवा बढ़ती गयी, उतनी ही उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि का स्तर बढ़ता गया।

(4) नीग्रो तथा गोरे दोनो तरह के प्राध्यापकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का स्तर उनके व्यावसायिक अनुभव बढ़ने के साथ-साथ बढ़ता गया।

हैनड्रिक्स मैरीब्रेथ (1992)[2] -

द्वारा विशेष शिक्षा के शहरी शिक्षकों के समर्पण कृत्य-सन्तुष्टि तथा जीवन वृत्ति योजनाओं को प्रभावित करने वाले तथ्यों का अध्ययन किया गया।

इन्होंने विशेष शिक्षा में व्यक्तिगत कमियों के परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षण विस्मृति दर के विषय में शिक्षकों की विस्मृति एवं स्मृति पर शोध की आवश्यकता पर बल दिया है।

विशेष शिक्षा के शिक्षकों के व्यक्तिगत गुणों में यह समझना अति आवश्यक है कि कोई अयोग्य विद्यार्थी अनुचित शिक्षा न पा रहा हो। इस अध्ययन का उद्देश्य विशेष शिक्षा के शहरी शिक्षकों की जीवनवृत्ति योजनाओं के तथ्यों को प्रभावित करने वाले कारकों या चरों को अन्वेषित करना था। शहरी

---

1. सी.एम. हॉग (1977) "एन एनालिसिस ऑफ द एटीट्यूड्स रिगार्डिंग सेटिसफेक्शन हेल्ड वाई नीग्रो प्रोफेसर्स एण्ड ह्वाइट प्रोफेसर्स इन सेलेक्टेड इन्स्टीट्यूशन्स ऑफ हायर एजूकेशन डिसएग्रीगेटेड सिन्स 1952" डाक्टरल डिजरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल
2. हैनड्रिक्स मेरीवेथ (1992)-डिजरटेशन आबसट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल बैल्यूम 53 (ए), पी-एच.डी. एजूकेशन वर्जीनिया पॉलीटेक्निक संस्थान एवं राज्य विश्वविद्यालय, पेज-245

विशेष शिक्षकों के समर्पण, कृत्य-सन्तुष्टि जीवनवृत्ति योजनाओं को बेहतर तरीके से समझने के लिए इस अध्ययन के आंकड़ो के संग्रहण तथा विश्लेषण की गुणवत्ता पूर्ण शोध विधियों का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन के परिणाम मेम्फिस सिटी स्कूल में 80 विशेष शिक्षा के शिक्षकों के साक्षात्कार पर आधारित थे। इन विशेष शिक्षकों को तीन समूहों में बराबर-बराबर विभाजित किया गया-स्थाई, अस्थाई, अनिश्चित।

इसमें जीवन वृत्तिक तथा दृष्टिकोण जैसे-समर्पण तथा कृत्य-सन्तुष्टि भी सम्मिलित थी। एक साक्षात्कारकर्ता के द्वारा प्रत्येक विशेष शिक्षकों का व्यक्तिगत साक्षात्कार किया गया। साक्षात्कार के प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के विश्लेषण के लिए क्रास इन्टरव्यू का प्रयोग किया गया। आंकड़ो में जिन विधियों एवं तकनीकि को समावेषित किया गया था, उन्हें चिन्हित किया गया तथा उन पर गहन चर्चा की गयी।

इस अध्ययन के निष्कर्ष में विशेष शिक्षकों के उदाहरण भी सम्मिलित हैं। साक्षात्कारों के अनुसार बहुत से कार्य सम्बन्धित तथ्यों जैसे-सहयोग, कार्य अनुबन्ध, विद्यार्थी कार्य प्रोत्साहन आदि (एम.सी.एस.) के विशेष शिक्षा के शिक्षकों के समर्पण, व्यावसायिक-सन्तुष्टि तथा भविष्य में स्थायित्व तथा अस्थायित्व के लिए महत्वपूर्ण थे। एम.जी.एस. के विशेष शिक्षा के शिक्षकों की स्थायित्व के दो मुख्य कारण कार्य अनुबन्ध तथा सहयोग था। इस अध्ययन के निष्कर्ष यह सुझाव देते हैं कि शिक्षकों की विस्मृति को रोकने में कृत्य सम्बन्धित तथ्यों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। एम.सी.एस. के शिक्षकों की निर्णय-प्रक्रिया में भागीदारी, विद्यालय प्रशासकों के प्रभाव से शिक्षकों की जीवनवृत्ति योजनाओं का नुकसान का होना तथा उनके विशेष शिक्षा-शिक्षण में दबाव भी सम्मिलित थी।

राबिन वर्ली स्मिथ (1996)[1] -

द्वारा फ्लोरिडा के चयनित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की निर्णयों में भागीदारी कृत्य-सन्तुष्टि तथा अनुपस्थिति का अध्ययन किया गया।

1. यह पता लगाना कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की भागीदारी किस प्रकार के निर्णयों में होती है।
2. चयनित क्षेत्रों के विद्यालयों की भूमिका में शिक्षकों की सहभागिता का अध्ययन करना।
3. विद्यालय सम्बन्धी निर्णयों में शिक्षकों की सहभागिता के स्तर तथा कृत्य-सन्तुष्टि के मध्य, यदि कोई सम्बन्ध हो, तो उसकी व्याख्या करना।
4. शिक्षकों के निर्णयों में सहभागिता के स्तर तथा अनुपस्थिति की दर के मध्य सम्बन्ध की व्याख्या करना।

---

1. राविन वर्ली स्मिथ, (1996) "डिजरटेशन आब्सट्रैक्ट्स इन्टरनेशनल बैल्यूम 57 (ए), पी-एच.डी. एजूकेशन मिस्सी सिप्पी राज्य विश्वविद्यालय" पेज 89।

आंकडो का संग्रह फ्लोलर, लेक, ओरेन्ज, पुतनाम, सेमीनोल तथा वाल्यूशिया काउन्टीज के 340 माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों पर सन् 1996 में बसन्त ऋतु के 6 माह के अध्ययन के दौरान किया गया शोधकर्ता के द्वारा एक प्रश्नावली निर्मित की गयी जिसका शीर्षक कृत्य-सन्तुष्टि प्रश्नावली तथा निर्णयों में भागीदारी था। शोधार्थी द्वारा ब्रेफील्ड एवं रॉठ 1951 के द्वारा निर्मित कृत्य-सन्तुष्टि अनुसूची का प्रयोग इस अध्ययन में किया गया।

संग्रहीत आंकड़ो के विश्लेषण के लिए मात्रात्मक एवं गुणात्मक विश्लेषण का प्रयोग किया गया। जिस प्रकार के निर्णयों में माध्यमिक स्कूलों के शिक्षक भाग लेते थे। वह विद्यालय सुधार से सम्बन्धितथे। जैसे-स्कूल की समस्याओं को जानना तथा हल करना, स्कूल की आवश्यकताओं एवं विद्यालय विकास को प्राथमिकता देना, जिन निर्णयों में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक कम भाग लेते थे, वह विभागीय अध्ययन सम्बन्धी अभिलेख, साक्षात्कार स्टाफ तथा शिक्षकों के लिए अतिरिक्त पाठ्यक्रम।

माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों के निर्णयों में सहभागिता तथा कृत्य-सन्तुष्टि के स्तर के मध्य पर्याप्त सम्बन्ध था। जिन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक अधिकाधिक निर्णय प्रतिक्रियाओं में भाग लेते थे वह अपने कार्य से अत्यधिक सन्तुष्ट थे। माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की निर्णय में सहभागिता तथा उनकी अनुपस्थिति दर के मध्य भी पर्याप्त सम्बन्ध था। जिन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक निर्णयों में अत्यधिक भाग लेते थे उनकी अनुपस्थिति दर बहुत कम थी।

मैकलेन, जेनिफर (2005)[1] -

द्वारा दूरस्थ शिक्षा के शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि और दबाव का अध्ययन किया गया।

दूरस्थ उच्च शिक्षा संस्थान शिक्षा के नये-नये सूत्रपात जारी रखते हुए विद्यार्थियों के लिए विभिन्न विभागों को खोलता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष उन तथ्यों से सम्बन्धित हैं जिनमें विद्यार्थियों की सन्तुष्टि एवं सफलता गुणवत्तापूर्ण वातावरण में होती है। कई विभगों के खुलने से एक स्थान पर दूर स्थान पर दूर स्थान से इन्टरनेट द्वारा शिक्षण करना वह भी लिखित साहित्य के साथ ऐसे में शिक्षक पर क्या दबाव है? तथा कितनी कृत्य-सन्तुष्टि है? यह विवेचनात्मक अध्ययन दूर से प्रसारण पर शिक्षण कार्य करने वाले विभिन्न विभागों के शिक्षकों के मध्य डेल्फी विधि का प्रयोग करके दबाव तथा कृत्य-सन्तुष्टि के स्तर को चिन्हित किया गया।

---

1. मैकलेन जेनिफर, (2005) "डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल वैल्यूम 66 (ए) पी-एच.डी. एजूकेशन कोलम्बिया विश्वविद्यालय शिक्षक-शिक्षा कालेज, पेज-305

फेनाट बेरहन एकलॉग (2005)[1] -

द्वारा शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि एवं असन्तुष्टि इथोपिया के शहरी शिक्षकों पर एक प्रायोगिक अध्ययन किया गया।

इस अध्ययन का उद्देश्य इथोपिया के शहरी प्राथमिक शिक्षकों के कृत्य-सन्तुष्टि एवं असन्तुष्टि के स्रोतों की पहचान करना था तथा इसमें यह परीक्षण किया गया है कि शिक्षक की भावनाएँ किस प्रकार व्यक्तिगत एवं विद्यालयीय गुणों के व्यावसाय की ओर मध्यस्थता करती है। प्रतिभागी इथोपिया के 15 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक थे। न्यादर्श में 278 प्रश्नावली आधारित प्रतिभागी एवं साक्षात्कार प्रतिभागी थे।

न्यादर्श में चयनित सम्पूर्ण में आधे से अधिक शिक्षक कृत्य-असन्तुष्टि की भावना प्रदर्शित करते थे। वे शिक्षक जिन्होंने इस व्यवसाय में प्रवेश स्वाभाविक तौर पर या परोपकार की भावना से किया गया था, वह इस अध्ययन में सर्वाधिक सन्तुष्ट पाये गये। कृत्य सन्तुष्टि में स्कूल के प्रकार स्कूल के आकार, औसत कक्षा-आकार तथा औसत वेतनमान के आधार पर विभिन्नताएँ पायी गयी।

कृत्य-सन्तुष्टि के मुख्य स्रोत शिक्षण कार्य के स्वाभाविक पहलू जैसे विद्यार्थियों से अन्तःक्रियाओं तथा विद्यार्थियों को प्रभावित करने की क्षमता पर आधारित थे। शिक्षक कार्याधिक्य तथा अपने कार्य के सामाजिक स्तर से असन्तुष्ट थे। एक मुख्य अन्तर जो कि सन्तुष्ट एवं असन्तुष्ट शिक्षकों के मध्य पाया गाय, वह था उनमें शिक्षण का स्वाभाविक या आन्तरिक पहलू न कि उनके कार्य का अनावश्यक बाहरी पहलू।

इस अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षा नीति के लिए महत्वपूर्ण है। पहला यह शिक्षकों के कार्य के बाहरी या अनावश्यक पहलू के साथ असन्तुष्टि में उच्च स्तर को प्रदर्शित करता है। दूसरा यह भिन्न पहलुओं के स्पष्ट प्रवेश-द्वार बताता है। जैसे कि शिक्षकों का बढता हुआ वेतन उनके असन्तुष्टि स्तर को सुधार सकता है।

इस अध्याय के निष्कर्ष पर भी सुझाव देते हैं कि इस प्रकार की नीतियाँ शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि पर कम प्रभाव डालेगी क्योंकि उनके द्वारा कृत्य-सन्तुष्टि शिक्षकों के विभिन्न पहलुओं से बहुत घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि का स्तर बढ़ाने के लिए विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षकों की क्षमताएँ विकसित की जानी चाहिए।

---

1. फेनाट बेरहन एकलॉग, (2005) "डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल वैल्यूम "(ए) पी-एच.डी. एजुकेशन कोलम्बिया विश्वविद्यालय शिक्षक-शिक्षा कालेज, पेज-14।

(ब) देश में सम्पन्न हुए शोध अध्ययन -

आर.पी.श्रीवास्तव (1965)[1] -

द्वारा शिक्षण-अभिक्षमता परीक्षण का निर्माण एवं उसका प्रमाणीकरण किया गया।"

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे -

(1) प्राथमिक विद्यालय और जूनियर विद्यालय में कार्यरत शिक्षकोंके विशिष्ट सन्दर्भ में शिक्षण अभिक्षमता परीक्षण का निर्माण करना एवं उसका प्रमापीकरण करना।

(2) शिक्षण अभिक्षमता एवं गृह परीक्षाओं में प्राप्त अंको के मध्य सम्बन्ध का पता लगाना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्न थीं -

(क) प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे छात्राध्यापकों के सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक अंको और शिक्षण-अभिक्षमता परीक्षण में प्राप्त अंको के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध होगा।

(ख) प्राचार्यों एवं प्राध्यापकों द्वारा किये गये मूल्यांकन एवं शिक्षण-अभिक्षमता परीक्षण से प्राप्त अंको के मध्य उच्च धनात्मक सह-सम्बन्ध होगा।

शिक्षण के विभिन्न पहलुओं के परीक्षण के पदों का निर्माण किया गया। अन्तिम रूप से परीक्षण में 5 वैकल्पिक उत्तरों वाले 150 कथनों को सम्मिलित किया गया। परीक्षण के प्रशासन हेतु न्यादर्श चुनने के लिए विन्ध्य क्षेत्र के सभी सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को उनके आन्तरिक परीक्षा एवं सार्वजनिक परीक्षा के परिणामों के आधार पर औसत से निम्न, औसत एवं औसत से अधिक नाम की तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया।

विन्ध्य क्षेत्र से 11 प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के 1050 शिक्षकों को प्रतिनिधि न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। सभी चयनित इकाइयाँ 20 वर्ष से 30 वर्ष की आयु के एक समान सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक थे।

न्यादर्श में चयनित सभी छात्राध्यापकों के प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक परीक्षा के अंको, शिक्षण-अभिक्षमता परीक्षण में प्राप्त अंको तथा संस्था के प्राध्यापकों एवं प्राचार्यों द्वारा मूल्यांकित अंको को एकत्र किया गया।

परीक्षण पुर्नपरीक्षण विधि एवं अर्द्ध-विच्छेदन विधि द्वारा निर्मित परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक क्रमशः 0.94 और 0.91 प्राप्त हुआ। परीक्षण हेतु मानक प्राप्तांक, प्रतिशतांक और टी.प्राप्तांक विकसित किये गये और सभी परिकल्पनाओं का परीक्षण भी किया गया।

---

1. आर.पी. श्रीवास्तव, (1965)'कन्स्ट्रक्शन एण्ड स्टेण्डराइजेशन ऑफ एप्टीट्यूड टेस्ट फार टीचिंग' पी-एच.डी. (साइक्लॉजी), सागर विश्वविद्यालय, सागर, म.प्र.

बी.एल.आर. अंजली (1968)[1]

द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि तथा अध्यापन अभिरुचि का अध्ययन किया गया।

पी-एच.डी. शिक्षा आन्ध्र प्रदेश विश्वविद्यालय माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के अध्यापकों की व्यवसायिक-सन्तुष्टि तथा अध्यापन अभिरूचि को अपने शोध विषय का केन्द्र बनाकर माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का अध्ययन छात्रों की शिक्षा में पड़ने वाले प्रभाव के सन्दर्भ में किया गया।

अध्ययन के निम्न उद्देश्य निम्नलिखित थे -

1. विद्यालयों में कार्य कर रहे शिक्षकों के असन्तुलित होने के कारणों का पता लगाना तथा उन परिस्थितियों का अध्ययन करना जो उनके असन्तुलन के लिए जिम्मेदार हैं।
2. शिक्षा क्षेत्र की वर्तमान परिस्थितियों को सामने रखकर तथा शिक्षकों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए ऐसे उपाय एवं सुझाव देना जिससे कि अध्यापकों को प्रोत्साहन मिले।

उन्होंने अपने अध्ययन के दौरान प्रश्नावली और साक्षात्कार विधियों का प्रयोग किया तथा 4000 अध्यापकों में सन्तुष्टि को ज्ञात करने के लिए निर्धारित मापनी का प्रयोग किया गया। सर्वेक्षण के दौरान 617 शिक्षकों ने प्रश्नावली भरकर वापस की इसके अलावा 130 शिक्षा शास्त्री, प्रधानाचार्य एवं सेवा निवृत्त शिक्षकों का साक्षात्कार किया गया। कुल 227 शिक्षकों ने अपने पुत्रों की दृढ़ता के लिए प्रथम बार पूर्ण की प्रश्नावली के अतिरिक्त दूसरी बार भी प्रश्नावली को भरकर अपना अपना योगदान दिया।

उपर्युक्त सभी 617 अध्यापकों में से 27 प्रतिशत अध्यापक ही अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट थे। असन्तुष्ट अध्यापकों को उनकी असन्तुष्टि के कारणों के आधार पर तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है। इनमें से तीसरी श्रेणी में वे अध्यापक रखे गये जिनकी असन्तुष्टि का कारण स्थान विशेष था। ऐसे अध्यापकों को स्थान विशेष से स्थानान्तरित करके सन्तुष्ट किया जा सकता है।

जी.शेखर और एस. रंगनाथन द्वारा कोयम्बटूर में स्नातक अध्यापकों की कृत्य सन्तुष्टि का अध्ययन किया गया।

---

1. बी.एल.आर. अंजली (1968) 'ए स्टडी ऑफ जॉब सेटिसफेक्शन इन द सेकेण्ड्री स्कूल टीचर्स एण्ड इट्स इफेक्ट्स आन द एजूकेशन ऑफ पीपुल्स विद स्पेशल डिफरेन्स टू द स्टेट ऑफ आन्ध्र प्रदेश, पी-एच.डी., एजूकेशन एम.एस.यू.।

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे -

1. स्नातक अध्यापकों की कृत्य-सन्तुष्टि की समस्या इसके स्तर तथा सामाजिक तथ्यों के साथ इसके सम्बन्धों का अध्ययन करना।
2. स्नातक अध्यापकों की समस्याओं और इनके सामाजिक कारकों से सम्बन्धों का अध्ययन करना।
3. अध्ययन हेतु कोयम्बटूर (तमिलनाडु) के 12 स्कूलों से 75 अध्यापकों को अध्ययन के न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। इन 75 अध्यापकों में से 22 सहायक स्कूलों 30 सरकारी स्कूलों से और 23 संयुक्त स्कूलों से थे। आंकड़ो के संग्रहण के लिए प्रश्नावली का प्रयोग किया गया था आंकड़ो के विश्लेषण के लिए माध्य, मानक, विचलन एवं काई-स्क्वायर परीक्षण प्रयोग किया गया।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित थे -

1. आय, कार्य की प्रकृति, निजी, नीतियाँ व्यवसाय में निजी विशिष्ट उपलब्धियों, अधीन सहकर्मी कार्य सहायक, पहचान एवं प्रशंसा और कार्य-दशा आदि कृत्य सन्तुष्ट को प्रभावित करने वाले कारक थे।
2. शोध में सम्मिलित 75 अध्यापकों में से 12 अत्याधिक रूप से सन्तुष्ट 27 सन्तुष्ट, 29 कम सन्तुष्ट और बाकी के 7 अपने कार्य से असन्तुष्ट थे।
3. स्कूलों के प्रकार एवं कृत्य-सन्तुष्टि के मध्य सार्थक सम्बन्ध देखने को मिला।
4. कृत्य-सन्तुष्टि और सामाजिक तथ्यों जैसे जाति, आयु, समूह परिवार और अनुभव के मध्य सार्थक नहीं पाये गये।

एस. लक्ष्मी (1977)[1] -

द्वारा प्रशिक्षु-शिक्षकों के लिए आयोजित उपलब्धि प्रेरणा विकास कार्यक्रम का उनके कार्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नवत थे -

1. प्रशिक्षु अध्यापकों में उपलब्धि और प्रेरणा का विकास करना।
2. प्रशिक्षु अध्यापकों के कार्य पर उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. उपलब्धि अभिप्रेरणा का दुश्चिन्ता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

---

1. एस.लक्ष्मी, (1977) कन्डक्टिंग एचीवमेन्ट मोटीवेशन डेवलपमेन्ट प्रोग्राम आन टीचर ट्रेनीस एण्ड स्टेडिंग इट्स इफेक्ट आन देयर परफारमेन्स", पी-एच.डी. एजूकेशन एम.एस.यू.

4. उपलब्धि अभिप्रेरणा का आत्मबोध पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
5. उपलब्धि अभिप्रेरणा द्वारा प्रशिक्षु अध्यापकों की उपलब्धि में हुए परिवर्तन और उससे उनके व्यवहार में हुए परिवर्तनों का अध्ययन करना।

अध्ययन में श्री शारदा महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय सालेन के 100 प्रशिक्षु-शिक्षकों को जनसंख्या माना गया। इनमें से 50 छात्राध्यापकों को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया, जिनमें 25 को प्रायोगिक समूह में तथा 25 को नियंत्रित समूह में रखा गया। दोनो समूहों की वृद्धि एक समान थी। प्रयोगात्मक समूह में उपलब्धि को बढ़ाने वाले कार्यक्रम चलाये गये। बुद्धि को मापने के लिए रेवेन्स द्वारा निर्मित स्टैण्डर्ड प्रोगेस्वि मैट्रिक्स का प्रयोग किया गया तथा सैद्धान्तिक परीक्षा के प्राप्तांक एवं प्रयोगात्मक परीक्षा के प्राप्तांको को ज्ञात करने के लिए परफारमेन्स टेस्टों का प्रयोग किया गया। शिक्षण-अभिक्षमता ज्ञात करने के लिए मरे द्वारा निर्मित तथा मेहता द्वारा सम्बर्द्धित टी.ए.टी. परीक्षण तथा दुश्चिन्ता ज्ञात करने के लिए कोलीवर ब्राउन द्वारा निर्मित सेल्फ रिपोटिंग इन्वेन्टरी एण्ड द जनरलएङ्जाइटी स्कूल का प्रयोग किया गया। प्रयोग के लिए प्री टेस्ट एण्ड पोस्ट टेस्ट डिजाइन उपयोग में लायी गयी।

अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए -

1. उपलब्धि अभिप्रेरणा के विकास में इस हेतु चलाये गये कार्यक्रमों का सार्थक सकारात्मक प्रभाव पड़ा।
2. प्रशिक्षार्थियों की उपलब्धि बढ़ाने के लिए चलाये गये कार्यक्रमों से उनकी दुश्चिन्ता कम हुई।
3. निम्न दुश्चिन्ता वाले छात्रों की अपेक्षा उच्च दुश्चिन्ता वाले छात्रों को, उपलब्धि अभिप्रेरणा कार्यक्रम से अधिक लाभ हुआ।
4. छात्राध्यापकों हेतु उपलब्धि अभिप्रेरणा के विकास हेतु चलाये गये कार्यक्रमों से उनके आत्म सम्प्रत्यय एवं आत्मबोध में सुधार हुआ।
5. यह पाया गया कि छात्रों की उपलब्धि और आत्म सम्प्रत्यय के मध्य गहरा सम्बन्ध है। क्योंकि उच्च आत्म सम्प्रत्यय और निम्न आत्म सम्प्रत्यय वाले छात्रों की उपलब्धि में आश्चर्यजनक अन्तर पाया गया।
6. निम्न दुश्चिन्ता वाले छात्रों की अपेक्षा उच्च दुश्चिन्ता वाले छात्रों के कार्य में अधिक प्रगति देखी गयी।
7. उच्च दुश्चिन्ता वाले छात्रों की अपेक्षा निम्न दुश्चिन्ता वाले छात्रों की अभ्यास-शिक्षण में अधिक प्रगति देखी गयी।

एन.वी.कोल्टे (1978)[1] -

द्वारा प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि (देश में) सम्बन्धी द्वि-खण्ड की प्रधानता के सिद्धान्त के सामान्यीकरण का परीक्षण किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे -

1. अध्यापकों की सन्तुष्टि और असन्तुष्टि के लिए जिम्मेदार कारकों का पता लगाना।
2. हैजवर्ग के व्यावसायिक-सन्तुष्टि के द्विखण्ड सिद्धान्त की वैधता का परीक्षण करना।

अध्ययन की निम्न परिकल्पनायें थी -

1. प्रकृति में वास्तविक और अनावश्यक कारक होते हैं वास्तविक कारक सन्तुष्टि के अनुभवों के कारण होते हैं और वे असन्तुष्टि के अनुभवों का कारण नहीं होते हैं।
2. अनावश्यक खाद्य कारक सन्तुष्टि के अनुभवों का कारण होते हैं लेकिन वे सन्तुष्टि के अनुभवों का कारण नहीं होते हैं।

महाराष्ट्र के बुलदाना जिले 6 पंचायत समितियों से न्यादर्श चुना गया। इन समितियों का चुनाव व्यवस्थित न्यादर्शन विधि से किया गया। चुनी गयी प्रत्येक पंचायत समिति से तीन प्राथमिक विद्यालयों का चयन सांयोगिक प्रतिचयन विधि से किया गया। चुने गये विद्यालयों के सभी अध्यापकों को प्रतिदर्श में सम्मिलित किया गया। न्यादर्श में चुने गये सभी शिक्षकों के पास डाक द्वारा मराठी भाषा की प्रश्नावली भेजी गयी। प्रत्येक अध्यापक से पूंछा गया कि वे किसी एक ऐसी घटना का वर्णन करे जब उन्हें अपने व्यवसाय में विशेष रूप से अच्छा अनुभव हुआ और एक ऐसी घटना का वर्णन करें जब उन्हें अपने व्यवसाय से विशेष रूप से बुरा अनुभव हुआ। न्यादर्श की सभी इकाइयों से 78 ऐसी घटनायें जिनमें उन्हें अच्छा अनुभव हुआ था और 70 ऐसी घटनायें जिनमें उन्हें अपने व्यवसाय में बुरा अनुभव हुआ था। एकत्र की गयी विषय वस्तु विश्लेषण द्वारा प्रत्येक अच्छी और बुरी घटना के कारण पता लगाये गये।

अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुये -

1. सन्तुष्टि प्रदान करने वाली घटनाओं में से 42 घटनाओं में सन्तुष्टि के अनुभव का कारण था।
2. 30 अच्छी घटनाओं से पता लगा कि सन्तुष्टि के अनुभव का प्रमुख कारण उनका व्यवसाय था।

---

1. एन.वी. कोल्टे, (1978) "जाब सेटिसफेक्शन ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स ए टेस्ट ऑफ द जनरलिटी ऑफ द टू फैक्टर थेवरी", नेशनल इन्सटीट्यूट ऑफ रूरल डेवलपमेन्ट, हैदराबाद

3. 18 घटनाओं में कार्य की पहचान को सन्तुष्टि के अनुभव का कारण पाया गया।
4. 6 घटनाओं में अच्छा कार्य करने की क्षमता सन्तुष्टि का आधार थी।
5. जहां पति और पत्नी दोनों अध्यापक थे एवं एक जगह कार्य कर रहे थे। वहां नीति और प्रशासन के सम्बन्ध में दोनो सन्तुष्ट थे।
6. 35 घटनाएँ जो असन्तुष्टि प्रदर्शित करती थी। जहां की नीति और प्रशासन अच्छा नहीं था।
7. 25 घटनाएँ जो सन्तुष्टि प्रदान करती थी, उनका कारण खराब नीति और खराब प्रशासन था।
8. 10 असन्तोषजनक घटनाओं में प्राप्त वेतन असन्तोष का कारण था।
9. 10 अन्य असन्तोषजनक घटनाओं में आपसी सम्बन्ध खराब होना कारण था।
10. 5 असन्तुष्ट घटनाओं में खराब कार्य महसूस करने की स्थिति आधुनिकता के कारण थी।
11. इस अध्ययन में हर्ज वर्ग का द्विखण्ड सिद्धान्त यथानुसार लागू नहीं होता।

रामकृष्ण नैया डी. (1980)[1] -

द्वारा महाविद्यालय के शिक्षकों के व्यावसायिक लगाव पढ़ने के प्रति सोंच और व्यावसायिक-सन्तुष्टि का अध्ययन किया गया।

समस्या - एस.वी. वि.वि. क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक लगाव का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे -

1. महाविद्यालयों के शिक्षकों के व्यावसायिक-सन्तुष्टि के स्तर को ज्ञात करना।
2. शिक्षकों के व्यावसायिक-सन्तुष्टि एवं व्यक्तिगत और सामाजिक स्थिति के मध्य सम्बन्ध को ज्ञात करना।
3. व्यावसायिक-सन्तुष्टि और पढ़ाने के प्रति सोच के बीच सम्बन्धों को ज्ञात करना।
4. व्यावसायिक-सन्तुष्टि और व्यावसायिक लगाव के मध्य सम्बन्धों को ज्ञात करना।

---

1. डी.रामकृष्ण नैया (1980) "ए स्टडी ऑफ जॉब सेटिसफेक्शन एट्टीट्यूड टु वर्ड टीचिंग एण्ड जॉब इवाल्वमेन्ट ऑफ कालेज टीचर्स" एम.फिल. श्री बेंकटेश्वर विश्वविद्यालय

विधि -

दो प्रबन्धकीय (सरकारी और निजी) दो लिंग (पुरुष/महिला) दो स्तर (वरिष्ठ/कनिष्ठ) के 400 अध्यापकों को बहुउद्देश्यीय संकुचित रेन्डम विधि से न्यादर्श लिया गया जो एस.बी. महाविद्यालय के क्षेत्र से सम्बन्धित थे। उपयोग में लिए गये उपकरण में व्यावसायिक-सन्तुष्टि खोजिका (अन्वेषिका) व्यावसायिक लगाव की खोजिका, सामाजिक, आर्थिक, मापनी प्रश्नावली तथ व्यक्तिगत आंकड़ो की प्रति सम्मिलित है। 2×2×2 कारक प्रकार अस्थिरता के विश्लेषण टी.टेस्ट, कामर्स परीक्षण काई स्क्वायर परीक्षण आंकड़ो के संग्रहण हेतु किया गया।

मुख्य परिणाम निम्नलिखित थे -

1. नियमित महाविद्यालय के अध्यापक अनियमित या प्रशिक्षण सम्बन्धित अध्यापकों की तुलना में अच्छी अध्यापन प्रकृति रखते थे।
2. पुरुष छात्राध्यापकों की तुलना में महिला छात्राध्यापिका अधिक शैक्षणिक अभिरूचि रखती थी।
3. अध्यापकों के पुत्र और पुत्रियां अधिक उच्च स्तरीय शिक्षण करते थे। स्नातकोत्तर छात्राध्यापक स्नातक छात्राध्यापकों से श्रेष्ठ प्रदर्शन करते थे।
4. शिक्षक विषयानुसार शैक्षणिक अभिवृत्ति नहीं रखते।

डी.आर. सिंह (1982)[1] -

द्वारा हरियाणा के ब्लाक खण्ड अधिकारी की भूमिका व्यावसायिक-सन्तुष्टि तथा अभिलाषाओं का पता लगाया गया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे -

1. ब्लाक शिक्षाधिकारी से सम्बन्धित उसकी अनुकूलतम भूमिका का पता लगाना। (वास्तविक व्यवहार)
2. खण्ड शिक्षाधिकारी से सम्बन्धित उसकी अभिलाषाओं से सम्बन्धित भूमिकाओं का पता लगाना (आशानुकूल व्यवहार)
3. खण्ड विकास अधिकारी के वरिष्ठ अधिकारी जिला शिक्षा अधिकारी प्रति क्षेत्रीय शिक्षाधिकारी के प्रति भूमिका (वास्तविक व्यवहार) का अध्ययन करना।

---

1. डी.आर. सिंह,(1982) "ए स्टडी ऑफ रोल एक्सेप्सन्स जॉब सेटिसफेक्शन एण्ड एस्प्रिशन लेवल ऑफ ब्लाक एजूकेशन आफीसर्स ऑफ हरियाणा, पी-एच.डी. शिक्षा, कुरुक्षेत्र वि.वि.

4. ब्लाक शिक्षाधिकारी के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आशानुकूल भूमिका (आशातीत व्यवहार) का अध्ययन करना।
5. ब्लाक शिक्षाधिकारी की वास्तविक व्यवहार और आशानुकूल व्यवहार के बीच में सम्बन्धों का पता लगाना।
6. खण्ड शिक्षाधिकारी व उससे बड़े अधिकारियों के मध्य उपलब्धि का सम्बन्ध ज्ञात करना।
7. खण्ड शिक्षाधिकारी की व्यावसायिक-सन्तुष्टि से सम्बन्धित विभिन्न बिन्दुओं की अनुकूलता का पता लगाना।
8. खण्ड विकास अधिकारी की अभिलाषा के स्तर से आम सहमति प्रदान करना।

यह अध्ययन हरियाणा प्रान्त के सभी खण्ड शिक्षा अधिकारी, उपक्षेत्रीय शिक्षाधिकारी, उप जिला शिक्षाधिकारी तथा जिला शिक्षाधिकारियों पर आधारित था। विभिन्न ब्लाक शिक्षाधिकारियों पर 18 मापनियों को उपकरण के रूप में प्रयोग किया। ये उपकरण कुछ स्वनिर्मित थे कुछ मंगाये गये थे। इनमें से 112 ब्लाक शिक्षाधिकारी तथा 50 वरिष्ठ शिक्षाधिकारी चयनित किये गये और आंकड़ो का संग्रहण करके उन पर काई वर्ग टेस्ट, समानता, स्वतंत्रता और सह सम्बन्ध द्वारा विश्लेषण किया गया। परिणाम निम्नवत थे -

(1) खण्ड शिक्षाधिकारियों की उनकी भूमिका उनके खुद के कार्यों के अनुकूलन वेतन, नाम, हस्ताक्षर, शैक्षिक प्रगति, कार्य का स्तर डर का मापन, वास्तविक जिम्मेदारी, मित्रता, विभागीय कार्यवाही, गुणों का ज्ञान आदि सभी अनुकूल थे।
(2) खण्ड शिक्षाधिकारी की सहभागिता व्यवहार प्रणाली के अनुकूल नहीं थी।
(3) खण्ड शिक्षाधिकारियों की अनुकूलता इस बात पर थी कि वे अपनी कार्य प्रणाली से भलीभांति परिचित थे।
(4) खण्ड शिक्षाधिकारी की व्यावसायिक-सन्तुष्टि मापन के अनुकूल थी।
(5) वरिष्ठ शिक्षाधिकारियों से ब्लाक शिक्षाधिकारियों के कार्य करने का स्तर व्यवहार, मित्रता विभागीय उत्कृष्टता उपाधियाँ श्रेष्ठ थी।
(6) वरिष्ठ शिक्षाधिकारियों में आम सहमति थी कि खण्ड शिक्षाधिकारी अपना कार्य ठीक से करते हैं।
(7) खण्ड शिक्षाधिकारियों की मित्रता, सहभागिता व्यवहार के बारे में समान विचार थे।
(8) खण्ड शिक्षाधिकारी और वरिष्ठ शिक्षाधिकारियों के बीच कार्य विभाजन को लेकर

आम सहमति नहीं थी।

(9) इस बात पर सहमति नहीं बनी कि खण्ड विकास शिक्षा अधिकारी के कार्य का स्तर उत्तरदायित्व मित्रता और व्यवहार एक समान थी।

के.डी. नायक (1982)[1] -

द्वारा विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों के समायोजन और उनकी देश व्यावसायिक-सन्तुष्टि का अध्ययन किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे -

1. विवाहित और अविवाहित महिला शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि के स्तर का अध्ययन करना।
2. विभिन्न वर्गों की वैवाहिक और अवैवाहिक महिला शिक्षकों के समायोजन में विभिन्नता का अध्ययन करना।
3. विभिन्न वर्गों की वैवाहिक और अवैवाहिक महिला शिक्षकों के कृत्य-सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
4. शहरी विवाहित और अविवाहित महिला शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि और समायोजन में अन्तर का अध्ययन करना।
5. ग्रामीण और शहरी विवाहित और अविवाहित महिला शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि और शिक्षण कौशल के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन के लिए 785 महिला शिक्षकों का न्यादर्श लिया गया, जिसमें जबलपुर जिले में शिक्षण कार्यरत निम्न श्रेणी शिक्षिकाएँ, उच्च श्रेणी शिक्षिकाएँ और विभिन्न उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की प्रवक्ता थीं। इनमें से 75 शिक्षिका विवाहित (300 ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत तथा 75 शहरी क्षेत्रों में कार्यरत) थीं तथा 410 शिक्षिकायें अविवाहित (300 शहरी क्षेत्रों में कार्यरत तथा 110 ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत) थीं। आंकड़ो का एकत्रीकरण करने के लिए डॉ. प्रमोद कुमार और डी.एन. मूथा द्वारा निर्मित कृत्य-सन्तुष्टि प्रश्नावली तथा ए.के.पी. सिन्हा और डॉ. आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित कालेज के विद्यार्थियों के लिए समायोजन अनुसूची एवं डॉ. जयप्रकाश और आर.पी. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित शिक्षण-अभिक्षमता कौशल प्रश्नावली का प्रयोग किया गया प्राप्त आंकड़ो का विश्लेषण आवृत्ति वितरण तैयार कर टी-टेस्ट तथा सह सम्बन्ध गुणांक द्वारा किया गया।

---

1. के.डी. नायक (1982) "ए स्टडी ऑफ एडजेस्टमेन्ट एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ मैरिड एण्ड अनमैरिड लेडी टीचर्स, पी-एच.डी. साइक्लॉजी जबलपुर, यूनीवर्सिटी।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित थे-

1. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में कार्यरत विवाहित और अविवाहित महिला शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि में पर्याप्त अन्तर नहीं था।
2. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में विभिन्न श्रेणियों में कार्यरत विवाहित तथा अविवाहित महिला शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता में पर्याप्त अन्तर नहीं था।
3. निम्न श्रेणी तथा उच्च श्रेणी में कार्यरत अविवाहित महिलाओं शिक्षकों में समायोजन सम्बन्धी समस्या पायी गयी, जबकि अविवाहित महिला प्रवक्ताओं में समायोजन सम्बन्धी समस्या नहीं थी।
4. निम्न श्रेणी तथा उच्च श्रेणी की विवाहित महिला शिक्षकों जो कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत थीं उनकी समायोजन सम्बन्धी समस्या में पर्याप्त अन्तर नहीं था जबकि विवाहित महिला प्रवक्ताओं को कुछ वातावरण सम्बन्धी समायोजन की समस्या थी।
5. महिला शिक्षकों की कृत्य सन्तुष्टि का शिक्षण-अभिक्षमता के साथ सकारात्मक सम्बन्ध था।
6. महिला शिक्षकों की कृत्य सन्तुष्टि में समायोजन का कोई प्रभाव नहीं था।
7. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में विभिन्न श्रेणियों में कार्यरत विवाहित तथा अविवाहित महिला शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं था।

एस.पद्मनाभइया (1986)[1] -

द्वारा माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि एवं शिक्षण प्रभाविकता का अध्ययन किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे -

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-असन्तुष्टि के स्तर का पता लगाना।
2. शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं व्यावसायिक-असन्तुष्टि पर व्यक्तिगत एवं सामाजिक चरों के प्रभाव का पता लगाना।
3. व्यावसायिक-सन्तुष्टि एवं व्यवसाय को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों के मध्य सम्बन्ध का पता लगाना।

---

1. एस.पद्मनाभइया, (1986) "जॉब सेटिसफेक्शन एण्ड टीचिंग इफेक्टि्सनेस ऑफ सेकेण्ड्री स्कूल टीचर्स", पी-एच.डी., एजूकेशन, एस.बी.यू.

4. शिक्षकों की व्यवसायिक-सन्तुष्टि के स्तर को प्रभावित करने वाले व्यक्तित्व के विभिन्न कारकों की पहचान करना।
5. शिक्षण के प्रभाव को मापने हेतु उपकरण का विकास करना।
6. शिक्षण प्रभाविकता पर व्यक्तिगत एवं सामाजिक चरों के प्रभाव का पता लगाना।
7. शिक्षण प्रभाविकता और व्यवसाय सम्बन्धी प्रत्येक चरण एवं सामान्य सन्तुष्टि प्रदान करने वाले चरों के मध्य सम्बन्ध का पता लगाना।
8. व्यक्तित्व के उन लक्षणों की पहचान करना जो शिक्षण प्रभाविकता में अपना योगदान देते हैं या शिक्षण की प्रभाविकता को प्रभावित करते हैं।
9. विभिन्न स्वतंत्र चरों की समूहों की सहायता से व्यावसायिक-सन्तुष्टि एवं शिक्षण प्रभाविकता के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करने हेतु एक बहुगामी प्रतिगमन समीकरण विकसित करना।

न्यादर्श में 180 प्रशिक्षण संस्थानों के प्रधानों, उनके 960 शिक्षकों एवं 2160 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। अध्ययन हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया -

1. स्वनिर्मित व्यावसायिक सन्तुष्टि मापनी।
2. स्वनिर्मित विभेदीकरण सूची।
3. स्वनिर्मित परिवारिक सन्तुष्टि एवं जीवन सन्तुष्टि मापनी।
4. स्वनिर्मित शिक्षण प्रभाविकता मापनी।
5. लोडल व केंजनर की व्यवसाय लगाव मापनी।
6. कैटल की 16 पी.एफ. प्रश्नावली।
7. शेयर व कैटल न्यूरोसिटिज्म स्केल क्यूश्चनेअर।

ऑकड़ो का विश्लेषण काई वर्ग परीक्षण, क्रान्तिक अनुपात, एफ-टेस्ट एवं सहसम्बन्ध गुणांक की गणना के माध्यम से किया गया था।

अध्ययन से निम्न परिणाम प्राप्त हुए -

1. सामान्यतः शिक्षक (72 प्रतिशत) अपने व्यवसाय से असन्तुष्ट थे।
2. सामान्यतः शिक्षक व्यावसायिक-सन्तुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों में से एच.एम. यथा योग्य कार्य तथा विद्यार्थियों एवं सहयोगी शिक्षकों के मामले में सन्तुष्ट थे। वही नीतिगत मामलों भौतिक सुख सुविधाओं, प्रबन्धकीय नीतियों, कार्य की प्रकृति एवं अन्य क्रिया-कलापों से सम्बन्धित मामलों में असन्तुष्ट थे।

3. शिक्षकों की योग्यता को छोड़कर अन्य सभी व्यक्तिगत एवं सामाजिक कारक अन्य व्यवसाय सम्बन्धी कारकों के साथ मिलकर सन्तुष्टि को प्रभावित करते हैं। लेकिन वे सम्पूर्ण व्यावसायिक-सन्तुष्टि को प्रभावित नहीं करते।
4. व्यावसायिक-सन्तुष्टि या व्यावसायिक असन्तुष्टि के स्तर के मामले में पुरुष एवं महिला शिक्षकों के बीच कोई अन्तर नहीं था।
5. पूर्ण रूप से व्यावसायिक-सन्तुष्टि एवं व्यावसायिक-असन्तुष्टि के स्तर के मामले में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। लेकिन नीतिगत निर्णयों तथा प्रबन्धकीय नीतियों के सम्बन्ध में ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों के व्यवसायिक-सन्तुष्टि के स्तर में सार्थक अन्तर देखा गया।
6. हाईस्कूल स्तर के शिक्षको की अपेक्षा जूनियर हाईस्कूल के शिक्षक भौतिक सुविधाओं के मामले में अधिक असन्तुष्ट थे। क्योंकि उन्हें हाईस्कूल स्तर के शिक्षकों की अपेक्षा बहुत ही निम्न श्रेणी की भौतिक सुविधाएँ मिल रही थीं।
7. व्यवसाय से सम्बन्धित केवल तीन कारकों-नीतिगत मामले उपयुक्तता एवं विद्यार्थियों के मामले में विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों के बीच व्यावसायिक सन्तुष्टि के स्तर में सार्थक अन्तर था।
8. अपने व्यवसाय से पूर्ण रूप से और व्यावसाय को प्रभावित करने वाले समस्त कारकों के मामले में निम्न औसत और उच्च अन्तर रखने वाले शिक्षकों के मध्य व्यावसायिक-सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर था।
9. कैटल की 16 पी.एफ. प्रश्नावली के विभिन्न कारक शिक्षकों के व्यावसायिक-सन्तुष्टि के कारकों को प्रभावित करते हैं।
10. 11 व्यक्तिगत और सामाजिक चरों में से केवल पांच क्षेत्र, पद, आयु, अनुभव और शिक्षकों के परिवार का आकार उनकी शिक्षण के प्रति प्रतिबद्धता के स्तर को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

35 चरों के अध्ययन में से केवल कुछ चरों का शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता के साथ सार्थक सम्बन्ध देखा गया। इस अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता निम्नवत है-

1. सरकार को चाहिये कि वह शिक्षकों को चिकित्सकीय प्रतिपूर्ति, मुफ्त यात्रा और उनके बच्चों को निःशुल्क शिक्षा की सुविधा प्रदान करे।
2. सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये जिससे सभी शिक्षक

प्रशिक्षण अभ्यास में हो रहे अद्यतन विकास से परिचित हो सकें, पुस्तकों के निर्माण एवं परीक्षाओं के सम्पादन से सम्बन्धित समस्त नीति निर्माण में वरिष्ठ शिक्षकों की भागीदारी सम्बन्धित अधिकारों को सुनिश्चित करना चाहिए।

चंचल भसीन (1988)[1] -

द्वारा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का आधुनिक समाज के देश सन्दर्भ में शिक्षण-अभिक्षमता और इसका शिक्षण प्रभाविकता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया गया।

अध्ययन मुख्य के उद्देश्य निम्न थे-

1. अध्ययन का उद्देश्य था उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता और शिक्षण प्रभाविकता के मध्य सम्बन्ध का पता लगाना।

न्यादर्श के रूप में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विज्ञान और मानव विज्ञान संकाय के 300 पुरुष एवं 300 महिला अध्यापकों को चयनित किया गया। न्यादर्श की सभी इकाइयों पर 'जय प्रकाश' एवं 'श्रीवास्तव' द्वारा निर्मित शिक्षण अभिक्षमता परीक्षण तथा 'कुमार' एवं 'मुखा' द्वारा निर्मित शिक्षण प्रभाविकता परीक्षण का प्रशासन कर आंकड़े एकत्र किये गये। प्राप्त आंकड़ो का विश्लेषण अनुमानित सांख्यिकी के माध्यम से किये गये।

अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए -

1. यह पाया गया कि शिक्षण-अभिक्षमता और शिक्षण प्रभाविकता के मध्य सहसम्बन्ध है लेकिन शिक्षक समुदाय सहभागिता से इनका सीधा सम्बन्ध नहीं है।
2. विज्ञान एवं मानव विज्ञान संकाय के शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता के मध्य सार्थक उत्तर पाया गया।
3. ग्रामीण एवं शहरी सरकारी एवं गैर सरकारी तथा पुरुष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता एवं शिक्षण प्रभाविकता में कोई अन्तर नहीं था।

जी. शेखर और एस. रंगनाथन (1989)[2] -

द्वारा कोयम्बटूर में स्नातक अध्यापकों की कृत्य-सन्तुष्टि का अध्ययन किया गया।

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे -

1. स्नातक अध्यापकों की कृत्य-सन्तुष्टि की समस्या इसके स्तर तथा सामाजिक तथ्यों के साथ इसके सम्बन्धों का अध्ययन करना।

---

1. चंचल भसीन 1988 "टीचिंग एप्टीट्यूड एण्ड इट्स रिलेशनशिप विद टीचिंग इफेक्टिवनेस ऑफ द हायर सेकेण्ड्री स्कूल टीचर्स इन रिलेशन टू द मार्डन कम्यूनिटी", पी-एच.डी. एजूकेशन, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, इन्दौर।
2. जी.शेखर एण्ड एस.रंगनाथन (1988) "जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ ग्रेजुएट टीचर्स इन कोयम्बटूर, इण्डियन एजूकेशनल रिव्यू बैल्यूम 23 (3) 126-36।

2. स्नातक अध्यापकों की समस्याओं और इनके सामाजिक कारकों से सम्बन्धों का अध्ययन करना।

अध्ययन हेतु कोयम्बटूर (तमिलनाडु) के 12 स्कूलों से 75 अध्यापकों को अध्ययन के न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। इन 75 अध्यापकों में से 22 सहायक स्कूलों 32 सरकारी स्कूलों से और 23 संयुक्त स्कूलों से थे। आंकड़ों के संग्रहण के लिए प्रश्नावली का प्रयोग किया गाय था। आंकड़ो के विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन एवं काई-स्क्वायर परीक्षण प्रयोग किया गया।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित थे-

1. आय, कार्य की प्रकृति, निजी नीतियाँ व्यवसाय में निजी विशिष्ट उपलब्धियों, अधीन, सहकर्मी कार्य सहायक, पहचान एवं प्रशंसा और कार्य दशा आदि कृत्य-सन्तुष्टि को प्रभावित करने वाले कारक थे।
2. शोध में सम्मिलित 75 अध्यापकों में से 12 अत्याधिक रूप से सन्तुष्ट 27 सन्तुष्ट, 29 कम सन्तुष्ट और बाक़ी के 7 अपने कार्य से असन्तुष्ट थे।
3. स्कूलों के प्रकार एवं कृत्य-सन्तुष्टि के मध्य सार्थक सम्बन्ध देखने को मिला।
4. कृत्य-सन्तुष्टि और सामाजिक तथ्यों जेसे जाति, आयु, समूह परिवार और अनुभव के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं पाये गये।

पी.बाला कृष्ण रेड्डी (1989)[1] -

द्वारा प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन किया गया।

यह अध्ययन व्यक्तित्व के विभिन्न कारकों अनुभव, वैवाहिक स्थिति, लिंग आदि चरों के सन्दर्भ में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के कृत्य सन्तोष, शिक्षण अभिवृत्ति एवं उनके वृत्तिक लगाव का गहन रूप से जांच से सम्बन्धित है।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे -

1. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि, शिक्षण-अभिवृत्ति एवं वृत्तिक लगाव के स्तर का आंकलन करना।

---

1. पी.बाला कृष्ण रेड्डी (1989), जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स, एम.फिल. एजूकेशन, श्री वेंक्टेश्वर यूनीवर्सिटी।

2. व्यवसाय से सम्बन्धित उन विभिन्न कारकों का पता लगाना जो अध्यापकों की सन्तुष्टि और असन्तुष्टि का कारण होते हैं।
3. शिक्षकों की वैवाहिक स्थिति, योग्यता, परिवार का आकार, लिंग, अनुभव एवं व्यक्तित्व के कारकों के सन्दर्भ में व्यावसायिक-सन्तुष्टि और शिक्षण अभिवृत्ति तथा वृत्तिक लगाव के बीच सम्बन्ध का पता लगाना।
4. इस बात का पता लगाना कि कितने प्रतिशत शिक्षक अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट है और वे मनोवैज्ञानिक रूप से अपने कार्य में अच्छी तरह संलग्न है।
5. व्यावसायिक-सन्तुष्टि, शिक्षण अभिवृत्ति और वृत्तिक लगाव की भविष्य वाणी हेतु एक बहु प्रतिगमन समीकरण बनाना।

न्यादर्श हेतु विभिन्न स्थितियों में स्तरानुकूल संयोगिक प्रतिचयन पद्धति अपनाकर प्राथमिक विद्यालय के 300 शिक्षकों का चयन किया गया। अध्ययन हेतु व्यावसाय सन्तुष्टि मापनी और शिक्षण अभिवृत्ति मापनी को स्वयं विकसित किया गया, लोघर्ट, इनजर द्वारा निर्मित वृत्तिक लगाव मापनी तथा कैटल की 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली (फार्न सी) तथा व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र का प्रयोग उपकरणों के रूप में किया गया। आंकड़ो का विश्लेषण में टी-टेस्ट, एफ-टेस्ट तथा बहुप्रतिगमन का प्रयोग किया गया तथा अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए -

1. सभी शिक्षक कुल मिलाकर अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट थे।
2. व्यवसाय सम्बन्धी विभिन्न कारकों के आधार पर उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि देखने से स्पष्ट हुआ कि 8 कारकों के सन्दर्भ में शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का स्तर सन्तोषजनक था तथा 7 कारकों के सन्दर्भ में शिक्षक अपने व्यवसाय से असंतुष्ट दिखे।
3. पुरुषों की तुलना में महिला शिक्षक अपने व्यावसाय से अधिक सन्तुष्ट दिखीं वहीं केवल एक कारक के सन्दर्भ में पुरुष शिक्षक, महिला शिक्षकों से अधिक सन्तुष्ट थे।
4. सभी तरह से व्यावसायिक-सन्तुष्टि के सन्दर्भ में जो शिक्षक पूर्ण रूप से योग्यता रखते थे वे अधिक सन्तुष्ट थे तथा अधिक आयु एवं मध्य उम्र के शिक्षकों की अपेक्षा यंग ऐज के शिक्षक अपने व्यवसाय से अधिक सन्तुष्ट थे।
5. उच्च, मध्य और निम्न शिक्षण अभिवृत्ति वाले शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि के स्तर में सार्थक अन्तर था।
6. व्यक्तित्व के 7 कारकों के सन्दर्भ में निम्न, मध्य और उच्च वृत्ति लगाव वाले शिक्षकों

की व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले स्तर में सार्थक अन्तर था।

7. उच्च, मध्य और निम्न वृत्ति लगाव वाले शिक्षकों की शिक्षण-अभिवृत्ति के स्तर में सार्थक अन्तर था।

8. व्यक्तित्व सम्बन्धी प्राप्तांको की उच्च, मध्य और निम्न श्रेणी में आने वाले शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति के स्तर में सार्थक अन्तर था।

9. व्यक्तित्व सम्बन्धी 4 कारकों शिक्षण-अभिवृत्ति और योग्यता के आधार पर वर्गीकृत शिक्षकों के वृत्ति लगाव के स्तर में सार्थक अन्तर था।

10. 84.33 प्रतिशत शिक्षक मनोवैज्ञानिक रूप से अपने व्यवसाय में अपने आपको अच्छी तरह संलग्न समझते हुए पाये गये।

11. 84.4 प्रतिशत शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि में प्रसरण व्यक्तित्व सम्बन्धी विभिन्न कारकों के सन्दर्भ में देखा गया।

12. स्वतंत्र चरों के आधार पर व्यावसायिक-सन्तुष्टि के सन्दर्भ में भविष्यवाणी करने में कुल प्रसरण 27.7 प्रतिशत था।

13. स्वतंत्र चरों के आधार पर शिक्षण अभिवृत्ति में कुल प्रसरण 39.1 प्रतिशत था।

14. स्वतंत्र चरों के आधार पर वृत्तिक लगाव कें प्रसरण 49.1 प्रतिशत देखा गया।

एस.राय (1990)[1] -

द्वारा शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि और उनके छात्रों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया।

अध्ययन का उद्देश्य इस बात का पता लगाना था कि अध्यापकों का अपने छात्रों के प्रति दृष्टिकोण उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि का अपने छात्रों के प्रति दृष्टिकोण उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि और उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य किस तरह का सम्बन्ध होता है। इस अध्ययन हेतु प्रयोगात्मक अभिकल्प का चयन किया गया। जिमसें सांयोगिक प्रतिचयन विधि द्वारा उड़ीसा के कटक शहर के 5 स्कूलों के 100 पुरुष एवं महिला शिक्षकों को न्यादर्श में लिया गया अध्ययन में मानसिक स्वास्थ्य मापनी, कृत्य सन्तुष्टि मापनी तथा छात्रों के प्रति शिक्षक अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग उपकरणों के रूप में किया गया प्राप्त आंकड़ो का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, सहसम्बन्ध, गुणांक काई वर्ग परीक्षण तथा टी. परीक्षण द्वारा किया गया।

---

1. एस.राय (1990) 'ए स्टडी ऑफ द एटीट्यूड ऑफ टीचर्स टूवर्डस पिपूल्स एण्ड दियर जॉब सेटिसफेक्शन, एम.फिल. एजूकेशन, उत्कल यूनीवर्सिटी।

अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए -

1. शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और उनके कृत्य सन्तोष एवं उनकी छात्रों के प्रति अभिवृत्ति के बीच सार्थक धनात्मक सह सम्बन्ध देखा गया।
2. शिक्षकों का शिक्षण अनुभव, मानसिक, स्वास्थ्य, कृत्य सन्तोष तथा उनकी छात्रों के प्रति अभिवृत्ति का उनकी आयु से सार्थक धनात्मक सह सम्बन्ध पाया गया।

जी.सी.नायक (1990)[1]

द्वारा अल्पकालिक शिक्षकों या शिक्षण सहायकों की कृत्य सन्तुष्टि से सम्बन्धित तथ्यों का अध्ययन किया गया।

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे -

1. शिक्षण सहायकों की कार्य-सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
2. कार्य सन्तुष्टि तथा जाति, आयु, शिक्षण अनुभव और वैवाहिक स्तर के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन करना।
3. कार्य नियुक्ति के समय शिक्षण सहायकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

इस व्याख्यात्मक सर्वेक्षण में एम.एस. विश्वविद्यालय बड़ौदा के शिक्षण सहायकों में संयोगिक विधि द्वारा प्रतिशत का चयन किया गया था आंकड़ो के संग्रहण हेतु एक स्वनिर्मित अनुसूची का प्रयोग किया गया तथा शिक्षण सहायकों की कृत्य-सन्तुष्टि के आंकड़ो के संग्रह करने के लिए सी.एन. दफ्तरवार द्वारा निर्मित कृत्य-सन्तुष्टि मापनी का प्रयोग किया गया था। शिक्षण सहायकों की भावनाओं को जानने के लिए एक निजी साक्षात्कार का प्रबन्ध किया गया आंकड़ो का विश्लेषण, प्रतिशत, माध्यिका, मानक विचलन, एफ-टेस्ट, प्रसरण विश्लेषण और काइ-स्क्वायर परीक्षण की सहायता से किया गया।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित थे -

1. अधिक से अधिक शिक्षण सहायक अपने कार्य उत्तरदायित्व और विभाग की सामाजिक स्थिति से सन्तुष्ट थे।
2. शिक्षण सहायक जाति, आयु, समूह अनुभव और वैवाहिक स्तर के आधार पर कृत्य-सन्तुष्टि के स्तर में भिन्न नहीं थे।

---

1. जी.सी. नायक (1990) "जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ टीचिंग एसिसटेन्ट्स ऑफ द एम.एस. यूनीवर्सिटी ऑफ बरोदा, एम.फिल. एजूकेशन द महाराज सायाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा।

3. शिक्षण सहायकों द्वारा शिक्षण व्यवसाय चुनने के पीछे मुख्य कारण अनुकूल व्यवहार आगे अध्यापन की अनुकूलता और आर्थिक विचार था।

पी.एल. सक्सेना (1990)[1]-

द्वारा मध्य प्रदेश के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्रवक्ताओं की कृत्य-सन्तुष्टि को प्रभावित करने वाले तत्वों का अध्ययन किया गया।

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे-

1. मध्य प्रदेश के 12 जिलों में 118 स्कूल इस अध्ययन के लिए चुने गये। चुने हुए स्कूलों में कार्यरत 600 अध्यापक और 300 अध्यापिकाओं को शोध के न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। इस अध्ययन में सामान्य सूचनाओं पर आधारित कृत्य-सन्तुष्टि विचार मापनी एवं एक साक्षात्कार सूची के द्वारा आंकड़ो का संग्रह किया गया तथा माध्य, एफ-टेस्ट का प्रयोग कर आकड़ो का विश्लेषण किया गया।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित थे-

1. पुरुषों एवं महिला प्रवक्ताओं की व्यावसायिक सन्तुष्टि में सामाजिक, व्यक्तिगत, व्यावसायिक, नैतिक और आर्थिक तत्वों के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं था और न ही विज्ञान और कला वर्ग के प्रवक्ताओं की व्यावसायिक सन्तुष्टि के बीच सार्थक अन्तर था।
2. उपर्युक्त तत्वों के आधार पर 10 साल से अधिक शिक्षण अनुभव वाले तथा 10 साल से कम शिक्षण अनुभव वाले गैर सरकारी ग्रामीण और शहरी स्कूलों के प्रवक्ताओं के बीच व्यवसायिक सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर था।

जे.सी. गोयल (1990)[2]-

द्वारा व्यवसायिक-सन्तुष्टि, समायोजन और भारत में शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यवासायिक रूचि के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन किया गया।

---

1. पी.एल. सक्सेना (1990) "ए स्टडी ऑफ एलेमेन्ट्स ह्विच इफेक्ट द जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ लेक्चर्रस वर्किंग इन हायर सेकेण्ड्री स्कूल ऑफ मध्य प्रदेश", पी-एच.डी., एजूकेशन, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय।
2. जे.सी. गोयल एण्ड आर.के चोपरा (1989), रिलेशनशिप ऑफ सेल्फ कॉनसेप्ट, एट्टीट्यूड एण्ड एडजेस्टमेन्ट विद अचीवमेन्ट ऑफ सेड्यूल्ड कास्ट्स/सेड्यूल्ड ट्राइब्स स्टूडेन्टस-टीचर्स", इनडिपेन्डेन्ट स्ट्डी, नेशनल काउन्सिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग (इ.आर.आई.सी. फन्डेड)।

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नवत थे -

1. अध्ययन के मुख्य उद्देश्य में व्यवहार, कृत्य-सन्तुष्टि, समायोजन और लिंग, आयु, योग्यता और अनुभव पर आधारित भिन्न वर्गों में शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यवसायिक रूचि का अध्ययन करना।
2. व्यवहार, कृत्य-सन्तुष्टि, समायोजन और लिंग, आयु, योग्यता और अनुभव पर आधारित भिन्न वर्गों के अध्यापक शिक्षकों के समूह के मध्य भिन्नता का अध्ययन करना।
3. भिन्न वर्गों के शिक्षक-प्रशिक्षक के व्यवहार व्यवसायिक-सन्तुष्टि, समायोजन और व्यावसायिक रूचि के बीच सम्बन्धों का अध्ययन करना।
4. शिक्षक-प्रशिक्षक की कृत्य-सन्तुष्टि के द्वारा उनके व्यवहार समायोजन और व्यावसायिक रूचि के बारे में भविष्यवाणी करना।

इस अध्ययन हेतु 38 संस्थाओं के कार्यरत 314 शिक्षकों-प्रशिक्षकों को न्यादर्श नमूने के रूप में चयनित किया गया। जिसमें विभिन्न योग्यताओं, शिक्षण-अनुभव और भिन्न आयु वर्ग को महिला और पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षक सम्मिलित थे, इस अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण थे-स्वः निर्मित व्यवहार मापनी, व्यावसायिक सन्तुष्टि अनुसूची वेल द्वारा निर्मित समायोजन अनुसूची और शिक्षक-प्रशिक्षक की व्यावसायिक रूचि के लिए स्वःनिर्मित निरीक्षण अनुसूची। आंकड़ो का विश्लेषण माध्य प्रमाणिक विचलन, रेखीय प्रतीपगमन की सहायता से किया गया, जिसमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए-

1. शिक्षक-प्रशिक्षकों की बड़ी संख्या अपने व्यवसाय की ओर आकर्षित और अपने कार्य से सन्तुष्ट थी, किन्तु उनका समायोजन व व्यवसायिक रूचि का स्तर निम्न था।
2. भिन्न वर्गों का व्यवहार और व्यवसायिक सन्तुष्टि सार्थक रूप से भिन्न नहीं थी।
3. शिक्षक-प्रशिक्षको का एक वर्ग अपने व्यवसाय में कम रूचि रखता था।
4. शिक्षक-प्रशिक्षकों की संवेगात्मक स्थिरता आयु के साथ बढ़ती रहती थी।
5. शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक रूचि शिक्षण अनुभव के साथ बढ़ रही थी।

एम.भूम रेड्डी[1] -

द्वारा आन्ध्र प्रदेश के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया।

---

1. एन.भूम रेड्डी (1991) टीचिंग एप्टीट्यूड्स एण्ड एटीट्यूड्स ऑफ सेकेण्ड्री स्कूल टीचर्स इन आन्ध्र प्रदेश, पी-एच.डी. एजूकेशन, उसमानिया यूनीवर्सिटी।

अध्ययन में आन्ध्र प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण-अभिक्षमता एवं अभिवृत्ति का सम्बन्ध उनके लिंग, आयु, संकाय एवं वर्ग के साथ क्या है। यह जानने का प्रयास किया गया।

अध्ययन का उद्देश्य इस बात का परीक्षण करना था कि क्या शिक्षकों की लिंग, आयु, संकाय एवं वर्ग की उनकी शिक्षण-अभिक्षमता और दृष्टिकोण पर कोई प्रभाव पड़ता है?

मुख्य न्यादर्श के रूप में काकतिय विश्वविद्यालय वारंगल से सम्बद्ध शिक्षा महाविद्यालयों में वर्ष 1989-90 में प्रवेश लेने वाले संस्थागत बी.एड. के 332 छात्राध्यापकों को चयनित किया गया। उपन्यादर्श में आन्ध्र प्रदेश के बी.जोन के सरकारी, अर्द्धसरकारी और जिला प्रजापरिषदीय माध्यमिक विद्यालयों की दस (10) वर्ष की सेवा अवधि से अधिक अनुभव वाले 80 शिक्षकों का चयन किया गया।

अध्ययन के लिए प्रसंगात्मक बोध परीक्षण तथा शिक्षण-अभिक्षमता अनुसूची का प्रयोग किया गया आंकड़ो के विश्लेषण के लिये मध्यमानक माध्यिका, मानक विचलन, विसमता, कुकुदता, टी-टेस्ट सह सम्बन्ध गुणांक और काई वर्ग परीक्षण का प्रयोग किया गया।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष निम्न हैं -

1. शिक्षण-अभिक्षमता परीक्षण में महिला शिक्षकों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर था।
2. शिक्षकों की आयु और संकाय का प्रभाव प्रसंगात्मक बोध परीक्षण के परिणामों पर नहीं पड़ा।
3. छात्राध्यापकों की तुलना में अनुभवी शिक्षकों का प्रदर्शन बेहतर रहा।

बसी सतपाल कौर (1991)[1] -

द्वारा किये गये अध्ययन की समस्या निम्न थी -

यह अध्ययन फिरोजपुर, रापर और लुधियाना जिले के भाषा शिक्षकों की शिक्षण क्षमता पर आधारित है भाषा शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि, नियंत्रण शक्ति एवं व्यावसायिक विभीषिका के सम्बन्ध में प्रतिबाधित और उन प्रतिबाधित शिक्षकों में अन्तर ज्ञात करना है इसी आधार विभिन्न समूहों के मध्य लिंग स्कूल भी पृष्ठभूमि स्कूल का प्रचार भाषा का शिक्षण और सेवा काल माना गया है।

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे -

---

1. वसी सतपाल कौर (1991) ए स्टडी आफ द टीचिंग कम्पटेन्सी आफ लैंगवेज टीचर इन रिलेशन टु देयर जाब सेटिसफेक्शन लोकस आफ कन्ट्रोल इन प्रोफेशनल वर्कआउट, पी-एच.डी. शिक्षा पंजाब विश्वविद्यालय।

1. फिरोजपुर, रापर और लुधियाना जिले के भाषा शिक्षकों की शिक्षण के प्रति प्रतिबद्धता ज्ञात करना।
2. प्रतिबद्ध और अप्रतिबद्ध भाषा शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि नियंत्रण शक्ति एवं व्यावसायिक विभीषिका में अन्तर ज्ञात करना।
3. विभिन्न समूहों को भाषा शिक्षकों के मध्य लिंग स्कूल की पृष्ठभूमि का प्रकार भाषा का शिक्षण और सेवाकाल के मध्य अन्तर ज्ञात करना।
4. विभिन्न सिद्धान्तों से शिक्षण की प्रतिबद्धता मापना।
5. लुधियाना फिरोजपुर व रापड जिले के भाषा शिक्षकों के मध्य अन्तर का अध्ययन।

विधि-

अन्तिम न्यादर्श में 440 प्रशिक्षित स्नातक पुरुष ओर महिला भाषा शिक्षक तथा पंजाब के तीन जिलों रापड़, लुधियाना, फिरोजपुर के हाईस्कूल और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के 2000 छात्र लिए गये। उपकरण का प्रयोग किये गये सिद्धू की स्वयं शिक्षण शिक्षक रेटिंग मापनी।

ग्रेवाल की शिक्षण की छात्र मापनी चन्देल की शिक्षक व्यवसायिक सन्तुष्टि मापनी रोटर का आन्तरिक तथा बाह्य पैमाना मासलॉक का विभीषिका निवेषिका आंकड़ो के विश्लेषण के विषय में माध्य मानक विचलन टी रेसियो पीयर का सह सम्बद्धता गुणांक प्रयोग में लाये गये।

मुख्य परिणाम निम्नलिखित थे-

1. अध्ययन के निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि भाषा शिक्षक आपसी संगत एवं सफलता को समझते हैं इसलिए वे व्यावसायिक विभीषिका का अनुभव नहीं करते।
2. नियंत्रण की शक्ति के आधार पर शिक्षकों की शिक्षण के प्रति प्रतिबद्धता और व्यावसायिक सन्तुष्टि के मध्य कोई अन्तर नहीं था।
3. महिला शिक्षिकायें शहरी विद्यालयों के भाषा शिक्षक एवं हायर सेकेण्ड्री स्तर के भाषा शिक्षक ग्रामीण एवं हाईस्कूल स्तर के भाषा शिक्षकों की अपेक्षा आन्तरिक संयम और अपने व्यवसाय से अधिक सन्तुष्ट थे।
4. अध्ययन से यह भी निष्कर्ष निकला के शिक्षण के प्रति प्रतिबद्धता और व्यावसायिक-सन्तुष्टि के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध था तथा नियंत्रण की शक्ति एवं शिक्षण के प्रति प्रतिबद्धता के मध्य तथा व्यावसायिक विभीषिका एवं शिक्षण के प्रति प्रतिबद्धता के मध्य ऋणात्मक सह सम्बन्ध था।

सिप्रा राय (1992)[1] -

द्वारा शिक्षकों के छात्रों के प्रतिदृष्टिकोण और उनके कृत्य-सन्तोष का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

इस अध्ययन में यह पता लगाने का प्रयास किया गया कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कृत्य सन्तुष्टि सम्बन्धी विभिन्न कारक कौन-कौन से हैं तथा अध्यापकों का अपने छात्रों के प्रति दृष्टि कोण कैसा है।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे-

1. शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य, शिक्षण अनुभव और उनके छात्रों के प्रति दृष्टिकोण का उनके कृत्य सन्तोष के साथ कैसा सह सम्बन्ध है।
2. पुरुष एवं महिला शिक्षकों के कृत्य सन्तोष, मानसिक स्वास्थ्य और छात्रों के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा मानसिक स्वास्थ्य मापनी, कृत्य सन्तोष मापनी, छात्रों के प्रति शिक्षक अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया गया और इन्हीं स्वनिर्मित उपकरणों से आंकड़े एकत्र किये गये। म्हला कि शोधार्थिनी द्वारा 'मिनसोटा टीचर एट्टीटियूड इनवेन्टरी का भी प्रयोग किया गया, आंकड़ो का विश्लेषण प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन, सह सम्बन्ध, काई वर्ग टी टेस्ट और प्रतिगमन समीकरण द्वारा किया गया।

अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित थे-

1. अध्यापकों के मानसिक स्वास्थ्य और उनके कृत्य-सन्तोष एवं उनकी छात्रों के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सार्थक एवं धनात्मक सह सम्बन्ध था।
2. शिक्षकों के शिक्षण अनुभव, मानसिक स्वास्थ्य कृत्य-सन्तोष और उनके छात्रों के प्रति दृष्टिकोण का उनकी आयु के साथ धनात्मक एवं सार्थक सह सम्बन्ध पाया गया।
3. जो अध्यापक अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट थे उसका अपने विद्यार्थियों के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक था।
4. सामान्यतः महिलायें जो अपने विद्यार्थियों से स्नेह तथा उनके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखती थीं, उनका मानसिक स्वास्थ्य तथा कृत्य-सन्तुष्टि पुरुषों की तुलना में काफी अच्छी थी।

---

1. राय, सिप्रा (1992) "ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ टीचर्स एट्टीट्यूड टू-वर्ड प्यूपिल्स एण्ड देयर जॉब सेटिसफेक्शन" पी-एच.डी. एजूकेशन, उत्कल यूनीवर्सिटी।

(स) प्रदेश में सम्पन्न शोध अध्ययन -

एच.एल. सिंह (1974)[1]-

द्वारा अध्यापकों के मूल्यों तथा उनके दृष्टिकोण एवं कृत्य सन्तुष्टि से सम्बन्ध का आंकलन किया गया।

यह अध्ययन जिस चीज की जानकारी करने के लिए किया गया कि शिक्षकों में कौन-कौन से प्रमुख मूल्य है? उनका अपने व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण अनुकूल है कि प्रतिकूल? और वे अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट है अथवा नहीं? अध्ययन का मकसद इस बात की परीक्षा करना था अध्यापकों के मूल्यों उनके दृष्टिकोणों उनकी व्यवसायिक दृष्टिकोण के मध्य क्या सम्बन्ध है साथ ही अध्ययन का एक प्रमुख अंश "अध्यापक मूल्य अनुसूची" सूची का निर्माण एवं प्रमापीकृत करना था।

अध्ययन दो चरणों में सम्पन्न किया गया प्रथम चरण में अध्यापक मूल्य अनुसूची (TVI) का निर्माण एवं उसका प्रमापीकरण किया गया और द्वितीय चरण में अध्यापक मूल्य अनुसूची को प्रकाशित कर अध्यापक के मूल्यों उनके दृष्टिकोणों एवं उनके कृत्य संतोष का अध्ययन किया गया। अध्यापक मूल्य अनुसूची के प्रमाणीकरण के लिए केन्द्र शासित प्रदेश दिल्ली के 500 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 517 अध्यापकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। अध्यापकों के मूल्यों, दृष्टिकोणों एवं कृत्य सन्तोष के बीच सम्बन्धों का पता लगाने के लिए स्तरानुसार संयोगिक प्रतिचयन विधि से 521 अध्यापकों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। स्तर एवं चयन का मानक निश्चित करने हेतु प्रबन्ध तंत्र लोकेशन और बालक-बालिका विद्यालय को आधार बनाया गया। अध्यापक मूल्य अनुसूची विश्वसनीयता एवं वैधता निश्चित की गयी तथा उसको एक पुस्तिका के रूप में तैयार किया गया उसके लिए एक उत्तर प्रपत्र तैयार किया गया, एक मैनुवल बनाया गया तथा स्कोरिंग की का एक सेट तैयार किया गया। इस अनुसूची के साथ ही अहलूवालिया द्वारा निर्मित टीचर एट्टीटियूड इनवेन्टरी रोथ की संशोधित स्टाफ सेटिसफेक्शन सर्वे तथा व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र का भी प्रयोग आंकड़े एकत्र करने के लिए किया गया।

अध्ययन के परिणाम निम्नलिखित थे-

1. शिक्षकों में सामाजिक एवं बौद्धिक मूल्य उच्च स्तर के थे लेकिन आर्थिक एवं राजनैतिक मूल्य निम्न स्तर के थे।

---

1. एच.एल. सिंह (1974), "मेजरमेन्ट ऑफ बैल्यूज एण्ड दियर रिलेशनशिप विद टीचर्स एटीट्यूड्स एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन" डी.फिल. एजूकेशन, बी.एच.यू.।

2. धार्मिक एवं राजनैतिक मूल्यों को छोड़कर अध्यापकों की आयु में अन्तर होने की वजह से उनके मूल्यों में कोई अन्तर नहीं देखा गया।
3. शिक्षा के स्तर प्रशिक्षण विद्यालय प्रबन्धन संस्थान और स्कूलों के आकार की वजह से अध्यापकों के मूल्यों में कोई अन्तर नहीं दिखायी दिया।
4. अलग-अलग विषयों के अध्यापन की वजह से उनके मूल्यों में अन्तर पाया गया।
5. अध्यापकों का व्यावसायिक दृष्टिकोण अनुकूल पाया गया। बाल केन्द्रित क्रिया-कलाप एवं शैक्षिक प्रक्रिया सम्बन्धी दृष्टिकोण शिक्षण को एक व्यवसाय के रूप में लेने, कक्षा शिक्षण शिष्यों और अध्यापकों के प्रति दृष्टिकोण की तुलना में अधिक अनुकूल पाया गया।
6. अध्यापकों की आयु और लिंग में अन्तर की वजह से उनके दृष्टिकोण में कोई अन्तर नहीं था।
7. आर्थिक लाभ भौतिक सुख सुविधायें एवं प्रशासन को छोड़कर व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्धित अन्य कारकों के सम्बन्ध में शिक्षक काफी सन्तुष्ट दिखे।
8. पुरुष एवं विवाहित शिक्षकों की अपेक्षा महिला एवं अविवाहित शिक्षक अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट पाये गये।
9. शिक्षकों के दृष्टिकोण और सामाजिक एवं बौद्धिक मूल्यों के बीच सार्थक धनात्मक सह सम्बन्ध पाया गया। जबकि शिक्षकों के दृष्टिकोण और आर्थिक एवं राजनैतिक मूल्यों के बीच ऋणात्मक सह सम्बन्ध पाया गया।
10. जिन शिक्षकों में सामाजिक एवं बौद्धिक मूल्य उच्च स्तर के थे वे शिक्षक अपने व्यवसाय से बहुत सन्तुष्ट थे साथ ही यह भी देखा गया जिन शिक्षकों में आर्थिक एवं राजनैतिक मूल्य उच्च स्तर के थे वे अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट नहीं थे।
11. शिक्षकों के दृष्टिकोण और कृत्य सन्तोष के स्तर के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध पाया गया।

एन.के.पोरवाल (1980)[1]-

द्वारा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं उनके कृत्य सन्तोष के बीच सम्बन्ध का अध्ययन किया गया।

---

1. एन.के. पोरवाल (1980) पर्सनाल्टी कोरिलेट्स ऑफ जॉब सेटिसफाइड हायर सेकेण्ड्री स्कूल टीचर्स, पी-एच.डी. सायक्लॉजी, आगरा यूनिवर्सिटी।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नवत थे -

1. सन्तुष्ट और असन्तुष्ट अध्यापकों के व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों की पहचान करना।
2. शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि पर आयु, लिंग, वैवाहिक स्थिति, सेवा अवधि, वेतनमान, कार्य स्थल की स्थिति प्रबन्धतंत्र एवं सेवा योजन के प्रसार के प्रभाव का अध्ययन।

न्यादर्श में पहले स्तरानुकूल संयोगिक प्रतिचयन विधि से उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का चयन किया और फिर इन्हीं मे से 100 सन्तुष्ट अध्यापक एवं 100 असन्तुष्ट अध्यापकों को छांटा गया।

अध्ययन के लिए जूमर और मुलत्रा द्वारा निर्मित कृत्य सन्तोष प्रश्नावली तथा मयूर द्वारा निर्मित 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली (हिन्दी) का प्रयोग किया गया।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष निम्न थे-

1. सन्तुष्ट अध्यापकों में व्यक्तित्व सम्बन्धी निम्न विशेषताएँ गम्भीरता, उदासीनता, चतुराई, शांत सांवेगिक परिपक्वता, स्थायित्व, यथार्थवादी, विनोदपूर्णता, दयालुता, सामन्जस्यशील, दूसरों को सुनना और समझना, लज्जालु, शर्मीला, नियंत्रित, आत्मसंयमी, प्रत्याहारी, सतर्क, एकान्तवासी, विश्वसनीयता, ग्रहता, ईर्षामुक्त, सरल, व्यवहारिक, सतर्क, रुढ़िवादी, वाह्यसच्चाइयों से नियंत्रित, सटीक, प्रसन्नचित, आत्म संयमी, आत्मविश्वासी एवं शान्त, नियंत्रित, सामाजिक सामान्य व्यवहार एवं संवेगों पर अच्छा नियंत्रण रखने वाला, उत्साही एवं शान्त विद्यमान पायी गयी।
2. असन्तुष्ट अध्यापकों में व्यक्तित्व सम्बन्धी निम्न विशेषताएँ थी अनुरागी सरल, सहभागिता, आलोचनाओं से न डरने वाला सांवेगिक रूप से अस्थि, निश्चित बात कहने वाला, हठी, साहसिक, अत्याधिक सामाजिक, अनिरोधी, स्वेच्छिक, मौलिक मत रखने वाला, आसानी से मूर्ख न बनने वाला, कल्पना की उड़ान भरने वाला, स्वतः प्रेरित, व्यवहारिक मामलों में लापरवाह, स्वेच्छाचारी और निराशावादी विद्यमान पायी गयी।
3. 16 पी.एफ. प्रश्नावली के बी.एफ.जी.आई.एन. क्यू 1 एवं क्यू 3 तथ्यों के सम्बन्ध में सन्तुष्ट एवं असन्तुष्ट शिक्षक एक समान थे।
4. कृत्य-सन्तोष में आयु का विपरीत प्रभाव देखने में आया।
5. कृत्य-सन्तोष के स्तर में महिला एवं पुरुष शिक्षकों में अन्तर पाया गया।

6. विवाहित महिला एवं पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा अविवाहित शिक्षिकायें अधिक सन्तुष्ट थीं।
7. कृत्य-सन्तुष्ट के स्तर और सेवा अवधि के मध्य नकारात्मक सह सम्बन्ध पाया गया।
8. कृत्य-सन्तुष्टि के स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के आधार पर कोई अन्तर नहीं पाया गया।
9. विभिन्न वेतनमानों का कृत्य-सन्तोष पर कोई प्रभाव नहीं देखा गया।
10. स्थायी एवं अस्थायी शिक्षकों के कृत्य सन्तोष में कोई अन्तर नहीं पाया गया।
11. प्राइवेट प्रबन्धकीय विद्यालयों की अपेक्षा सरकारी विद्यालयों के शिक्षक अधिक सन्तुष्ट थे।

एस.पी.गुप्ता (1980)[1]-

ने शिक्षा के तीन स्तर पर शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि का अध्ययन किया।

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे-

1. प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की कृत्य सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की मानसिक सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
3. विवाहित तथा अविवाहित शिक्षकों की कृत्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. विभिन्न आयु वर्ग के शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
5. प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों का वर्गीकरण और उनकी कृत्य-सन्तुष्टि का अध्ययन।
7. I,II,III कृत्य-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

इस कार्य के लिए 765 पुरुष शिक्षकों का चयन किया गया जो कि मेरठ क्षेत्र के प्राथमिक माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा से सम्बन्धित थे। आंकड़ो का संग्रह करने हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग

---

1. एस.पी. गुप्ता (1980), ए स्टडी ऑफ जॉब सेटिसफेक्स एट थ्री लेवलस आफ टीचिंग पी-एच.डी., एजुकेशन, मेरठ यूनीवर्सिटी

किया गया। टीचर जॉव सेटिसफेक्शन स्केल (TJSS), एट्टीट्यूड टुवर्डस टीचिंग कैरियर स्केल (ATCS), मीनाक्षी पर्सनाल्टी इनवेंट्री (M.P.I.), पर्सनालटी मैच्योरिटी टेस्ट (MPT) और पर्सनल डाटा एण्ड इन्फार्मेशन फार्म (PDIF) प्राप्त आंकड़ो का विश्लेषण एफ परीक्षण एवं टी-परीक्षण की सहायता से किया गया।

अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित थे -

1. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि से आवश्यकता की उपलब्धि, लगाव एवं सहनशीलता सकारात्मक सम्बन्ध रखते हैं, जबकि एकात्मकता एवं अक्रामकता, नकारात्मक सम्बन्ध रखते हैं। प्रदर्शन की आवश्यकता, अनुपस्थिति एवं पोषण का प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि से विशेष सम्बन्ध नहीं था।
2. प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि उनके अध्यापन के प्रति दृष्टिकोण, व्यक्तित्व विकास से सकारात्मक रूप सम्बन्धित पायी गई।
3. प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि से भौतिक स्तर आयु और शिक्षण अनुभव सम्बन्धित नहीं थे।
4. प्राथमिक विद्यालय शिक्षक, कृत्य-सन्तुष्टि के दस में से आठ चरों के प्रति विशेष चरों के प्रति विशेष योगदान देते थे।
5. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि से आवश्यकता की उपलब्धि का सकारात्मक सम्बन्ध था, जबकि प्रदर्शित आवश्यकता, एकात्मकता एवं आक्रामकता का नकारात्मक सम्बन्ध था।
6. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कृत्य सन्तुष्टि से अध्ययन के प्रति दृष्टिकोण, व्यक्तित्व विकास सकारात्मक सम्बन्ध रखते हैं।
7. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि से भौतिक स्तर, आयु और शिक्षण अनुभव सम्बन्धित नहीं थे।
8. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक, कृत्य-सन्तुष्टि के बारह में से आठ चरों में विशेष योगदान देते थे।
9. महाविद्यालय के शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि से आवश्यकता की उपलब्धि आधार, सकारात्मक सम्बन्ध रखते थे, जबकि पोषण और आक्रामकता नकारात्मक सम्बन्ध रखते थे। प्रदर्शन की आवश्यकता स्वायत्ता सम्बन्ध (निर्धारण) सहायक, शासनात्मक एवं शहनशीलता का विशेष महत्व नहीं था।
10. महाविद्यालय के शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि का शिक्षण व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण

और व्यक्तित्व विकास से सकारात्मक सम्बन्ध देखा गया।

11. महाविद्यालय के विवाहित शिक्षकों की तुलना में महाविद्यालय के अविवाहित शिक्षक अधिक सन्तुष्ट थे। उनके मध्य आयु और कृत्य-सन्तुष्टि का कोई सम्बन्ध नहीं था।
12. महाविद्यालय के शिक्षकों की कृत्य-सन्तुष्टि में बारह में से पांच चरों का महत्व पूर्ण योगदान था।
13. माध्यमिक विद्यालय एवं महाविद्यालय के शिक्षकों की अपेक्षा प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक कम सन्तुष्ट थे।
14. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक और महाविद्यालय के शिक्षक सामान्य रूप से अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट थे।

के.शाह (1982)[1]-

द्वारा प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि और व्यावसायिक सन्तुष्टि एक सामाजिक अध्ययन विषय पर शोध किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे-

1. प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की सामाजिक आर्थिक हालत का अध्ययन।
2. उनकी शैक्षिक परिस्थिति का अध्ययन।
3. प्रेरणात्मक तत्वों की पहचान।
4. उनके व्यवसाय से सम्बन्धित अभिवृत्तियों की जानकारी।
5. व्यवसाय से सम्बन्धित समस्याओं का पता लगाना।
6. उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि का पता लगाना।

वाराणसी कार्पोरेशन क्षेत्र वार्ड नं. 9 में स्थित 155 प्राथमिक विद्यालयों से स्तरीय रेन्डम विधि से 78 प्राइमरी स्कूल (जो निजी प्रबन्धन अथवा कार्पोरेशन से थे) अलग कर लिए गये। 525 अध्यापक अध्ययन के लिए चयनित कर लिए गये। 475 अध्यापकों का साक्षात्कार लिया गया। साधारण प्रतिशतता के आधार पर आंकड़ो का विश्लेषण किया गया।

अध्ययन के परिणाम निम्न हैं-

1. जो परम्परागत उच्च वर्ग से थे वह शैक्षिक व्यवस्था में सबसे ऊपर थे। सर्वाधिक ब्राम्हण जाति से 38.1 प्रतिशत अध्यापक थे। दूसरे स्थान पर कायस्थ 19.6 थे।

---

1. के. शाह (1982), "सोसियो एकोनॉमिक बैकग्राउण्ड ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन, ए सोशियोलॉजिकल स्टडी" पी-एच.डी., सोसियोलॉजिकल स्टडी" पी-एच.डी. सोसियोलॉजी, काशी विद्यापीठ।

2. सामान्यतः जो निम्न मध्यवर्ग से जो निचले वर्ग से आये थें उनके परिवार की शैक्षिक स्थिति सामान्य थी।
3. 60 प्रतिशत महिलायें संयुक्त परिवार से थीं तथा 66.3 प्रतिशत महिलाएँ ऐसे परिवारों से थी जहाँ परिवार के औसत सदस्य 6 से 7 थे।
4. महिला अध्यापिकाओं में धर्म के आधार पर हिन्दू सर्वाधिक थे। इसके बाद क्रमशः मुसलमान, ईसाई, सिख अध्यापिकाएँ थीं। जहाँ ये सभी अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक थे तथा आधुनिकता का प्रदर्शन धर्म में रहते हुए करते थे।
5. अधिकतर महिला अध्यापिकाएँ 88.2 प्रतिशत अपने व्यवसाय में सन्तुष्ट थीं।
6. ज्यादातर असन्तुष्ट अध्यापक अपने वेतन को लेकर असन्तुष्ट थे।
7. अध्यापकों के व्यवसायिक-असन्तुष्टि के लिए अन्य सुविधाओं जैसे-पेंशन, आवास, चिकित्सीय सुविधाएँ आदि न होना बताया।
8. ज्यादातर महिला अध्यापिकाओं में गृहणी की भूमिका में भी सन्तुष्टि रहने वाली हैं।
9. ज्यादातर कम वेतन प्राथमिक शिक्षिकाओं को असन्तुष्ट करता है।
10. अध्यापक अपने व्यवसाय की समस्या की चर्चा परिचर्चा करते हैं। जैसे कम वेतन कम सुविधाएँ भवन की खराब स्थिति और खराब अधिगम सामग्री आदि।

आर.के. चौपड़ा (1982)[1]-

द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक-उपलब्धि और शिक्षकों की व्यवसायिक-सन्तुष्टि के सन्दर्भ में विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे-

1. विभिन्न प्रकार के वातावरण वाले विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का सम्पूर्ण व्यवसाय सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
2. व्यवसायिक सन्तुष्टि के उन क्षेत्रों का पता लगाना जिनकी वजह से विद्यालयों में वातावरण में अन्तर होने के कारण उनकी सन्तुष्टि में अन्तर हो जाता है।
3. विभिन्न प्रकार के वातावरण वाले विद्यालयों के बालकों की बुद्धि और सामाजिक आर्थिक स्थिति को समायोजित करते हुए, शैक्षिक-उपलब्धि का पता लगाना।

---

1. आर.के. चौपड़ा (1982) "ए स्टडी ऑफ द आर्गनाईजेशनल क्लाइमेट्स आफ स्कूलस इन रिलेशन टू जॉब सेटिसफेक्स न आफ टीचर्स एण्ड स्टूडेन्टस एचीवमेन्ट" पी-एच.डी. एजूकेशन आगरा यूनीवर्सिटी।

4. बालकों की शैक्षिक-उपलब्धि पर उनकी बुद्धि एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति के प्रभाव को अलग करके तथा पक्षपात रहित विद्यार्थियों की उपलब्धि और अध्यापकों की व्यवसायिक-सन्तुष्टि के बीच सम्बन्ध का पता लगाना।

उपचारात्मक समूह अभिकल्प का चुनाव अध्ययन के उद्देश्यों को पूरा करने हेतु किया गया। न्यादर्श में खुले, स्वयत्तशायी, सामान्य, नियंत्रित पैतृक और तंग वातावरण वाले 6 प्रभार के विद्यालयों को चुना गया। चूंकि अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न प्रकार के वातावरण वाले विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि और उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक-उपलब्धि का अध्ययन करना था इसलिये विद्यार्थियों के लिंग विद्यालयों के प्रबन्ध तंत्र और विद्यालयों के क्षेत्र को नियंत्रित कर न्यादर्श में केवल बालकों, शहरी विद्यालयों और सरकारी स्कूलों को रखा गया बालकों की बुद्धि और सामाजिक आर्थिक स्थिति का उनकी शैक्षिक-उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव को अलग रखने के लिए इन दोनों चरों पर उपलब्धि प्राप्तांको को समायोजित किया गया और फिर विभिन्न प्रकार के वातावरण वाले विद्यालयों और बालकों की उपलब्धि का अध्ययन किया गया। अध्ययन हेतु टू-स्टेज सेम्पलिंग को अपनाया गया। पहले चरण में दक्षिण दिल्ली के शैक्षिक दृष्टि से सम्पन्न जिलों के शहरी क्षेत्र में स्थित सरकारी बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया और उनमें 6 तरह के संगठनात्मक वातावरण विद्यालयों को चिन्हित किया गया। द्वितीय चरण स्तरानुकूल संयोगिक प्रतिचयन पद्धति का प्रयोग कर 6 प्रकार के संगठनात्मक वातावरण वाले तीन-तीन विद्यालयों काचयन किया गया। सांयोगिक विधि से चयनित 18 विद्यालयां के 272 शिक्षकों तथा 620 छात्रों का न्यादर्श बनाया गया। अध्ययन हेतु आंकड़े इकट्ठे करने के लिए शर्मा द्वारा निर्मित स्कूल आर्गनाइजेशनल क्लाइमेट, डिस्क्रेटसन, क्यूश्चनायर वाली द्वारा निर्मित अध्यापक व्यवसायिक-सन्तुष्टि सूची, जलोटा और कपूर द्वारा निर्मित सामाजिक आर्थिक स्थिति मापनी और रेवन्स स्टैण्डर्ड प्रोग्रेसिव मैट्रिक्स और उपलब्धि प्रारूप का प्रयोग किया गया। आंकड़ो के विश्लेषण के लिए एक मार्गी प्रसरण विश्लेषण एनालिसिस आफ को बैरियन्स नीव मैन कील्स टेस्ट ओर आंसिक सह सम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया।

अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित थे-

1. 6 प्रकार के वातावरण में से खुले वातावरण वाले विद्यालयों के शिक्षकों की सम्पूर्ण व्यावसायिक सन्तुष्टि उच्च स्तर की थी इसके बाद क्रमशः स्वयत्तशासी, सामान्य, नियंत्रित घिरे हुए और पैत्रक वातावरण वाले विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसायिक-सन्तुष्टि थी।
2. खुले वातावरण वाले विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि घिरे हुए ओर पैत्रिक वातावरण वाले विद्यालयों की व्यवसायिक सन्तुष्टि विश्वनीयता के 0.05 स्तर

पर सार्थक रूप से भिन्न थी।

3. खुले वातावरण वाले विद्यालयों को छोड़कर शेष 5 प्रकार के वातावरण वाले विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि में विश्वसनीयता के 0.05 स्तर पर की कोई अन्तर परिलक्षित नहीं हुआ।
4. व्यावसायिक-सन्तुष्टि को प्रभावित करने वाले 15 कारकों में से केवल पर्यवेक्षण और संस्था के साथ पहचान नामक दो कारकों के अलावा सभी कारकों के आधार पर विभिन्न प्रकार के वातावरण वाले विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
5. घिरे हुए वातावरण वाले विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि से खुले वातावरण वाले विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर्यवेक्षक के क्षेत्र में 0.05 स्तर पर अधिक पायी गयी।
6. संस्था से अपनी पहचान नामक क्षेत्र के सम्बन्ध में खुले वातावरण वाले विद्यालय वाले विद्यालय में शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि घिरे हुए एवं पैत्रिक वातावरण वाले विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि से 0.05 स्तर पर अधिक पायी गयी।
7. बुद्धि और सामाजिक आर्थिक स्थिति के नियंत्रण के पश्चात विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि में विभिन्न प्रकार के विद्यालयीय वातावरणों की वजह से 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर देखने को नहीं मिला।
8. अध्यापकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया।

एम.दीक्षित (1986)[1]-

द्वारा प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों तथा माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे-

1. प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का मापन करना।
2. शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि के स्तर पर उनके लिंग, शिक्षण, अनुभव और शिक्षण के माध्यम के प्रभाव की जांच करना।

---

1. एम.दीक्षित "एक कम्प्रेटिव स्ट्डी ऑफ जॉब सेटिसफेक्शन एमंग प्राइमरी स्कूल टीचर्स एण्ड सेकेण्ड्री स्कूल टीचर्स", पी-एच.डी. एजूकेशन, लखनऊ यूनिवर्सिटी।

न्यादर्श में लखनऊ में कार्यरत 300 प्राइमरी शिक्षक और 300 माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को सम्मिलित किया गया। व्यवसायिक सन्तुष्टि सम्बन्धी आंकड़े एकत्र करने के लिए शोधार्थी द्वारा लिकर्ट टाइप का एक स्केल निर्मित किया गया।

अध्ययन से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए -

1. हिन्दी माध्यम वाले विद्यालयों में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में अधिक सन्तुष्ट थे।
2. अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों एवं माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसायिक सन्तुष्टि एक समान थी।
3. प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों की महिला शिक्षिकाएँ पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सन्तुष्ट थी।
4. प्राथमिक स्तर पर आयु के आधार पर वरिष्ठ शिक्षक अपने व्यवसाय से सबसे अधिक सन्तुष्ट थे और आयु के हिसाब से मध्य ग्रुप के शिक्षक सबसे कम सन्तुष्ट थे।
5. माध्यमिक विद्यालयों के वे शिक्षक जिनकी सेवा अवधि सबसे ज्यादा थी वे अधिक सन्तुष्ट थे।
6. प्राथमिक स्तर पर वे शिक्षक जो हिन्दी माध्यम विद्यालय में कार्यरत थे उन शिक्षकों की अपेक्षा जो अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय में कार्यरत थे अधिक सन्तुष्ट थे।
7. माध्यमिक स्तर पर वे शिक्षक जो अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में कार्यरत थे उन शिक्षकों की अपेक्षा जो हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में कार्यरत थे। अधिक सन्तुष्ट थे।

त्रिवेणी सिंह (1988)[1]-

द्वारा माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावासायिक-सन्तुष्टि और सामाजिक आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में उनकी शिक्षण दक्षता का अध्ययन किया गया हैं।

इस अध्ययन में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि और सामाजिक आर्थिक स्थिति के परिप्रेक्ष्य मे उनकी शिक्षण दक्षता का अध्ययन किया गया तथा साथ ही ''शिक्षण दक्षता मापनी'' का निर्माण भी किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नवत थे-

---

1. त्रिवेणी सिंह (1988) ''ए स्टडी ऑफ टीचिंग एफीसिएन्सी इन रिलेशन टू जॉब सेटिसफेक्शन एण्ड सोसियो एकोनामिक स्ट्रेटस आफ सेकेण्ड्री स्कूल टीचर्स'', पी-एच.डी. एजुकेशन, अवध यूनिवर्सिटी, फैजाबाद।

1. माध्यमिक विद्यालयों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि और शिक्षण दक्षता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक आर्थिक स्तर और उनकी शिक्षण दक्षता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति एवं उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करना।
4. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में कार्यरत माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. माध्यमिक विद्यालयों के प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित शिक्षकों को शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. पांच वर्ष से कम 6 से 10 वर्ष और 10 वर्ष से अधिक अनुभव वाले माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

न्यादर्श में फैजाबाद मण्डल के कक्ष 10 के 1500 विद्यार्थी (1000 लड़के 500 लड़कियाँ) तथा माध्यमिक विद्यालयों के 300 शिक्षकों (200 पुरुष 100 महिलायें) को सम्मिलित किया गया। प्रत्येक शिक्षक को कुछ के अपने 5 विद्यार्थियों ने ग्रेडिंग प्रदान कर आंकड़े एकत्र करने के लिए कुमार एवं मुथा द्वारा निर्मित व्यावसायिक-सन्तुष्टि प्रश्नावली, कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित सामाजिक आर्थिक स्थिति मापनी तथा स्वनिर्मित शिक्षण दक्षता मापनी का प्रयोग किया गया। आंकड़ो के विश्लेषण के लिए गुणन आघूर्ण तथा प्रसरण विश्लेषण का प्रयोग किया गया।

अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए-

1. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि शिक्षण दक्षता और सामाजिक आर्थिक स्थिति के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध पाया गया।
2. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति और व्यावसायिक-सन्तुष्टि के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध पाया गया।
3. ग्रामीण एवं शहरी तथा प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर देखने को नहीं मिला।
4. माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर पाया गया।

5. पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा महिला शिक्षक अधिक दक्ष पायी गयीं।
6. विभिन्न अनुभव अवधि वाले माध्यमिक विद्यालय वाले शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर देखने को नहीं मिला।

जयशंकर अत्रेय[1]-

महाविद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविकता के सम्बन्ध में उनके मूल्यों एवं उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि का अध्ययन किया।

अध्ययन का प्रमुख लक्ष्य कम, औसत और उच्च शिक्षण प्रभाविकता वाले शिक्षकों के मूल्यों और उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि का अध्ययन करना था।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे-

1. कम औसत और उच्च शिक्षण प्रभाविकता वाले शिक्षकों की पहचान करना।
2. कम औसत और उच्च शिक्षण प्रभाविकता वाले शिक्षकों के मूल्यों एवं उनमें व्यवसायिक-सन्तुष्टि की मात्रा का पता लगाना।
3. शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविकता पर उनके मूल्यों एवं व्यावसायिक-सन्तुष्टि के प्रभाव का पता लगाना।

अध्ययन हेतु मेरठ विश्वविद्यालय के 11 महाविद्यालयों के 600 अध्यापकों का सांयोगिक विधि से चयन कर एक घटनोत्तर अनुसंधान की गयी अध्ययन हेतु गिलानी द्वारा निर्मित एक नये मूल्य परीक्षण, कुमार द्वारा निर्मित शिक्षक व्यावसायिक परीक्षण प्रश्नावली तथा कुमार एवं मूथा द्वारा एडाप्टेड शिक्षक प्रभाविकता मापनी का प्रयोग किया गया। आंकड़ो के विश्लेषण के लिए टी-टेस्ट तथा पार्सियल एवं मल्टीपिल कोरिलेशन का प्रयोग किया गया।

अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित थे-

1. यह पाया गया कि महाविद्यालय स्तर पर शिक्षण प्रभाविकता शिक्षकों के मूल्यों एवं उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि से सार्थक सम्बन्ध रखती है।
2. शिक्षण प्रभाविकता प्रसमान प्रसम्भावना वक्र का अनुसरण करती प्रतीत हुई।
3. प्रभावशाली शिक्षक और अप्रभावशाली शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि में स्पष्ट अन्तर दिखायी दिया तथा उनमें प्रकृति प्रदत्त मूल्य जो उनकी शिक्षण प्रभाविकता को प्रभावित करती थी परिलक्षित हुए।

---

1. जयशंकर अत्रैय (1989) "ए स्टडी आफ टीचर्स वैल्यूज एण्ड जॉब सेटिसफेक्सन इन रिलेशन टु देयर टीचिंग इफेक्टिवनेस एट डिग्री कालेज लेवल, पी-एच.डी. एजूकेशन आगरा यूनिवर्सिटी।

शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि नियंत्रक शक्ति एवं व्यावसायिक विभीषिका के सन्दर्भ में शिक्षण के प्रति प्रतिबद्धता का अध्ययन।"

मीनाक्षी अग्रवाल (1991)[1] -

द्वारा शिक्षकों के मूल्यों एवं उनके कुछ डेमोग्राफिक चरों के सन्दर्भ में उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि का अध्ययन किया।

अध्ययन उच्च एवं कमजोर व्यावसायिक सन्तुष्टि वाले अध्यापकों के मूल्यों का पता लगाने एवं अध्यापकों द्वारा अर्जित और उन पर आरोपित विशेषताओं के सम्बन्ध में व्यावसायिक-सन्तुष्टि का आंकलन करने से सम्बन्धित था।

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे-

1. अध्यापकों द्वारा अर्जित विशेषताओं के सन्दर्भ में उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
2. अध्यापकों पर आरोपित विशेषताओं के सन्दर्भ में व्यावसायिक-सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
3. उच्च व्यावसायिक-सन्तुष्टि और निम्न व्यावसायिक-सन्तुष्टि रखने वाले शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन करना।

अध्ययन हेतु प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के 338 शिक्षिकाओं 265 शिक्षकों का न्यादर्श लेकर उन पर गुप्ता एवं श्रीवास्तव द्वारा निर्मित (व्यावसायिक सन्तुष्टि परीक्षण) तथा स्वनिर्मित टीचर्स पर्सनल ब्लैंक परीक्षण तथा भार्गव द्वारा निर्मित मूल परीक्षण का प्रशासन किया गया। आंकडो में विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए मध्यमान, मानक विचलन टी-परीक्षण तथा सह सम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित थे-

1. अनुसूचित जाति के अतिरिक्त शहरी और हिन्दी बोलने वाले अध्यापक अधिक सन्तुष्ट पाये गये, शिक्षिकाओं की तुलना में शिक्षक अपने व्यवसाय से अधिक सन्तुष्ट दिखे।
2. परास्नातक प्रशिक्षित शिक्षक एकल परिवार वाले शिक्षक और सरकारी विद्यालय के अधिक अनुभव रखने वाले शिक्षक अपने व्यवसाय से अधिक सन्तुष्ट थे।

---

1. मीनाक्षी अग्रवाल (1991) "जॉब सेटिसफेक्शन आफ टीचर्स इन रिलेशन टु सम डेमोग्राफिक्स वैरेविल्स एण्ड वैल्यूज" पी-एच.डी. एजूकेशन आगरा यूनीवर्सिटी।

3. आर्थिक एवं राजनैतिक मूल्य और शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि के बीच सार्थक सम्बन्ध देखने को मिला। शिक्षकों की जाति, कार्यस्थल और मात्र भाषा उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि को प्रभावित करती है। वहीं उनकी आयु और वैवाहिक स्थिति व्यावसायिक-सन्तुष्टि को प्रभावित नहीं करती।

2.3 सामग्री का विवेचन तथा प्रस्तुत शोध से तुलना -

प्रस्तुत शोध अध्ययन से सम्बन्धित जितने भी शोध कार्य सम्पन्न हुए हैं उनसे स्पष्ट है कि सबसे अधिक शोध अध्ययन व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर सम्पन्न हुए शिक्षकों की शैक्षिक उपलब्धि और उनकी शिक्षण-अभिक्षमता पर सम्पन्न अध्ययनों की शोध संख्या बहुत ही कम है, शैक्षिक उपलब्धि पर एस.लक्ष्मी (1977), एस.चटर्जी (1978), के.एस. नरूला (1979), गोपाल चन्द्र युलू (1984), टी.सी. मिस्त्री (1985), रीना भट्टाचार्य (1989), तथा स्वामी श्रीकांता (1995) द्वारा शोध कार्य किये गये हैं इनमें प्रस्तुत शोध से मिलता-जुलता कोई भी शोध अध्ययन नहीं है, माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित उपर्युक्त में से किसी ने भी अध्ययन नहीं किया है।

शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता से सम्बन्धित अध्ययन आर.पी. श्रीवास्तव (1965), के.पी. पाण्डेय (1968), एस.एन.शर्मा (1969), चंचल भसीन (1988), एम.भूम रेड्डी (1991), आर.के.पाण्डेय (1993), एस.पी. रंगाली (1993), रोहित कुमार कृष्ण लाल पाण्डेय (1993) तथा एम.यू. तमालिया (2003), द्वारा सम्पन्न किये गये हैं। इसमें आर.पी. श्रीवास्तव द्वारा शिक्षण अभिक्षमता परीक्षण का निर्माण एवं प्रभावीकरण किया गया है। चंचल भसीन द्वारा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का आधुनिक समाज के सन्दर्भ में शिक्षण-अभिक्षमता और इसका शिक्षण प्रभाविकता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया गया। यह अध्ययन 600 सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों पर आधारित था। एम.भूम. रेड्डी द्वारा आन्ध्र प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया इस अध्ययन के उद्देश्य से इस बात का पता लगाना था कि शिक्षकों की आयु, लिंग, संकाय एवं वर्ग का उनकी शिक्षण-अभिक्षमता एवं अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव पड़ता है या नहीं इसी प्रकार एस.एन.शर्मा द्वारा प्राथमिक स्कूल के अध्यापकों के लिए एक शिक्षण-अभिक्षमता परीक्षण का निर्माण किया गया।

शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्धित सम्पन्न हुए शोधों की संख्या अत्याधिक है। जिनका काल क्रमानुसार सन्दर्भ ऊपर दिया जा चुका है। प्रस्तुत शोध अध्ययन से मिलते-जुलते जो शोध सम्पन्न हुए हैं उनमें विदेशों में राबिन वर्ली स्मिथ (1996) द्वारा पी-एच.डी.हेतु फिलोरिडा के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की निर्णयों में भागीदारी, व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं अनुपस्थिति का अध्ययन

किया गया। आर.होपाक द्वारा असन्तुष्ट एवं सन्तुष्ट अध्यापकों की विभिन्न क्षेत्रों में तुलना की गयी एल.डी.पुट द्वारा (1976), राज्य विश्व विद्यालयों के लोक प्रशासन के प्राध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन किया गया। जे.एम.वेसवेल (1976) द्वारा टेक्साल के एकान्त गांव के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का अध्ययन किया गया। सी.एम. हाक (1977) द्वारा नीग्री प्रोफेसर और गोरे प्रोफेसरों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि के प्रति धारणा का अध्ययन किया गया हैन्डिक्स मेरी ब्रेथ (1992) द्वारा विशेष शिक्षा से जुड़े शहरी शिक्षकों के समर्पण, व्यावसायिक सन्तुष्टि और जीवनवृत्ति, योजनाओं को प्रभावित करने वाले तथ्यों का अध्ययन किया गया मै जैनिफर मैकलेन (2005) द्वारा दूरस्थ शिक्षा से जुड़े शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं दबाव का अध्ययन किया गया।

शिक्षकों के व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्धित हमारे देश में सम्पन्न शोध अध्ययनें में एन.बी. कोल्टे (1978) द्वारा प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि सम्बन्धी द्विखण्ड की प्रधानता के सिद्धान्त के सामानीकरण का परीक्षण किया गया। डी.रामकृष्ण नैया (1980) द्वारा महाविद्यालय के शिक्षकों के व्यावसायिक लगाव पढ़ने के प्रतिशोध और व्यावसायिक-सन्तुष्टि का अध्ययन किया गया। एस.पद्मनाभइया (1986) द्वारा माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक -सन्तुष्टि तथा शिक्षण प्रभाविकता का अध्ययन किया गया। पी.बालाकृष्ण रेड्डी (1989) द्वारा प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का अध्ययन किया गया। एस. राय (1990) द्वारा शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि और उनके छात्रों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया। के.डी.नायक (1982) द्वारा विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों के समायोजन और उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि का अध्ययन किया गया।

बी.एल. और अंजली द्वारा माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि एवं अध्यापन अभिरूचि का अध्ययन किया गया। जी.शेखर और एस.रंगनाथन (1988) द्वारा स्नातक अध्यापकों की कृत-सन्तुष्टि का अध्ययन किया गया। पी.एल. सक्सेना (1980) द्वारा मध्य प्रदेश के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्रवक्ताओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि को प्रभावित करने वाले तत्वों का अध्ययन किया गया। सिप्रा राय (1992) द्वारा शिक्षकों का छात्रों के प्रति दृष्टिकोण और उनके कृत-सन्तोष का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। इसी प्रकार एन.के. पोरवाल (1980) द्वारा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं उनके कृत्य-सन्तोष के बीच सम्बन्ध का अध्ययन किया गया।

के.शाह (1982) द्वारा प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि और व्यावसायिक-सन्तुष्टि का अध्ययन किया गया। एम.दीक्षित (1986) द्वारा प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों

और माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। त्रिवेणी सिंह (1988) द्वारा माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि और सामाजिक आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में उनकी शिक्षण दक्षता का अध्ययन किया गया। एच.एल. सिंह (1974) द्वारा माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों उनके दृष्टिकोणों एवं उनकी कृत्य-सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन किया गया।

एस.पी. गुप्ता (1980) द्वारा शिक्षा के तीनों स्तरों पर शिक्षकों के कृत्य-सन्तोष का अध्ययन किया है। मीनाक्षी अग्रवाल (1991) द्वारा शिक्षकों के मूल्यों एवं उनके कुछ देयोग्राफिक दरों के सन्दर्भ में उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि का अध्ययन किया गया।

इस प्रकार हम देखते हैं प्रस्तुत शोध से सीधे सम्बन्धित उपर्युक्त अध्ययनों में से कोई भी अध्ययन नहीं है एक तो माध्यमिक स्तर के शिक्षकों पर कम अध्ययन हुए हैं और जो सम्पन्न हुए हैं उनमें किसी भी अध्ययन में शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि एवं शिक्षण-अभिक्षमता के प्रभाव को नही देखा गया है चूंकि विभिन्न शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षकों की शिक्षण में निपुणता अलग-अलग रहने की सम्भावना रहती है जो उनके व्यावसायिक-सन्तुष्टि को प्रभावित करती है। इसी प्रकार यह भी सम्भव है जिन शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता बहुत अच्छी हो उसका प्रभाव उनकी-सन्तुष्टि पर भी पड़े। उत्तर प्रदेश के अति पिछड़े क्षेत्र बुन्देलखण्ड के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में अवस्थित सरकारी, अर्द्धसरकारी एवं प्राइवेट माध्यमिक, विद्यालयों के शिक्षकों पर आधारित प्रस्तुत शोध जो शोधार्थी द्वारा सम्पन्न किया गया है, वह पूर्व में सम्पन्न शोधों से पूर्णतया भिन्न है और शोधार्थी का मौलिक प्रयास है।

तृतीय-अध्याय
(अनुसंधान विधि तंत्र)

अनुसंधान एक ऐसा व्यवस्थित तथा नियंत्रित अध्ययन है, जिसके अन्तर्गत सम्बन्धित चरों व घटनाओं के पारस्परिक सम्बन्धों का अन्वेषण तथा विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधि तथा वैज्ञानिक विधि के द्वारा किया जाता है तथा प्राप्त परिणामों से वैज्ञानिक निष्कर्षों, नियमों तथा सिद्धान्तों की रचना, खोज व पुष्टि की जाती है।

जिज्ञासा मानव का मूल स्वभाव है। अतः विलक्षण घटनाओं के प्रति उसकी कौतूहल भावना सदैव अतृप्त व लालायित रही है। आरम्भ से ही बादल, बिजली, चाँद, सूरज, पहाड़, समुद्र, अग्नि, तूफान, अकाल व भूचाल मानव के लिए विस्मय तथा रहस्य के विषय रहे हैं। वह इनके स्वरूप को जानने व समझने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहा है और अपनी जिज्ञासा को तृप्त करने के प्रक्रम के अन्तर्गत ही उसके प्रारम्भिक ज्ञान में शनैः-शनैः वृद्धि हुई है। स्पष्टतः आरम्भ में उसके अर्जित ज्ञान का स्वरूप बहुत ही सरल व साधारण था, परन्तु कालान्तर में उसका स्वरूप संगठित होता गया और इस प्रक्रम में वह अब केवल एक निष्क्रिय अवलोकनकर्ता न रहकर प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्या का प्रयास करने लगा। निश्चिततः उस समय उसकी व्याख्या उसके सीमित ज्ञान से संकुचित थी परन्तु कालान्तर मे उसका ज्ञान भण्डार शनैः-शनैः विकसित हो गया।

अनुसंधान के द्वारा नयी खोज का समुचित समाधान किया जा सकता है। अनेक विद्वानों ने अपनी परिभाषा के द्वारा स्पष्ट किया है कि -

करलिंगर[1] के अनुसार -

"वैज्ञानिक अनुसंधान एक ऐसा व्यवस्थित, नियंत्रित, आनुभाविक तथा सूक्ष्म अन्वेषण है, जिसमें प्राकृतिक घटनाओं में व्याप्त अनुमानिक सम्बन्धों का अध्ययन परिकल्पनात्मक तर्क वाक्यों द्वारा किया जाता है।"

पी.एम.कुक[2] के अनुसार -

"अनुसंधान एक ऐसा निरपेक्ष, व्यापक तथा बौद्धिक अन्वेषण है, जिसमें एक दी गयी समस्या से सम्बन्धित तथ्यों तथा उनके अर्थों अथवा सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है।"

---

1. एफ.एन. करलिंगर, 'फाउण्डेशन ऑफ विहेविरियल रिसर्च', न्यूयार्क; होल्ट रेनहर्ट एण्ड बिल्सन, 1964, पेज-13
2. उद्धृत एच.के. कपिल, 'अनुसंधान विधियाँ', आगरा, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, 2006, पृ. 19

सी.सी. क्रोफोर्ड[1] के अनुसार -

"अनुसंधान चिन्तन की एक ऐसी क्रमबद्ध तथा विशुद्ध प्रविधि है, जिसमें विशिष्ट यंत्रों, उपकरणों तथा प्रक्रियाओं का उपयोग इस उद्देश्य से किया जाता है ताकि एक समस्या का अधिक समुचित समधान उपलब्ध हो सके।"

3.1 शैक्षिक अनुसंधान :

(अ) अर्थ -

शैक्षिक समस्याओं के निराकरण तथा शिक्षा क्षेत्र में नवीन नवाचरों की खोज से सम्बन्धित अनुसंधान शैक्षिक अनुसंधान कहे जा सकते हैं। यह जानना आवश्यक तथा तर्क संगत है कि शैक्षिक क्षेत्र में अनुसंधान का स्वरूप कैसा रहा है तथा वे कौन सी प्रविधियाँ हैं, जिनके द्वारा इन पर सफल व कुशल अनुसंधान किये जा सकते हैं।

शैक्षिक अनुसंधान में कुछ विशेषताएँ प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होती हैं।

- ❑ सबल तथा कुशल शैक्षिक दर्शन, चिन्तन व प्रशिक्षण के लिए सतत् रूप से सैद्धान्तिक तथा अनुप्रयुक्त अनुसंधान की निरन्तर आवश्यकता रहती है।
- ❑ शैक्षिक अनुसंधान में प्रायोगिक पद्धति की अनुप्रयुक्ति सीमित है तथा इसमें घटनास्थल, अध्ययन की प्रधानता अधिक रहती है।
- ❑ शैक्षिक उन्नति व प्रगति के लिए शिक्षा में होने वाले अनुसंधानों में अन्तर्विज्ञानीय उपागम का व्यापक उपयोग एक प्रकार से अनिवार्य है क्योंकि इसकी समस्त समस्याओं का अध्ययन केवल शैक्षिक अध्ययन पद्धति के आधार पर ही सम्भव नहीं है।
- ❑ शैक्षिक अनुसंधान में विधि अनुस्थापित अनुसंधान क्षेत्र भी कम ही है। इसमें समस्या अनुस्थापित अनुसंधान की अधिक आवश्यकता है।
- ❑ शिक्षा के विकास में क्रमिक स्वरूप को जानने के लिए ऐतिहासिक अनुसंधान, वर्णनात्मक अनुसंधान मापनी आदि का विशेष महत्व है।
- ❑ शिक्षा के क्षेत्र में अनुशासन, अध्यापन, व्यवस्थापन, संचालन तथा नियोजन के लिए क्रियात्मक अनुसंधान तथा प्रेरणात्मक अनुसंधान पर अधिक बल देने की आवश्यकता है।

---

1. उद्धृत एच.के. कपिल, 'अनुसंधान विधियाँ', आगरा, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, 2006, पृ. 19

(ब) परिभाषा -

शैक्षिक अनुसंधान को निम्न प्रकार से परिभाषित किया गया है।

रैवर्स[1] के अनुसार -

"शैक्षिक अनुसंधान वह क्रिया है, जो शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहार के विज्ञान का विकास करने की ओर निर्देशित है। इस प्रकार से विज्ञान का अन्तिम उद्देश्य ऐसा ज्ञान प्रदान करना है जो शिक्षक के लिए सबसे अधिक प्रभावकारी पद्धतियों द्वारा अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक हो सके।"

इण्टरनेशनल ब्यूरो ऑफ एजूकेशन[2] के अनुसार -

"शिक्षा विषयक अनुसंधान का यहाँ अर्थ है - वे सब प्रयास जो राज्यकोष या वैयक्तिक या जन संस्थाओं द्वारा किये जाते हैं जिनसे शैक्षिक विधियों व आम शैक्षिक कार्यों में सुधार हो। जिनमें उच्च स्तर के वैज्ञानिक अनुसंधान व विद्यालय प्रणाली और शैक्षिक विधियों से सम्बन्धित अधिक साधारण परीक्षण हों।"

(स) अनुसंधान अभिकल्प -

अनुसंधान अभिकल्प वैज्ञानिक अनुसंधान-प्रक्रम का एक अभिन्न अंग है। अध्ययन समस्या के सन्दर्भ में अनुसंधान अभिकल्प की रचना विश्वसनीय व वैध आंकड़ो के संकलन मे अपूर्व सुविधा प्रदान करती है तथा प्रायोगिक प्रसरण की मात्रा में अधिकतम वृद्धि निर्धारित व निश्चित करती है।

करलिंगर ने अनुसंधान अभिकल्प के स्वरूप पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए लिखा है कि -

"अनुसंधान अभिकल्प नियोजित अन्वेषण की एक ऐसी योजना, संरचना तथा व्यूह रचना होती है जिसके आधार पर अनुसंधान प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किये जाते हैं और प्रसरण का नियंत्रण स्थापित किया जाता है।"

(1) अनुसंधान अभिकल्प के उद्देश्य :

अनुसंधान अभिकल्प के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

(i) अनुसंधान प्रश्नों के उत्तर प्रदान करना -

अनुसंधान अभिकल्प की रचना की अनुसंधान प्रश्नों के प्रति यथा संभव वैध, विश्वसनीय, वस्तुपरक तथा परिशुद्ध उत्तरों के ज्ञात करने में विशिष्ट भूमिका होती है, क्योंकि अभिकल्प रचना

---

3. एम.डब्ल्यू. रैवर्स, 'एन इन्ट्रोडक्शन टु एजूकेशनल रिसर्च,' न्यूयार्क ; मैक मिलन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, 1954, पेज-5
4. इन्टरनेशनल ब्यूरो ऑफ एजूकेशन, ' दि आर्गनाइजेशन ऑफ एजूकेशनल रिसर्च', यूनेस्को, पेरिस, पब्लिकेशन नम्बर-288, 1966, पेज-XIII

शोधकर्ता को एक विशिष्ट सांख्यिकीय परिकल्पना की रचना, आंकड़ों के संकलन तथा उनके विश्लेषण के प्रति अति महत्वपूर्ण रूपरेखा प्रस्तुत करती है तथा इसके आधार पर सम्भावित निष्कर्षों को जानने में भी अत्याधिक मार्गदर्शन करती है।

(ii) प्रसरण पर नियंत्रण स्थापित करना -

अनुसंधान अभिकल्प अध्ययनकर्ता की प्रायोगिक स्थिति में प्रायोगिक चर के द्वारा अन्य प्रायोगिक प्रसरण के परिशुद्ध अंकन में अत्यधिक सहायता प्रदान करता है। इसका तर्क संगत आधार यहाँ यह है कि प्रायोगिक अभिकल्प शोधकर्ता को प्रायोगिक प्रसरण को दूषित करने वाले बाह्य चरों के प्रभाव को निरस्त करने या फिर उनके प्रभाव के न्यूनीकरण करने या प्रथक्करण को महत्वपूर्ण व्यूह रचना प्रदान करता है। इस प्रकार अभिकल्प रचना की अध्ययनकर्ता के लिये प्रायोगिक प्रसरण पर नियंत्रण स्थापित करने में विशेष भूमिका रहती है।

(iii) सामान्यीकरण की क्षमता :

एक उत्तम अभिकल्प की एक कसौटी यह है कि क्या एक अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणामों व निष्कर्षों का ऐसी ही अन्य स्थितियों, समूहों तथा प्रयोज्यों पर भी समान रूप से सामान्यीकरण किया जा सकता है? अथवा इस अध्ययन के द्वारा प्राप्त परिणामों का हम किस सीमा तक सामान्यीकरण कर सकते हैं? स्पष्टतः एक अभिकल्प के द्वारा जितनी अधिक सामान्यीकरण की क्षमता उपलब्ध होती है वह अभिकल्प उतना ही अधिक आम होता है वास्तव में एक अभिकल्प की सामान्यीकरण की क्षमता अभिकल्प की आन्तरिक तथा बाह्य-वैधता पर आधारित रहती है।

(2) अच्छे शोध अभिकल्प की विशेषताएँ :

एक अच्छे शोध अभिकल्प अथवा एक वैज्ञानिक शोध अभिकल्प की निम्नलिखित विशेषताएँ या मापदण्ड हैं -

(i) पर्याप्त यादृच्छिकरण -

एक अच्छे शोध अभिकल्प अथवा एक वैज्ञानिक शोध अभिकल्प में पर्याप्त यादृच्छिकरण का होना आवश्यक है। इसका अर्थ यह है कि प्रयोज्यों का चयन यादृच्छिक ढंग से किया जाये, समूहों में प्रयोज्यों को यादृच्छिक ढंग से विभाजित किया जाये तथा समूहों को यादृच्छिक ढंग से नियंत्रित समूह तथा प्रयोगात्मक समूह में रखा जाये। करलिंगर (1978) ने कहा है कि एक अच्छे या वैज्ञानिक अभिकल्प के लिए पर्याप्त यादृच्छिकरण आवश्यक है।

(ii) असम्बद्ध चरों का पर्याप्त नियंत्रण -

वैज्ञानिक अभिकल्प वह है जो असम्बद्ध चरों को नियंत्रित करने में सक्षम हो। जिस हद तक

असम्बद्ध चरों को नियंत्रित करना सम्भव होता है उसी हद तक आश्रित चर पर परिचालित चर या परिमित चर के प्रभाव को विशुद्ध रूप से निर्धारित करना सम्भव होता है। ब्रूटा (1989) के अनुसार एक अच्छा अभिकल्प वह है जो असम्बद्ध चरों को नियंत्रित करने में सफल हो। असम्बद्ध चर का अर्थ वे चर हैं, जिनके प्रभाव का अध्ययन करना शोधकर्ता का उद्देश्य नहीं होता है, किन्तु आश्रित चर पर उनके प्रभाव का पड़ना सम्भावित होता है।

(iii) पर्याप्त क्रमबद्ध विचलन -

वैज्ञानिक अभिकल्प के लिए यह भी आवश्यक है कि वह क्रमबद्ध विचलन को अधिक से अधिक बढ़ाने में सक्षम हो। क्रमबद्ध विचलन का तात्पर्य प्रयोगात्मक चर के परिचालन से उत्पन्न चर में विचलनशीलता से है।

(iv) न्यूनतम अशुद्धि विचलन -

अच्छे शोध अभिकल्प का एक मापदण्ड यह है कि उसमें अशुद्धि विचलन की सम्भावना न्यूनतम हो। अशुद्धि विचलन या प्रयोगात्मक अशुद्धि का तात्पर्य वे अशुद्धियाँ है जो प्रयोग में यादृच्छिक चंचलता के कारण घटित होती हैं। असम्बद्ध विचलन के नियंत्रण के अभाव में अशुद्धि विचलन बढ़ता है।

(v) उच्च आन्तरिक वैधता -

अच्छे अभिकल्प के लिए यह आवश्यक है कि उसमें आन्तरिक वैधता संतोषजनक हो। नियंत्रण तथा यादृच्छिकरण के गुण उपलब्ध होने पर आन्तरिक वैधता संतोषजनक हो जाती है। यह गुण वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प में अधिक पाया जाता है।

(vi) उच्च बाह्य वैधता -

अच्छे अभिकल्प मे बाह्य बैधता का गुण भी अपेक्षित है। यह गुण अर्द्ध प्रयोगात्मक अभिकल्प में अधिक पाया जाता है।

(vii) समय, श्रम तथा मुद्रा की बचत -

अच्छे अभिकल्प के लिए यह भी अपेक्षित है कि उसके आधार पर थोड़ा समय, श्रम तथा धन खर्च करके अपने लक्ष्य को पूरा करना संभव हो जाये।

(द) वर्तमान अध्ययन की शोध विधि :

वर्तमान अध्ययन की शोध विधि पर चर्चा से पहले शोध की विधियों के वर्गीकरण को समझना आवश्यक है, शिक्षा शास्त्रियों ने शिक्षा अनुसंधान का वर्गीकरण कई दृष्टिकोणों से किया है। जैसे - उद्देश्यों के आधार पर, शोध-सामग्री-संग्रह की तकनीकों के दृष्टिकोण से, सामग्री के विश्लेषण के आधार पर, चरों के नियंत्रण की मात्रा के दृष्टिकोण से, सामग्री के स्रोत एवं अन्य बहुत से आधारों पर,

शिक्षा शास्त्री अनुसंधान की विधियों के वर्गीकरण के सम्बन्ध में एक मत नहीं हैं, हालांकि यह न आवश्यक है और न संभव, क्योंकि वर्गीकरण का कोई एक आधार नहीं हो सकता। अधिकांश लेखकों द्वारा अनुसंधान विधियों के निम्न वर्गीकरण को अपनाया गया है -

(1) मूलभूत एवं व्यावहारिक अनुसंधान।

(2) वर्णनात्मक अनुसंधान

- (अ) सर्वेक्षण
- (ब) अन्तर्सम्बन्धात्मक अध्ययन
- (स) विकासात्मक अध्ययन

(3) ऐतिहासिक अनुसंधान

(4) प्रयोगात्मक अनुसंधान

- (क) प्रयोगशालागत प्रयोग
- (ख) क्षेत्र प्रयोग
- (ग) क्षेत्र अध्ययन
- (घ) घटनोत्तर अध्ययन
- (ङ) प्रयोगात्मक सिमुलेशन

उपर्युक्त वर्गीकरण के आधार पर वर्तमान शोध प्रयोगात्मक अनुसंधान के क्षेत्र प्रयोग के अन्तर्गत आता है।

प्रयोगात्मक अनुसंधान :

प्रयोगात्मक अनुसंधान में शोधकर्ता अध्ययन की किसी परिस्थिति का जिसे वह उपयुक्त समझता है वह यथेच्छ रूप से प्रयोग करता है। हेमैन के अनुसार -

"वह स्वयं किसी परिस्थिति अथवा घटना को यथेच्छ उत्पन्न करता है तथा उसके प्रभाव को उत्पन्न करता है।" प्रयोगात्मक अनुसंधान की रूपरेखा स्पष्ट करने के लिए यह समझना अत्यन्त आवश्यक है कि प्रयोग किसे कहते हैं।

प्रयोग का अर्थ एवं स्वरूप -

सत्य अथवा वास्तविक प्रयोग केवल प्रयोगशाला में ही किया जा सकता है। क्योंकि उसकी मान्य प्रक्रिया का पालन करना प्रयोगशाला में ही संभव हो सकता है। शिक्षा मनोविज्ञान एवं समाज शास्त्र के क्षेत्रों में इस मान्य प्रक्रिया का पूर्णतः पालन करना संभव नहीं हो पा रहा। क्योंकि यह क्षेत्र बहुत जटिल होते हैं।

यहाँ प्रयोग का प्रमुख उद्देश्य अत्यन्त नियंत्रित परिस्थितियों में दो चरों एक स्वतंत्र तथा दूसरा आश्रित के बीच क्रियमाण सम्बन्धों को ज्ञात करना होता है अथवा यों कहें कि किसी घटना के घटने के पीछे जो परिस्थितियों कारक रूप में रहती हैं उनकी खोज करना प्रयोग का उद्देश्य होता है। क्या परिस्थिति 'क' परिस्थिति 'ख' का कारण हुआ? क्या चर 'क' चर 'ख' से सम्बन्धित है? इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने हेतु प्रयोग का सहारा लिया जाता है। प्रयोग एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत एक चर (स्वतंत्र) दूसरे चर (आश्रित) पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कुछ अन्य प्रमुख चरों को नियंत्रित करके किया जाता है। इस नियंत्रण की प्रकृति कठोर या कम हो सकती है। स्नोडग्रास-वर्गर-हाईडन आदि लेखकों ने प्रयोग की द्वितत्वीय कसौटी का उल्लेख किया है। ये दो तत्व हैं -

(1) कम से कम दो परिस्थितियों अथवा तुलनीय समूहों का होना।

(2) स्वतंत्र चर जिसके आधार पर तुलना हेतु समूह बनाये जाते हैं, के यथेच्छ प्रयोग एवं प्रहस्तन की स्वतंत्रता।

स्वतंत्र चरों के यथेच्छ प्रयोग से तात्पर्य है कि शोधकर्ता अध्ययनगत किसी भी इकाई को स्वतंत्र चर आधारित किसी भी समूह, उपचार के अन्तर्गत रख सकें। ऐसा सम्भव न होने की स्थिति में शोधकर्ता को इकाइयों के समूहों को उसी रूप में स्वीकार करना पड़ता है जिस रूप में वातावरण में स्थित पाये जाते हैं, परन्तु सभी परिस्थितियों में यह यथेच्छ प्रयोग संभव नहीं होता। किन्हीं परिस्थितियों में यह अव्यवहारिक एवं अनैतिक भी हो सकता है। तब शोधकर्ता के समक्ष नैसर्गिक रूप से वातावरण में स्थित समूहों को लेने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं रह जाता। परन्तु इस परिस्थिति में किए गये प्रयोगों को सत्य प्रयोग न मानकर उनको अर्द्ध सत्य अथवा सह-सम्बन्धात्मक अथवा केवल निरीक्षणात्मक अध्ययनों की श्रेणी में रखा जाता है।

प्रयोगशाला में किये गये प्रयोगों के अध्ययन से जो प्रयोग किये जाते हैं, उन्हें सत्य अथवा वास्तविक प्रयोगात्मक अध्ययन के रूप में स्वीकार किया जाता है, क्योंकि अध्ययन की सम्पूर्ण परिस्थिति अत्यधिक नियंत्रित होती हैं। दूसरे शब्दों में स्वतंत्र व आश्रित चरों के पारस्परिक सम्बन्धों को प्रभावित करने वाले तत्वों को लगभग पूर्णरूप से नियंत्रित करना संभव होता है।

क्षेत्र अध्ययन भी प्रयोगात्मक अनुसंधान की श्रेणी में आते हैं। करलिंगर के अनुसार श्रेत्र अध्ययन घटनोत्तर अध्ययन ही है। जिनका उद्देश्य वास्तविक सामाजिक व्यवस्था में क्रियमाण समाजशास्त्री, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक चरों के बीच सम्बन्धों तथा अन्तःक्रियाओं की खोज करना होता है।

क्षेत्र-अध्ययन तथा क्षेत्र प्रयोग दोनों में तथा क्षेत्र अध्ययन और प्रयोगशाला प्रयोग में अन्तर यह होता है कि क्षेत्र अध्ययन में तुलनात्मक समूहों का सृजन आश्रित चर के आधार पर किया जाता है

जबकि अन्य दोनों में उनका सृजन स्वतंत्र चर के आधार पर किया जाता है। प्रस्तुत शोध में अध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि नामक दो स्वतंत्र चरों का प्रभाव उनकी व्यावसायिक-संतुष्टि पर देखा गया है।

क्षेत्र प्रयोग -

जब प्रयोग प्रयोगशाला से बाहर खुले क्षेत्र में किया जाता है प्रयोगशाला में शोधकर्ता के लिए प्रत्येक परिस्थिति को नियंत्रित करना संभव होता है जबकि क्षेत्र प्रयोग आंशिक रूप से नियंत्रित परिवेश में किया जाता है। शोधकर्ता आंशिक रूप से नियंत्रित परिवेश में किसी स्वतंत्र चर को परिचालित करता है तथा उसके प्रभाव को निर्धारित करता है। प्रयोगशालागत प्रयोगों की भांति क्षेत्र प्रयोग में भी एक या दो स्वतंत्र चरों का यथेच्छ प्रयोग किया जाता है। इनमें भी शोधकर्ता स्वतंत्र चर के कई स्तर बनाकर अनुसंधानगत इकाइयों को तदाधारित समूहों में रखकर आश्रित चर पर उनका मापन करता है तथा परिणामों की तुलना करके निष्कर्ष प्राप्त करता है। इसमें सत्य प्रयोग की भांति तुलनीय समूह स्वतंत्र चर के विभिन्न स्तरों के आधार पर बनाए जाते हैं। अधिकतर तो ये समूह बने बनाए निश्चित रहते हैं।

करलिंगर के अनुसार[1] -

''क्षेत्र प्रयोग एक शोध अध्ययन है, जो एक वास्तविक परिस्थिति में किया जाता है और जिसमें एक या अधिक स्वतंत्र चर प्रयोगकर्ता द्वारा यथा संभव नियंत्रित किये जाते हैं।''

क्षेत्र प्रयोग का स्वरूप या विशेषताएँ :

क्षेत्र प्रयोग की निम्नलिखित विशेषतायें होती हैं -

(1) आंशिक नियंत्रण -

क्षेत्र प्रयोग में अध्ययन परिस्थिति आंशिक रूप से नियंत्रित रहती हैं और शोधकर्ता जहाँ तक संभव हो पाता है, अध्ययन के समय स्वतंत्र चरों पर नियंत्रण रखता है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि तथा शिक्षण-अभिक्षमता पर नियंत्रण करके इनका प्रभाव उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि पर देखा है। शोधकर्ता ने शैक्षिक-उपलब्धि को निम्न्, औसत और उच्च श्रेणी में तथा शिक्षण-अभिक्षमता को निम्न्, सामान्य और उच्च श्रेणी में विभाजित कर, अलग-अलग श्रेणियों के अध्यापक की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन किया।

(2) वास्तविक परिस्थिति -

क्षेत्र प्रयोग की अध्ययन परिस्थिति बहुत हद तक वास्तविक होती है। कारण यह है कि यहाँ अध्ययन परिस्थिति को केवल आंशिक रूप से ही नियंत्रित किया जाता है।

---

1. एफ.एन. करलिंगर - 'फाउण्डेशन ऑफ विहेविरियल रिसर्च' देलही; सुरजीत पब्लिकेशन, 2004, पृष्ठ-401

(3) स्ततंत्र चर का परिचालन -

क्षेत्र प्रयोग में एक या एक से अधिक स्वतंत्र चरों का परिचालन करना सम्भव होता है। कारण यह है कि यहाँ प्रयोगकर्ता या अध्ययनकर्ता को स्वतंत्र चरों पर कम से कम आंशिक नियंत्रण अवश्य प्राप्त होता है। प्रस्तुत शोध में शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि एवं उनकी शिक्षण-अभिक्षमता ज्ञात कर शोधकर्ता द्वारा अलग-अलग श्रेणी में विभाजित कर लिया गया और फिर उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि की जाँच की गयी।

(4) स्वतंत्र चर से आश्रित चर की ओर -

क्षेत्र प्रयोग, स्वतंत्र चर से शुरू होता है और आश्रित चर पर समाप्त होता है। यहाँ परिचालित स्वतंत्र चर के आधार पर आश्रित चर को निर्धारित किया जाता है।

(5) स्वतंत्र चर ज्ञात तथा आश्रित चर अज्ञात -

क्षेत्र प्रयोग में स्वतंत्र चर ज्ञात होता है क्योंकि इसे प्रयोगकर्ता स्वयं परिचालित करता है। लेकिन सम्बद्ध आश्रित चर अज्ञात होता है।

(6) मध्यम लचीलापन -

क्षेत्र प्रयोग में मध्यम लचीलापन पाया जाता है। ऐसा इसलिए है कि यहाँ अध्ययन परिस्थिति पर शोधकर्ता को केवल आंशिक नियंत्रण प्राप्त होता है।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता न्यादर्श में सम्मिलित शिक्षकों की शैक्षिक उपलब्धि को उनकी हाईस्कूल, इण्टरमीडिएट, स्नातक, परास्नातक, बी.एड./एल.टी. तथा एम.एड. कक्षाओं की श्रेणियों के आधार पर तीन वर्गों में बांटा गया। प्रत्येक वर्ग में सम्मिलित सभी शिक्षकों की परीक्षाओं में श्रेणी एक समान नहीं थी, फिर भी उनको शैक्षिक उपलब्धि की एक श्रेणी में सम्मिलित किया गया। इसी तरह शिक्षण अभिक्षमता के आधार पर सभी शिक्षकों को तीन तुलनात्मक श्रेणियों में रखा गया हैं अतः स्पष्ट है कि शोधकर्ता ने दोनो स्वतंत्र चरों को नियंत्रित करने का प्रयास किया लेकिन यह नियंत्रण आंशिक ही कहा जायेगा।

(7) मध्यम परिशुद्धता -

क्षेत्र प्रयोग में मध्यम परिशुद्धता की विशेषता पायी जाती है। क्योंकि यहाँ शोधकर्ता को अध्ययन परिस्थिति पर बहुत कुछ नियंत्रण प्राप्त होता है।

3.2 परिकल्पना का निर्माण :

(अ) अर्थ एवं परिभाषा -

अनुसंधान के प्रक्रम में समस्या के कथन के तुरन्त पश्चात एक उपयुक्त परिकल्पना की रचना

की आवश्यकता होती है। परिकल्पना के अभाव में वैज्ञानिक अध्ययन प्रायः सम्भव नहीं है। इसका कारण यह है कि समस्या का स्वरूप अधिकतर अत्याधिक विषय विस्तृत तथा विसरित रहता है। ऐसी स्थिति में उसके व्यापक क्षेत्र को घटाना तथा न्यून करना अत्यन्त आवश्यक होता है, जिससे अध्ययन का स्वरूप स्पष्ट, सूक्ष्म तथा गहन हो सके। यदि परिकल्पना द्वारा ऐसा नहीं किया जाता है तब अनुसंधानकर्ता सम्बन्धित समस्या के अध्ययन के लिए इधर-उधर भटकता रहता है और इस प्रक्रिया में अनेक अनावश्यक तथा व्यर्थ के आंकड़े संकलित कर लेता है क्योंकि परिकल्पना के अभाव में समस्या से सम्बन्धित आवश्यक तथ्यों अथवा चरों का उसे स्पष्ट तथा विशिष्ट ज्ञान नहीं होता इस कारण अनुसंधान में परिकल्पना की रचना अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। ऐसा करने से अनुसंधानकर्ता को तर्क संगत आँकड़ो के संकलन में ठीक दिशा मिलती है तथा उपयुक्त वैध व शुद्ध निष्कर्षों के अनुमान में सुविधा तथा सरलता रहती है।

अतः कहा जा सकता है कि वास्तविक अध्ययन आरम्भ करने के पहले शोधकर्ता अध्ययन के परिणामों के सम्बन्ध में जो अनुमान लगाता है, उसे परिकल्पना कहते हैं।

परिकल्पना को परिभाषित करते हुए लुण्डबर्ग[1] महोदय ने कहा है कि -

"परिकल्पना एक संभावित सामान्यीकरण होता है जिसकी सत्यता की जाँच अभी बाकी रहती है। अपने अति प्रारम्भिक अवस्था में परिकल्पना एक आत्मप्रकाशन, अनुमान, कल्पनात्मक विचार, अन्तर्दृष्टि आदि कुछ भी हो सकती है, जो अनुसंधान कार्य का आधार बन जाता है।"

परिकल्पना की परिभाषा करते हुए टाउन सैण्ड[2] का कहना है कि -

"परिकल्पना एक समस्या का प्रस्तावित उत्तर होता है।"

कुछ अन्य विद्वानों ने भी परिकल्पना को परिभाषित किया है -

करलिंगर[3] के अनुसार -

"एक परिकल्पना दो अथवा दो से अधिक चरों के सम्बन्ध के विषय में एक कल्पनात्मक कथन होता है।"

---

1. जी.ए. लुण्डबर्ग, 'सोशल रिसर्च' (पृष्ठ-9) उद्धृत डॉ. डी.एन. श्रीवास्तव, 'अनुसंधान विधियाँ' आगरा; साहित्य प्रकाशन (चतुर्थ संस्करण), पृष्ठ-95
2. जॉन.सी. टाउन सैण्ड, 'इन्ट्रोडक्शन टू एक्सपेरीमेन्टल मैथड', न्यूयार्क; मेग्रा हिल बुक कम्पनी-1953, पेज-45
3. एफ.एन. करलिंगर, 'फाउण्डेशन ऑफ विहेवियरल रिसर्च', 1964, 'वही' , पेज-20

गुड तथा स्केट्स[1] के अनुसार -

"परिकल्पना एक अनुमान है जिसे अन्तिम अथवा अस्थायी रूप से किसी निरीक्षित तथ्य अथवा दशाओं की व्याख्या हेतु स्वीकार किया गया हो एवं जिसके अन्वेषण को आगे पथ-प्रदर्शन प्राप्त होता हो।"

डी.एन. श्रीवास्तव[2] के अनुसार -

"परिकल्पना दो या अधिक चरों के अनुमान पर आधारित कल्पनात्मक तर्क पूर्ण, कार्यक्षम, प्रस्तावित और परीक्षण योग्य कथन है जो यह बतलाता है कि अनुसंधानकर्ता क्या देखना चाहता है? (अर्थात समस्या कैसे हल हो सकती है या अन्वेषण आगे कैसे होना है)। परीक्षण में वह कथन सत्य भी सिद्ध हो सकता है और गलत भी सिद्ध हो सकता है।"

(ब) परिकल्पना के प्रकार एवं एक अच्छी परिकल्पना की विशेषताएँ -

परिकल्पनाओं के प्रकार को निम्न चार्ट के माध्यम से ठीक ढंग से समझा जा सकता है -
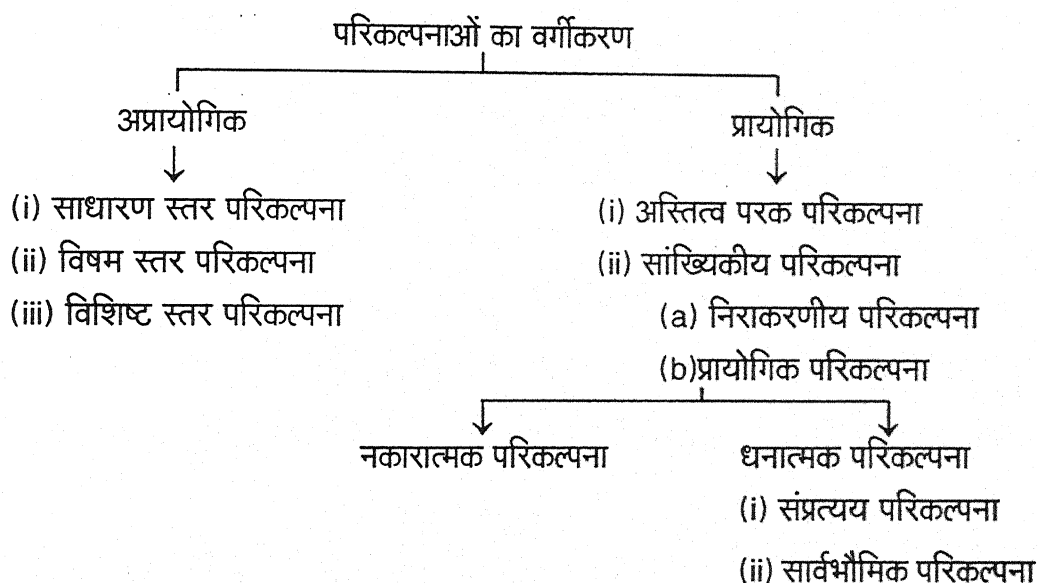
(1) अप्रायोगिक परिकल्पनायें -

अप्रायोगिक परिकल्पनाएँ प्रायः तीन प्रकार की होती हैं।

(क) साधारण स्तर परिकल्पना -

इस प्रकार की परिकल्पना से एक अनुसंधान से सम्बन्धित चरों व घटनाओं का केवल साधारण अध्ययन किया जाता है। मान लिया एक अनुसंधान का उद्देश्य सड़क दुर्घटनाओं (Road Accidents)

---

1. सी.बी. गुड एण्ड डी.ई. स्केट्स, 'मैथड्स ऑफ रिसर्च', न्यूयार्क; एप्लेटन सेन्चुरी क्रोफ्ट, 1954, पेज-90
2. डी.एन. श्रीवास्तव, 'अनुसंधान विधियाँ', 'वही', पृष्ठ-96

की जानकारी प्राप्त करना और यह जानना है कि कितनी दुर्घटनायें ट्रक, मोटर, कार, साइकिल, स्कूटर, रिक्शा आदि से होती हैं। तब ऐसे अनुसंधान में केवल आंकड़ो का संकलन तथा साधारण वर्गीकरण करना ही पर्याप्त होता है। अतः साधारण अनुसंधान के लिए एक साधारण स्तर परिकल्पना की ही आवश्यकता पड़ती है।

(ख) विषम स्तर परिकल्पना -

जब अनुसंधान का उद्देश्य चरों तथा घटनाओं का व्यापक तथा गहन अध्ययन करना होता है, उस स्थिति में अनुसंधान के स्वरूप का विषम होना स्वाभाविक ही है। मान लिया अब एक अनुसंधान का उद्देश्य यह जानना है कि सड़क दुर्घटनाएँ किस समय पर, सड़के किन-किन स्थानों पर किस समय व किस स्थान पर कितनी दुर्घटनाएँ होती हैं, स्पष्टतः ऐसे अनुसंधान का स्वरूप विषम होता है, क्योंकि इसमें आंकड़ो के संकलन, वर्गीकरण तथा विश्लेषण के कार्यभार में अत्यधिक वृद्धि हो जाती है और तदानुसार ऐसे विषम अनुसंधान से सम्बन्धित परिकल्पना को विषम स्तर परिकल्पना कहते हैं।

(ग) विशिष्ट स्तर परिकल्पना -

कुछ अनुसंधान ऐसे होते हैं कि जिनमें सम्बन्धित चरों व घटनाओं के प्रकार्यात्मक सम्बन्धों (Functional Relations) व कार्य कारण सम्बन्धों का अध्ययन करना होता है। निःसन्देह ऐसे अनुसंधान का स्वरूप अधिक विशिष्ट होता है, उदाहरणार्थ मान लिया कि एक अनुसंधान का ध्येय यह जानना है कि दुर्घटनाएँ किन कारणों से होती हैं, यंत्रों की खराबी या शराब पीनें व नींद की कमी से या सड़क की अधिक खराबी से और फिर, शराब पीने, नींद की कमी आदि का सड़क दुर्घटना से क्या सम्बन्ध है। ऐसे विशिष्ट अनुसंधानों के लिए अपरिहार्य रूप से विशिष्ट स्तर की परिकल्पना की रचना आवश्यक होती है।

(2) प्रायोगिक परिकल्पनाएँ -

प्रायोगिक अनुसंधानों में परिकल्पनाओं का स्वरूप थोड़ा भिन्न होता है, क्योंकि उनमें सम्बन्धित चरों के नियंत्रण, जोड़-तोड़ तथा अभिक्रियाओं के कारण कहीं-कहीं वैज्ञानिक मापदण्ड पर प्रायोगिक अभिकल्पों का उपयोग करना होता है तथा उससे सम्बन्धित आंकड़ो का स्वरूप अत्यन्त जटिल होता है और उनका विश्लेषण भी विषम सांख्यकीय प्रविधियों द्वारा किया जाता है। अतः प्रायोगिक अनुसंधानों में परिकल्पनाओं का स्वरूप अत्याधिक निश्चित, नियंत्रित तथा संक्रियात्मक रहता है।

प्रायोगिक अनुसंधानों में प्रायः निम्नलिखित परिकल्पनाओं का उपयोग किया जाता है।

(क) अस्तित्व परिकल्पना -

परिकल्पना अस्तित्वपरक का शाब्दिक अर्थ यह है कि जिसका इस समय अस्तित्व है। इस

प्रकार अस्तित्व परक परिकल्पना का सम्बन्ध एक वर्तमान स्थिति के सीमित, स्थानीय तथा व्यक्तिगत अध्ययन से होता है।

इस प्रकार के अध्ययन की महत्वपूर्ण विशेषता यह होती है कि इसके अन्तर्गत केवल एक ही इकाई का गहन अध्ययन होता है और इससे प्राप्त निष्कर्ष का स्वरूप पर्याप्त मात्रा में वैज्ञानिक भी रहता है। इस सम्बन्ध में स्पष्ट उदाहरण एबिन हॉस का है। उसने स्वयं अपने ऊपर जो प्रयोग किये उनसे हमारे स्मरण सम्बन्धी ज्ञान को पर्याप्त मात्रा में योगदान मिला है इसी प्रकार, रेमण्ड डोज ने स्वयं अपने ऊपर घुटना झटकने सम्बन्धी कितने ही वर्षों तक अनेक प्रयोग किये और उनसे प्रतिवृत्ति क्रिया के सम्बन्ध में उल्लेखनीय योगदान प्रदान किया।

(ख) सांख्यिकीय परिकल्पना -

सांख्यिकीय परिकल्पना दो प्रकार की होती है-

(1) निराकरणीय परिकल्पना -

निराकरणीय परिकल्पना की उपधारणा रहती है कि स्वतंत्र चर के प्रभाव के कारण दो या दो से अधिक समूहों में कोई वास्तविक अन्तर उत्पन्न नहीं हुआ है और जो अन्तर देखने में आया है, उसका कारण प्रतिचयन सम्बन्धी त्रुटियाँ तथा संयोगजन्य त्रुटियाँ कुछ भी हो सकती हैं, परन्तु स्वतंत्र चर का प्रभाव उसका कारण नहीं है तथा स्वतंत्र चर तब तक अन्तर का कारण नहीं माना जायेगा जब तक कि यह अन्तर सन्देह से परे सिद्ध नहीं किया जाता। सन्देह से परे का यहाँ अर्थ है कि जब तक प्रतिचयन की त्रुटियों तथा संयोग के कारणों से परे अन्तर को सार्थक अन्तर सिद्ध नहीं किया जाता। निराकरणीय परिकल्पना की यह उपधारणा विधि शास्त्र के इस सिद्धान्त पर आधारित है कि एक व्यक्ति तब तक निर्दोष माना जायेगा जब तक कि वह दोषी सिद्ध नहीं हो जाता।

(2) प्रायोगिक परिकल्पना -

प्रायोगिक परिकल्पना की रचना में दो सूमहों में अन्तर प्रत्याशित रहता है। मैथेसन के (Matheson) शब्दों में प्रायोगिक परिकल्पना (Hi) दो समूहों के व्यवहारों में प्रायः अन्तर का भविष्यकथन करती है। चूंकि सामान्यतः समूहों में अभिक्रियाओं (Treatments) की मात्रायें अलग-अलग होती हैं। अतः प्रयोगकर्ता अपने आंकड़ो के द्वारा प्रायोगिक परिकल्पना की पुष्टि को प्रत्याशित करता है।

प्रायोगिक परिकल्पना को वैकल्पिक परिकल्पना (Hi) भी कहते हैं। चूंकि ऐसी परिकल्पना के अन्तर्गत अध्ययन से सम्बन्धित दोनों समूहों में अन्तर प्रत्याशित रहता है। अतः प्रायोगिक परिकल्पना के अन्तर के प्रकार के आधार पर दो रूप एक धनात्मक (Positive) तथा दूसरा नकारात्मक (Negative) देखने में आता है। इसके आधार पर सम्बन्धित प्रस्तावित परिकल्पना के दो रूप हो जाते हैं -

(क) धनात्मक परिकल्पना -

एक अध्ययन में धनात्मक परिकल्पना की यह अभिकल्पना रहती है कि दिये गये दो समूहों में से एक समूह निश्चित रूप से दूसरे समूह से श्रेष्ठ है अथवा एक समूह का निष्पादन अथवा योग्यता सार्थक रूप से दूसरे से अधिक है। चूंकि यहाँ पर एक समूह की दूसरे समूह से धनात्मक (Positive) दिशा में अन्तर की अभिकल्पना की गयी है। अतः ऐसी अभिकल्पना पर आधारित परिकल्पना को धनात्मक परिकल्पना (Positive Hypotiesis) कहते हैं।

(1) सम्प्रत्यात्मक परिकल्पना -

जब एक परिकल्पना स्वतंत्र चर तथा आश्रित चर के प्रत्याशित सम्बन्ध के विषय में एक संक्षिप्त कथन होता है तब उसे सम्प्रत्यात्मक परिकल्पना कहते हैं। इस सम्प्रत्यात्मक परिकल्पना की रचना प्रायोगिक (मॉडल) के आधार पर की जाती है। इसकी रचना के पूर्व अनुसंधानों तथा सम्बन्धित सिद्धान्तों की सहायता ली जाती है तथा सम्बन्धित चरों व सम्प्रत्ययों की संक्रियात्मक व्याख्या करनी होती है।

(2) सार्वभौमिक परिकल्पना -

इस प्रकार की परिकल्पना का उद्देश्य सम्बन्धित चरों के विषय में ऐसा सम्बन्ध स्थापित करना होता है जिनका कि स्वरूप सार्वभौमिक हो अथवा परिकल्पना के आधार पर प्राप्त निष्कर्षों से ऐसे सामान्य नियमों की रचना करना होता है, जो कि प्रत्येक काल और देश के लिये वैध हों।

(ख) नकारात्मक परिकल्पना -

नकारात्मक परिकल्पना में एक समूह की योग्यता को दूसरे समूह से सार्थक रूप से कम बताया जाता है। अतः ऐसी नकारात्मक अभिकल्पना की स्थिति में सम्बन्धित परिकल्पना को नकारात्मक परिकल्पना (Negative Hypothesis) कहा जाता है।

अच्छी परिकल्पना की विशेषताएँ -

शोध परिकल्पना के लिए आवश्यक है कि उसका स्वरूप वैज्ञानिक हो। वैज्ञानिक परिकल्पना को अच्छी परिकल्पना कहते हैं। मैकगूगन (1969), करलिंगर (1986) आदि मनोवैज्ञानिकों ने वैज्ञानिक परिकल्पना या अच्छी परिकल्पना की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है -

(1) परिकल्पना को अनुमानात्मक कथन होना चाहिए -

एक वैज्ञानिक परिकल्पना या अच्छी परिकल्पना सदा कथन के रूप में होती है करलिंगर (1986) ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि परिकल्पना प्रश्न के रूप में नहीं होती है बल्कि कथन के रूप में होती है। जैसे "परिणाम के ज्ञान से निष्पादन उन्नत बन जाता है। "धूम्रपान करने से कैंसर होता है।"

बुद्धि तथा सृजनात्मकता के बीच धनात्मक सह सम्बन्ध होता है आदि। अनुमानात्मक कथन अच्छी परिकल्पना के उदाहरण हैं।

(2) परिकल्पना को सकारात्मक कथन होना चाहिए -

एक अच्छी परिकल्पना सकारात्मक कथन के रूप में होती है, नकारात्मक कथन के रूप में नहीं। यहाँ दो या दो से अधिक चरों के बीच सम्बन्ध को स्वीकार किया जाता है, अस्वीकार नहीं किया जाता है। जैसे - "चिंता और उपलब्धि के बीच ऋणात्मक सह सम्बन्ध होता है।" इस परिकल्पना मे चिन्ता चर (स्वतंत्र चर) तथा उपलब्धि चर (आश्रित चर) के बीच ऋणात्मक सम्बन्ध को स्वीकार किया गया है। अतः यह एक अच्छी परिकल्पना है। दूसरी ओर "चिन्ता तथा उपलब्धि के बीच सकारात्मक सह सम्बन्ध नहीं होता है।" इस परिकल्पना में चिन्ता चर तथा उपलब्धि चर के बीच सम्बन्ध को अस्वीकार किया गया है। अतएव यह अच्छी परिकल्पना नहीं है। अतः शोधकर्ता को ऐसी परिकल्पना का निर्माण करना चाहिए, जिसमें दो या दो से अधिक चरों के सम्बन्ध को स्वीकार किया गया हो।

(3) परिकल्पना को समस्या से सम्बद्ध होना चाहिए -

एक वैज्ञानिक परिकल्पना वह कथन है जो शोध समस्या से संगत होता है। अच्छी परिकल्पना वास्तव में शोध समस्या का काम चलाऊ उत्तर होता है। जैसे - कैंसर क्यों होता है? यह समस्या है। "अधिक धूम्रपान के कारण कैंसर होता है।" यह परिकल्पना है। स्पष्टतः यह परिकल्पना अपनी समस्या से सम्बद्ध तथा उसका काम चलाऊ उत्तर है। इसलिए इसे हम अच्छी परिकल्पना कहेंगे।

मैकगूगन (1969) ने कहा है कि, -

"परिकल्पना को समस्या का संगत उत्तर होना चाहिए।"

(4) परिकल्पना को अल्पव्ययी होना चाहिए -

एक अच्छी परिकल्पना में अल्पव्ययिता का गुण होना चाहिए। किसी समस्या से सम्बन्धित अल्पव्ययी तथ अधिव्ययी परिकल्पनायें उपलब्ध हों तो अल्पव्ययी परिकल्पना को श्रेष्ठ समझना चाहिए। अल्पव्ययी परिकल्पना का अर्थ वह परिकल्पना है जो स्पष्ट हो, सरल हो, कम खर्च और सीमांकित हो जैसे - "धूम्रपान से कैंसर होता है।" "कई कारणों से कैंसर होता है।" इन दोनों परिकल्पनाओं में पहली परिकल्पना में अल्पव्ययिता का गुण उपलब्ध है। मैकगूगन (1969) ने भी कहा है कि -

"अच्छी परिकल्पना को अल्पव्ययी होना चाहिए।"

(5) परिकल्पना में तार्किक सरलता होनी चाहिए -

अच्छी परिकल्पना में तार्किक सरलता का गुण होना चाहिए। तार्किक सरलता का तात्पर्य तार्किक एकता तथा समग्रता से है। कोई परिकल्पना केवल समस्या तक ही सीमित हो, तो समझना

चाहिए कि उसमें तार्किक एकता तथा शोध समग्रता उपलब्ध है। यदि कोई परिकल्पना समस्या के अलावा अन्य बातों को भी समाहित करती हो तो समझना चाहिए कि उसमें तार्किक सरलता का गुण उपलब्ध है। अतः पहली परिकल्पना को वैज्ञानिक परिकल्पना तथा दूसरी परिकल्पना को अवैज्ञानिक परिकल्पना कहेंगे।

(6) परिकल्पना को परीक्षण योग्य होना चाहिए -

एक वैज्ञानिक परिकल्पना में परीक्षणीयता का गुण होना न केवल आवश्यक है, बल्कि अनिवार्य भी। इसका अर्थ यह है कि परिकल्पना ऐसी हो जिसकी जांच अनुभाविक अध्ययन के आधार पर करना सम्भव हो। जैसे "परिणाम का ज्ञान देने पर निष्पादन में उन्नति होती है।" यह परिकल्पना परीक्षणीय है। प्रयोग के आधार पर इस परिकल्पना की जांच करना सम्भव है। अतः यह एक अच्छी परिकल्पना है। दूसरी ओर "जो पाप करता है वह नरक में जाता है।" यह परिकल्पना परीक्षणीय नहीं है। अनुभाविक अध्ययन पर इसकी जांच करना सम्भव नहीं है। अतः एक अवैज्ञानिक परिकल्पना है। मैकगूगन (1969) ने कहा है कि -

"अच्छी परिकल्पना वह है जिसका परीक्षण वर्तमान में करना सम्भव हो और घटिया परिकल्पना वह है जिसमें परीक्षणीयता की केवल संभावना है।"

(7) परिकल्पना को स्वीकृति या अस्वीकृति के अधीन होना चाहिए -

एक वैज्ञानिक परिकल्पना ऐसी होती है कि उसकी स्वीकृति या अस्वीकृति प्रमाणिक हो सके। अनुभाविक अध्ययन के बाद या तो वह स्वीकृत हो जाती है या अस्वीकृत हो जाती है। कोई तीसरा विकल्प नहीं होता है। जैसे "परिणाम के ज्ञान से निष्पादन में उन्नति होती है।" प्रयोग करने पर यह परिकल्पना या तो सही प्रमाणित होगी या गलत। सही प्रमाणित होने पर यह स्वीकृत हो जायेगी और गलत प्रमाणित होने पर अस्वीकृत हो जायेगी। दूसरी ओर यह परिकल्पना कि "भगवान की प्रसन्नता के कारण मंहगाई बढ़ती जा रही है" न तो सही प्रमाणित हो सकती है और न गलत। अध्ययनों के आधार पर यह न तो स्वीकृत हो सकती है और न अस्वीकृत। अतः पहली परिकल्पना को वैज्ञानिक परिकल्पना तथा दूसरी परिकल्पना को अवैज्ञानिक परिकल्पना कहेंगे।

(8) परिकल्पना को परिमाणनीय होना चाहिए -

अच्छी परिकल्पना के लिए यह भी आवश्यक है कि वह परिमाणनीय हो। परिमाणन का अर्थ है कि परिकल्पना के दोनों (या अधिक) चरों के बीच सम्बन्ध का मात्रात्मक अध्ययन सम्भव हो जैसे - "बुद्धि तथा सृजनात्मकता के बीच धनात्मक सह सम्बन्ध होता है", इस परिकल्पना में दो चरों यानि बुद्धि तथा सृजनात्मकता के बीच सम्बन्ध का उल्लेख किया गया है। इस सम्बन्ध का मात्रात्मक अध्ययन

सम्भव है। अध्ययन के बाद देखा जा सकता है कि इन दोनों चरों के बीच किस मात्रा में यह सम्बन्ध है। अतः इस परिकल्पना में परिमाणन का गुण उपलब्ध है। इसलिए इसको एक अच्छी परिकल्पना कहेंगे। मैकगूगन (1969) ने भी परिकल्पना की इस विशेषता पर बल दिया है और कहा है कि परिकल्पना को परिमाणन किया हुआ होना चाहिए अथवा इस योग्य होना चाहिए कि उसका परिमाणन आसानी से हो सके।

(9) परिकल्पना में अधिक संख्या में परिणाम होना चाहिए -

एक अच्छी परिकल्पना की यह भी पहचान है कि उसके द्वारा अधिक संख्या में परिणामों का प्रस्तुतीकरण संभव हो। दूसरे शब्दों में परिकल्पना ऐसी हो जिससे पूर्व स्थापित तथ्यों की व्याख्या हो सके और ऐसी घटनाओं के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की जा सके जिसका अध्ययन अब तक नहीं हो सका हो अथवा जो अप्रमाणित हो।

(10) परिकल्पना को सामान्यतः दूसरी परिकल्पनाओं से संगत होना चाहिए -

एक वैज्ञानिक परिकल्पना या अच्छी परिकल्पना को अनुसंधान के क्षेत्र में दूसरी परिकल्पनाओं से संगत होना चाहिए विरोधी नहीं। मैकगूगन (1969) के अनुसार यद्यपि यह विशेषता वैज्ञानिक परिकल्पनाओं के लिए अनिवार्य नहीं है, फिर भी इस विशेषता के उपलब्ध होने पर परिकल्पनाओं से सम्भाव्यता की मात्रा बढ़ जाती है और नहीं होनें पर इसकी मात्रा काफी घट जाती है।

(11) परिकल्पना को किसी अध्ययन विधि के अनुकूल होना चाहिए -

एक अच्छी परिकल्पना के लिए यह भी आवश्यक है कि वह किसी निर्धारित अध्ययन विधि के अनुकूल हो। ऐसी परिकल्पना को प्रमाणित करना अधिक सुलभ तथा आसान होता है। अतः परिकल्पना ऐसी हो जिसकी जांच उपलब्ध अध्ययन विधि, उपकरण एवं परीक्षण के आधार पर सम्भव हो।

(12) परिकल्पना को किसी स्थापित सिद्धान्त से सम्बद्ध होना चाहिए -

परिकल्पना में एक गुण यह होना चाहिए कि वह किसी स्थापित सिद्धान्त से सम्बद्ध हो। यदि एक परिकल्पना किसी स्थापित सिद्धान्त से सम्बद्ध हो और दूसरी परिकल्पना किसी सिद्धान्त से सम्बद्ध न हो तो पहली परिकल्पना श्रेष्ठतर होगी। जैसे-परिणाम के ज्ञान से निष्पादन उन्नत बन जाता है।" "यह परिकल्पना थार्नडाइक के सिद्धान्त से सम्बद्ध होने के कारण एक अच्छी परिकल्पना है।

(13) परिकल्पना को भविष्यवाणी करने में समर्थ होना चाहिए -

एक वैज्ञानिक परिकल्पना में भविष्यवाणी करने की क्षमता होनी चाहिए। परिकल्पना ऐसी हो जिसके आधार पर भविष्य में होने वाली घटनाओं के सम्बन्ध में पूर्व कथन किया जा सके। जैसे - "धूम्रपान से कैंसर होता है।" इस परिकल्पना के आधार पर भविष्यवाणी की जा सकती है कि जो

धूम्रपान करेगा उसको यह रोग हो जायेगा। इसी तरह "परिणाम के ज्ञान से निष्पादन उन्नत बनता है।" इस परिकल्पना के आधार पर पूर्व कथन किया जा सकता है कि यदि कर्मचारियों को उसके परिणाम का ज्ञान दिया जायेगा तो उत्पादन बढ़ जायेगा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि अच्छी परिकल्पना या वैज्ञानिक परिकल्पना की उपर्युक्त कई कसौटियाँ या विशेषताएँ या अपेक्षित गुण स्मरण रखना चाहिए कि इन सभी कसौटियों, विशेषताओं या गुणों में काफी सहमति है। अतः किसी एक परिकल्पना में अधिक से अधिक विशेषताएँ, कसौटियाँ या गुण जितनी अधिक संख्या में उपलब्ध होते हैं उसे उतना ही अधिक वैज्ञानिक परिकल्पना माना जाता है।

(स) वर्तमान शोध की परिकल्पना -

वर्तमान शोध में निराकरणीय परिकल्पनाएँ अपनायी गई हैं -

(i) निराकरणीय परिकल्पना का अर्थ एवं विभिन्न चरण -

निराकरणीय परिकल्पना का सांकेतिक चिन्ह (Symbol)= Ho है निराकरणीय परिकल्पना (Ho) एक ऐसा यन्त्र है, जिसके द्वारा विभिन्न प्रतिदर्शों में पाये जाने वाले अन्तरों की सार्थकता की जांच की जाती है गैरिट[1] के शब्दों में -

"निराकरणीय परिकल्पना की यह मान्यता रहती है, कि दो या दो से अधिक प्रतिदर्शों में जो भी अन्तर देखने में आते हैं, उनका कारण केवल संयोगिक तथा प्रतिदर्श की त्रुटियाँ ही हैं और उनके अन्तर सार्थक अन्तर नहीं हैं।

दूसरे शब्दों में निराकरणीय परिकल्पना की उपधारणा यह है कि दो प्रतिदर्शों में यदि वास्तविक अन्तर है तब उसे निश्चित रूप से सिद्ध किया जाना चाहिए। यह मान्यता न्याय के इस सिद्धान्त पर आधारित है कि एक व्यक्ति तब तक निर्दोष ही कहलायेगा जब तक कि उसे दोषी न सिद्ध किया जा सके। इसी प्रकार दो प्रतिदर्शों में जो भी अन्तर देखनें में आते हैं, उनको संयोगवश ही समझा जायेगा, जब तक कि यह तथ्य सिद्ध नहीं हो जायेगा कि उनके अन्तर का कारण स्वतंत्र चर ही है। गिलफोर्ड के शब्दों में भी इस प्रकार की कल्पना केवल यही बताती है कि प्रायोगिक स्थिति में व अप्रायोगिक स्थिति में जिन घटनाओं की गणना अथवा मापन होता है उन सबके विषय में यही एक मान्यता रहती है, कि

---

1. एच.ई. गैरिट, 'स्टेटिक्स इन साइक्लॉजी एण्ड एजूकेशन (1967) पेज-212 एण्ड 213 उद्धृत-डॉ. एच.के.कपिल, 'सांख्यकी के मूल तत्व', आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1984, पृष्ठ-616

इन सबका विशेष कारण कुछ नहीं है, बल्कि यह सब स्वतंत्र व बन्धनयुक्त संयोग के नियमों के कारण ही देखने में आ रहा है।

निराकरणीय परिकल्पना एक प्रकार से प्रयोगकर्ता के लिए एक ऐसी चुनौती है, जिसमें उसे अपने अध्ययन अथवा प्रयोग के अन्तर्गत स्वतंत्र चर के प्रभाव को स्थापित करना होता है, तथा इसे यह निश्चित रूप से सिद्ध करना होता है। अपने अध्ययन में सार्थक अन्तर सिद्ध करने के लिए अध्ययनकर्ता को फरग्यूसन के अनुसार निम्न चार चरणों की सहायता लेनी पड़ती है -

1. प्रथम, अध्ययनकर्ता को निराकरणीय परिकल्पना की रचना करनी होती है, तथा परीक्षण परिकल्पना में वह यह बताता है कि स्वतंत्र चर का परतंत्र चर पर प्रभाव नहीं पड़ेगा।
2. दूसरे, इसके लिए वह सम्बन्धित आंकड़ो का विश्लेषण करेगा तथा दोनों स्थितियों में पाये जाने वाले अन्तर का निरीक्षण करेगा - (एक स्थिति वह जिसमें स्वतंत्र चर का प्रयोग किया गया है तथा दूसरी वह जिसमें स्वतंत्र चर का प्रयोग नहीं किया गया है।
3. तीसरे, वह दोनों स्थितियों में पाये जाने वाले अन्तर की प्रसम्भाव्यता का पता लगायेगा और यह ज्ञात करेगा कि दोनों स्थितियों में अन्तर सार्थक अन्तर है या केवल संयोग पर आधारित है।
4. यदि ऐसा अन्तर सार्थक अन्तर देखने में आता है तब निराकरणीय परिकल्पनाएँ (Ho) को अस्वीकृत (Reject) कर दिया जायेगा और यदि प्राप्त अन्तर निरर्थक है, तब निराकरणीय परिकल्पना को ही सत्य माना जायेगा और उसे जब तक सत्य ही माना जाता रहेगा जब तक आनुभाविक आंकड़ो के आधार पर उसे मिथ्या सिद्ध नहीं किया जा सकता।

(ii) निराकरणीय परिकल्पना की विशेषताएँ -

निराकरणीय परिकल्पना की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं -

1. वैज्ञानिक अनुसंधान में इस प्रकार की उपकल्पना की जांच करना सबसे सरल होता है और यह जांच श्रेष्ठ होती है।
2. निराकरणीय परिकल्पना की एक यह भी विशेषता हैं कि यह परिकल्पना निर्देश रहित होती है। इस उपकल्पना की जांच में अनुसंधानकर्ता को इस उपकल्पना को स्वीकार और अस्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं होता है।
3. इस परिकल्पना की सहायता से दो समूहों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जांच वैज्ञानिक ढंग से की जा सकती है। दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर धनात्मक भी हो सकता है और ऋणात्मक भी हो सकता है।

4. इस परिकल्पना में अन्तर की सार्थकता की जांच बहुधा द्विपक्षीय परीक्षण द्वारा करते हैं अर्थात दोनों सम्भावनाओं का समान महत्व है। इस कारण इस उपकल्पना को वैज्ञानिक दृष्टि से श्रेष्ठ माना जाता है।
5. निराकरणीय परिकल्पना उस समय सत्य रहती है जब दो समूहों के मध्यमानों में अन्तर सार्थक नहीं होता है।
6. निराकरणीय परिकल्पना इस प्रकार भी बनायी जा सकती है कि दो समूहों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जांच एक पक्षीय परीक्षण द्वारा हो अर्थात धनात्मक पक्ष की ओर हो या ऋणात्मक पक्ष की ओर हो।

(iii)निराकरणीय परिकल्पना में अनुमान लगाने में त्रुटियाँ -

अनुमान लगाने में प्रायः दो प्रकार की त्रुटियाँ होती हैं -

1. प्रथम प्रकार की त्रुटि
2. द्वितीय प्रकार की त्रुटि

इन दोनों प्रकार की त्रुटियों के कारण प्रायः अध्ययनकर्ता के मनमाने विश्वास के स्तर होते हैं। सामान्यतः वैज्ञानिक अध्ययनों में विश्वास के दो स्तर 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर का अधिक प्रचलन है। कभी-कभी अध्ययनकर्ता निराकरणीय परिकल्पना को मिथ्या सिद्ध करने के लिए अपने विश्वास के स्तर को अपनी इच्छा से ही नीचा कर देता है। सामान्यतः निराकरणीय परिकल्पना को 5 प्रतिशत विश्वास के नीचे के स्तर पर अस्वीकार नहीं किया जाता, परन्तु यदि अध्ययनकर्ता अपने आंकड़ो के आधार पर यह देखता है कि निराकरणीय परिकल्पना को 10 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर अस्वीकृत किया जा सकता है और वह ऐसा करता है, तब वह निराकरणीय परिकल्पना को अस्वीकृत करने में प्रथम प्रकार की त्रुटि करता है। स्पष्टतः ऐसा करना एक त्रुटि है, क्योंकि विश्वास के स्तर की स्थापना परिकल्पना की रचना के समय ही हो जाती है, और फिर उसमें परिवर्तन नहीं किया जा सकता। अगर ऐसा किया जाता है तब यह अध्ययन में प्रथम प्रकार की त्रुटि मानी जाती है।

इसके ठीक विपरीत कभी-कभी अध्ययनकर्ता अनुमान निकालने में अपनें विश्वास के स्तर को अनावश्यक रूप से इतना ऊँचा कर देता है, कि निराकरणीय परिकल्पना के स्वीकृत 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर मिथ्या सिद्ध होने पर भी वह निराकरणीय परिकल्पना को सत्य मानता है, और अपने विश्वास के स्तर को ऊँचा उठाकर 0.001 कर देता है ऐसी स्थिति में वह द्वितीय प्रकार की त्रुटि करता है क्योंकि यहाँ स्पष्ट रूप से सार्थक अन्तर देखने में आ रहा है, परन्तु फिर

भी अध्ययनकर्ता निराकरणीय परिकल्पना (Ho) को अस्वीकृत नहीं करता।

वैज्ञानिक अध्ययनों में दोनों प्रकार की त्रुटियों के भ्रामक परिणाम हो सकते हैं अतः प्रथम प्रकार की त्रुटि को दूर करने के लिए अध्ययनकर्ता को चाहिए कि वह अपने विश्वास के स्तर को नीचा न करे, बल्कि अपने अध्ययन की पुनरावृत्ति करे या फिर अपने निरीक्षणों की संख्या में वृद्धि करे। निरीक्षणों में वृद्धि करने से प्रतिदर्श की मानक त्रुटि घट जाती है, तथा प्रतिदर्श की विश्वसनीयता बढ़ जाती है। ऐसा करने से उसे अपने परिणामों को कम से कम 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थक बनाने में सहायता मिलेगी और वह अपने अध्ययन में प्रथम प्रकार की त्रुटि का दोषी नहीं रहेगा।

जहाँ तक द्वितीय प्रकार की त्रुटि का सम्बन्ध है इस त्रुटि के परिणाम प्रायः कम भयंकर होते हैं परन्तु यदि किसी एक रोग के इलाज के लिए कोई गुणकारी औषधि उपलब्ध न हो और नयी औषधि के निर्माण को इस आधार पर अस्वीकृत कर दिया कि इसके उपयोग द्वारा परिणाम केवल 0.01 विश्वास के स्तर पर ही सार्थक है, परन्तु 0.001 विश्वास के स्तर पर सार्थक नहीं है, तब यहाँ द्वितीय प्रकार की त्रुटि अवश्य हानिकारक होगी, क्योंकि इससे एक अच्छी प्रभावशाली औषधि का उपयोग सम्भवतः न हो सकेगा, जबकि व्यवहारिक रूप से उसका उपयोग होना चाहिए था। इसके विपरीत, ऐसी स्थितियों में विश्वास के स्तर को उच्च श्रेणी का अवश्य होना चाहिए जबकि निराकरणीय परिकल्पना के अस्वीकृत हो जाने के दुष्परिणाम निकलते हों।

सामान्यतः प्रारम्भिक अध्ययनों व सामाजिक अध्ययनों में 5 प्रतिशत विश्वास का स्तर संतोषजनक रहता है। उच्च श्रेणी के वैज्ञानिक अध्ययनों में 1 प्रतिशत विश्वास का स्तर आवश्यक होता है। 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर को अधिक ऊँचा जैसे 0.005 अथवा 0.001 उस स्थिति में उठाना चाहिए जबकि निराकरणीय परिकल्पना के अस्वीकृत किये जाने के परिणाम अत्यन्त दुष्कर होने की संभावना अधिक हो।

निराकरणीय परिकल्पना (Ho) के माध्यम से दो प्रतिदर्शों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की जांच की जाती है, परन्तु इस तथ्य की ओर ध्यान नहीं दिया जाता कि किस प्रतिदर्श का मध्यमान (M) कम है, और किसका अधिक। ऐसी स्थिति में अन्तर के निरपेक्ष आकार को ही देखा जाता है और अन्तर धनात्मक तथा ऋणात्मक किसी भी दिशा में हो सकता है। जब दोनों दिशाओं की ओर के अन्तर को समान महत्व दिया जाता है, उस स्थिति में हमारा परीक्षण द्वि-पक्षीय कहलाता है, क्योंकि इसमें अन्तर की दोनों दिशाओं धनात्मक तथा ऋणात्मक के आधार पर अन्तर की सार्थकता की जांच की जाती है। इसके विपरीत, परिकल्पना की रचना का स्वरूप ऐसा भी हो सकता है, जबकि सार्थकता की जांच के लिए केवल धनात्मक पक्ष की ओर या फिर ऋणात्मक पक्ष की ओर ध्यान दिया जाता है ऐसे

परीक्षण में परिकल्पना की रचना के अनुसार केवल एक ही दिशा में दोनों मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जांच की जाती है। यदि अन्तर उस दिशा में देखने में नहीं आता, उस स्थिति में यह कहना पड़ेगा कि दोनों स्थितियों में स्वतंत्र चर के कारण सार्थक अन्तर देखनें में नहीं आया है और इस कारण एक पक्षीय परीक्षण में धनात्मक परिकल्पना का पुष्टिकरण नहीं होने पाया है।

वर्तमान शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं -

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता में कोई अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई अन्तर नहीं है।
4. सरकारी, अर्द्धसरकारी एवं प्राइवेट शिक्षकों (पुरुष एवं महिलाओं) की शैक्षिक-उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है।
5. सरकारी, अर्द्धसरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता में कोई अन्तर नहीं है।
6. सरकारी, अर्द्धसरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-संतुष्टि में कोई अन्तर नहीं है।
7. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक संतुष्टि पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
8. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-संतुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

3.3 न्यादर्श -

(अ) अर्थ एवं परिभाषा -

न्यादर्श जनसंख्या का वह अंग होता है जिसमें अपनी जनसंख्या की समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिबिम्ब रहता है। न्यादर्श अनुसंधान की बहुत बड़ी आवश्यकता की पूर्ति करता है। इसके कारण काफी समय और धन की बचत तो होती ही है परन्तु साथ ही साथ अधिक बढ़िया ढंग से विश्लेषणात्मक अध्ययन भी सम्भव होता है।

न्यादर्श को समझने के पहले जनसंख्या की व्याख्या आवश्यक है। जनसंख्या या समष्टि का तात्पर्य व्यक्तियों, वस्तुओं, निरीक्षणों या घटनाओं की निश्चित संख्या से है।

करलिंगर (1978) के अनुसार -

"जनसंख्या अथवा समष्टि का अर्थ व्यक्तियों, घटनाओं या वस्तुओं के सुपरिभाषित समूह के सभी सदस्य हैं।"

जनसंख्या के ऐसे अंश या भाग को न्यादर्श कहा जाता है जो उस जनसंख्या का प्रतिनिधि होता है जिसके आधार पर निकाले गये परिणाम उस जनसंख्या पर लागू किये जा सकते हैं।

गुडे व हाट[1] के अनुसार -

"एक न्यादर्श जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि किसी विशाल सम्पूर्ण का छोटा प्रतिनिधि है।"

यंग[2] के अनुसार -

"एक सांख्यकीय न्यादर्श उस सम्पूर्ण समूह या योग का एक अति लघु चित्र है जिसमें से कि निदर्शन लिया गया है।"

इंगलिश एवं इंगलिश[3] के अनुसार -

"न्यादर्श जनसंख्या का एक भाग है जो दिये हुए उद्देश्य के लिए सम्पूर्ण जाति का प्रतिनिधि होता है। इसलिए न्यादर्श पर आधारित निष्कर्ष सम्पूर्ण जाति के लिए वैध होता है।"

(ब) न्यादर्शन की विधियाँ -

न्यादर्शन से अभिप्राय उस क्रमबद्ध चयन पद्धति से है जिसकी सहायता से एक समष्टि से सम्बन्धित वैज्ञानिक अध्ययन के लिए कम से कम इकाइयों के प्रयोग की आवश्यकता पड़ती है। करलिंगर[4] के अनुसार -

"किसी जनसंख्या या समष्टि से उसके प्रतिनिधि स्वरूप एक अंश चुन लेने को न्यादर्शन कहते हैं।"

---

1. डब्ल्यू.जे.गुडे एण्ड पी.के.हॉट, मैथर्डस इन सोस रिसर्च (1952) पृष्ठ 201 उद्धरत-डॉ. गोविन्द तिवारी "शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार" आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर 1985 पृष्ठ-214।
2. पी.वी. यंग, "साइनटिफिक सोसल सर्वेज एण्ड रिसर्च" 1966 पृष्ठ-44 उद्धरत-डॉ. गोविन्द तिवारी "शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार" आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर, 1985, पृष्ठ-214।
3. उद्धरत, डॉ. डी.एन.श्रीवास्तव, "अनुसंधान विधियाँ" आगरा : साहित्य प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ 451।
4. एफ.एन. करलिंगर, "फाउण्डेशन आफ विहेवियर रिसर्च" पृष्ठ-52 उद्धरण डॉ. गोविन्द तिवारी "शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, 1985, पृष्ठ -213।

न्यादर्शन प्रायः एक जटिल प्रक्रिया है। न्यादर्शन की प्रक्रिया सम्बन्धित समष्टि की जटिलता की मात्रा के साथ-साथ घटती बढ़ती रहती है। न्यादर्शन की मुख्यतः तीन विधियाँ हैं -

1. प्रसम्भाव्यता न्यादर्शन
2. अर्द्ध-प्रसम्भाव्यता न्यादर्शन
3. अप्रसम्भाव्यता न्यादर्शन

(1) प्रसम्भाव्यता न्यादर्शन -

प्रसम्भाव्यता न्यादर्शन के दो आधार हैं - (अ) सांख्यकीय निरंतरता का नियम तथा (ब) प्रसामान्य वितरण के सिद्धान्त।

प्रसम्भाव्यता न्यादर्शन संयोग चयन पर आधारित होता है इस कारण से इसे संयोगिक न्यादर्शन भी कहते हैं। इस पद्धति की मुख्य विशेषता यह है कि इसके अन्तर्गत चयन की जाने वाली इकाइयों में चयन का आधार केवल संयोग ही रहता है तथा प्रत्येक इकाई अन्य चयन की गई इकाई से स्वतंत्र रहती है अथवा इस इकाई का चयन दूसरी इकाई के चयन को न तो प्रभावित करता है, और न ही उससे प्रभावित होता है इस कारण इस पद्धति में पक्षपात के आने की सम्भावना न्यूनतम रहती है।

प्रसम्भाव्यता न्यादर्शन की प्रायः तीन विधियाँ होती हैं -

(i) लॉटरी विधि

(ii) ड्रम चक्र विधि

(iii) टिप्पेट की संयोगिक संख्याएँ

(2) अर्द्ध प्रसम्भाव्यता न्यादर्शन -

अर्द्ध-प्रसम्भाव्यता न्यादर्शन के अन्तर्गत समष्टि के अपरिमित अथवा अनन्त रूप को प्रथम चरण में एक विशेष आधार पर विभिन्न स्तरों, पुंजो तथा क्षेत्रों में विभाजित कर लिया जाता है। इसके पश्चात प्रत्येक स्तर, पुंज अथवा क्षेत्रों की जनसंख्या में से न्यादर्श का चयन संयोगिक आधार पर किया जाता है। इस प्रकार इस प्रतिचयन विधि के अन्तर्गत प्रतिचयन का स्वरूप संयोगिक अवश्य रहता है परन्तु उसका विस्तार समस्त समष्टि में समान रूप से वितरित नहीं रहता, बल्कि उसका आधार सम्बन्धित समष्टि के विभिन्न स्तरों, पुंजो तथा क्षेत्रों से रहता है, इस कारण इसे अर्द्ध-प्रसम्भाव्यता न्यादर्शन कहते हैं।

इसकी मुख्यतः 6 विधियाँ निम्नलिखित है -

(i) क्रमानुसार न्यादर्शन

(ii) स्तरानुसार न्यादर्शन

(iii) पुंजानुसार न्यादर्शन

(iv) द्विस्तरीय न्यादर्शन

(v) बहुस्तरीय न्यादर्शन

(vi) अनुक्रमानुसार न्यादर्शन

(3) अप्रसम्भाव्यता न्यादर्शन -

इस प्रकार के न्यादर्शन के अन्तर्गत अध्ययन हेतु इकाइयों का चयन प्रसम्भाव्यता सिद्धान्त के नियमानुसार नहीं किया जाता। इसके अन्तर्गत अध्ययनकर्ता को इकाइयों के चयन में प्रायः स्वतंत्रता रहती है, तथा संयोगिक चयन के प्रतिबन्ध उसके ऊपर नहीं रहते। ऐसी स्थिति में वह अपनी सुविधा, उपलब्ध समय, साधन, ज्ञान आदि तत्वों से प्रभावित होकर इकाइयों का चयन करता है। इस कारण इस विधि को असंयोगिक न्यादर्शन भी कहते हैं।

इस पद्धति में इकाइयों के चयन का आधार प्रायः अध्ययनकर्ता की सुविधा या विशेषज्ञ का अध्ययन क्षेत्र का गहन ज्ञान आदि होता है। इस कारण प्रतिचयन की इस विधि को निम्नलिखित नामों से भी जाना जाता है -

(i) असंयोगिक न्यादर्शन

(ii) सुविधानुसार न्यादर्शन

(iii) निर्णयानुसार न्यादर्शन

(iv) विशेषज्ञानुसार न्यादर्शन

उपरोक्त आधारों पर अप्रसम्भाव्यता प्रतिचयन की निम्नलिखित विधियाँ प्रयोग में आती हैं -

(अ) खण्ड न्यादर्श

(ब) यथांश न्यादर्श

(स) अवसरानुसार न्यादर्श

(द) सुविधानुसार न्यादर्श

(य) उद्देश्यानुसार न्यादर्श

(र) निर्णयानुसार न्यादर्श

(ल) विशेषज्ञानुसार न्यादर्श

(व) स्वेच्छानुसार न्यादर्श

न्यादर्शन के उपर्युक्त विधियों में से शोधकर्ता अपने शोध शीर्षक को ध्यान में रखते हुए किसी एक ऐसी पद्धति से न्यादर्श का चयन करता है जिसके आधार पर प्राप्त परिणामों को वह सम्पूर्ण

जनसंख्या पर लागू करने की स्थिति में हो या सम्पूर्ण जनसंख्या पर उनका सामान्यीकरण किया जा सके। शिक्षा एवं मनोविज्ञान में प्रायः शोधकर्ता अपने अध्ययन के लिए जनसंख्या या समष्टि के स्थान पर न्यादर्श के आधार पर ही अपना शोध कार्य सम्पन्न करता है। इसलिए उसे न्यादर्श का चयन करते समय एक अच्छे या वैज्ञानिक न्यादर्श में विद्यमान विशेषताओं को ध्यान में रखना अति आवश्यक है, तभी उसका अध्ययन वांछित परिणाम दे सकता है।

(स) अच्छे न्यादर्श की विशेषताएँ -

एक अच्छे न्यादर्श मे निम्न विशेषताएँ होती हैं-

(1) जनसंख्या का प्रतिनिधि -

एक अच्छे न्यादर्श या वैज्ञानिक न्यादर्श के लिए आवश्यक है कि वह अपनी जनसंख्या का प्रतिनिधि हो। प्रतिनिधि होने का अर्थ यह है कि न्यादर्श में वे सभी विशेषताएँ या गुण उपस्थित हों जो जनसंख्या में उपस्थित हैं। उसकी चर्चा करते हुए - चैपलिन (1975) ने कहा है कि प्रतिनिधिक न्यादर्श वह न्यादर्श है जो अपनी सम्पूर्ण जनसंख्या की विशेषताओं का वास्तविक या वैध अभिसूचक होता है। कुछ विशेष सांख्यिकीय प्रविधियों की सहायता से न्यादर्श को प्रतिनिधिक न्यादर्श बनाया जाता है। अतः जो न्यादर्श अपनी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व जिस सीमा तक करने में सफल होता है, उसे उसी सीमा तक अच्छा न्यादर्श या वैज्ञानिक न्यादर्श माना जाता है।

(2) संभाव्यता सिद्धान्त पर आधारित -

एक अच्छा न्यादर्श सम्भाव्यता सिद्धान्त पर आधारित होता है। दूसरे शब्दों में एक अच्छे प्रतिदर्श का प्रतिचयन संभाव्यता के सिद्धान्त के आलोक में किया जाता है। संभाव्यता सिद्धान्त गणित की एक शाखा है जो प्रकृति की समरूपता, परिवर्तन के नियम, घटनाओं के घटित होने के अवसर की समानता तथा पर्याप्त निरीक्षणों के पूरक अशुद्धियों के रद्द करने से सम्बन्धित अवधारणाओं पर आधारित है।

(3) जनसंख्या की समजातीयता -

एक अच्छा न्यादर्श वह न्यादर्श है जो किसी समजातीय जनसंख्या या समष्टि से लिया गया हो। समजातीय जनसंख्या उसे कहते हैं जिसकी प्रत्येक संरचनात्मक इकाई में किसी गुण या विशेषता का समान वितरण होता है। अतः जनसंख्या में जिस हद तक समजातीयता होती है, उस पर आधारित न्यादर्श उसी हद तक वैज्ञानिक या अच्छा होता है।

(4) न्यादर्श का पर्याप्त आकार -

एक वैज्ञानिक न्यादर्श या उत्तम न्यादर्श के लिए यह भी आवश्यक है कि उसका आकार पर्याप्त हो। न्यादर्श में इकाइयों की संख्या पर्याप्त होती है तो वह अपनी जनसंख्या की सभी विशेषताओं या

गुणों को समाहित करने में सफल होता है। इसलिए छोटे न्यादर्श की अपेक्षा बड़ा न्यादर्श अपनी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व अधिक करता हैं अतः वैज्ञानिक प्रतिदर्श का आकार अपेक्षाकृत बड़ा होता है। लेकिन अधिक बड़ा न्यादर्श के होने पर परिमाणन तथा मापन में असुविधा होती है। इसलिए एक अच्छे न्यादर्श के पर्याप्त आकार का निर्धारण जनसंख्या के स्वरूप तथा शोधकर्ता के उद्देश्य पर भी निर्भर करता है।

(5) समय, श्रम तथा धन की मितव्ययिता -

एक अच्छे न्यादर्श के लिए समय, श्रम तथा मुद्रा के दृष्टिकोण से कम खर्चीला होना भी आवश्यक है। यह तभी सम्भव है जब कि न्यादर्श को छोटा रखा जाये। लेकिन जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, बहुत छोटा न्यादर्श होने पर जनसंख्या की सभी विशेषताओं को न्यादर्श में समाहित करना सम्भव नहीं होगा। अतः न्यादर्श को कम खर्चीला या मितव्ययी बनाते समय यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वह इतना बड़ा हो कि जनसंख्या की सभी विशेषताओं को अपने अन्दर समाहित कर सकें। पारटेन ने कहा है कि जहाँ अनावश्यक खर्च से बचने के लिए न्यादर्श को छोटा होना चाहिए वहीं प्रतिचयन-अशुद्धियों से बचने के लिए इसे अपेक्षाकृत बड़ा होना चाहिए।

(6) यादृच्छिकरण -

एक वैज्ञानिक प्रतिदर्श अथवा उत्तम न्यादर्श में यादृच्छिकरण का गुण पाया जाता हैं यादृच्छिकरण का अर्थ यह है कि जनसंख्या की प्रत्येक इकाई को न्यादर्श में शामिल होने की समान सम्भावना रहती है। इसलिए यादृच्छिक न्यादर्श वास्तव में अपनी जनसंख्या का प्रतिनिधि होता है। बल्टर ने भी इसका समर्थन किया है।

(7) पक्षपातों से मुक्त -

एक उत्तम या वैज्ञानिक न्यादर्श की विशेषता यह है कि वह पक्षपात रहित होता है। स्मरण रखना चाहिए कि जो न्यादर्श वस्तुतः यादृच्छिकरण के सिद्धान्तों पर आधारित होता है वह पक्षपातों से मुक्त होता है।

(8) प्रतिचयन-अशुद्धियों से मुक्त -

वैज्ञानिक न्यादर्श वस्तुतः न्यादर्शन की अशुद्धियों से मुक्त होता है। मनोविज्ञान में प्रायः सभी कार्य न्यादर्श पर आधारित होते हैं, सम्पूर्ण जनसंख्या पर नहीं। इसलिए जनसंख्या पर आधारित मूल्य तथा न्यादर्श पर आधारित मूल्य में अन्तर हो सकता है। जिसको हम प्रतिचयन अशुद्धि कहेंगे। इस अशुद्धि को दूर करने या कम करने के लिए आवश्यक है कि न्यादर्श का आकार बड़ा हो और वह अपनी जनंसख्या का अधिक से अधिक प्रतिनिधित्व कर सके।

(9) अध्ययन के उद्देश्य के अनुकूल -

एक वैज्ञानिक या उत्तम न्यादर्श के लिए एक आवश्यक शर्त यह है कि वह प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य या उद्देश्यों के अनुकूल हो। इस प्रकार के न्यादर्श में घटक वैधता के साथ-साथ भविष्यवाणी वैधता भी उपलब्ध होती है।

(10) उच्च विश्वसनीयता -

एक अच्छे न्यादर्श में उच्च विश्वसनीय का गुण पाया जाता है। भिन्न-भिन्न समयों में किसी न्यादर्श के व्यवहार करने पर प्राप्त परिणामों में जिस मात्रा में स्थिरता तथा संगति उपलब्ध होती है, उसी मात्रा में न्यादर्श विश्वसनीय होता है।

(द) वर्तमान शोध का न्यादर्श -

वर्तमान शोध उत्तर प्रदेश की बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत आने वाले सात जिलों में अवस्थित सरकारी, अर्द्धसरकारी व प्राईवेट बालक एवं बालिका माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों पर आधारित है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र की स्थितियाँ इस क्षेत्र के पिछड़े होने की वजह से काफी विषम (भिन्न) है। क्षेत्र में माध्यमिक विद्यालयों का प्रसार भी विषम है। यदि शोधकर्ता न्यादर्शन की सबसे अच्छी प्रसम्भाव्यता न्यादर्शन के आधार पर शोध न्यादर्श का चयन करता तब ऐसी स्थिति में उसको आंकड़े एकत्र करने में जटिल परिस्थितियों का सामना करना पड़ता तथा समय भी अधिक लगता इसलिए शोधकर्ता ने अपने शोध न्यादर्श को चुनने के लिए अर्द्ध-प्रसम्भाव्यता न्यादर्शन की पुंजानुसार प्रतिदर्शन विधि का सहारा लिया।

यहाँ शोध न्यादर्श की चर्चा करने के पहले पुंजानुसार प्रतिचयन के सम्बन्ध में संक्षिप्त जानकारी अपेक्षित है -

पुंजानुसार न्यादर्शन -

इसे क्षेत्र या गुच्छ न्यादर्शन भी कहा जाता है। यह एक ऐसी सम्भाव्यता न्यादर्शन विधि है जिसका उद्भव कृषि शोधों में हुआ था परन्तु व्यवहारपरक विज्ञानों में यह काफी लोकप्रिय हो गया। इसका प्रयोग सर्वे शोध में अधिक किया जाता है, जहाँ जनसंख्या का आकार बड़ा तो होता ही है साथ ही प्रतिदर्श की इकाईयाँ काफी बड़े क्षेत्र में बिखरी हुई भी होती हैं। क्षेत्र न्यादर्शन में जनसंख्या की कई इकाइयों में से कुछ इकाइयों का यादृच्छिक ढंग से चयन करके फिर उन इकाइयों से कुछ व्यक्तियों का यादृच्छिक ढंग से चयन किया जाता है। जब इकाइयाँ काफी बड़ी होती हैं तो उन इकाइयों में कुछ इकाईयों का और यदि जरूरत महसूस की गयी तो इन चुनी गयी इकाइयों में से कुछ उपइकाइयों का यादृच्छिक ढंग से चयन करके न्यादर्श तैयार किया जाता है। करलिंगर के अनुसार -

"पुंज न्यादर्शन जिसका प्रयोग सर्वे में सर्वाधिक होता है, इकाइयों या सेटों या उपसेटों का क्रमिक यादृच्छिक न्यादर्शन होता है।"

पुंजानुसार न्यादर्शन के प्रमुख लाभ-

(i) क्षेत्र न्यादर्शन का प्रयोग बड़े जनसंख्या के अध्ययन या बड़ा भौगोलिक क्षेत्र के अध्ययन में काफी लाभदायक एवं सुविधाजनक सिद्ध हुआ है। इसमें शोधकर्ता को सुविधा होने का मुख्य कारण यह है कि यहाँ वह बड़े जनसंख्या के भौगोलिक क्षेत्रों में से कुछ क्षेत्रों का यादृच्छिक ढंग से चयन कर मात्र उसी क्षेत्र के लोगों के विचारों का अध्ययन करता है।

(ii) क्षेत्र न्यादर्श में समय, श्रम एवं धन की बचत होती है। शोधकर्ता या साक्षात्कार कर्ता का यादृच्छिक ढंग से चुने गये मात्र कुछ व्यक्तियों के ही विचारों का अध्ययन करने से काम चल जाता है।

(iii) क्षेत्र न्यादर्शन में यादृच्छिक ढंग से चुने गये क्षेत्र के किसी प्रत्यर्थी का उसी क्षेत्र के अन्य लोगों के साथ प्रतिस्थापन जरूरत पड़ने पर आसानी से किया जा सकता है। इस ढंग की सुविधा न्यादर्शन की अन्य विधियों में संभव नहीं है।

(iv) क्षेत्र न्यादर्शन में लचीलापन का गुण होता है। शोधकर्ता यदि चाहे तो प्रत्येक चुने गये क्षेत्र से व्यक्तियों को सीधे चयन कर सकता है।

(v) क्षेत्र न्यादर्शन में चयन किये गये व्यक्तियों के पुंज की विशेषताओं को जानना आसान होता है। इन गुणों को जान लेने से एक पुंज से प्राप्त निष्कर्ष को दूसरे पुंज पर विश्वास के साथ लागू किया जा सकता है।

पुंजानुसार न्यादर्शन की प्रमुख परिसीमायें -

पुंजानुसार न्यादर्शन की प्रमुख परिसीमाएँ निम्नलिखित हैं -

(i) इस प्रकार के न्यादर्शन में इस बात की कोई गारन्टी नहीं होती है कि इसमें सम्मिलित किया गया प्रत्येक पुंज या क्षेत्र का आकार बराबर ही होगा क्योंकि शोधकर्ता को प्रत्येक पुंज के आकार पर कोई नियंत्रण नहीं रहता है।

(ii) क्षेत्र न्यादर्शन में न्यादर्शन त्रुटि अधिक होती है। फलस्वरूप इस तरह के न्यादर्शन की निपुणता कम होती है।

(iii) इस तरह के न्यादर्शन में इस बात की भी गारन्टी नहीं होती है कि किसी एक क्षेत्र का पुंज में सम्मिलित व्यक्ति अन्य दूसरे पुंज से पूर्णतः स्वतंत्र होगा है।

प्रस्तुत शोध में अध्यापकों के चयन हेतु बुन्देलखण्ड क्षेत्र के सभी सरकारी, अर्द्धसरकारी एवं

प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों में से लाटरी विधि द्वारा कुछ विद्यालयों को चयनित करके उनके सभी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया, जिनका विवरण निम्न प्रकार है -

सारणी - 3.1

न्यादर्श में सम्मिलित कुल शिक्षक एवं शिक्षिकायें

क्रम	विद्यालय का प्रकार	शिक्षक	शिक्षिकायें	कुल योग
1.	सरकारी माध्यमिक विद्यालय	111	99	210
2.	अर्द्ध सरकारी माध्यमिक विद्यालय	121	59	180
3.	प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय	108	52	160
	योग	340	210	550

सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में से जिन विद्यालयों का चयन न्यादर्श हेतु किया गया, उनके नाम तथा शिक्षक-शिक्षिकाओं की संख्या निम्नवत है -

<u>न्यादर्श में सम्मिलित कुल शिक्षक एवं शिक्षिकायें</u>
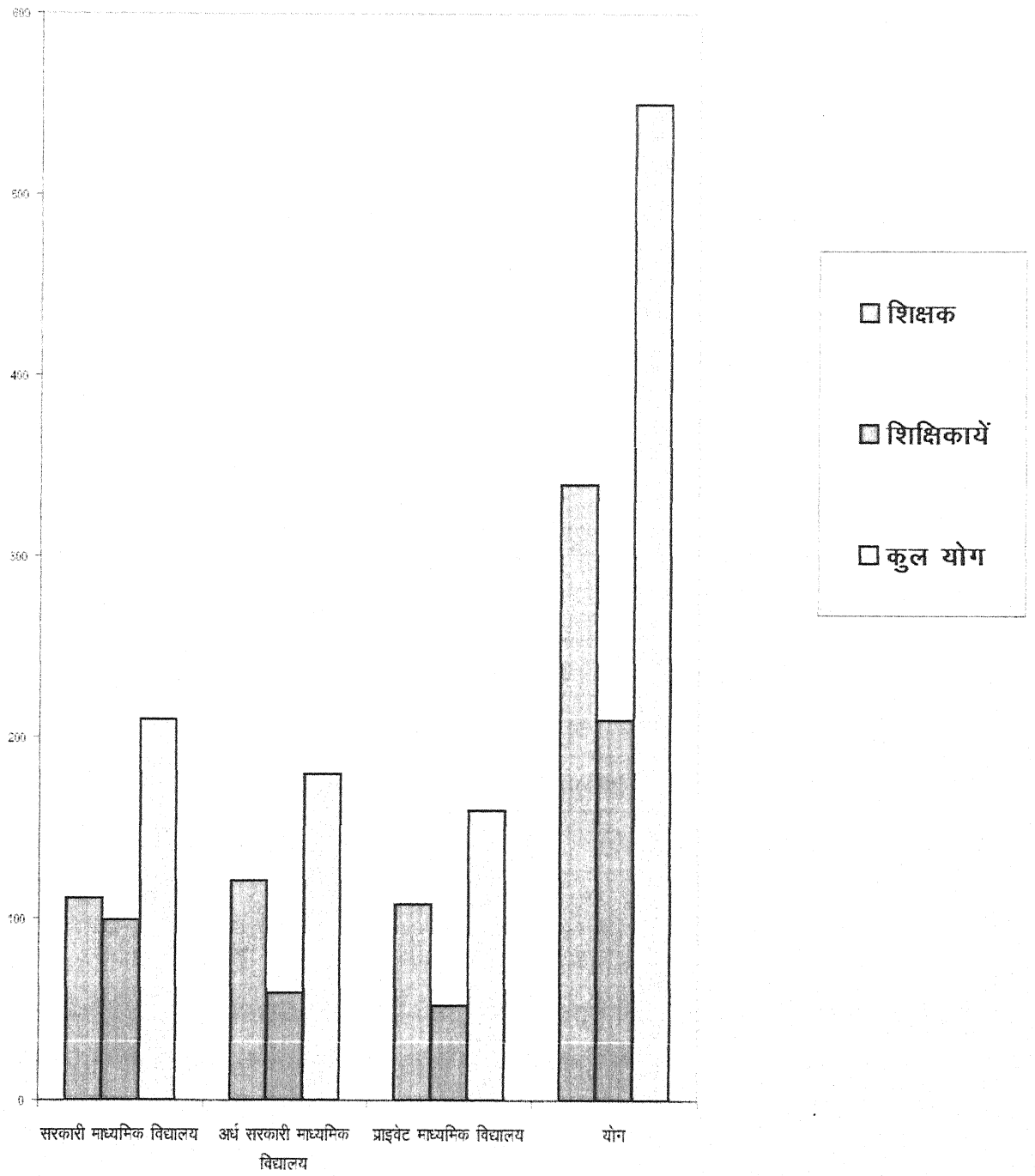
ग्राफ 3.1

सारणी - 3.2

सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकायें

क्रम	नाम विद्यालय	शिक्षक/शिक्षिकायें	संख्या
1.	राजकीय इण्टर कालेज, बरगढ़ (चित्रकूट)	शिक्षक	17
2.	राजकीय इण्टर कालेज, महोबा	शिक्षक	10
3.	राजकीय इण्टर कालेज, झांसी	शिक्षक	17
4.	राजकीय इण्टर कालेज, बाँदा	शिक्षक	16
5.	राजकीय इण्टर कालेज, ललितपुर	शिक्षक	16
6.	राजकीय इण्टर कालेज, हमीरपुर	शिक्षक	17
7.	राजकीय इण्टर कालेज, उरई (जालौन)	शिक्षक	18
	योग		111
8.	राजकीय बालिका इण्टर कालेज, चित्रकूट	शिक्षिकायें	13
9.	राजकीय बालिका इण्टर कालेज, बाँदा	शिक्षिकायें	15
10.	राजकीय बालिका इण्टर कालेज, झांसी	शिक्षिकायें	15
11.	राजकीय बालिका इण्टर कालेज, हमीरपुर	शिक्षिकायें	17
12.	राजकीय बालिका इण्टर कालेज, ललितपुर	शिक्षिकायें	08
13.	राजकीय बालिका इण्टर कालेज, उरई (जालौन)	शिक्षिकायें	08
14.	राजकीय बालिका इण्टर कालेज, महोबा	शिक्षिकायें	23
	योग		99
	कुल योग		210

न्यादर्श में जिन अर्द्ध सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया, उन विद्यालयों के शिक्षक-शिक्षिकायें जो न्यादर्श की इकाइयाँ हैं, उनका ब्यौरा निम्नवत है -

सारणी - 3.3

अर्द्ध सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकायें

क्रम	नाम विद्यालय	शिक्षक/शिक्षिकायें	संख्या
1.	चित्रकूट इण्टर कालेज, चित्रकूट	शिक्षक	17
2.	डी.ए.वी. कालेज, महोबा	शिक्षक	16
3.	विपिन बिहारी इण्टर कालेज, झांसी	शिक्षक	17
4.	स्व. कामता प्रसाद शास्त्री इण्टर कालेज, बदौसा (बाँदा)	शिक्षक	17
5.	बुन्देलखण्ड इण्टर कालेज-माधौगढ़, उरई (जालौन)	शिक्षक	18
6.	वर्णी इण्टर कालेज, ललितपुर	शिक्षक	18
7.	गाँधी राष्ट्रीय विद्यालय, राठ (हमीरपुर)	शिक्षक	18
	कुल		121
8.	सनातन बालिका उच्चतर मा.वि., उरई	शिक्षिकायें	11
9.	रघुनाथ सहाय उच्चतर मा.वि., झांसी	शिक्षिकायें	08
10.	भगवती प्रसाद ओमर बालिका इण्टर कालेज, बाँदा	शिक्षिकायें	14
11.	सुधा सागर कन्या इण्टर कालेज, ललितपुर	शिक्षिकायें	08
12.	आर्य कन्या इण्टर कालेज, झांसी	शिक्षिकायें	09
13.	नगरपालिका बालिका इण्टर कालेज, बाँदा	शिक्षिकायें	09
	योग		59
	कुल योग		180

न्यादर्श में जो प्राईवेट माध्यमिक विद्यालय सम्मिलित है उनमें चयनित न्यादर्श की इकाइयों का विवरण निम्नवत है।

सारणी - 3.4

प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकायें

क्रम	नाम विद्यालय	शिक्षक/शिक्षिकायें	संख्या
1.	सेठ मूलचन्द्र इ.का. कर्वी (चित्रकूट)	शिक्षक	14
2.	सरस्वती विद्यामन्दिर इ.का., बाँदा	शिक्षक	19
3.	अग्रसेन विद्यामन्दिर इ.का., झांसी	शिक्षक	14
4.	जे.पी.इ.का., कर्वी (चित्रकूट)	शिक्षक	13
5.	सरस्वती विद्यामन्दिर इ.का., महोबा	शिक्षक	15
6.	परमहंश इ.का. भरूआ सुमेरपुर (हमीरपुर)	शिक्षक	15
7.	सरस्वती वि.मं. इ.का. कोंच, (जालौन)	शिक्षक	18
	योग		108
8.	परमहंश बा.इ.का., भरूआ सुमेरपुर (हमीरपुर)	शिक्षिकायें	16
9.	सरस्वती बा.वि.मं. इ.का., महोबा	शिक्षिकायें	09
10.	विद्या मन्दिर बा.इं.का., भरूआ सुमेरपुर (हमीरपुर)	शिक्षिकायें	15
11.	तेज सिंह आशीर्वाद बा.इं. का., उरई (जालौन)	शिक्षिकायें	12
	योग		52
	कुल योग		160

3.4 शोध उपकरण -

समय की गति बड़ी विचित्र है पहले हम सिद्धान्तों में अधिक विश्वास करते थे। प्रत्येक कार्य के पीछे अध्यात्मवाद और फल प्राप्ति की इच्छा निहित थी, लेकिन आज समय बदल गया है। अब काम के प्रति, जीवन के प्रति तथा वस्तु के प्रति हमारा दृष्टिकोण बदल गया है। अब हम भौतिकवाद के साथ-साथ उपयोगितावाद को भी महत्व देने लगे हैं प्रत्येक सिद्धान्त को हम पहले व्यवहार की कसौटी पर कस कर देखते हैं, यदि वह उपयोगी सिद्ध होता है तब हम उसको अपनाते हैं अन्यथा वह सिद्धान्त केवल सिद्धान्त मात्र बनकर रह जाता है। इसी कारण प्रत्येक विचार अथवा वस्तु को पहले व्यवहार अथवा उपयोगिता की कसौटी पर परखा जाता है तभी उसको मान्यता प्राप्त होती है।

(अ) शोध-उपकरण का तात्पर्य -

शिक्षा-अनुसंधान के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की मापन प्रविधियों को प्रयुक्त किया जाता है। प्रत्येक मापन प्रविधि एक विशेष प्रकार के प्रदत्तों के संकलन का स्रोत होती है। मापन प्रविधियों के द्वारा

एक विशेष प्रकार की सूचनाओं को परिमाणात्मक प्रदत्तों में प्राप्त किया जाता है। इन प्रविधियों द्वारा दोनों प्रकार के गुणात्मक तथा परिणात्मक प्रदत्त प्राप्त किये जाते हैं। इन प्रविधियों के आधार पर गुणों का संख्यात्मक वर्णन किया जाता है।

अधिकांश मापन प्रविधियों की रचना इसलिये की जाती है जिससे परिमाणात्मक प्रदत्त प्राप्त किये जा सकें। मापन-प्रविधियों द्वारा प्रदत्तों का संकलन शोध प्रक्रिया का महत्वपूर्ण सोपान है। इन प्रदत्तों के आधार पर ही किसी शोध कार्य के निष्कर्ष निकाले जाते हैं। मापन प्रविधियाँ, शोध को वैज्ञानिक आधार प्रदान करती हैं। मापन के द्वारा प्रदत्त तीन स्तरों पर प्राप्त किये जाते हैं - सांकेतिक (आवृत्ति के रूप), अनुस्थितियों के रूप में तथा प्राप्तांक के रूप में। शिक्षा अनुसंधान में शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक प्रदत्तों को प्रयुक्त किया जाता है। जिन तकनीकों या उपकरणों का प्रयोग व्यक्तियों के व्यवहार के मापन के लिये किया जाता है उन्हें मापन तथा मूल्यांकन के उपकरणों या तकनीकों के नाम से सम्बोधित किया जाता है विभिन्न प्रकार के व्यवहार का मापन करने हेतु विभिन्न प्रकार के उपकरणों या परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है।

फ्रीमेन[1] के शब्दों में -

"मनोवैज्ञानिक परीक्षण वह मानकीकृत यंत्र है जो समस्त व्यक्तित्व के एक पक्ष या अधिक पहलुओं का मापन शाब्दिक या अशाब्दिक अनुक्रियाओं या अन्य किसी प्रकार के व्यवहार के माध्यम से करता है।"

(ब) शोध उपकरणों के प्रकार -

शोधकर्ता अपने शोध विषय की आवश्यकतानुसार अलग-अलग तरह के शोध उपकरणों के माध्यम से आंकड़े एकत्र कर अपना अध्ययन पूर्ण करता है, सामान्यतः शैक्षिक शोधों में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया जाता है -

1. अवलोकन
2. परीक्षण
3. साक्षात्कार
4. अनुसूची
5. प्रश्नावली

---

1. फ्रैंक, एस.फ्रीमेन, "थ्योरी एण्ड प्रेक्टिस आफ साइक्लोजिकल टेस्टिंग", 1965 पृष्ठ 46, उद्धरण- डॉ. महेश भार्गव, "आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन" आगरा: हरप्रसाद भार्गव, 1977, पृष्ठ-72।

6. निर्धारण मापनी
7. प्रक्षेपीय मापनी
8. समाजमिति
9. संचयी अभिलेख
10. ऐनकडोटल अभिलेख
11. परीक्षण बैटरी

(स) अच्छे शोध-उपकरण की विशेषताएं -

साधारण रूप में यदि कोई वस्तु हमारी उन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है जिस उद्देश्य से हमने उसे खरीदा है तो हम उसे अच्छी मानते हैं यही बात मनोवैज्ञानिक परीक्षण के सम्बन्ध में भी लागू होती है। इसलिए किसी भी परीक्षण की श्रेष्ठता का निर्धारण कुछ वांछनीय कसौटियों के आधार पर ही किया जा सकता है। एक अच्छे परीक्षण की निम्न विशेषताएं होती हैं -

(क) व्यवहारिक विशेषताएं -

अच्छे मनोवैज्ञानिक उपकरण की व्यवहारिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

(1) सोद्देश्यपूर्णता -

उत्तम परीक्षण की "सोद्देश्यपूर्णता" एक मुख्य विशेषता है। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी भी प्रकार की परीक्षा का निर्माण करने से पूर्व उसके विशिष्ट उद्देश्य निर्धारित कर लेने चाहिए। परीक्षा चाहे निदानात्मक है, उपलब्धि मापन हेतु, व्यक्तित्व मापन हेतु अथवा बुद्धि मापन हेतु निर्मित की गयी है, प्रत्येक के उद्देश्य भिन्न होंगे। इसी दृष्टि से एक उत्तम परीक्षण का निर्माण उसी स्थिति में सम्भव है जबकि हमारे पास कोई उद्देश्य, लक्ष्य अथवा समस्या हो, अमूर्त परिस्थितियों में परीक्षण की रचना कदापि सम्भव नहीं हो सकती क्योंकि परीक्षण तो सदैव ही उद्देश्य पूर्ति का एक साधन मात्र है।

(2) व्यापकता -

व्यापकता से तात्पर्य यह है कि परीक्षा जिस योग्यता का मापन करने के लिए बनायी गयी है उस योग्यता के समस्त क्षेत्र तथा जिस पाठ्यक्रम पर आधारित हो उसे समस्त पहलुओं पर प्रश्न पूंछे जायें। जितना अधिक कोई परीक्षण पाठ्यक्रम एवं उसके विभिन्न अंशो एवं क्षेत्रों से सम्बन्धित होगा उतना ही व्यापक कहलायेगा। दूसरे शब्दों में परीक्षण इतना व्यापक होना चाहिए कि वह अपने लक्ष्य की पूर्ति के साथ-साथ व्यवहार के विस्तृत प्रतिदर्श रूप का भी प्रतिनिधित्व कर सके। परीक्षण की व्यापकता, निर्माता की स्वयं की सूझ-बूझ, बुद्धि एवं क्षमता पर निर्भर करती है।

(3) मितव्ययता -

परीक्षण निर्माण करते समय परीक्षण निर्माणकर्ता को यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि परीक्षण धन की दृष्टि से अनुसंधानकर्ता के लिए मंहगा सिद्ध न हो, परीक्षण निर्माता की यह कोशिश रहनी चाहिए कि परीक्षण अनावश्यक रूप से विस्तृत न हो जाये। परीक्षण के स्वरूप के अनुरूप जिन जिन अति महत्वपूर्ण पदों के समावेश से परीक्षण उद्देश्यों की पूर्ति हो सके, केवल उन्ही पदों को परीक्षण में स्थान दिया जाना चाहिए। व्यर्थ के पदों को परीक्षण में सम्मिलित करके मात्र परीक्षण लम्बाई की औपचारिकताएं पूरी न की जाये। साथ ही उत्तर-पत्रक अत्यन्त कुशलतापूर्वक तैयार किया जाये ताकि पत्रक अधिक विस्तृत न हो जाये।

(4) उपयोगिता -

वह परीक्षण जो निर्माण करने, छात्रों द्वारा उसको हल करने तथा उसका आंकलन करने तीनों पक्षों की दृष्टि से सरल हो, एक अच्छा परीक्षण कहलाता है एक परीक्षण जिसके निर्माण में कठिनाई न हो, छात्रों को भी उत्तर देने में कोई असुविधा न हो, अंकन प्रक्रिया में भी किसी प्रकार की जटिलता न आये, उपयोगी एवं सहजता के गुण से युक्त परीक्षण समझा जाता है। प्रशासन में सुविधा की दृष्टि से निर्माता को ऐसे परीक्षण की रचना करनी चाहिए जिसे विद्यार्थी अपनी सामयिक परिस्थितियों के अनुकूल प्रभावी ढंग से प्रशासित कर सके।

(5) ग्राह्यता -

एक अच्छे परीक्षण में ग्राह्यता का गुण होना भी अनिवार्य है। ग्राह्यता से तात्पर्य है - किसी भी परीक्षण का उन व्यक्तियों पर तथा उन परिस्थितियों में सफलतापूर्वक प्रशासित किया जाना, जिनको आधार बनाकर उस परीक्षण विशेष की मानकीकरण प्रक्रिया सम्पन्न की गयी है।

(6) प्रतिनिधित्व -

वस्तुतः हम पूरी जनसंख्या को लेकर कोई अनुसंधान कार्य करते हैं, लेकिन पूरी जनसंख्या के आंकड़े नहीं ले पाते। अतः उनमें से एक विस्तृत न्यादर्श ले लेते हैं, जिस पर हमारा सम्पूर्ण अनुसंधान कार्य आधारित होता है। एक उत्तम परीक्षण की दृष्टि से उसमें यह विशेषता होनी चाहिए कि वह प्रतिनिधि कहा जा सके। कहने का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति के व्यवहार के जिस न्यादर्श का मापन करने के लिए परीक्षण की रचना की गयी है, उसका मापन परीक्षण प्रतिनिधिक रूप से कर सके।

(ख) तकनीकी विशेषताएँ -

एक अच्छे मनोवैज्ञानिक परीक्षण में निम्न तकनीकी विशेषताएँ होती है -

(1) मानकीकृत -

एक उत्तम परीक्षण मानकीकृत होता है। इसका अर्थ यह है कि परीक्षण में दिये जाने वाले प्रश्नों, निर्देशों, परीक्षा लेने की विधियों तथा प्रशासन एवं फलांकन प्रक्रिया को पहले से ही निश्चित कर लिया गया हो, ताकि मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ तरीके से किया जा सके।

(2) वस्तुनिष्ठता -

किसी भी परीक्षण का वस्तुनिष्ठ होना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि इसका प्रभाव विश्वसनीयता एवं वैधता दोनों पर ही पड़ता है। वास्तव में जो परीक्षा वस्तुनिष्ठ नहीं होती वह वैध तथा विश्वसनीय भी नहीं हो सकती। कोई परीक्षा वस्तुनिष्ठ तब होती है जब उसके प्रश्नों के उत्तरों पर अंक देते समय विभिन्न व्यक्तियों का मतभेद न हो, जिसके प्रश्नों की व्याख्या या जिनके अर्थ भिन्न-भिन्न प्रकार से न किये जा सकते हो, जिनके उत्तर बिल्कुल ठीक या बिल्कुल अशुद्ध हो और उन पर अंक देते समय विभिन्न व्यक्तियों में मतभेद न होता हो।

(3) विभेदकारिता -

एक उत्तम परीक्षण में विभेदकारिता का गुण अनिवार्य रूप से विद्यमान रहता है। वस्तुतः विभेदकारी परीक्षा उस परीक्षा को कहते हैं जो उच्च योग्यता एवं निम्न योग्यता वाले विद्यार्थियों में भेद बता सके अर्थात यह परीक्षण प्रतिभाशाली एवं मन्दबुद्धि बालकों में अन्तर स्पष्ट कर सके।

फ्रीमेन के अनुसार -

''विश्वसनीयता का तात्पर्य उस विशेषता से है जिसमें एक परीक्षण आन्तरिक रूप से समान और जो परीक्षण तथा पुर्नपरीक्षण में समान फल प्राप्त करता है।''

(4) विश्वसनीयता -

एक उत्तम मनोविज्ञान परीक्षण की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसकी विश्वसनीयता है अर्थात जिस पर विश्वास किया जा सके। विश्वसनीयता से हमारा तात्पर्य ऐसी परीक्षा से है जिसको बार-बार प्रशासित करने पर एक से ही निष्कर्ष प्राप्त हो।

(5) वैधता -

यदि कोई परीक्षण वही मापन करता है जिसका मापन करने के लिए उसका निर्माण हुआ है तो वह परीक्षण वैध कहलाता है। हम कह सकते हैं कि वैधता का अर्थ है वह कार्य कुशलता जिससे कोई परीक्षण उस तथ्य का मापन करता है जिसके लिए वह बनाया गया है।

(6) मानक -

शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक मापन में प्राप्तांको का अर्थ समझने एवं उनकी व्याख्या करने के लिए कुछ प्रतिमानों की आवश्यकता पड़ती है। इन्हीं प्रतिमानों को मानक भी कहा जाता है मानक या सामान्यों का निर्धारण प्रमापीकरण प्रक्रिया का एक आवश्यक पक्ष है बिना मानकों के परीक्षण प्राप्तांको की व्याख्या नहीं की जा सकती। ये मानक न केवल समूह में व्यक्ति विशेष की स्थिति का ज्ञान कराते हैं बल्कि इसके द्वारा एक व्यक्ति की तुलना दूसरे व्यक्ति से भी की जा सकती है।

वस्तुतः मानक का साधारण अर्थ समूह के औसत निष्पादन से है। ये मानक न केवल समूह के औसत निष्पादन को बताते हैं अपितु औसत से ऊपर या नीचे विभिन्न मात्रा में विचलन को भी व्यक्त करते हैं।

(द) प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण -

शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि और उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का उनके व्यावसायिक-संतुष्टि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया है। तीनों चरों के मापन हेतु जिन उपकरणों का प्रयोग किया गया है, उनका संक्षिप्त विवरण निम्नवत है -

(i) शैक्षिक उपलब्धि -

शिक्षकों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने के लिए उनके हाईस्कूल, इण्टरमीडिएट, स्नातक, परास्नातक, बी.एड./एल.टी./बी.टी.सी. तथा एम.एड. के अंक पत्रों में प्राप्त उनकी श्रेणियों को आधार बनाया गया है।

(ii) शिक्षण-अभिक्षमता परीक्षण -

शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता को ज्ञात करने के लिए डॉ. जयप्रकाश और डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत "टीचिंग एट्टीट्यूट टेस्ट (T.A.T.)" का प्रयोग किया गया। इस टेस्ट के निर्माण के लिए निर्माणकर्ताओं द्वारा सबसे पहले शिक्षण व्यवसाय से सम्बन्धित तमाम पक्षों की जानकारी के लिए सम्बन्धित विदेशी अध्ययनों एवं शिक्षा विदों के विचारों के आधार पर एक सफल शिक्षक के 20 प्रमुख गुणों को चिन्हित किया गया। इन गुणों को 20 शिक्षा शास्त्रियों द्वारा फाइव प्वाइन्ट स्केल पर रेटिंग दिलवायी गयी। रेटिंग के आधार पर उच्च रेटिंग वाले 10 गुणों को चुन लिया गया तथा निम्न रेटिंग वाले 10 गुणों को छोड़ दिया गया। रेटिंग की वरीयता के आधार पर चयनित 10 गुण निम्न प्रकार हैं -

(i) नैतिक चरित्र

(ii) अनुशासन

(iii) धैर्य

(iv) सहयोगी प्रवृत्ति

(v) दयालुता

(vi) पक्षपात रहित

(vii) ज्ञान पिपाषुता

(viii) उत्साह

(ix) आशावादी

(x) व्यापकहित

परीक्षण हेतु 240 पदों का निर्माण किया गया। पदों पर समुचित विचार करने के बाद 40 पदों को परीक्षण से अलग कर 200 पदों वाले परीक्षण प्रारूप को तैयार किया गया। इस परीक्षण को मध्य प्रदेश के विन्ध्य क्षेत्र के 6 प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले 20 से 30 वर्ष की आयु वाले ग्रामीण क्षेत्र के 630 अधिस्नातक छात्राध्यापकों के न्यादर्श पर प्रशासित किया गया। पद-विश्लेषण के पश्चात् जिन पदों को ठीक समझा गया, उन 150 पदों को परीक्षण में अन्तिम रूप से सम्मिलित किया गया तथा शेष 50 पदों को जिन्हें कम आंका गया था, परीक्षण से अलग कर दिया गया।

परीक्षण के प्रमापीकरण हेतु मध्य प्रदेश के 8 जिलों के 11 राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के 1050 छात्राध्यापकों के एक बड़े न्यादर्श पर 150 कथन वाले इस परीक्षण को प्रशासित किया गया तथा विभिन्न आवश्यक सांख्यकीय संगणनायें जैसे-मध्यमान, माध्यिका, बहुलक, मानक-विचलन, मानक त्रुटि, कुकुदता, विषमता ज्ञात की गयी।

परीक्षण की वैधता ज्ञात करने के लिए 200 छात्राध्यापकों पर परीक्षण को प्रशासित कर प्राप्तांक प्राप्त किये गये तथा इन्हीं छात्राध्यापकों के सिद्धान्त, प्रयोगिक एवं क्राप्ट के अंको के साथ इनका सह सम्बन्ध ज्ञात किया गया। सह सम्बन्ध गुणांक का मान + 0.5 प्राप्त हुआ, जो कि संतोषजनक था। परीक्षण की क्रास वैधता भी ज्ञात की गयी। इसके लिए राजकीय आर.टी. कालेज, रींवा के 50 छात्राध्यापकों पर परीक्षण का प्रशासन किया गया। ये सभी छात्राध्यापक एक समान सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के थे तथा उनकी शैक्षिक योग्यता भी एक समान थी। इन छात्रों के परीक्षण में प्राप्त प्राप्तांको तथा संस्था के प्रधान और 4 प्राध्यापकों द्वारा इन्हीं 50 छात्राध्यापकों को जो रेटिंग दी गयी, के मध्य सह सम्बन्ध ज्ञात किया गया। सह सम्बन्ध गुणांक का मान +0.672 प्राप्त हुआ, जो कि काफी सन्तोषजनक था।

परीक्षण की विश्वसनीयता अर्द्ध-विच्छेदन विधि द्वारा गुटमैन और स्पियरमैन ब्राउन प्रोफेसी फारमूला का उपयोग कर ज्ञात की गयी, जो क्रमशः +0.891 तथा +0.91 निकली। यह विश्वसनीयता गुणांक 100 इकाइयों के न्यादर्श पर आधारित था। 50 अध्यापकों के समूह पर परीक्षण पुर्नपरीक्षण विधि द्वारा विश्वसनीयता गुणांक का मान +0.94 प्राप्त हुआ।

परीक्षण के प्रशासन हेतु 8 पेज की परीक्षण पुस्तिका के विधिवत प्रयोग हेतु समुचित निर्देशों का उल्लेख किया गया है। इसी परीक्षण के प्राप्तांको के लिए 4 प्राप्तांक कुंजियों का निर्माण किया गया है।

(i) पृष्ठ 1 के सही उत्तर हेतु।

(ii) पृष्ठ 2 के सही उत्तर हेतु।

(iii) पृष्ठ 1 के गलत उत्तर हेतु।

(iv) पृष्ठ 2 के गलत उत्तर हेतु।

प्रत्येक 150 कथनों के 5 वैकल्पिक उत्तर परीक्षण पुस्तिका में दिये गये-पूर्ण सहमत, सहमत, दुविधा, अहसमत और पूर्ण असहमत। परीक्षण के निम्न तीन मानक प्राप्तांक ज्ञात किये गये -

1. टी-प्राप्तांक
2. मानक प्राप्तांक
3. प्रतिशतांक

परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांको के आधार पर शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता को 7 श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

(iii) व्यावसायिक सन्तुष्टि मापन यंत्र -

शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि ज्ञात करने के लिए शोधकर्ता द्वारा आर.एस. मिश्रा, मनोरमा तिवारी और डी.एन.पाण्डेय द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत परीक्षण व्यावसायिक सन्तुष्टि मापन यंत्र का प्रयोग किया गया है।

यह परीक्षण कर्मचारियों की व्यावसायिक सन्तुष्टि के स्तर को ज्ञात करने के लिए बनाया गया है। परीक्षण को बनाने का उद्देश्य कर्मचारियों की व्यावसायिक सन्तुष्टि को प्रभावित करने वाले तमाम कारकों की पहचान करना और नियोक्ता को उन कारकों की जानकारी उपलब्ध कराकर कर्मचारियों की व्यावसायिक सन्तुष्टि के लिए उपाय करने में सक्षम बनाना है।

परीक्षण के निर्माण के लिए व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्धित तमाम कारकों के सम्बन्ध में जानकारी मनोवैज्ञानिकों द्वारा अनुसंधान के आधार पर चिन्हित किये गये तथा अन्य उपलब्ध साहित्य के आधार पर परीक्षण निर्माण-कर्ताओं ने व्यावसायिक सन्तुष्टि को प्रमाणित करने वाले निम्न 11 क्षेत्रों

की पहचान की -

(i) सुरक्षा

(ii) वेतन।

(iii) सेवा शर्तें।

(iv) उन्नति की सम्भावना।

(v) कार्य आधारित मूल्यांकन।

(vi) सामाजिक दायरा।

(vii) कार्य दशायें।

(viii) व्यावसाय की प्रकृति।

(ix) पर्यवेक्षण।

(x) सुविधायें।

(xi) अवकाश।

इन 11 क्षेत्रों से सम्बन्धित 41 कथन बनाये गये हैं। इन कथनों को हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में शिक्षा शास्त्रियों एवं विषय विशेषज्ञों से परिचर्चा के बाद तैयार किया गया। इसमें निम्न बातों का ध्यान रखा गया है।

1. उच्च स्तर की भाषा का प्रयोग किया गया है, जिससे कथन पूर्णतः स्पष्ट हो जाये।
2. परीक्षण में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों तरह के कथनों को सम्मिलित किया गया।
3. सकारात्मक एवं नकारात्मक कथनों को इस प्रकार मिला दिया गया है। ताकि अनुमान न लगाया जा सके।

फलांकन के लिए फाइव-प्वाइन्ट स्केल अधिक असहमत, असहमत, सामान्य, सहमत, अधिक सहमत के आधार पर सकारात्मक कथनों को अधिक असहमत के लिए 1 असहमत के लिए 2 सामान्य के लिए 3 सहमत के लिए 4 अधिक सहमत के लिए 5 अंक तथा नकारात्मक कथनों के लिए ठीक इसके विपरीत अंक निर्धारित किये गये हैं। परीक्षण में सकारात्मक एवं नकारात्मक कथनों को सम्मिलित कर व्यक्ति निष्ठता को कम करने का प्रयास किया गया है। परीक्षण में 18 सकारात्मक कथन हैं तथा 23 नकारात्मक कथन है।

परीक्षण को उपयोग करते समय फाइव-प्वाइन्ट-स्केल पर प्रत्येक कथन से सम्बन्धित इकाइयों के विचार ले लिए जाते हैं। यह परीक्षण प्रत्येक इकाई को व्यक्तिगत रूप से देकर 15 मिनट में पूर्ण करने को कहा जाता है। तत्पश्चात प्राप्तांक कुंजी के आधार पर अंकीकरण कर प्रयोज्य की व्यावसायिक

सन्तुष्टि के स्तर को ज्ञात कर लिया जाता है। कुल परीक्षण में प्राप्त प्राप्तांको के आधार पर प्रयोज्यों को निम्न तीन श्रेणियों में विभाजित कर लिया जाता है -

1.	पूर्ण रूप से सन्तुष्ट	105 अंक से ऊपर
2.	सामान्य रूप से सन्तुष्ट	71 से लेकर 105 अंक
3.	असन्तुष्ट	70 अंक से नीचे।

व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्धित प्रत्येक क्षेत्रवार व्याख्या भी की जा सकती है।

परीक्षण की विश्वसनीयता अर्द्ध-विच्छेदन विधि द्वारा 75 व्यक्तियों को न्यादर्श लेकर ज्ञात की गयी, जिससे विश्वसनीयता गुणांक 0.78 प्राप्त हुआ। परीक्षण पुर्नपरीक्षण विश्वसनीयता का भी आंकलन किया गया, इसके लिए 50 व्यक्तियों के न्यादर्श पर 3 सप्ताह के अन्तराल में परीक्षण को प्रशासित किया गया। इस विधि से विश्वसनीयता गुणांक 0.69 प्राप्त हुआ।

परीक्षण की वैधता ज्ञात करने के लिए 50 कर्मचारियों पर परीक्षण को प्रशासित कर उनके प्राप्तांक प्राप्त किये तथा इन्हीं कर्मचारियों के सम्बन्ध में कर्मचारियों के पर्यवेक्षक और प्रमुख द्वारा उनको दी गयी रेटिंग नोट की गयी तथा प्राप्तांकों और रेटिंग के मध्य सह सम्बन्ध देखा गया। इसमें सह सम्बन्ध गुणांक का मान 0.68 प्राप्त हुआ।

3.5 प्रदत्त संकलन -

प्रदत्तों के संकलन के लिए अनुसंधान-उपकरणों का प्रशासन न्यादर्श के प्रयोज्यों पर किया जाता है। अधिकांशतः शैक्षिक अनुसंधानों में प्रदत्तों का संकलन या तो प्रमापीकृत परीक्षणों द्वारा या स्वयं निर्मित शोध-उपकरणों द्वारा किया जाता है। इनसे वस्तुनिष्ठ प्रदत्त प्राप्त हो जाते हैं, जिसके द्वारा एक अध्ययन में सही परिणाम तक पहुँचा जा सकता हैं प्रदत्तों का संकलन प्रश्नावली, निरीक्षण, साक्षात्कार, परीक्षण तथा अनेक अन्य प्रविधियों द्वारा किया जाता है।

एक अनुसंधानकर्ता को यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि कितना और किस प्रकार के प्रदत्तों का संकलन किस स्थान पर और कब किया जाये? अनुसंधानकर्ता को इस बात का भी ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है कि इस प्रकार के प्रदत्तों के संकलन के लिए किस प्रकार की प्रविधि उपयोग में लाई जायेगी। प्रदत्तों के संकलन का मुख्य उद्देश्य अनुसंधान परिकल्पना को प्रमाणित या उचित रूप में सिद्ध करना है।

(अ) प्रदत्तों का अर्थ एवं प्रकार -

अर्थ -

प्रदत्तों का अर्थ है - निरीक्षण। वैज्ञानिक शैक्षिक अनुसंधानों में प्रदत्तों की आवश्यकता पड़ती है। प्रदत्त परिणामात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार के होते हैं।

प्राप्तांक एक व्यक्ति के गुणों का अंकीय वर्णन करता है। प्राप्तांको की अपनी विशेषताएँ होती हैं। मापन प्रक्रिया एक चर का परिणामात्मक रूप से मापन करने में सहायक होती है। प्रदत्त आकृति और प्राप्तांको के रूप में एकत्रित किये जाते है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि किस प्रकार के उपकरणों के द्वारा प्रदत्तों का संकलन किया जा रहा है। अधिकांशतः परीक्षणों के द्वारा जो प्रदत्त एकत्रित किये जाते हैं, वह प्राप्तांको के रूप में होते हैं। प्रदत्त वह वस्तु है जिसकी सहायता से हम समझते हैं कि शोध के निष्कर्ष वैध एवं विश्वसनीय हैं तथा इनकी प्रमाणिकता की परख की जा सकती है।

प्रदत्तों के प्रकार -

मापन प्रक्रिया के चार स्तर होते हैं, जिनसे चार प्रकार के प्रदत्त प्राप्त होते हैं। इस प्रकार प्रदत्तों की चार स्तरों में बांट सकते हैं -

(i) नाम सम्बन्धी प्रदत्त।

(ii) क्रम-सूचक प्रदत्त।

(iii) समान आवान्तर प्रदत्त

(iv) अनुपात प्रदत्त।

इनका संक्षिप्त विवरण निम्नवत है -

(i) नाम सम्बन्धी प्रदत्त -

प्रदत्त साधारणतः चार प्रकार के होते हैं, परन्तु यह सबसे कम शुद्ध स्तर के प्रदत्त माने जाते हैं। इसमें केवल दो या दो से अधिक वर्गों में किसी समूह या तथ्य का विभाजन किया जाता है। उसकी आवृत्तियों में गणना की जाती है, जैसे - पास या फेल, छात्र और छात्रायें, हिन्दू तथा मुस्लिम आदि। उसके परिणाम का बोध नहीं होता है। इस प्रकार प्रदत्तों के लिए निरीक्षण-प्रविधि तथा प्रश्नावली प्रविधि प्रयुक्त की जाती है।

इस प्रकार के प्रदत्तों को आवृत्तियों के रूप में एकत्रित किया जाता है। इस प्रकार के प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए प्रतिशत, बहुलांक-मान, काई-वर्ग परीक्षण तथा सह सम्बन्ध के लिए कनटिनजेन्सी प्रविधि प्रयुक्त की जाती है। साधारणतः वर्णनात्मक सांख्यिकीय प्रविधियों को ही प्रयुक्त किया जा सकता है। कक्षा-शिक्षण की व्यवस्था में इसी प्रकार के प्रदत्तों को प्रयुक्त किया जाता है।

(ii) क्रम-सूचक प्रदत्त -

नाम सम्बन्धी प्रदत्तों की अपेक्षा प्रदत्तों का यह रूप अधिक शुद्ध होता हैं प्रत्येक वर्ग के छात्रों को एक क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। प्रत्येक वर्ग के सदस्यों को अनुस्थिति दी जाती है। इस प्रकार के प्रदत्तों के लिए निरीक्षण प्रविधि तथा अनुस्थित-मापनी का प्रयोग किया जाता है। सदस्यों की योग्यता के आधार पर उनका स्तरीकरण किया जाता है और अनुस्थितियाँ प्रदान की जाती है। सदस्य के क्रम स्तर का बोध होता है। परन्तु उनकी सही दूरी स्पष्ट नहीं होती है। इससे सदस्यों के समूह का विभाजन करके योग्यतानुसार अनुस्थिति प्रदान की जाती है, जैसे-कक्षा के छात्रों को लड़के तथा लड़कियों में विभाजित करके प्रत्येक को उनकी योग्यतानुसार क्रम में रखा जाता है।

(iii) समान-आवान्तर प्रदत्त -

इसी प्रकार के प्रदत्तों की वह सब विशेषतायें होती है जो उपरोक्त दोनों प्रकार के प्रदत्तों की होती है, परन्तु इस प्रकार के प्रदत्तों की विशेषता यह होती है कि सदस्यों के मध्य की दूरी प्रकट हो जाती है। इस प्रकार के प्रदत्तों में शून्य माना हुआ होता है। शैक्षिक मापन में अधिक शुद्ध प्रदत्त इसी स्तर के होते है। शैक्षिक तथा मनोवैज्ञानिक मापन सापेक्षिक होता है। अतः शून्य बिन्दु माना हुआ होता है।

इन प्रदत्तों के लिए समूह के सदस्यों के किसी गुण के मापन में अंक प्रदान किये जाते हैं। जैसे-शैक्षिक उपलब्धियों के लिए विषयगत अंक दिये जाते हैं। बुद्धि के मापन हेतु अंक दिये जाते हैं।

शिक्षा तथा मनोविज्ञान में यह सबसे शुद्ध प्रकार का प्रदत्त होता है। इस प्रकार के प्रदत्तों से शोध-कार्यों में जो निष्कर्ष निकाले जाते हैं, वे अधिक विश्वसनीय तथा शुद्ध होते हैं।

(iv) अनुपात प्रदत्त -

इस प्रकार के प्रदत्तों की वह सभी विशेषतायें होती है, जो आवान्तर प्रदत्तों की होती हैं साथ ही दो निम्न अतिरिक्त विशेषतायें होती है -

(अ) इस प्रकार के प्रदत्तों में शून्य बिन्दु होता है और वही प्रदत्तों का सन्दर्भ बिन्दु होता है जबकि उपरोक्त प्रदत्तों का सन्दर्भ बिन्दु शून्य नहीं होता है, अपितु समूह होता है। शून्य मान उस चर की अनुपस्थिति प्रदर्शित करता है। भौतिक विज्ञानों में इस प्रकार के प्रदत्त एकत्रित किये जाते हैं भौतिक विज्ञान के मापनियों पर शून्य सभी में होता है।

(ब) अनुपात प्रदत्त में जो अंक दिये जाते हैं वे वास्तविक अंक होते हैं उन्हें जोड़ा जा सकता है, घटाया जा सकता है, जबकि आवान्तर प्रदत्तों में ऐसा सम्भव नहीं होता है। 15 ग्राम, 5 ग्राम का तिगुना होता है परन्तु शैक्षिक मापन के अंको में ऐसा सम्बन्ध नहीं स्थापित किया जा सकता है।

उपरोक्त चारों प्रकारों के प्रदत्तों का वर्गीकरण मापन के चार स्तरों पर आधारित होता है। प्रदत्तों की प्रकृति मापन के स्तर से स्पष्ट हो जाती है। अनुसंधानकर्ता को इन चारों मापन के स्तर की विस्तृत जानकारी होना आवश्यक है, तभी वह प्रदत्तों की प्रकृति समझ सकता है।

(ब) परीक्षण प्रशासन एवं प्रदत्त संकलन -

व्यावहारिक मनोविज्ञान में शोध-कार्य के लिए प्रदत्तों का संकलन शोध के उपकरणों का प्रशासन, न्यादर्श सदस्यों पर करके किया जाता है। शोध में विभिन्न प्रकार के चरों के मापन के लिए विविध प्रकार की मापन प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। शोध के उपकरणों की सहायता से विविध प्रकार के प्रदत्तों का संकलन किया जाता है। इसके लिए आवश्यक होता है कि शोधकर्ता अपने चरों की प्रकृति को भली प्रकार समझने का प्रयास करे और समुचित मापन प्रविधि का चयन करके प्रदत्तों का संकलन करें। प्रदत्तों की प्रकृति,चर की प्रकृति एवं मापन के उपकरण की प्रकृति पर आधारित होती है।

प्रस्तुत शोध में शिक्षक-शिक्षिकाओं की व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा शिक्षण-अभिक्षमता ज्ञात करने के लिए उल्लिखित परीक्षणों का विधिवत प्रशासन कर आँकड़े एकत्र किये गये हैं।

(स) अंकीकरण -

प्रस्तुत शोध में आवान्तर प्राप्तांको को आधार बनाया गया है। प्रस्तुत शोध हेतु लिए गए न्यादर्श में जो शिक्षक एवं शिक्षिकायें सम्मिलित की गयी है उनकी शैक्षिक-उपलब्धि, व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का आंकलन निम्न तरीके से किया गया है।

(i) शैक्षिक-उपलब्धि का अंकीकरण -

इसके लिए न्यादर्श में सम्मिलित सभी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के हाईस्कूल, इण्टरमीडिएट, स्नातक, परास्नातक, बी.एड./एल.टी./बी.टी.सी. तथा एम.एड. के अंकपत्रों एवं प्रमाण-पत्रों के आधार पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि का निर्धारण किया गया है। हाईस्कूल से लेकर परास्नातक तक की परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी के लिए 15 अंक, द्वितीय श्रेणी के लिए 10 अंक तथा तृतीय श्रेणी हेतु 5 अंक निर्धारित किये गये। जो अध्यापक बी.एड. उपाधि प्राप्त थे, उनको 5 अंक तथा जो अध्यापन एम.एड. उपाधि प्राप्त थे उनको भी 5 अंक अतिरिक्त प्रदान किये गये। इस प्रकार प्रत्येक शिक्षक की शैक्षिक-उपलब्धि को उपर्युक्त मानक के आधार पर अंको में परिवर्तित कर लिया गया। तत्पश्चात शैक्षिक-उपलब्धि के आधार पर शिक्षकों को कैली मैथड (1938) के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित कर लिया गया। इसके लिए शैक्षिक-उपलब्धि के गुणांक के आधार पर सभी शिक्षकों को उच्च से निम्न के क्रम में व्यवस्थित कर लिया गया। ऊपर के 27 प्रतिशत अध्यापकों को उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले वर्ग में तथा नीचे 27 प्रतिशत अध्यापकों को निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले वर्ग में तथा मध्य के शेष 46 प्रतिशत अध्यापकों को सामान्य शैक्षिक उपलब्धि वाले वर्ग में रख लिया गया।

(ii) व्यावसायिक सन्तुष्टि का अंकीकरण -

शिक्षक-शिक्षिकाओं की व्यावसायिक सन्तुष्टि के स्तर का पता लगाने के लिए मिश्रा, तिवारी एवं पाण्डेय द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत "व्यावसायिक सन्तुष्टि मापन यंत्र" का प्रयोग किया गया। इस परीक्षण में कुल 41 कथन हैं। जिनमें से 18 कथन -

क्रम संख्या - 2, 3, 4, 9 15, 16, 18, 19, 22, 24, 26, 27, 30, 32, 35, 36, 40, 41 धनात्मक कथन है।

तथा तेईस शेष कथन क्रम संख्या - 1, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13, 14, 17, 20, 21, 23, 25, 28, 29, 31, 33, 34, 37, 38, 39 नकारात्मक कथन हैं। न्यादर्श की प्रत्येक इकाई ने परीक्षण के प्रत्येक कथन के प्रति अपनी प्रतिक्रिया फाइव-प्वाइंट रेटिंग स्केल पर पूर्ण सहमत, सहमत, सामान्य, असहमत तथा पूर्ण असहमत के रूप में व्यक्त की।

धनात्मक कथनों पर प्रयोज्यों ने अपनी प्रतिक्रिया जब पूर्ण असहमत के रूप में दी उसे उस कथन के लिए 1 अंक प्रदान किया गया। इसी प्रकार जब उसने अपनी प्रतिक्रिया पूर्ण असहमत, असहमत, सामान्य, सहमत, तथा पूर्ण सहमत के रूप में दी तो उसे उस कथन के लिए क्रमशः 2 अंक, 3 अंक, 4 अंक और 5 अंक प्रदान किये गयें इसी प्रकार प्रयोज्यों द्वारा नकारात्मक कथनों के प्रति जब अपनी प्रतिक्रिया पूर्ण असहमत, असहमत, सहमत तथा पूर्ण सहमत के रूप में दी तो उन्हं इसके लिए क्रमशः 5, 4, 3, 2 और 1 अंक प्रदान किया गया। तत्पश्चात प्रयोज्यों के पूरे परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांको को परीक्षण के ऊपर अंकित कर दिया गया। जो उसकी व्यावसायिक सन्तुष्टि के स्तर को दर्शाता था। इसके बाद परीक्षण में प्राप्त कुल प्राप्तांको के आधार पर सर्वाधिक प्राप्तांक से सबसे कम प्राप्तांक के क्रम में प्रयोज्यों को व्यवस्थित कर लिया गया तथा कैली विधि के अनुसार उन्हें उच्च व्यावसायिक सन्तुष्टि सामान्य व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा निम्न व्यावसायिक सन्तुष्टि नामक 3 वर्गों में विभाजित कर लिया गया।

(iii) शिक्षण अभिक्षमता का अंकीकरण -

न्यादर्श में सम्मिलित सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता ज्ञात करने के लिए डॉ. जयप्रकाश और डा. आर.पी. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित "टीचिंग एप्टीट्यूड टेस्ट () टी.ए.टी.)" का प्रयोग किया गया।

प्रत्येक प्रयोज्यों से 8 पेज की परीक्षण पुस्तिका देकर 2 पृष्ठ के उत्तर पत्रक पर परीक्षण में सम्मिलित सभी 150 पदों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया पूर्ण सहमत, सहमत, द्विविधा, असहमत और पूर्ण असहमत के रूप में व्यक्त कराई गयी। इसके बाद 4 पारदर्शी उत्तर कुंजियों (i) पृष्ठ 1 पर सही उत्तरों

के लिए (ii) पृष्ठ 2 पर सही उत्तरों के लिए (iii) पृष्ठ 1 पर गलत उत्तरों के लिए तथा (iv) पृष्ठ 2 पर गलत उत्तरों के लिए, के आधार पर प्रत्येक प्रयोज्य द्वारा परीक्षण पर प्राप्त कुल अंक परीक्षण के ऊपर अंकित कर दिये गये।

परीक्षण का फलांकन करते समय इस बात का ध्यान रखा गया कि प्रयोज्य द्वारा परीक्षण में सम्मिलित सभी 150 पदों पर अपनी प्रतिक्रियाएँ दी गयी हों तथा प्रत्येक पद के लिए एक ही प्रतिक्रिया दी गयी हो। उन उत्तर पत्रकों को, जिसमें प्रत्येक पद के लिए एक सी प्रतिक्रियायें दी गयी थीं, निरस्त कर दिया गया।

परीक्षण पर प्राप्त कुल प्राप्तांको को आधार बनाकर सभी प्रयोज्यों को कैली मैथड के आधार पर उच्च शिक्षण-अभिक्षमता वाले, सामान्य शिक्षण अभिक्षमता वाले तथा निम्न शिक्षण-अभिक्षमता तीन वर्गों में विभाजित कर लिया गया।

(द) शोध में प्रयुक्त सांख्यकीय प्रविधियाँ -

वर्तमान अध्ययन में विभिन्न उपकरणों से प्राप्त प्राप्तांको का वर्गीकरण कर मध्यमान, प्रतिशतांक, मानक विचलन तथा टी-परीक्षण द्वारा विश्लेषण किया गया।

एकत्रित आंकडो को सारणीबद्ध किया गया, तत्पश्चात आवश्यकतानुसार वर्गवार विभाजित करके उनका माध्य, मानक विचलन ज्ञान किया गया तथा परिकल्पनाओं का सत्यापन टी-परीक्षण की सहायता से किया गया है।

माध्य -

माध्य ज्ञान करने के लिए निम्न सूत्र प्रयोग किया गया -

$$M = A.M. + \frac{\Sigma f d}{n} \times C.I.$$

जहाँ M = वास्तविक माध्य

A.M. = कल्पित माध्य

f = आवृत्ति

d = कल्पित माध्य वाले वर्गान्तर से विचलन

$\Sigma f d$ = आवृत्ति तथा विचलन के गुणनफल का योग

N = कुल आवृत्तियाँ

C.I. = वर्गान्तर की सीमा अथवा लम्बाई

मानक विचलन -

मानक विचलन की गणना निम्न सूत्र के माध्यम से की गयी है -

$$S.D. = i\sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$$

जहाँ S.D.= मानक विचलन

f = आवृत्ति

d = कल्पित माध्य वाले वर्गान्तर से विचलन

Σfd = आवृत्ति तथा विचलन के गुणनफल का योग

Σfd^2 = आवृत्ति तथा विचलन के गुणनफल का पुनः विचलन से गुणनफल का योग

N = कुल आवृत्तियाँ

I = वर्गान्तर की सीमा अथवा लम्बाई

क्रान्तिक अनुपात -

प्रस्तुत शोध में सरकारी, अर्द्धसरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक-शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा उनकी शिक्षण-अभिक्षमता को ग्राफीय निरूपण कर स्पष्ट किया गया है। परिकल्पनाओं के सत्यापन के लिए दो मध्यमानों के बीच अन्तर की जाँच हेतु क्रान्तिक अनुपात (सी.आर.) का उपयोग किया गया है, क्योंकि दो बड़े समूहों के मध्यमानों के अन्तर की जांच क्रान्तिक अनुपात परीक्षण द्वारा ज्ञात करना अच्छा रहता है।

इस परीक्षण के अन्तर्गत दोनों मध्यमानों के अन्तर को दोनों प्रतिदर्शों के अन्तर की मानक त्रुटि से विभाजित करने पर जो मान प्राप्त होता है, वह क्रान्तिक अनुपात कहलाता है। इसे ज्ञात करने के चरण निम्नलिखित है।

(i) प्रत्येक समूह के मध्यमान की मानक त्रुटि ज्ञात करना।

(ii) दोनों समूहों के अन्तर की मानक त्रुटि ज्ञात करना।

(iii) दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर (Md) को अन्तर की मानक त्रुटि (S Ed) से विभाजित करना तथा क्रान्तिक अनुपात के मान को ज्ञात करना।

(iv) दोनों समूहों की अलग-अलग संख्याओं के आधार पर उपयुक्त स्वतंत्रता के अंशों को ज्ञात करना।

(v) दी गयी टी-तालिका में सम्बन्धित स्वतंत्रता के अंशो पर तथा विश्वास के विभिन्न स्तरों पर सार्थकता की जांच करना।

क्रान्तिक अनुपात ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया -

$$C.R. = \frac{M_1 - M_2 - O}{\sigma d}$$

C.R. = क्रान्तिक अनुपात

M_1 = प्रथम समूह का मध्यमान

M_2 = द्वितीय समूह का मध्यमान

fd = अन्तर की मानक त्रुटि

तथा

$$fd = \sqrt{SEm_1^2 + SE\, m_2^2}$$

तथा

$$SEm = \frac{S.D.}{\sqrt{N}}$$

जहां S.D. = मानक विचलन

N = समूह में सदस्यों की संख्या

4.1 प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण -

इस अध्याय में आंकड़ो का सांख्यकीय विश्लेषण कर परिकल्पनाओं का सत्यापन किया गया है, तथा विश्लेषण से प्राप्त परिणामों की व्याख्या की गयी है। सर्वप्रथम शोधकर्ता द्वारा शोध समस्या के उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए न्यादर्श में चयनित सभी 550 शिक्षकों, जिनमें 340 पुरुष शिक्षक तथा 210 महिला शिक्षक सम्मिलित हैं, के पास व्यक्तिगत सम्पर्क के द्वारा शोध में प्रयुक्त व्यावसायिक सन्तुष्टि परीक्षण तथा शिक्षण-अंभिक्षमता परीक्षण का प्रशासन कर आंकड़े एकत्र किये गये। शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित आंकड़े, एक स्वनिर्मित प्रपत्र पर उनकी हाईस्कूल से लेकर के बी.एड., एम.एड. तक के परीक्षाफलों के श्रेणियों की जानकारी प्राप्त कर एकत्र किये गये। आंकड़े एकत्र करते समय उन सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं को परिणामों की गोपनीयता का विश्वास दिलाया गया है।

प्रस्तुत शोध में जो उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं तथा जो परिकल्पनायें निरुपित की गयी हैं, उन सभी की पूर्ति के लिए आवश्यक सारणियों का निर्माण कर विभिन्न सांख्यकीय विधियों द्वारा आंकड़ो का विश्लेषण किया गया है। सारणियों के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों को भी विश्लेषण के साथ ही स्पष्ट कर दिया गया है, जिनका विवरण निम्नवत् है।

सारणी - 4.1

शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक-उपलब्धि, व्यावसायिक-सन्तुष्टि तथा शिक्षण-अभिक्षमता

चर	संख्या	माध्य	मानक विचलन
शैक्षिक उपलब्धि	550	52.933	7.889
व्यावसायिक-सन्तुष्टि	550	125.980	17.444
शिक्षण-अभिक्षमता	550	76.882	47.594

उपर्युक्त सारिणी से स्पष्ट है कि शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 52.993 है, जो कि लिये गये आधार से अधिकतम शैक्षिक-उपलब्धि 70 एवं न्यूनतम शैक्षिक उपलब्धि 30 के सन्दर्भ में औसत दर्जे से भी अधिक है, शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का माध्य 125.980 है जो कि टेस्ट मैनुअल के आधार पर पूर्ण सन्तुष्टि को दर्शाता है न्यादर्श में सम्मिलित शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 76.882 है जो कि टेस्ट मैनुअल के आधार पर निम्न श्रेणी के अन्तर्गत आती है।

शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की शैक्षिक–उपलब्धि, व्यवसायिक–सन्तुष्टि तथा शिक्षण–अभिक्षमता
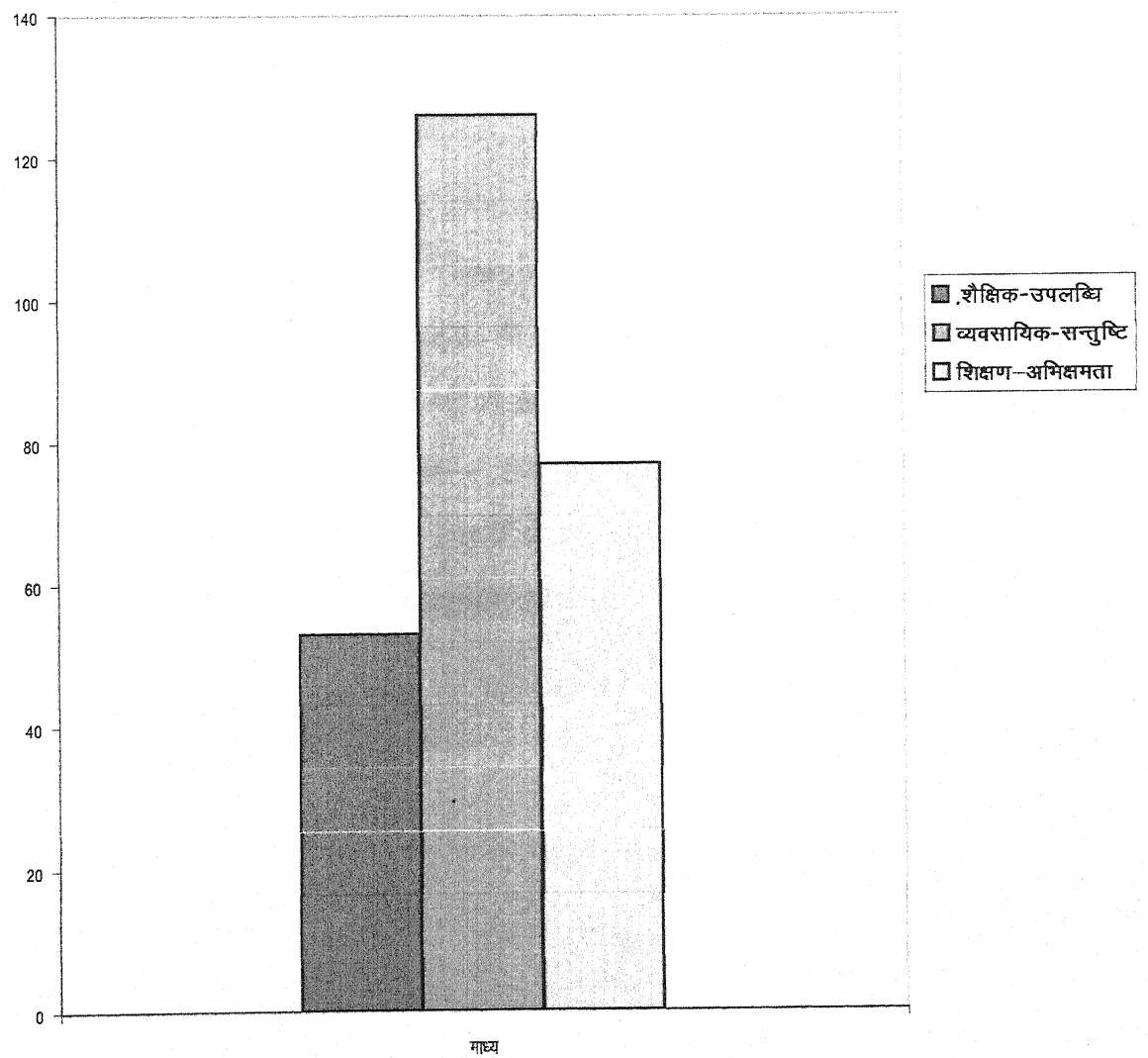
ग्राफ 4.1

सारणी - 4.2

लिंग के आधार पर वर्गीकरण

शिक्षक-शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि शिक्षण-अभिक्षमता तथा शैक्षिक-उपलब्धि

शिक्षक शिक्षक/शिक्षिकाएँ	संख्या	व्यावसायिक-सन्तुष्टि		शिक्षण-अभिक्षमता		शैक्षिक-उपलब्धि	
		समान्तर माध्य	मानक विचलन	समान्तर माध्य	मानक विचलन	समान्तर माध्य	मानक विचलन
1. सम्पूर्ण माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	340	126.612	18.272	76.212	47.151	52.082	7.594
2. सम्पूर्ण माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाएं	210	124.957	16.002	77.967	48.396	54.310	8.177

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 126.612 तथा मानक विचलन 18.272 है तथा शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 124.957 तथा मानक विचलन 16.002 है। शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 76.212 तथा मानक विचलन 47.151 है तथा शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्यम 77.967 तथा मानक विचलन 48.396 हैं शैक्षिक-उपलब्धि सम्बन्धी आंकड़ो को सारणी से देखने में पता चलता है कि शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि माध्य 52.082 तथा मानक विचलन 7.594 एवं शिक्षिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का माध्य 54.310 तथा मानक विचलन 8.177 है। सारणी से स्पष्ट है कि शिक्षक की व्यावसायिक-सन्तुष्टि शिक्षिकाओं से अधिक है जबकि शिक्षण अभिक्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धि शिक्षकों की अपेक्षा शिक्षिकाओं की अधिक है।

लिंग के आधार पर वर्गीकरण
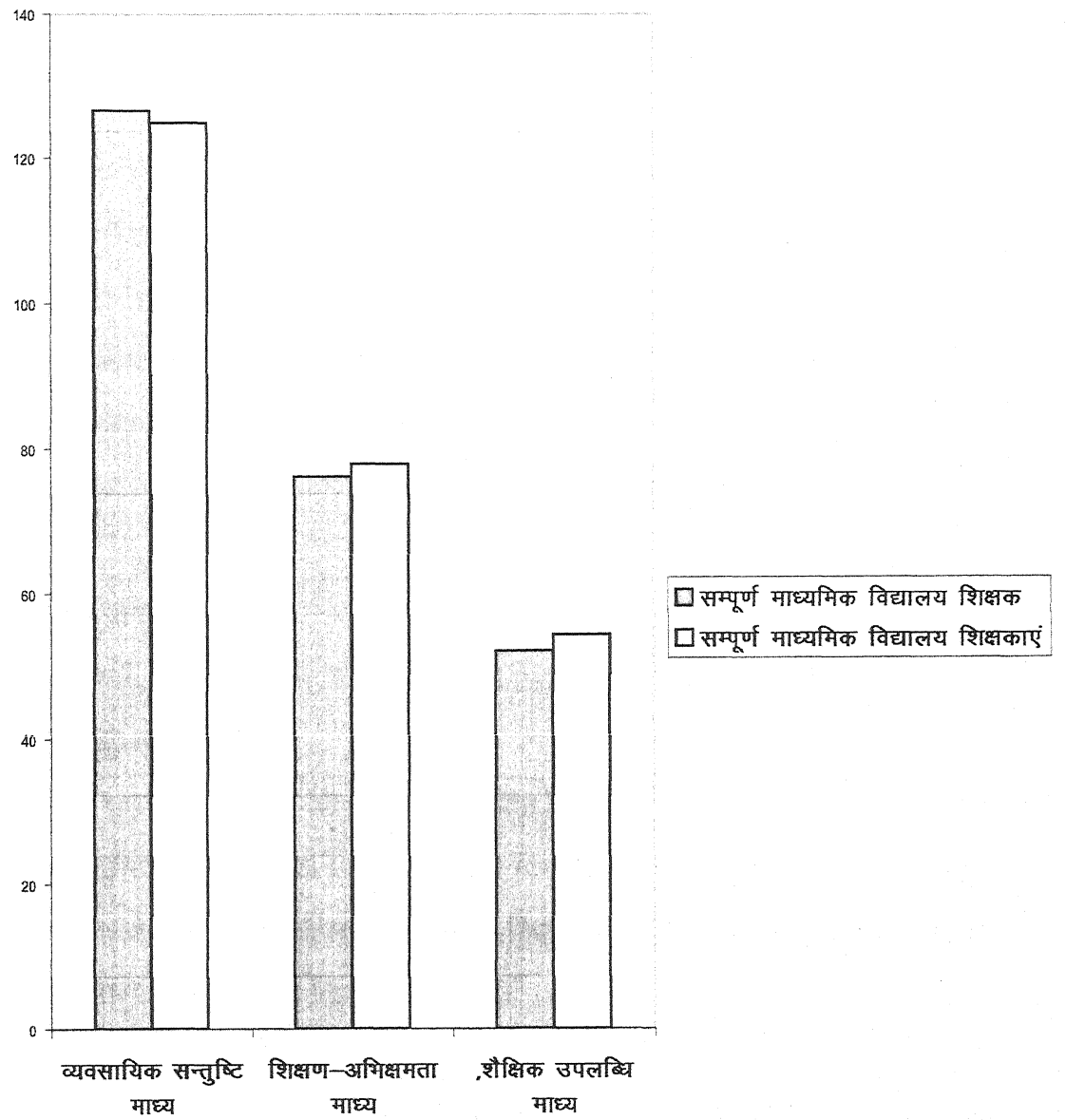
ग्राफ संख्या– 4.2

सारणी - 4.3

विद्यालय के स्वरूप के आधार पर वर्गीकरण शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यवसायिक-सन्तुष्टि शिक्षण-अभिक्षमता तथा शैक्षिक-उपलब्धि

शिक्षक विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों के शिक्षक	संख्या	व्यावसायिक-सन्तुष्टि		शिक्षण-अभिक्षमता		शैक्षिक-उपलब्धि	
		समान्तर माध्य	मानक विचलन	समान्तर माध्य	मानक विचलन	समान्तर माध्य	मानक विचलन
1. प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय शिक्षक (पुरुष एवं महिला)	160	125.194	17.368	78.994	50.977	52.656	7.789
2. अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालय शिक्षक (पुरुष एवं महिला)	180	127.911	16.397	78.094	49.245	51.417	8.003
3. सरकारी माध्यमिक विद्यालय शिक्षक (पुरुष एवं महिला)	210	124.924	18.297	74.233	43.411	54.443	7.626

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 125.194 तथा मानक विचलन 17.368 है, अर्द्ध सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि 127.911 तथा मानक विचलन 16.397 है तथा सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि 124.924 तथा मानक विचलन 18.297 है।

अतः स्पष्ट है कि अर्द्ध सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि अन्य विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है तथा इन्ही विद्यालयों के शिक्षकों का विचलन भी सबसे कम है।

सारणी से यह भी स्पष्ट है कि प्राइवेट माधयिमक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 78.994 तथा मानक विचलन 50.997 है, अर्द्ध सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 78.094 तथा मानक विचलन 49.245 है, सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 74.233 तथा मानक विचलन 43.411 है।

शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की व्यवसायिक–सन्तुष्टि, शिक्षण–अभिक्षमता तथा शैक्षिक–उपलब्धि का माध्य
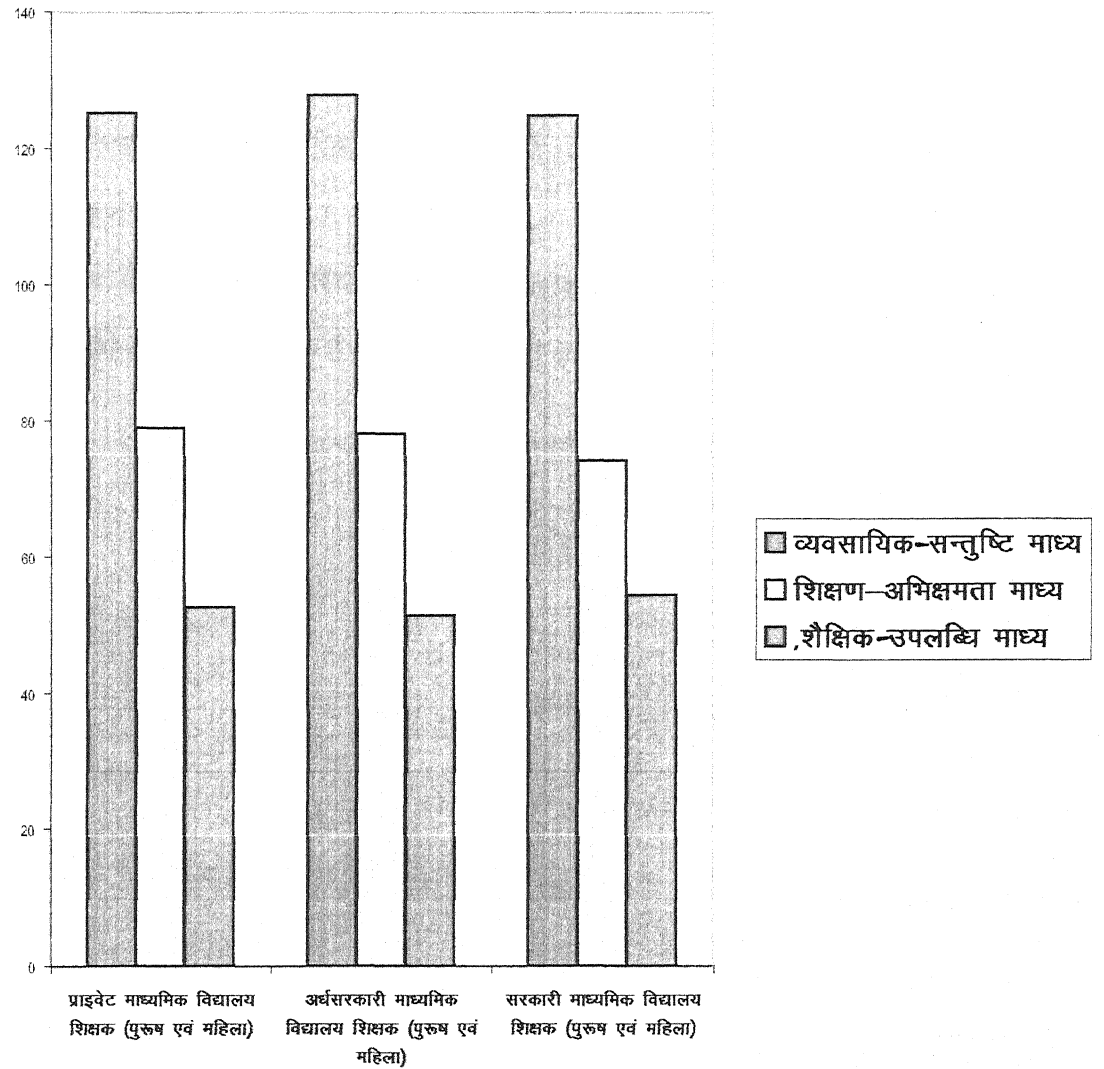
ग्राफ संख्या– 4.3

अतः स्पष्ट है कि प्राईवेट तथा अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता लगभग बराबर है तथा सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता इससे कम है। हालांकि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का विचलन सबसे कम है।

उपर्युक्त सारणी से यह भी स्पष्ट है कि प्राईवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 52.656 तथा मानक विचलन 7.789 है, अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 51.417 तथा मानक विचलन 8.003 है तथा सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक उपलब्धि का माध्य 54.443 तथा मानक विचलन 7.626 है।

अतः स्पष्ट है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि अन्य विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा सबसे अधिक है तथा विचलन भी इन्हीं का सबसे कम है।

सारणी - 4.4

शैक्षिक उपलब्धि के स्तर के आधार पर वर्गीकरण

शिक्षक-शिक्षिकाओं की व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा शिक्षण-अभिक्षमता

1. सम्पूर्ण शिक्षक (पुरुष एवं महिला)	1. कम शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षक एवं शिक्षिका	148	116.534	14.574	78.939	48.047
	2. सामान्य शैक्षिक उपलब्धि वाले शिक्षक एवं शिक्षिक	254	131.878	17.849	77.972	50.090
	3. अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षक एवं शिक्षिका	148	125.304	15.011	72.953	42.558
2. सम्पूर्ण पुरुष शिक्षक	1. कम शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षक	92	124.913	17.089	77.402	46.832
	2. सामान्य शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षक	156	127.417	17.817	80.071	50.105
	3. अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षक	92	126.946	20.173	68.478	41.538
3. सम्पूर्ण महिला शिक्षक	1.कम शैक्षिक-उपलब्धि वाली शिक्षिकाएं	57	124.947	18.525	82.544	49.610
	2. सामान्य शैक्षिक-उपलब्धि वाली शिक्षिकाएं	96	128.375	14.442	76.427	52.028
	3. अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाली शिक्षिकाएं	57	119.211	14.320	75.982	40.724

उपर्युक्त साराणी से स्पष्ट है कि कम शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि माध्य 116.534 तथा मानक विचलन 14.574 है, सामान्य शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक सन्तुष्टि का माध्य 131.878 तथा मानक विचलन 17.849 है, अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 125.304 तथा मानक विचलन 15.011 है।

अतः स्पष्ट है कि सामान्य शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि निम्न तथा उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले शिक्षक-शिक्षिकाओं से अधिक है कम शैक्षिक-उपलब्धि

शैक्षिक–उपलब्धि के स्तर के आधार पर वर्गीकरण
शिक्षक–शिक्षिकाओं की व्यावसायिक–संतुष्टि तथा शिक्षण–अभिक्षमता
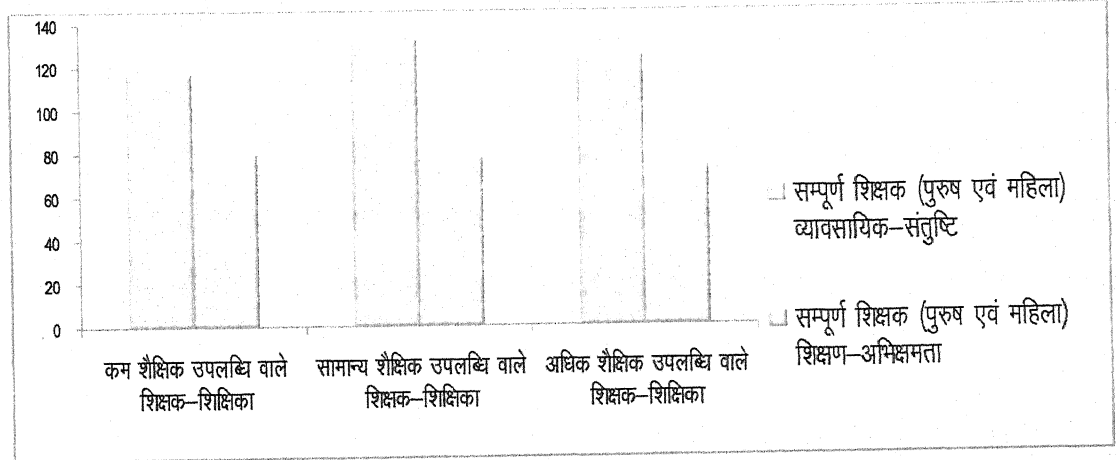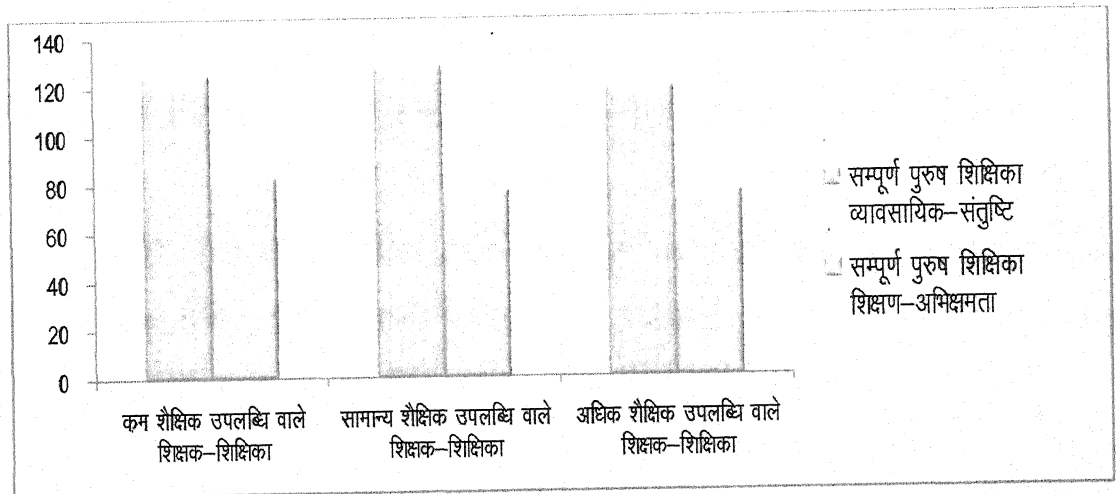
ग्राफ–संख्या 4.4.1

ग्राफ–संख्या 4.4.2
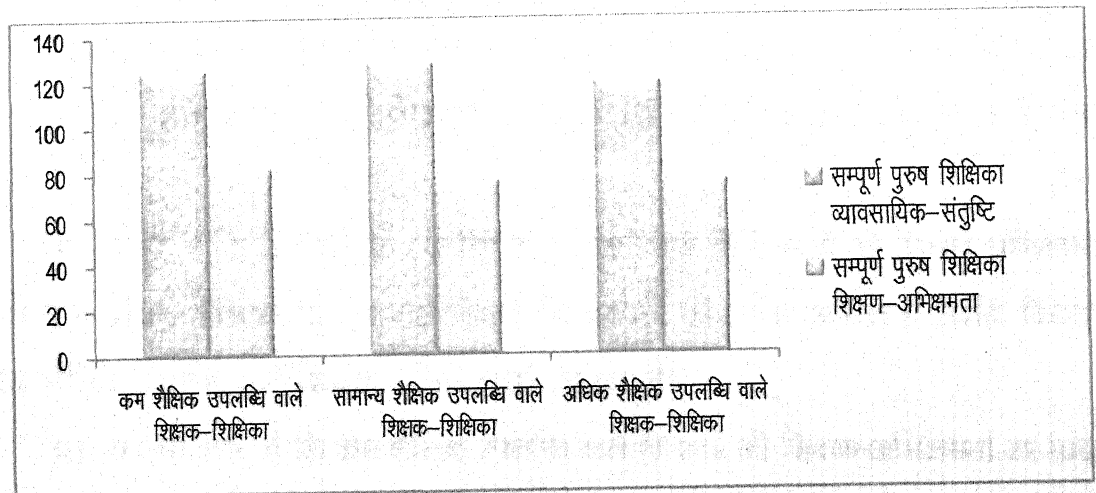
ग्राफ–संख्या 4.4.3

वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का विचलन सबसे कम है।

सारणी से यह भी स्पष्ट है कि कम शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 124.913 तथा मानक विचलन 17.089 है सामान्य शैक्षिक उपलब्धि वाले शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 127.417 तथा मानक विचलन 17.817 है तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 126.946 तथा मानक विचलन 20.173 है।

अतः स्पष्ट है कि सामान्य शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि अपेक्षाकृत निम्न तथा उच्च शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षकों से अधिक है। जबकि विचलन कम शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षकों का कम है।

सारणी से यह भी स्पष्ट है कि कम शैक्षिक-उपलब्धि वाली शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 124.947 तथा मानक विचलन 18.525 है, सामान्य शैक्षिक-उपलब्धि वाली शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 128.375 तथा मानक विचलन 14.442 है तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाली शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 119.211 तथा मानक विचलन 14.320 है।

अतः स्पष्ट है कि सामान्य शैक्षिक-उपलब्धि वाली शिक्षिकाओ की व्यावसायिक-सन्तुष्टि अपेक्षाकृत निम्न तथा उच्च शैक्षिक-उपलब्धि वाली शिक्षिकाओं से अधिक है। जबकि विचलन अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाली शिक्षिकाओं का कम है।

सारणी से यह भी स्पष्ट है कि कम शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 78.939 तथा मानक विचलन 48.047 है, सामान्य शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 77.972 तथा मानक विचलन 50.090 है तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता 72.953 तथा मानक विचलन 42.558 है।

अतः स्पष्ट है कि कम शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता औसत तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षक-शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक है जबकिं विचलन अधिक शैक्षिक उपलब्धि वाले शिक्षक अशिक्षिकाओं का कम है।

यहाँ यह भी स्पष्ट है कि कम शैक्षिक उपलब्धि वाले शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 77.402 तथा मानक विचलन 46.832 है, सामान्य शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 80.071 तथा मानक विचलन 50.105 है तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षकों को शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 68.478 तथा मानक विचलन 41.538 है।

अतः स्पष्ट है कि सामान्य शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता अपेक्षाकृत निम्न तथा उच्च शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षकों से अधिक है जबकि मानक विचलन अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षकों का कम है।

सारणी से यह भी स्पष्ट है कि कम शैक्षिक उपलब्धि वाली शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 82.544 तथा मानक विचलन 49.610 है, सामान्य शैक्षिक-उपलब्धि वाली शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 76.427 तथा मानक विचलन 52.028 है तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाली शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 75.982 तथा मानक विचलन 40.724 है।

अतः स्पष्ट है कि अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाली शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता भी कम तथा औसत शैक्षिक-उपलब्धि वाली शिक्षिकाओं की तुलना में अधिक है तथा विचलन भी अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाली शिक्षिकाओं का ही कम है।

सारणी - 4.5

शिक्षण-अभिक्षमता के स्तर के आधार पर वर्गीकरण
शिक्षक-शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि तथा शैक्षिक-उपलब्धि

शिक्षक वर्ग			व्यावसायिक-सन्तुष्टि		शैक्षिक-उपलब्धि	
		संख्या	समान्तर माध्य	मानक विचलन	समान्तर माध्य	मानक विचलन
1. सम्पूर्ण शिक्षक (पुरुष एवं महिला)	1. कम शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षक एवं शिक्षिका	148	126.885	15.999	53.108	7.768
	2. सामान्य शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षक एवं शिक्षिक	254	125.508	18.343	53.307	8.057
	3. अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षक एवं शिक्षिका	148	125.885	17.327	52.115	7.709
2. सम्पूर्ण पुरुष शिक्षक	1. कम शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षक	92	126.283	18.145	52.935	7.192
	2. सामान्य शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षक	156	125.872	17.252	51.878	7.641
	3. अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षक	92	128.196	20.100	51.576	7.912
3. सम्पूर्ण महिला शिक्षक	1.कम शिक्षण-अभिक्षमता वाली शिक्षिकाएं	57	125.018	16.221	55.439	8.307
	2. सामान्य शिक्षण-अभिक्षमता वाली शिक्षिकाएं	96	124.260	16.493	54.583	7.836
	3. अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाली शिक्षिकाऐं	57	126.070	15.134	52.719	8.508

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि कम शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 126.885 तथा मानक विचलन 15.999 है, सामान्य शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 125.508 तथा मानक विचलन 18.343 है तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का

शिक्षण -अभिक्षमता के स्तर के आधार पर वर्गीकरण
शिक्षक–शिक्षिकाओं की व्यावसायिक–संतुष्टि तथा शैक्षिक–उपलब्धि
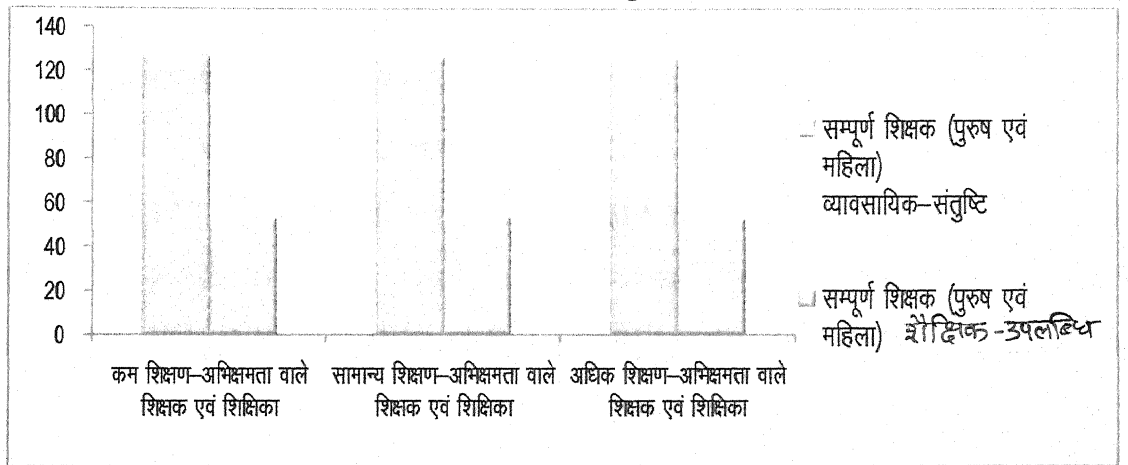
ग्राफ–संख्या 4.5.1
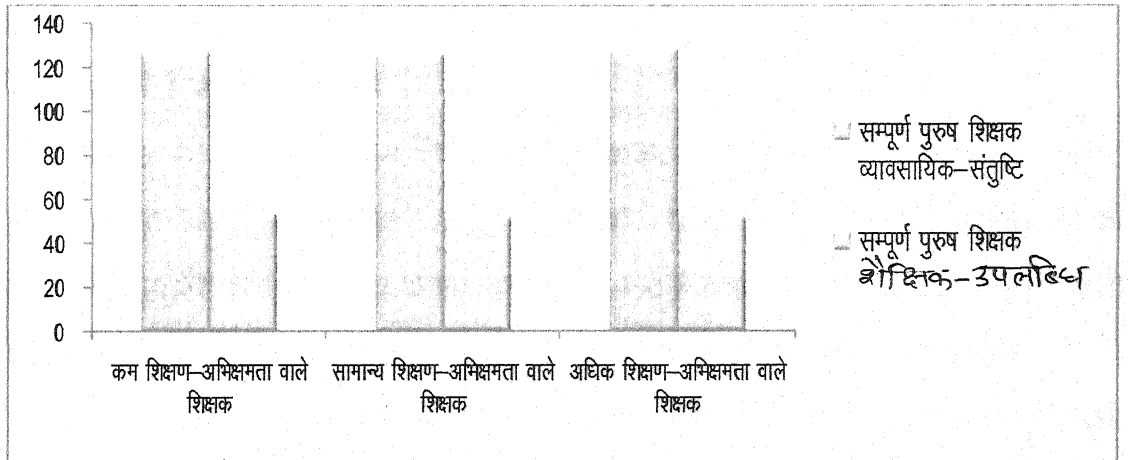
ग्राफ–संख्या 4.5.2
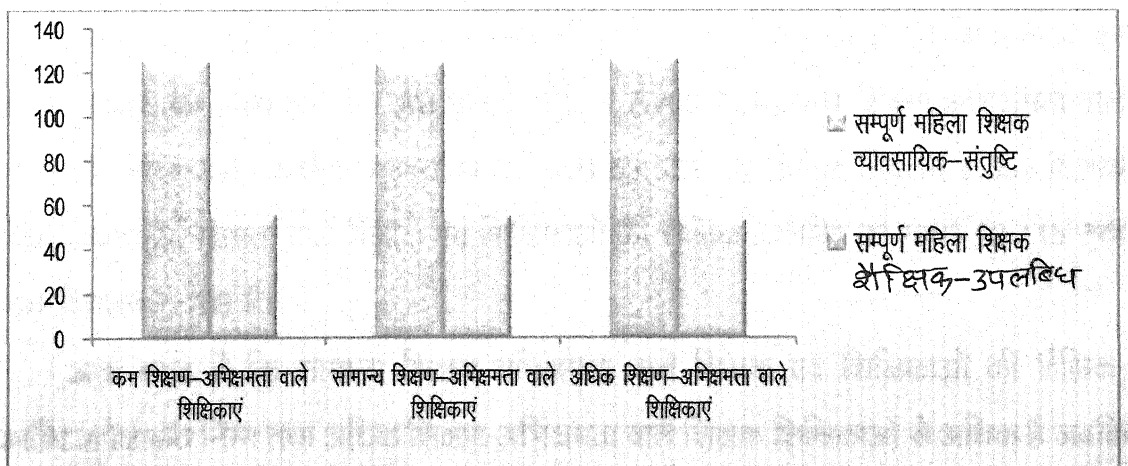
ग्राफ–संख्या 4.5.3

माध्य 125.885 तथा मानक विचलन 17.327 है।

अतः स्पष्ट है कि कम शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि औसत तथा उच्च शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक है। साथ ही इनका विचलन भी सबसे कम है।

सारणी से यह भी स्पष्ट है कि कम शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 126.283 तथा मानक विचलन 18.145 है, सामान्य शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 125.872 तथा मानक विचलन 17.252 है तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 128.196 तथा मानक विचलन 20.100 है।

अतः स्पष्ट है कि अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि भी निम्न तथा औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है जबकि विचलन सामान्य शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षकों का कम है।

यहाँ यह भी स्पष्ट है कि कम शिक्षण-अभिक्षमता वाली शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 125.018 तथा मानक विचलन 16.221 है, सामान्य शिक्षण-अभिक्षमता वाली शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि 124.260 तथा मानक विचलन 16.493 है तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाली शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 126.070 तथा मानक विचलन 15.134 है।

अतः स्पष्ट है कि अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाली शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि कम तथा औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाली शिक्षिकाओं से अधिक है तथा विचलन भी इन्हीं का कम है।

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि कम शिक्षण अभिक्षमता वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 53.108 तथा मानक विचलन 7.768 है, सामान्य शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 53.307 तथा मानक विचलन 8.057 है तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 52.115 तथा मानक विचलन 7.709 है।

अतः स्पष्ट है कि सामान्य शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि अपेक्षाकृत निम्न तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षक शिक्षिकाओं से अधिक है जबकि विचलन अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का कम है।

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि कम शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 52.935 तथा मानक विचलन 7.192 है, सामान्य शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षकों की शैक्षिक-

उपलब्धि का माध्य 51.878 तथा मानक विचलन 7.641 है तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 51.576 तथा मानक विचलन 7.912 है।

अतः स्पष्ट है कि कम शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि औसत तथा अधिक शिक्षण अभिक्षमता वाले शिक्षकों की अपेक्षाकृत अधिक है तथा विचलन भी इन्हीं का कम है।

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि कम शिक्षण-अभिक्षमता वाली शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 55.439 तथा मानक विचलन 8.307 है सामान्य शिक्षण-अभिक्षमता वाली शिक्षिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का माध्य 54.583 तथा मानक विचलन 7.836 है तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाली शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 52.719 तथा मानक विचलन 8.508 है।

अतः स्पष्ट है कि कम शिक्षण-अभिक्षमता वाली शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि अपेक्षाकृत औसत तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाली शिक्षिकाओं से अधिक है जबकि विचलन सामान्य शिक्षण-अभिक्षमता वाली शिक्षिकाओं का कम है।

सारणी - 4.6

व्यावसायिक-सन्तुष्टि के स्तर के आधार पर वर्गीकरण
शिक्षक-शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता तथा शैक्षिक-उपलब्धि

शिक्षक वर्ग		संख्या	शिक्षण अभिक्षमता		शैक्षिक-उपलब्धि	
			समान्तर माध्य	मानक विचलन	समान्तर माध्य	मानक विचलन
1. सम्पूर्ण शिक्षक (पुरुष एवं महिला)	1. कम व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाऐं	148	75.426	43.030	51.743	9.249
	2. सामान्य व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाऐं	254	78.024	49.587	53.209	8.078
	3. अधिक व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाऐं	148	76.378	48.699	53.649	5.702
2. सम्पूर्ण पुरुष शिक्षक	1. कम व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षक	92	76.685	46.317	42.533	4.710
	2. सामान्य व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षक	156	76.276	47.910	52.532	2.508
	3. अधिक व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षक	92	75.630	47.188	60.870	3.365
3. सम्पूर्ण शिक्षकाऐं	1.कम व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाली शिक्षिकाऐं	57	72.930	41.233	53.772	9.368
	2. सामान्य व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाली शिक्षिकाऐं	96	79.646	50.352	55.104	8.614
	3. अधिक व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाली शिक्षिकाऐं	57	80.175	52.005	53.509	5.822

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 75.426 तथा मानक विचलन 43.030 है, सामान्य व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 78.024 तथा मानक विचलन 49.587 है तथा अधिक व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 76.378 तथा मानक विचलन 48.699 है।

व्यावसायिक–संतुष्टि के स्तर के आधार पर वर्गीकरण
शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण–अभिक्षमता तथा शैक्षिक–उपलब्धि
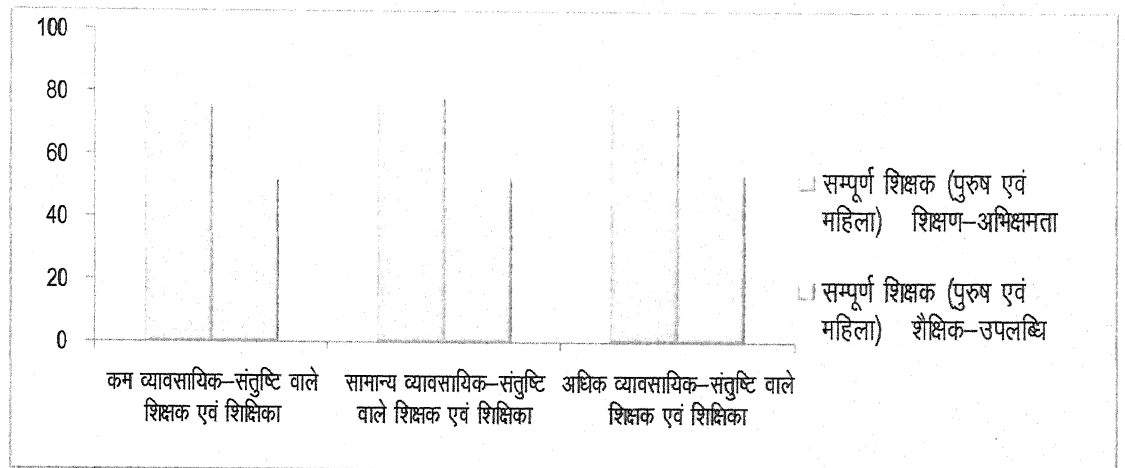
ग्राफ–संख्या 4.6.1
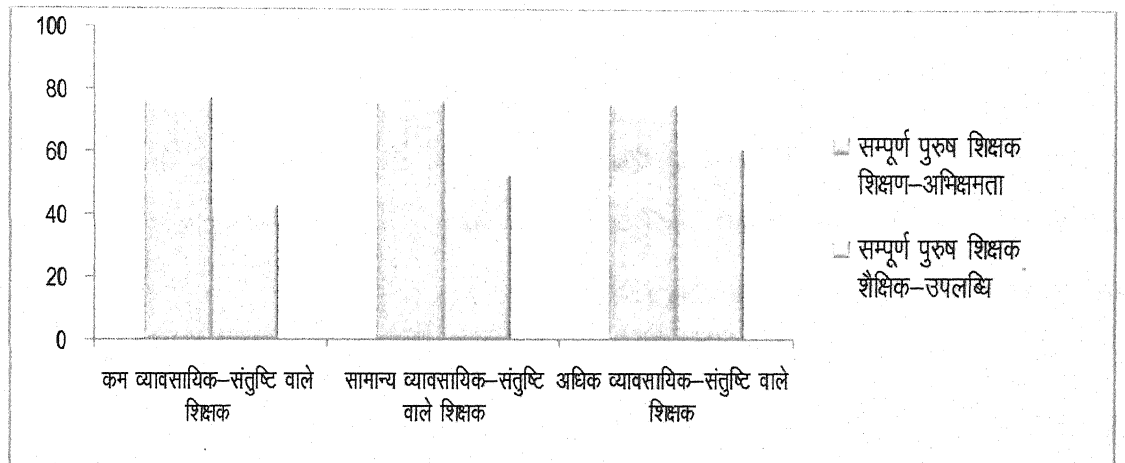
ग्राफ–संख्या 4.6.2
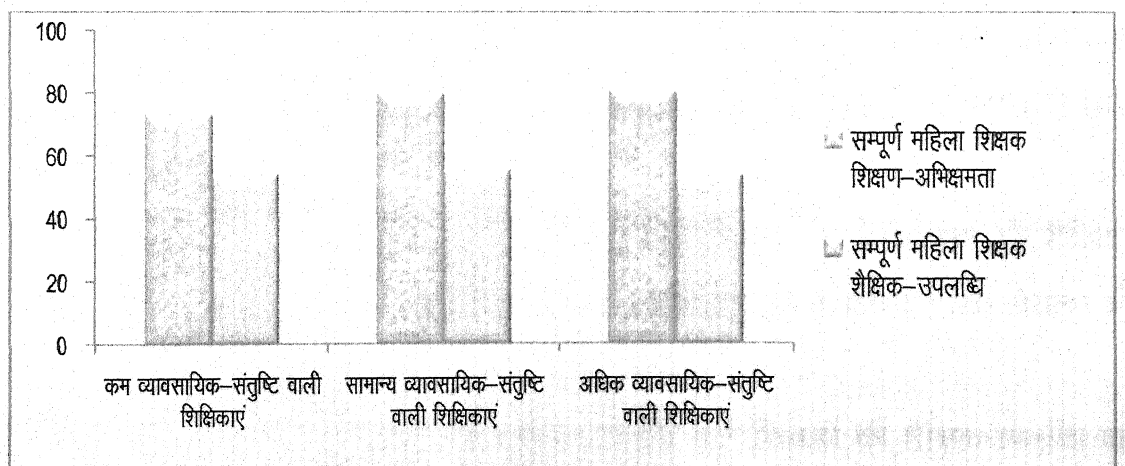
ग्राफ–संख्या 4.6.3

अतः स्पष्ट है कि सामान्य व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के शिक्षण-अभिक्षमता निम्न तथा अधिक शिक्षण अभिक्षमता वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं से अधिक है जबकि विचलन कम व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का कम है।

यहाँ यह भी स्पष्ट है कि कम व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 76.685 है तथा मानक विचलन 46.317 है, सामान्य व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 76.276 तथा मानक विचलन 47.910 है तथा अधिक व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 75.630 तथा मानक विचलन 47.188 है।

अतः स्पष्ट है कि कम व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता, सामान्य तथा अधिक व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षकों से अधिक है तथा विचलन भी इन्हीं का कम है।

यहाँ यह भी स्पष्ट है कि कम व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाली शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 72.930 तथा मानक विचलन 41.233 है, सामान्य व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाली शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 79.646 तथा मानक विचलन 50.352 है, तथा अधिक व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाली शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 80.175 तथा मानक विचलन 52.005 है।

अतः स्पष्ट है कि अधिक व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाली शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता निम्न तथा सामान्य शिक्षण व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाली शिक्षिकाओं से अधिक है जबकि विचलन कम व्यावायिक-सन्तुष्टि वाली शिक्षिकाओं का कम है।

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि कम व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 51.743 तथा मानक विचलन 9.249 है, सामान्य व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 53.209 तथा मानक विचलन 8.078 है तथा अधिक व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 53.649 तथा मानक विचलन 5.702 है।

अतः स्पष्ट है कि अधिक व्यावसायिक सन्तुष्टि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि निम्न एवं सामान्य शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं से अधिक है तथा विचलन भी इन्हीं का कम है।

यहाँ यह भी स्पष्ट है कि कम व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 42.533 तथा मानक विचलन 4.710 है, सामान्य व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 52.532 तथा मानक विचलन 2.508 है, अधिक व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 60.870 तथा मानक विचलन 3.365 है।

अतः स्पष्ट है कि अधिक व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि, निम्न एवं सामान्य शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षकों से अधिक है जबकि विचलन सामान्य व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले शिक्षकों का कम है।

यहाँ यह भी स्पष्ट है कि कम व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाली शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 53.772 है तथा मानक विचलन 9.368 है, सामान्य व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाली शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 55.104 तथा मानक विचलन 8.614 है एवं अधिक व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाली शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 53.509 तथा मानक विचलन 5.822 है।

अतः स्पष्ट है कि सामान्य व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाली शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि, निम्न एवं अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाली शिक्षिकाओं से अधिक है जबकि विचलन अधिक व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाली शिक्षिकाओं का कम है।

4.2 परिकल्पनाओं का सत्यापन एवं परिणामों की व्याख्या-

प्रस्तुत शोध में कु आठ परिकल्पनायें निरुपित की गई हैं। कुछ परिकल्पनाओं के अन्तर्गत उपकल्पनाओं का भी निरुपण किया गया है। कुल मिलाकर 30 परिकल्पनाओं का परीक्षण सम्बन्धित सारणी के निर्माण एवं विश्लेषण द्वारा निम्नवत आगे प्रस्तुत है -

(1) शोध की प्रथम परिकल्पना निम्न है -

"माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी - 4.7

"माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षण-शिक्षिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	कुल माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	340	52.082	7.59	3.24
2.	कुल माध्यमिक विद्यालय शिक्षिका	210	54.310	8.18	

d, f (550-2) = 548 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.96

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त CR का मान 3.24 है जबकि d.f. 546 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.96 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान टी-तालिका में दिये गये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. के मानों से अधिक है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं की शैक्षिक– उपलब्धि
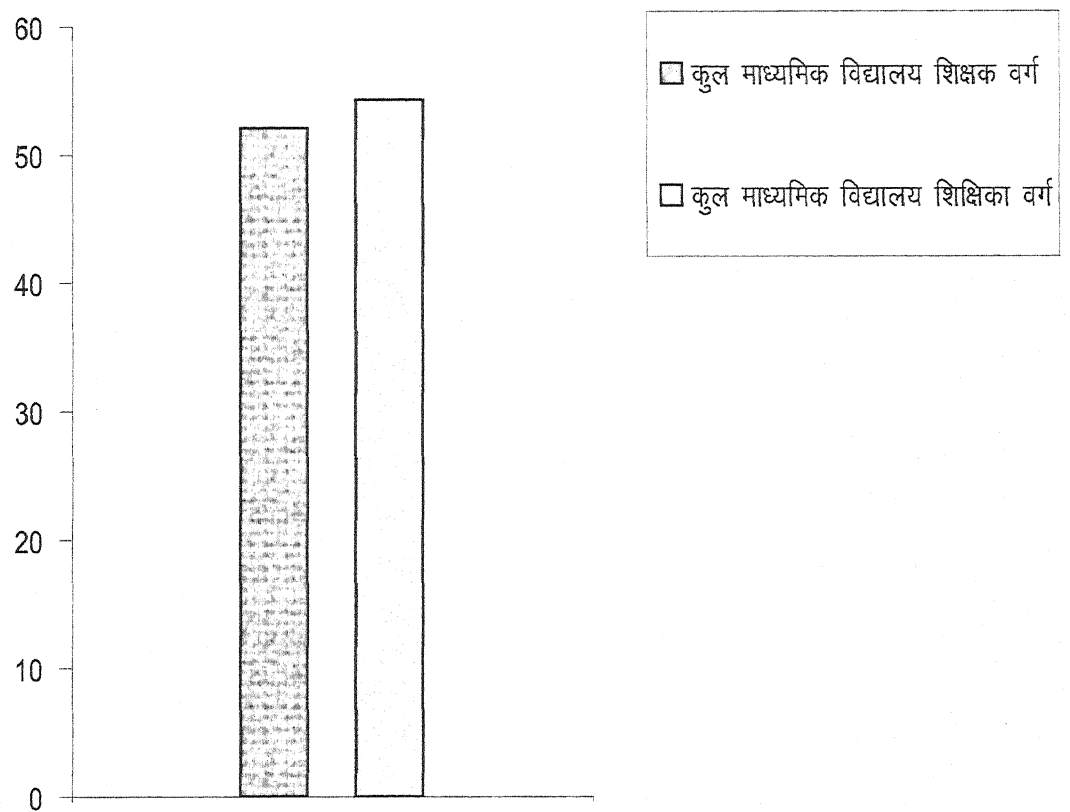
ग्राफ 4.7

परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

(2) शोध की दूसरी परिकल्पना निम्न है -

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता में कोई अन्तर नहीं है।

सारणी - 4.8

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	कुल माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	340	76.212	47.151	0.42
2.	कुल माध्यमिक विद्यालय शिक्षिका	210	77.967	48.396	

d, f (550-2) = 548 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.96

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 0.42 है जबकि d.f. 548 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.96 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता में कोई अन्तर नहीं है।

माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण—अभिक्षमता
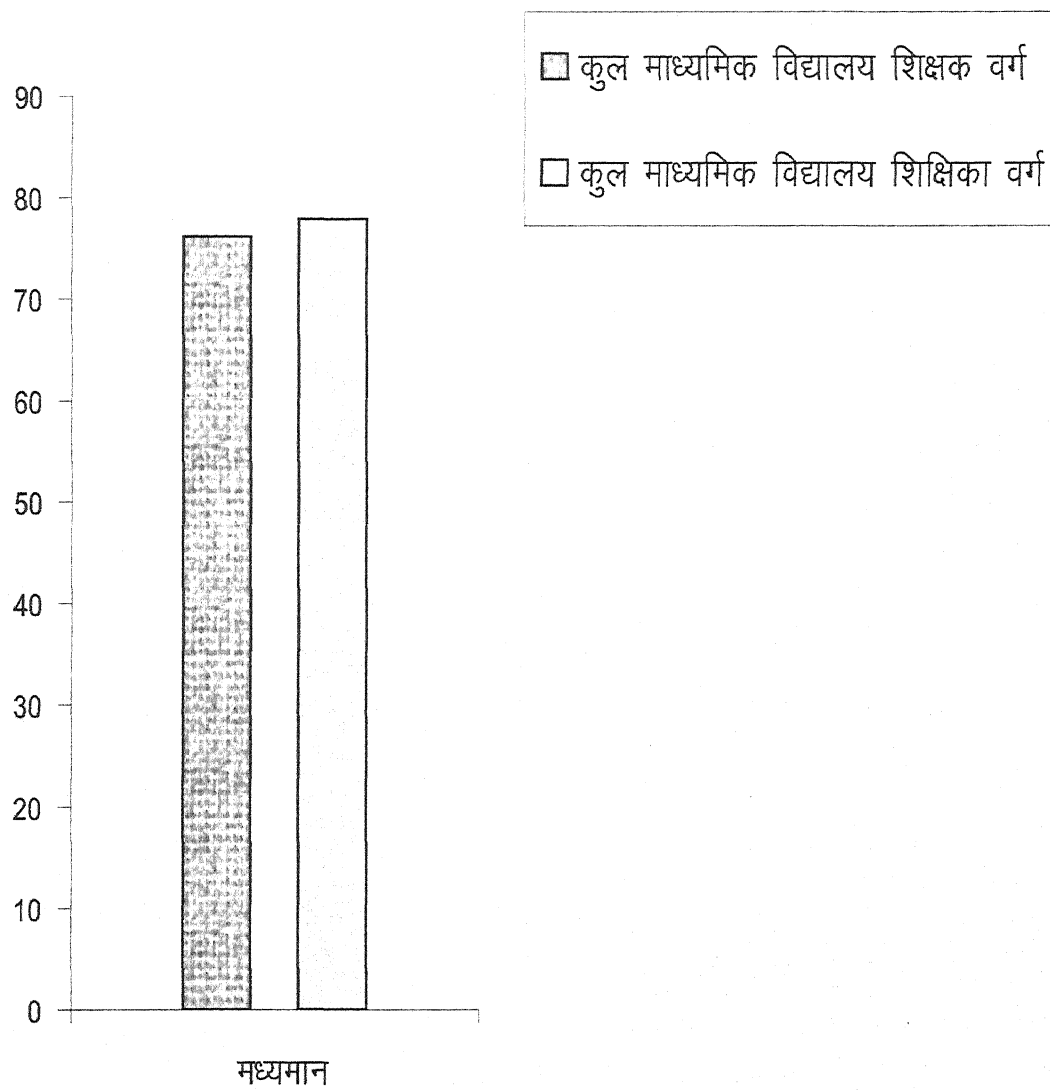
ग्राफ— 4.8

(3) शोध की तीसरी परिकल्पना निम्नलिखित है -

"माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक सन्तुष्टि में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी - 4.9

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	कुल माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	340	126.61	18.27	1.08
2.	कुल माध्यमिक विद्यालय शिक्षिका	210	124.96	16.00	

d, f (550-2) = 548 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.96

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी में स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 1.08 है जबकि d.f 548 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.96 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.59 होना चाहिये। अतः यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ताकी निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है, और कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि में कोई अन्तर नहीं है।

(4) शोध की चौथी परिकल्पना निम्नलिखित है -

सरकारी, अर्द्धसरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक-उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है।" इस परिकल्पना का परीक्षण निम्न उप-परिकल्पनाओं के परीक्षण के आधार पर किया जा रहा है -

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक–सन्तुष्टि

☐ कुल माध्यमिक विद्यालय शिक्षक वर्ग

☐ कुल माध्यमिक विद्यालय शिक्षिका वर्ग
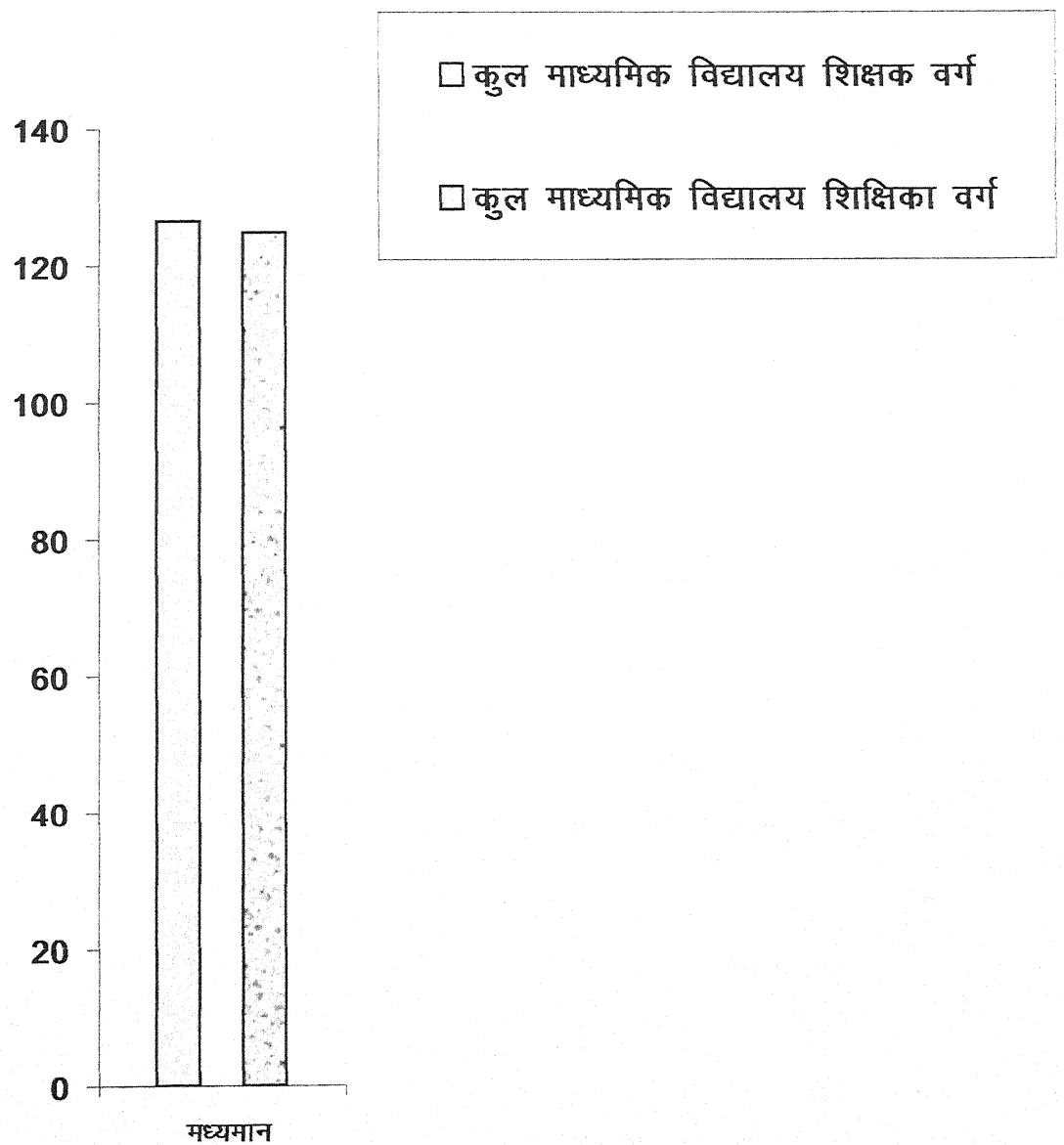
ग्राफ– 4.9

(अ) "सरकारी तथा अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक-उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है।

सारणी - 4.10

सरकारी तथा अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक-उपलब्धि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	सरकारी माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	210	54.44	7.63	3:82
2.	अर्द्ध सरकारी माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	180	51.42	8.00	

d, f (390-2) = 388 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 3.82 है जबकि d.f 388 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R. के मानों से अधिक है, अतः यहाँ शोधकर्ताकी निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Reject) की जाती है, और कहा जा सकता है कि सरकारी एवं अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की औसत शैक्षिक उपलब्धि अधिक है।

(ब) सरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक-उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है।

सारणी - 4.11

सरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक-उपलब्धि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	सरकारी माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	210	54.44	7.63	
2.	प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	160	52.66	7.79	2.21

d, f (370-2) = 368 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी में स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 2.21 है जबकि d.f 368 पर

सरकारी तथा अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की शैक्षिक–उपलब्धि
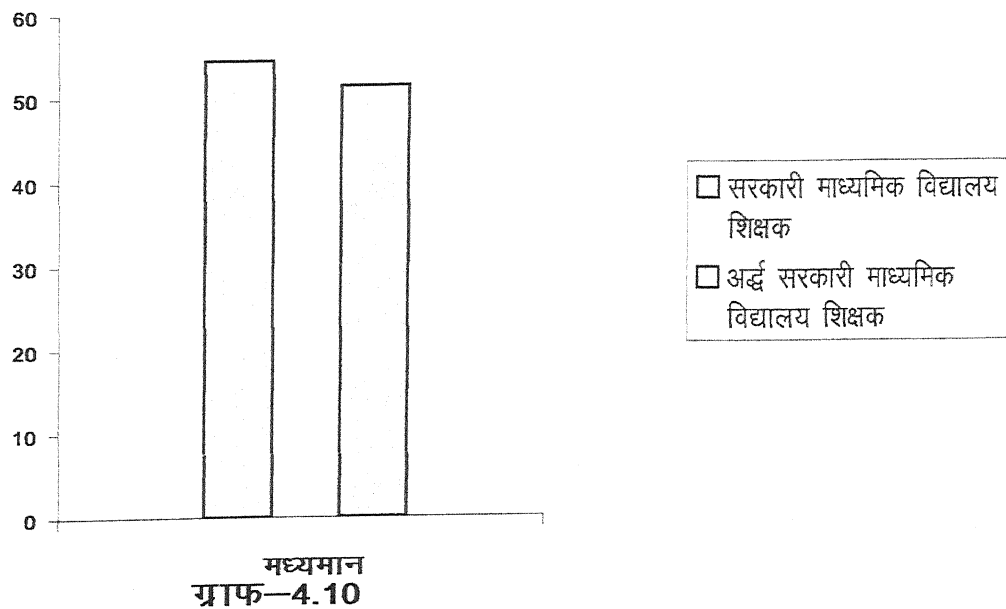
ग्राफ–4.10

सरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की शैक्षिक–उपलब्धि

ग्राफ–4.11
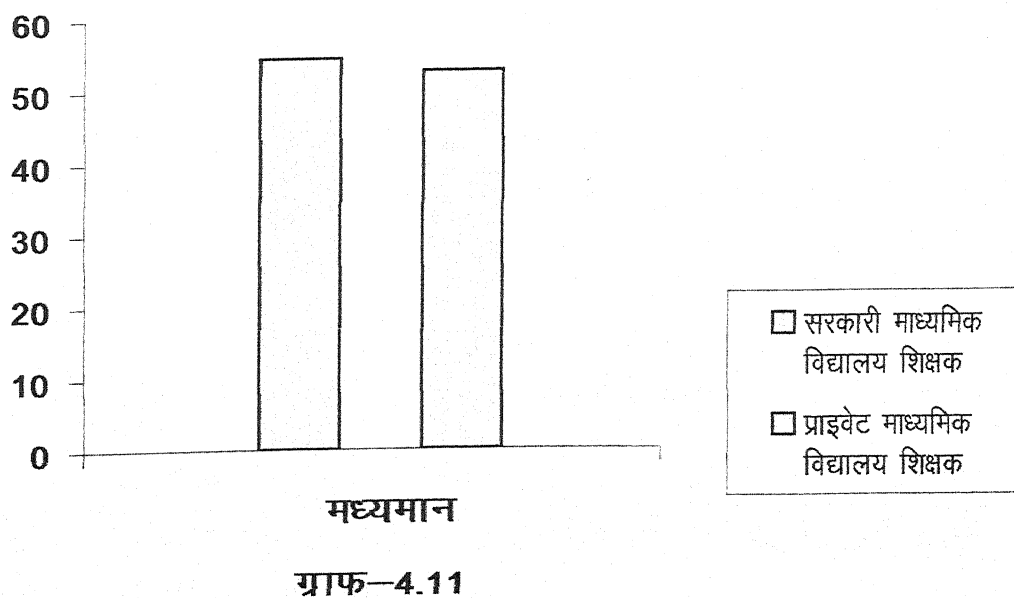
टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर C.R. के मान से अधिक है, लेकिन 1 प्रतिशत के स्तर पर C.R. के मान से कम है। अतः यहाँ शोधकर्ताकी निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है, और कहा जा सकता है कि सरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

(स) अर्द्धसरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक-उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है।

सारणी - 4.12

अर्द्ध सरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक-उपलब्धि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	अर्द्ध सरकारी माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	180	51.42	8.00	1.44
2.	प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	160	52.66	7.79	

d, f (340-2) = 338 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 1.44 है जबकि d.f 338 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesics) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कहा जा सकता है कि सरकारी तथा अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक-उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है।

(5) शोध की पांचवी परिकल्पना निम्नलिखित है -

"सरकारी, अर्द्धसरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता में कोई अन्तर नहीं है।" इस परिकल्पना का परीक्षण निम्न उप परिकल्पनाओं के परीक्षण के आधार पर किया जा रहा है।

अर्द्ध सरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की शैक्षिक–उपलब्धि
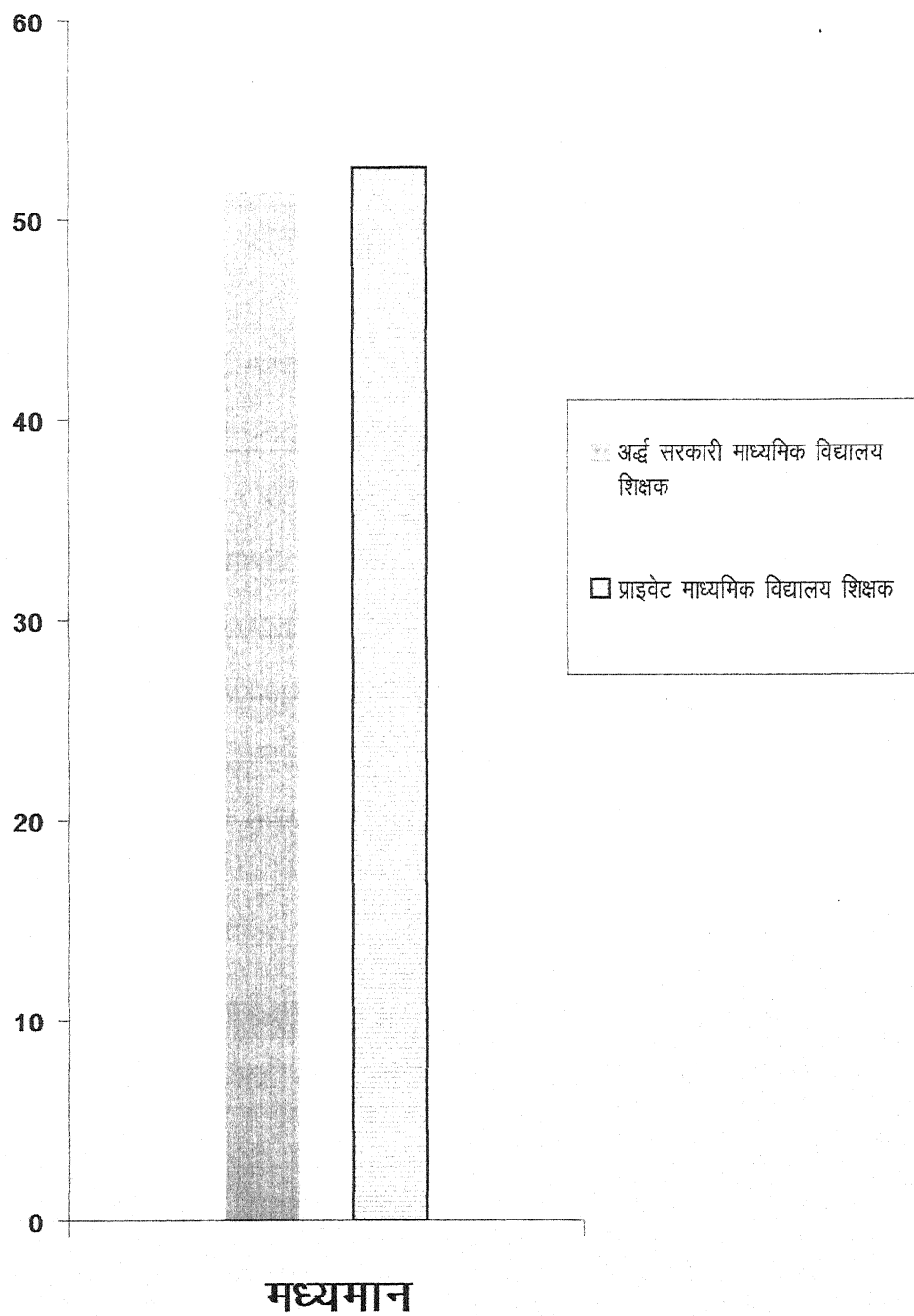
ग्राफ–4.12

(अ) "सरकारी तथा अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी - 4.13

सरकारी तथा अर्द्ध सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	सरकारी माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	210	74.233	43.41	0.82
2.	अर्द्ध सरकारी माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	180	78.094	49.24	

d, f (390-2) = 388 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी में स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 0.82 है जबकि d.f 388 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कहा जा सकता है कि सरकारी तथा अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण अभिक्षमता में कोई अन्तर नहीं है।

(ब) "सरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता में कोई अन्तर नही है।"

सारणी - 4.14

सरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	सरकारी माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	210	74.233	43.41	0.96
2.	प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	160	78.994	50.98	

d, f (370-2) = 368 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी में स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 0.96 है जबकि d.f 368 पर

सरकारी तथा अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की शिक्षण–अभिक्षमता
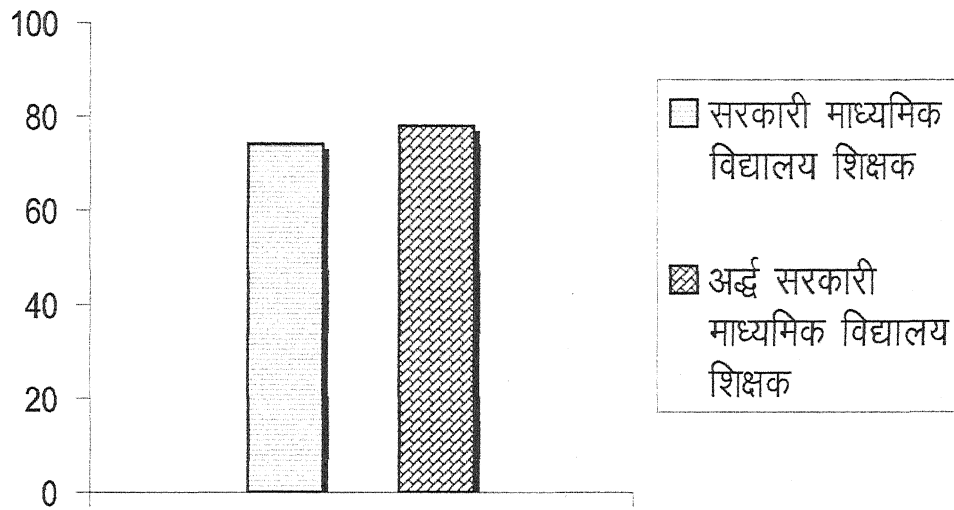
ग्राफ–4.13

सरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की शिक्षण–अभिक्षमता
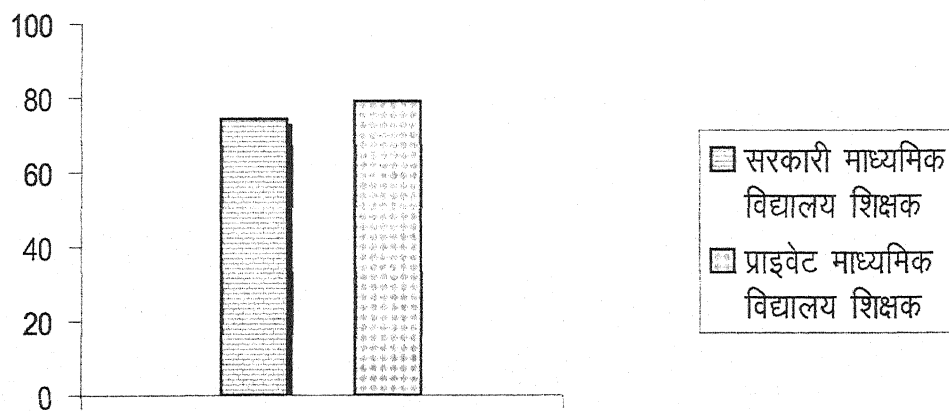
ग्राफ–4.14

टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कहा जा सकता है कि सरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता में कोई अन्तर नहीं है।

(स) "अर्द्धसरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता में कोई अन्तर नहीं है।"

सारणी - 4.15

अर्द्ध सरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	अर्द्ध सरकारी माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	180	78.094	49.24	0.16
2.	प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	160	78.994	50.97	

d, f (340-2) = 338 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी में स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 0.16 है जबकि d.f 338 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये दोनो गये स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कहा जा सकता है कि अर्द्धसरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण अभिक्षमता में कोई अन्तर नहीं है।

(6) शोध की छठवीं परिकल्पना निम्नलिखित है -

"सरकारी, अर्द्धसरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक सन्तुष्टि में कोई अन्तर नहीं है।" इस परिकल्पना का परीक्षण निम्न उपपरिकल्पनाओं के परीक्षण के आधार पर किया जा रहा है -

अर्द्ध सरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की शिक्षण–अभिक्षमता
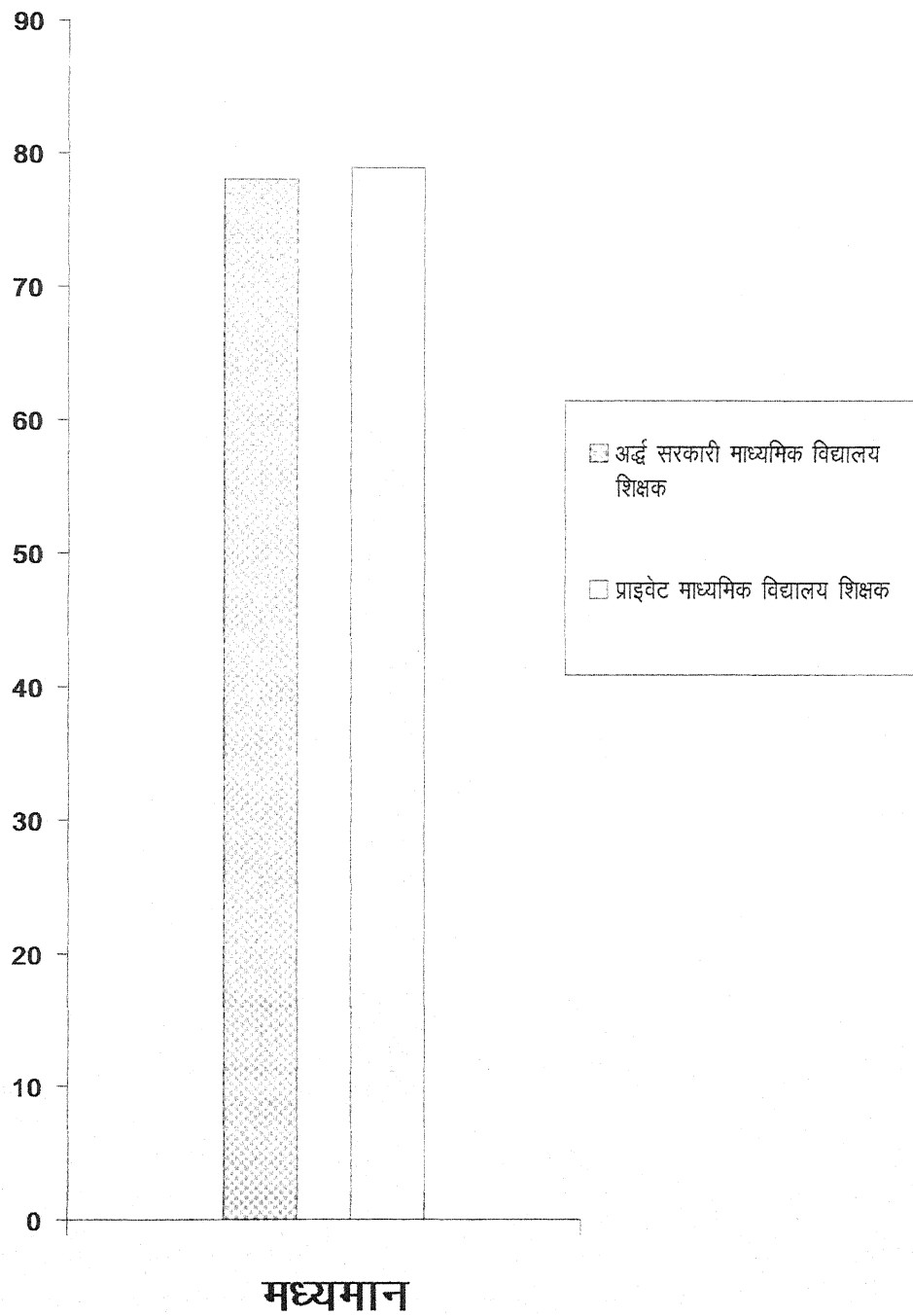
ग्राफ–4.15

(अ) "सरकारी तथा अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक सन्तुष्टि में कोई अन्तर नही है।"

सारणी - 4.16

सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	सरकारी माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	210	124.924	18.297	1.69
2.	अर्द्ध सरकारी माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	180	127.911	16.397	

d, f (390-2) = 388 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी में स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 1.69 है जबकि d.f 388 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कहा जा सकता है कि सरकारी तथा अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि में कोई अन्तर नहीं है।

(ब) सरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि में कोई अन्तर नहीं है।-

सारणी - 4.17

सरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	सरकारी माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	210	124.924	18.297	0.14
2.	प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	160	125.194	17.368	

d, f (370-2) = 368 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 0.14 है जबकि d.f 368 पर

सरकारी तथा अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की व्यावसायिक–सन्तुष्टि
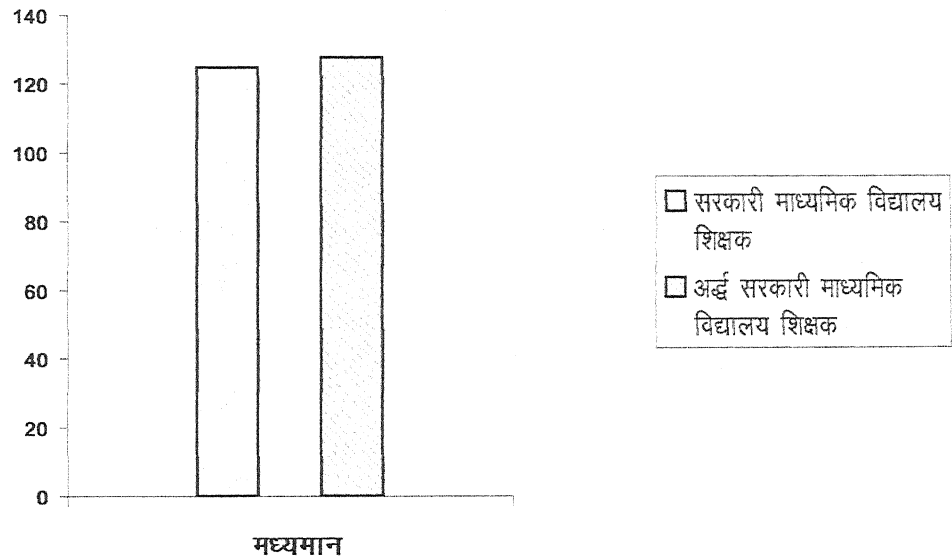
ग्राफ–4.16

सरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की व्यावसायिक–सन्तुष्टि
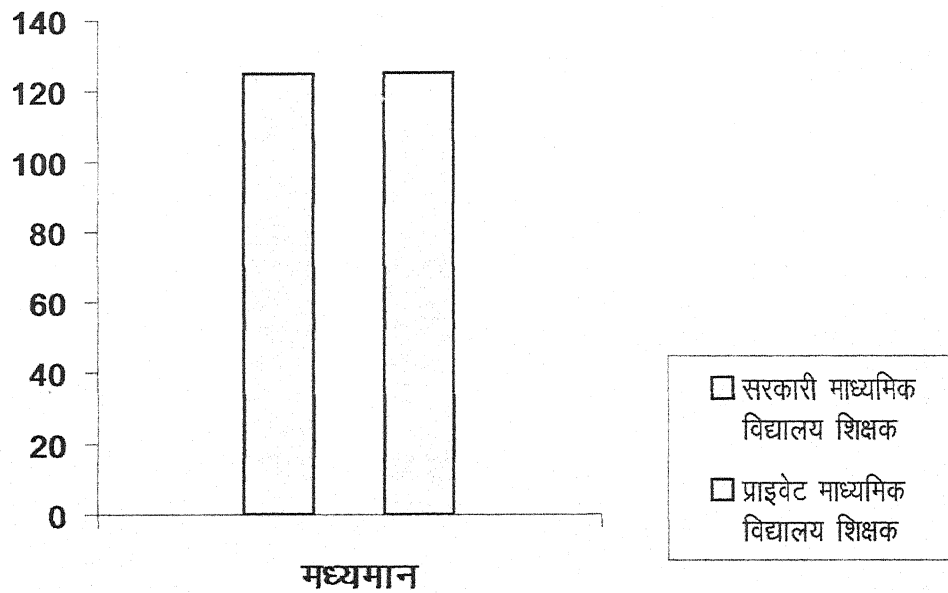
ग्राफ–4.17

टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कहा जा सकता है कि सरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि में कोई अन्तर नहीं है।

(स) अर्द्धसरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि में कोई अन्तर नहीं है।

सारणी - 4.18

अर्द्ध सरकारी तथा प्राइवेट विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	180	127.911	16.397	1.48
2.	प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	160	125.194	17.368	

d, f (340-2) = 338 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी में स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 1.48 है जबकि d.f 338 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कहा जा सकता है कि अर्द्धसरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि में कोई अन्तर नहीं है।

(7) अध्ययन की सातवीं परिकल्पना निम्नलिखित है -

"माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।" पहले इस परिकल्पना का परीक्षण निम्न उपपरिकल्पनाओं के परीक्षण के आधार पर किया जा रहा है तत्पश्चात पुरुष शिक्षक एवं महिला शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि उनकी शैक्षिक-उपलब्धि के प्रभाव सम्बन्धी परिकल्पनाओं का परीक्षण 7 (अ) तथा 7 (ब)

अर्द्ध सरकारी तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की व्यावसायिक–सन्तुष्टि
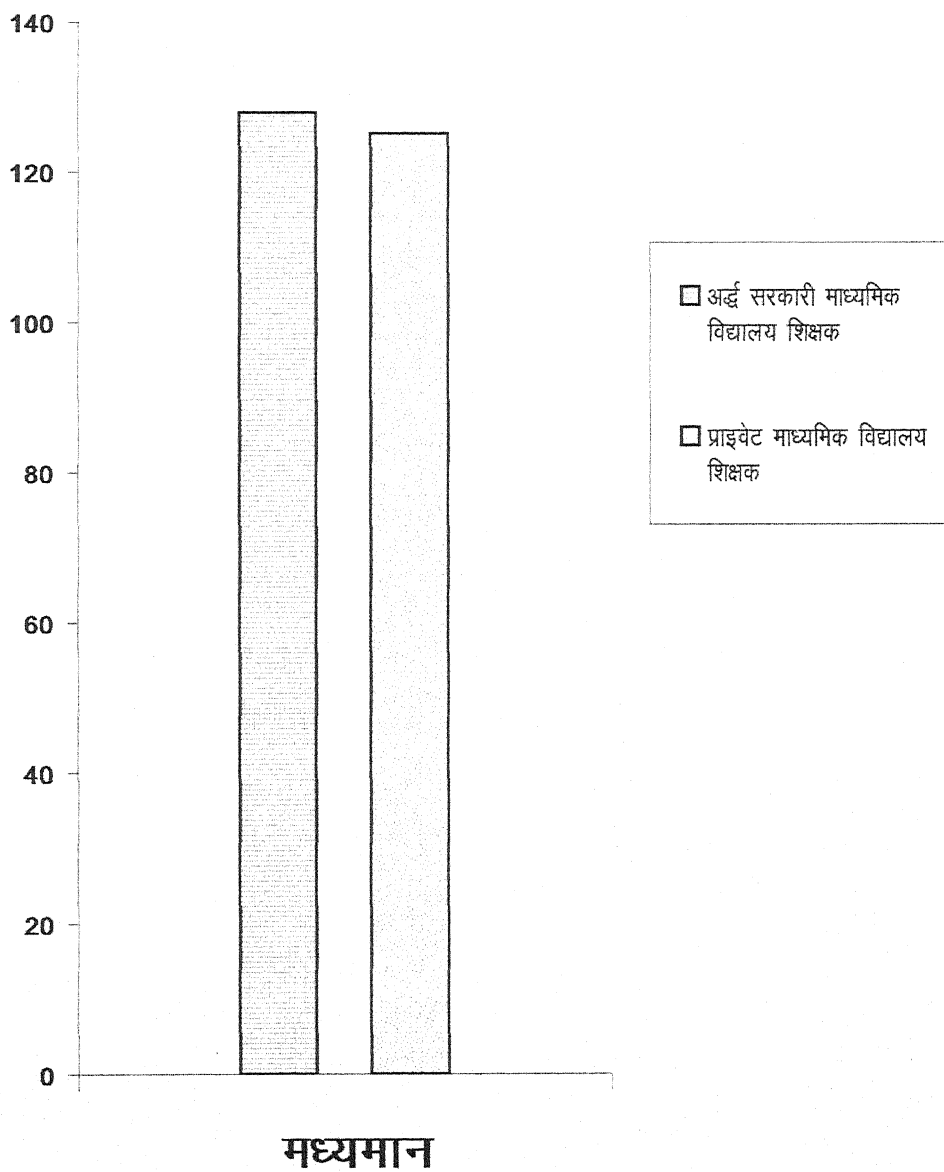
ग्राफ–4.18

उपपरिकल्पनाओं के अन्तर्गत किया गया है -

(i) "कम तथा औसत शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।"

सारणी - 4.19

कम तथा औसत शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	कम शैक्षिक उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	148	116.534	14.57	8.87
2.	औसत शैक्षिक उपलब्ध वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	254	131.878	17.85	

d, f (402-2) = 400 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 8.87 है जबकि d.f 400 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R. के मानों से अधिक है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कम तथा औसत शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि की तुलना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि का उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

कम तथा औसत शैक्षिक–उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की व्यावसायिक–सन्तुष्टि
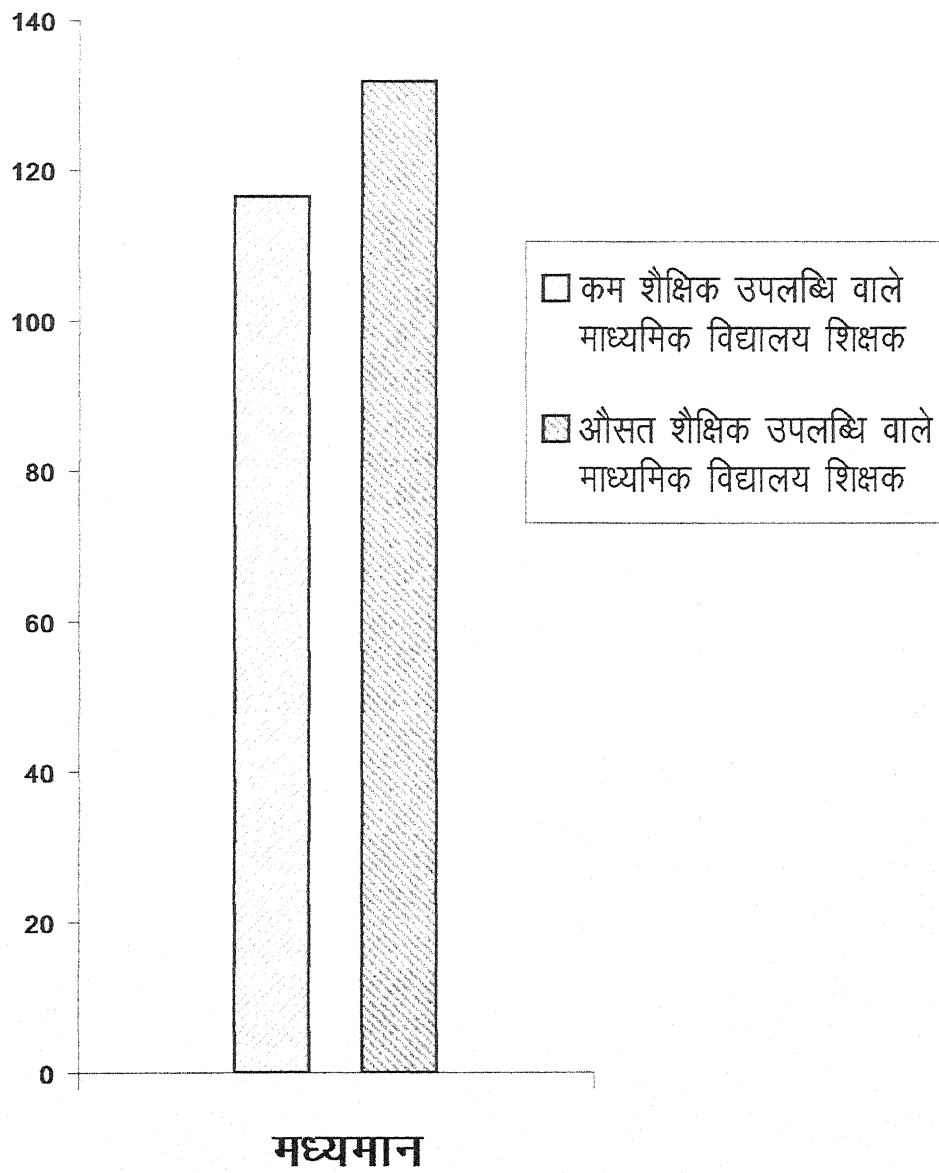
ग्राफ–4.19

(ii) ''कम तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।''

सारणी - 4.20

कम तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	कम शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	148	116.534	14.57	5.10
2.	अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	148	125.304	15.01	

d, f (296-2) = 294 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 5.10 है जबकि d.f 294 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R. के मानों से अधिक है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कम शैक्षिक उपलब्धि तथा अधिक शैक्षिक उपलब्धि वाले शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक सन्तुष्टि की तुलना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षकों की शैक्षिक उपलब्धि का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि पर प्रभाव पड़ता है। जिनकी शैक्षिक उपलब्धि ज्यादा होती है वे अपने व्यवसाय से अधिक सन्तुष्ट होते हैं।

कम तथा अधिक शैक्षिक–उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की व्यावसायिक–सन्तुष्टि
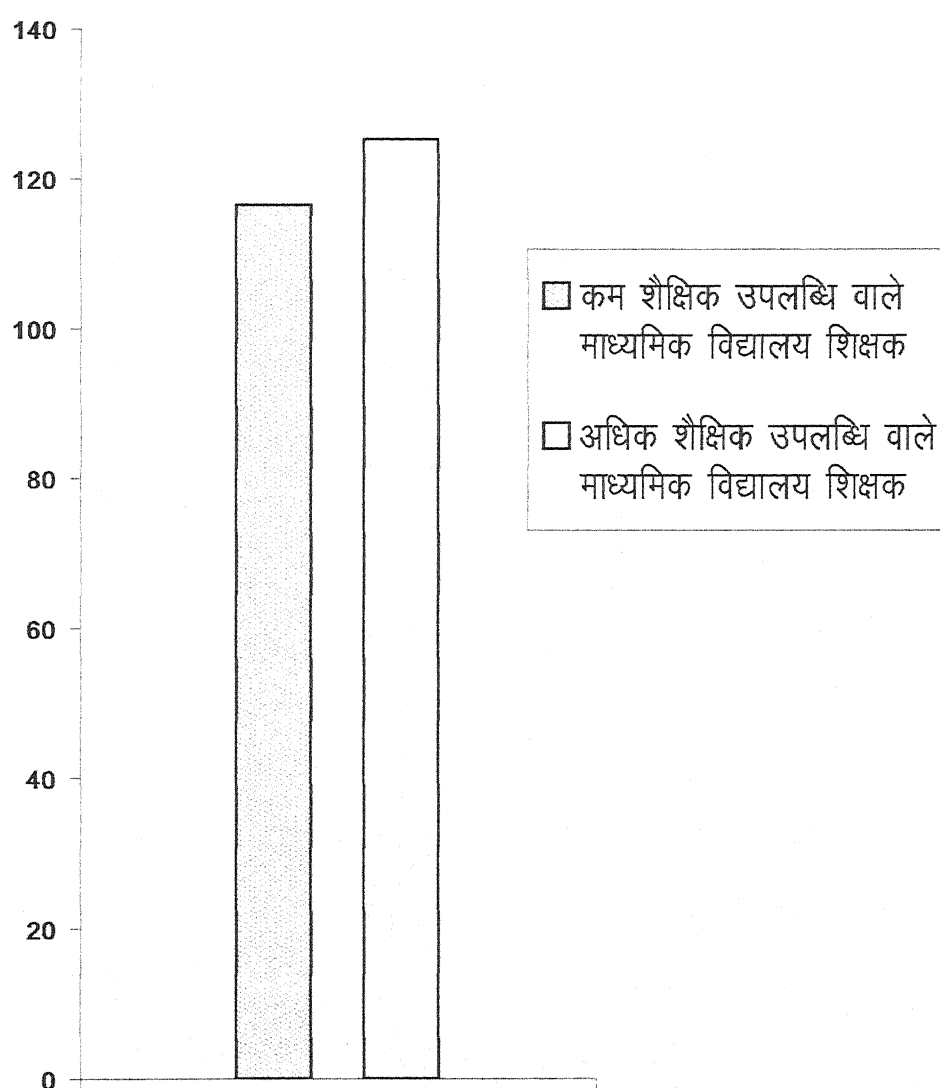
ग्राफ–4.20

(iii) ''औसत तथा अधिक शैक्षिक उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।''

सारणी - 4.21

औसत तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	औसत शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	254	131.878	17.85	3.77
2.	अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	148	125.304	15.01	

d, f (402-2) = 400 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 3.77 है जबकि d.f 400 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर C.R. के मानों से अधिक है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और औसत तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि की तुलना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि का उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

7 (अ)- ''माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।'' इस परिकल्पना का परीक्षण निम्न उपपरिकल्पनाओं के परीक्षण के आधार पर किया जा रहा है -

औसत तथा अधिक शैक्षिक–उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की व्यावसायिक–सन्तुष्टि
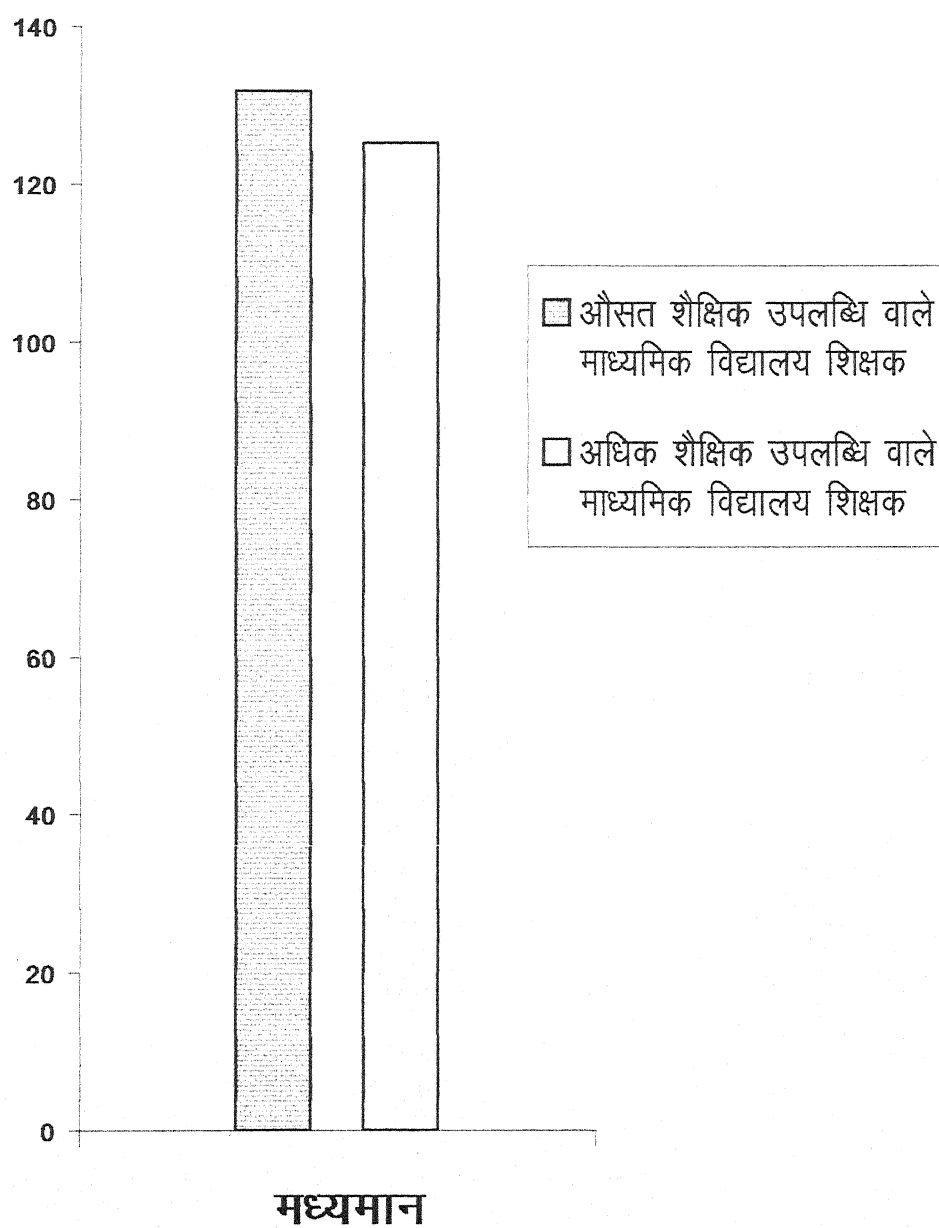
ग्राफ–4.21

(i) "कम तथा औसत शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।"

सारणी - 4.22

कम तथा औसत शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	कम शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	92	124.913	17.09	1.08
2.	औसत शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	156	127.417	17.82	

d, f (248-2) = 246 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.60

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 1.08 है जबकि d.f 246 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये दोनो स्तरों पर C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कम तथा औसत शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि की तुलना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि का उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

कम तथा औसत शैक्षिक–उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की व्यावसायिक–सन्तुष्टि
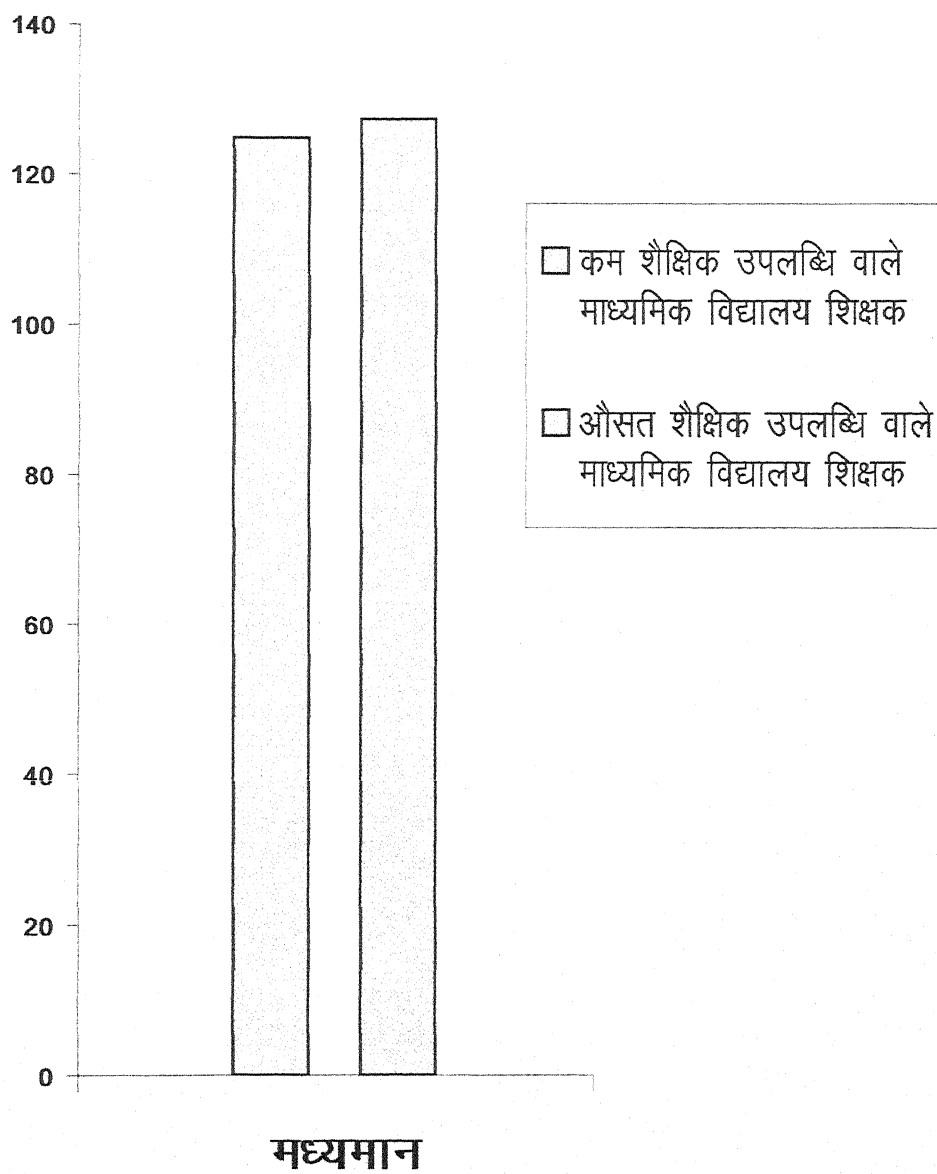
ग्राफ–4.22

(ii) "कम तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।"

सारणी - 4.23

कम तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	कम शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	92	124.913	17.09	0.74
2.	अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	92	126.946	20.17	

d, f (184-2) = 182 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.60

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 0.74 है जबकि d.f 182 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Accept) की जाती है और कम शैक्षिक-उपलब्धि तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि की तुलना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि का उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

कम तथा अधिक शैक्षिक–उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरूष) की व्यावसायिक–सन्तुष्टि
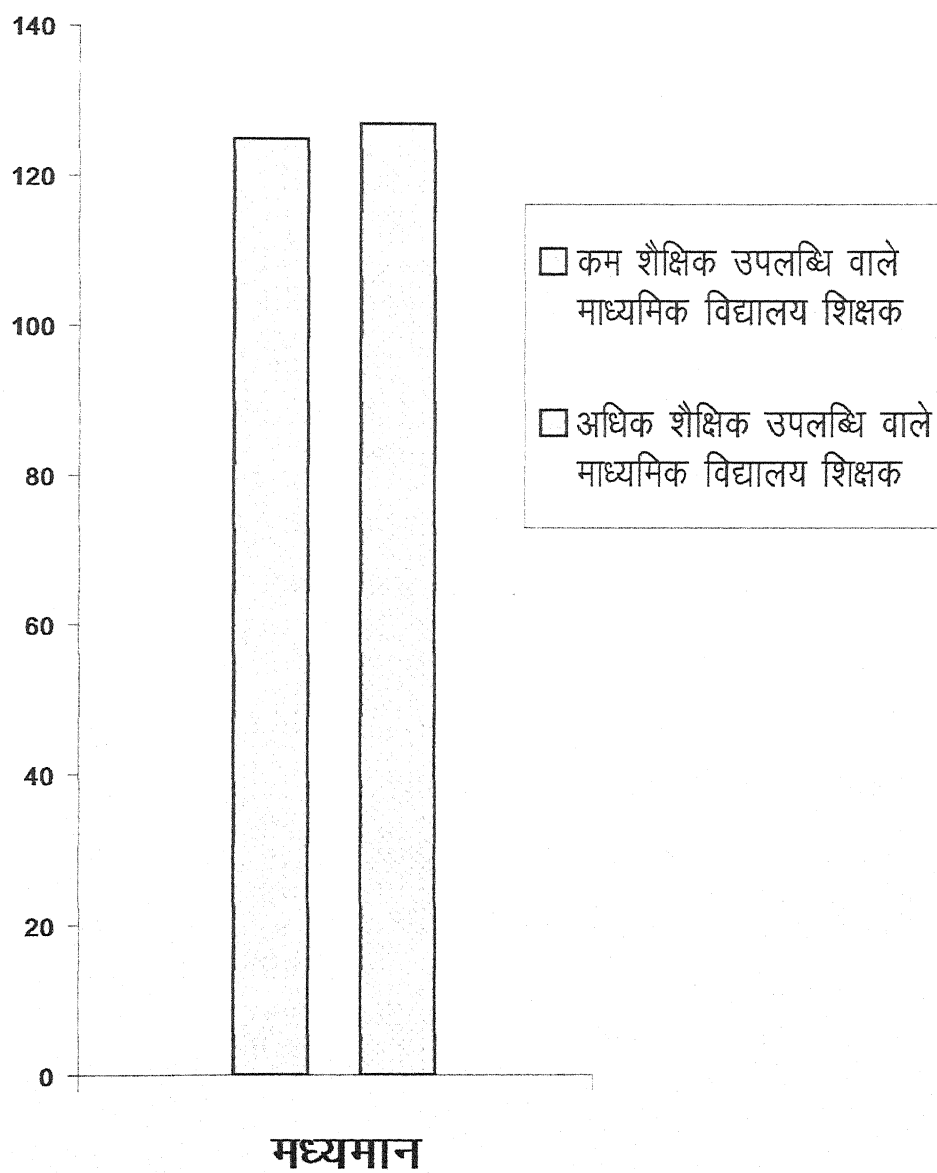
ग्राफ–4.23

(iii) "औसत तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।"

सारणी - 4.24

औसत तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	औसत शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	156	127.417	17.82	0.19
2.	अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	92	126.946	20.17	

d, f (248-2) = 246 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.60

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 0.19 है जबकि d.f 246 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Accept) की जाती है और औसत शैक्षिक-उपलब्धि तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय पुरुष शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि की तुलना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

7 (ब)- "माध्यमिक विद्यालय के शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।" इस परिकल्पना का परीक्षण निम्न उपपरिकल्पनाओं के परीक्षण के आधार पर किया जा रहा है -

औसत तथा अधिक शैक्षिक–उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक–सन्तुष्टि
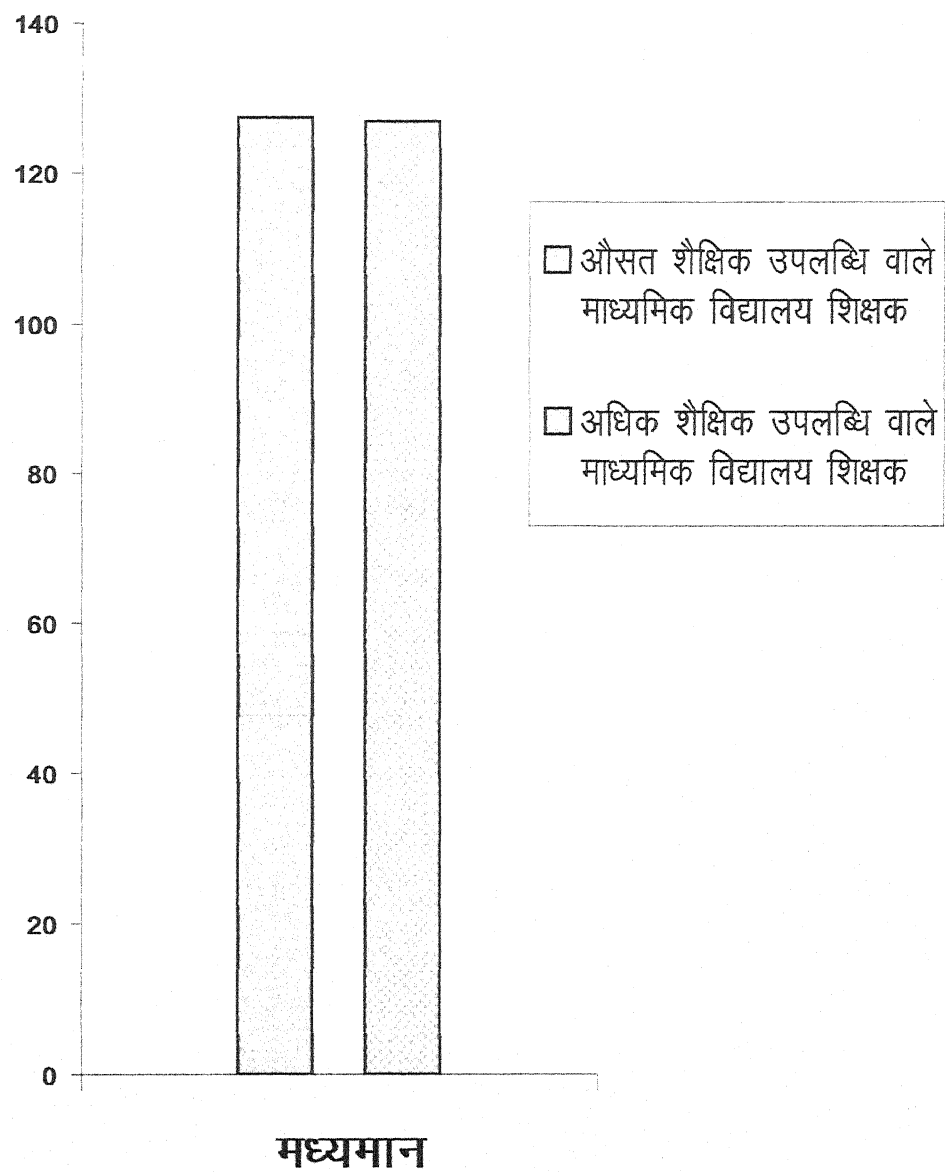
ग्राफ–4.24

(i) "कम तथा औसत शैक्षिक-उपलब्धि वाली माध्यमिक विद्यालय के शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।"

सारणी - 4.25

कम तथा औसत शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	कम शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षिका	57	124.947	18.52	1.27
2.	औसत शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षिका	96	128.375	14.44	

d, f (153-2) = 151 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.98

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.61

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 1.27 है जबकि d.f 151 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.98 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.61 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कम तथा औसत शैक्षिक-उपलब्धि वाली माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाओं की व्यावसायिक सन्तुष्टि की तुलना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षिकाओं की व्यावसायिक -सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

कम तथा औसत शैक्षिक–उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षिकाओं की व्यावसायिक–सन्तुष्टि

ग्राफ–4.25

(ii) "कम तथा औसत शैक्षिक-उपलब्धि वाली माध्यमिक विद्यालय की शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।"

सारणी - 4.26

कम तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	कम शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षिका	57	124.947	18.52	1.85
2.	अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षिका	57	119.211	14.32	

d, f (114-2) = 112 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.98

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.63

उपर्युक्त सारणी में स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 1.85 है जबकि d.f 112 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.98 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कम तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाली माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि की तुलना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

कम तथा अधिक शैक्षिक–उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय की शिक्षिकाओं की व्यावसायिक–सन्तुष्टि
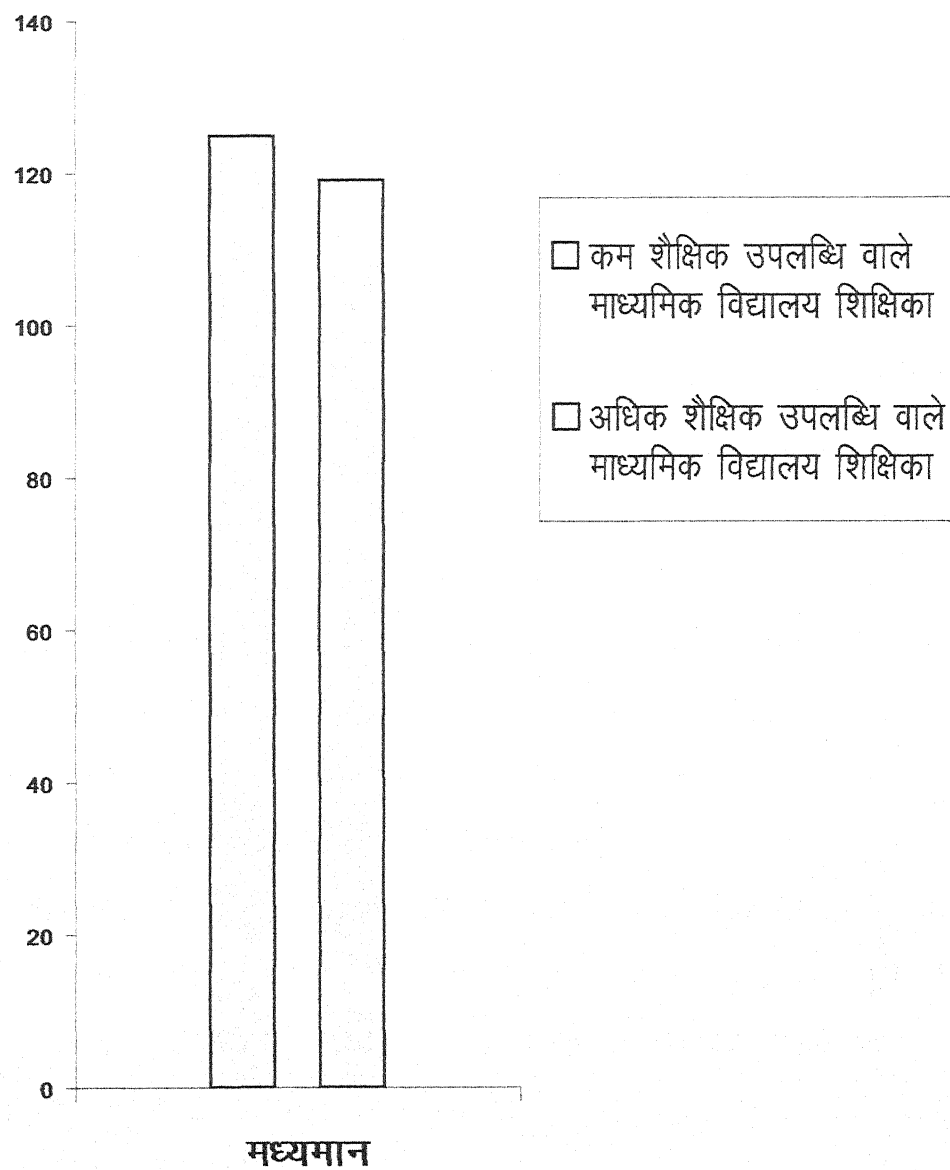
ग्राफ–4.26

(iii) "औसत तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाली माध्यमिक विद्यालय की शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।"

सारणी - 4.27

औसत तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	औसत शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षका	96	128.375	14.44	3.81
2.	अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षका	57	119.211	14.32	

d, f (153-2) = 151 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.98

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.61

उपर्युक्त सारणी में स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 3.81 है जबकि d.f 151 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.98 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.61 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये दोनो स्तरों पर C.R. के मानों से अधिक है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और औसत तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाली माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि की तुलना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

(8) शोध की आंठवी परिकल्पना निम्नलिखित है -

"माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।" सर्व प्रथम इस परिकल्पना का परीक्षण निम्न उपपरिकल्पनाओं के परीक्षण के आधार पर किया जा रहा है। तत्पश्चात शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का प्रभाव 8 (अ) तथा 8 (ब) परिकल्पनाओं के परीक्षण के आधार पर किया गया है।

औसत तथा अधिक शैक्षिक–उपलब्धि वाले माध्यमिक विद्यालय की शिक्षिकाओं की व्यावसायिक–सन्तुष्टि
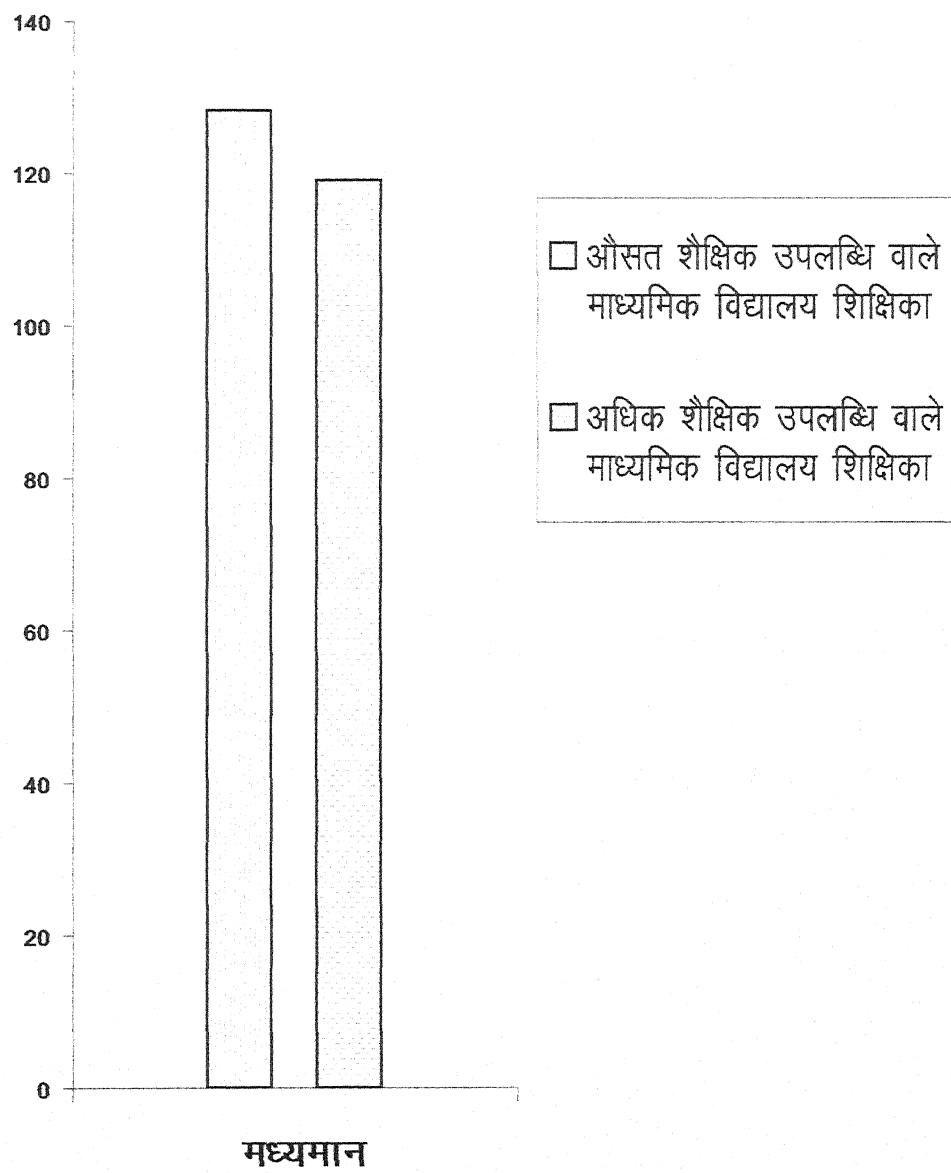
ग्राफ–4.27

(i) "कम तथा औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का प्रभाव नहीं पड़ता है।"

सारणी - 4.28

कम तथा औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	कम शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	148	126.885	16.00	0.76
2.	औसत शिक्षण अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	254	125.508	18.34	

d, f (402-2) = 400 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 0.76 है जबकि d.f 400 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कम तथा औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि की तुलना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

कम तथा औसत शिक्षण—अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की व्यावसायिक—सन्तुष्टि

ग्राफ—4.28

(ii) "कम तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।"

सारणी - 4.29

कम तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	कम शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	148	126.885	16.00	0.52
2.	अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	148	125.885	17.33	

d, f (296-2) = 294 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी में स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 0.52 है जबकि d.f 294 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कम शिक्षण-अभिक्षमता एवं अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि की तुलना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

कम तथा अधिक शिक्षण–अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की व्यावसायिक–सन्तुष्टि
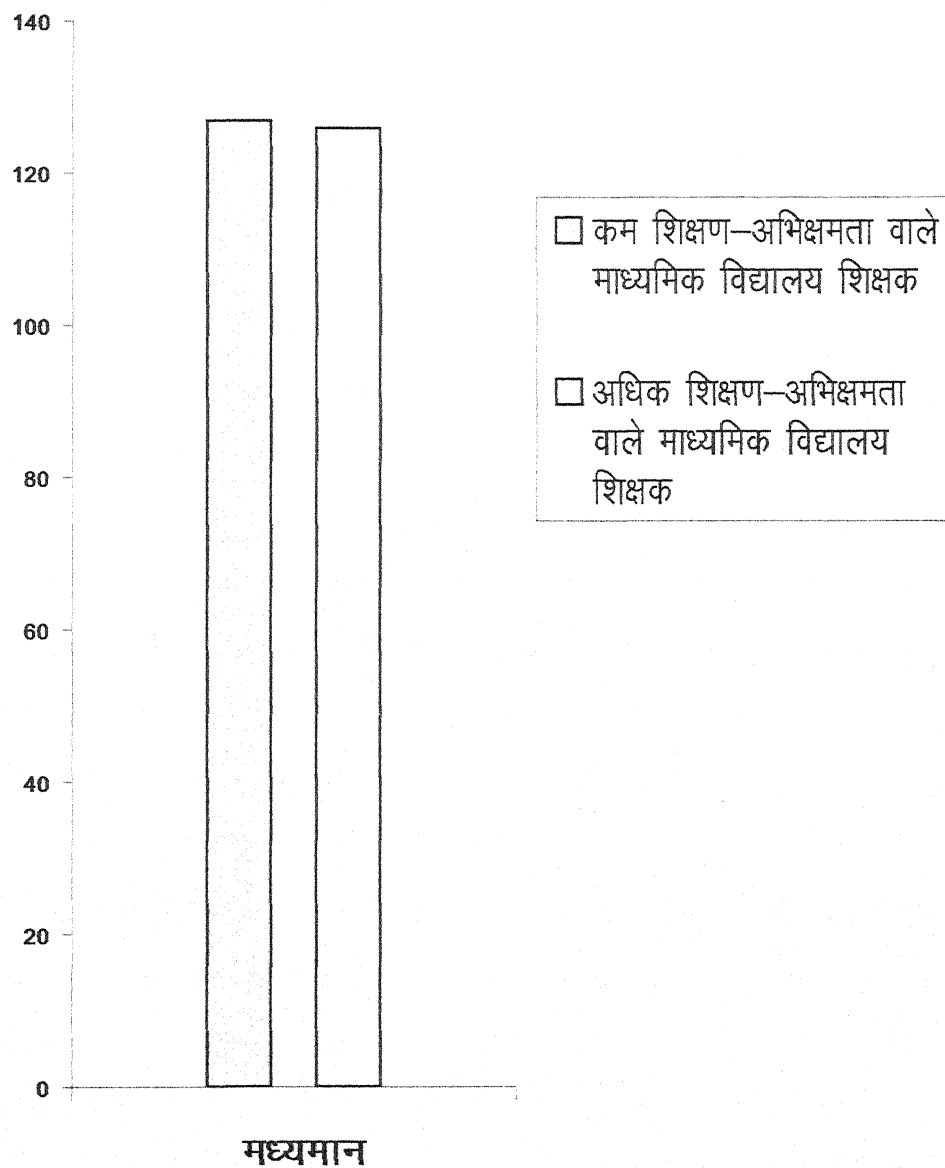
ग्राफ–4.29

(iii) "औसत तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।"

सारणी - 4.30

औसत तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	254	125.508	18.343	0.20
2.	अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	148	125.885	17.327	

d, f (402-2) = 400 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 0.20 है जबकि d.f 400 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और औसत एवं अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि की तुलना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि में उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

8 (अ) "माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।" इस परिकल्पना का परीक्षण निम्न उपकल्पनाओं के परीक्षण के आधार पर किया जा रहा है -

औसत तथा अधिक शिक्षण–अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की व्यावसायिक–सन्तुष्टि
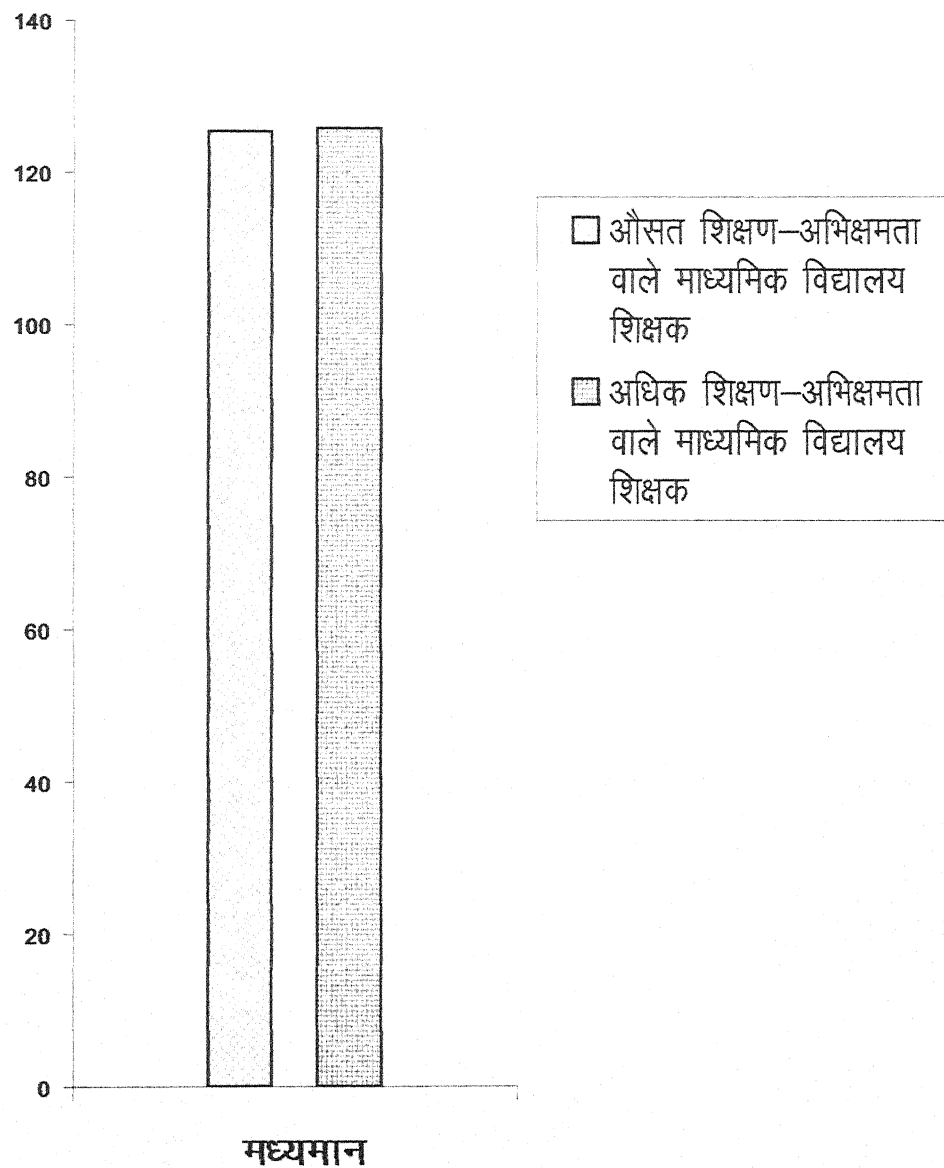
ग्राफ–4.30

(i) "कम तथा औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।"

सारणी - 4.31

कम तथा औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों (पुरुष) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	कम शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	92	126.283	18.145	0.18
2.	औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	156	125.872	17.252	

d, f (248-2) = 246 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.60

उपर्युक्त सारणी में स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 0.18 है जबकि d.f 246 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कम तथा औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक (पुरुष) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि की तुलना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

कम तथा औसत शिक्षण–अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों (पुरूष) की व्यावसायिक–सन्तुष्टि

ग्राफ–4.31

(ii) "कम तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।"

सारणी - 4.32

कम तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों (पुरुष) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	कम शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	92	126.283	18.14	0.68
2.	अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	92	128.196	20.10	

d, f (184-2) = 182 पर-सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.60

उपर्युक्त सारणी में स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 0.68 है जबकि d.f 182 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कम तथा अधिक शिक्षण अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक (पुरुष) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि की तुलना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षा-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

कम तथा अधिक शिक्षण–अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों (पुरूष) की व्यावसायिक–सन्तुष्टि
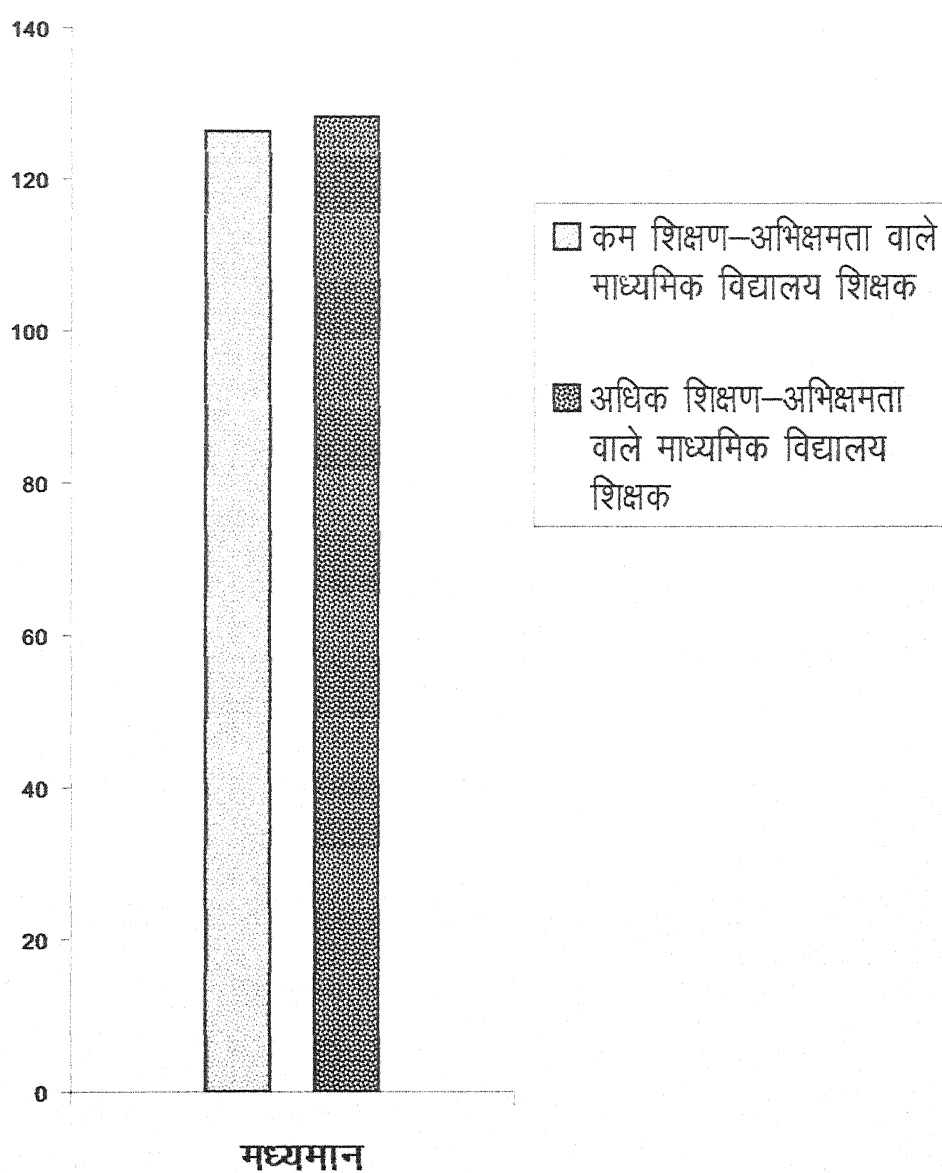
ग्राफ–4.32

(iii) "औसत तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।"

सारणी - 4.33

औसत तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों (पुरुष) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	156	125.872	17.252	0.96
2.	अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	92	128.196	20.100	

d, f (248-2) = 246 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.60

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 0.96 है जबकि d.f 246 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.97 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. के मानों से अधिक है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और औसत तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षक (पुरुष) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि की तुलना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

8 (ब) "माध्यमिक विद्यालय के शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।" इस परिकल्पना का परीक्षण निम्न उप परिकल्पनाओं के परीक्षण के आधार पर किया जा रहा है -

औसत तथा अधिक शिक्षण–अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों (पुरूष) की व्यावसायिक–सन्तुष्टि
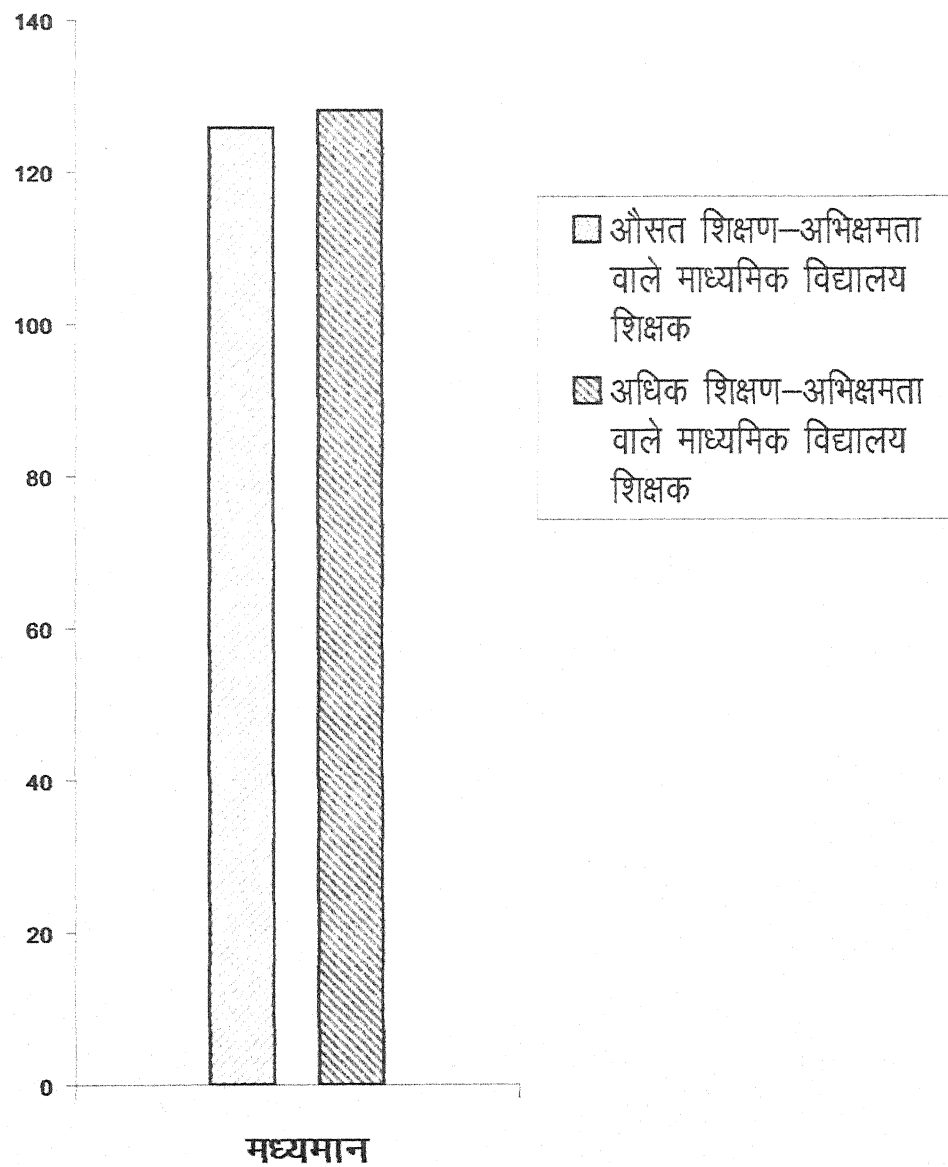
ग्राफ–4.33

(i) ''कम तथा औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।''

सारणी - 4.34

कम तथा औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	कम शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाऐं	57	125.018	16.22	0.28
2.	औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाऐं	96	124.260	16.49	

d, f (153-2) = 151 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.98

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.61

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 0.28 है जबकि d.f 151 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.98 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.61 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कम तथा औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाली माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि की तुलना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

कम तथा औसत शिक्षण–अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाओं की व्यावसायिक–सन्तुष्टि

ग्राफ–4.34

(ii) "कम तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाली माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।"

सारणी - 4.35

कम तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	कम शिक्षण-अभिक्षमता वाली माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाऐं	57	125.018	16.22	0.36
2.	अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाली माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाऐं	57	126.070	15.13	

d, f (114-2) = 112 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.98

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.63

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 0.36 है जबकि d.f 112 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.98 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.63 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कम तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाली माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि की तुलना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

कम तथा अधिक शिक्षण–अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाओं की व्यावसायिक–सन्तुष्टि

ग्राफ–4.35

(iii) ''औसत तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाली माध्यमिक विद्यालय के शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।''

सारणी - 4.36

औसत तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाली माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि

	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाली माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाऐं	96	124.260	16.493	0.68
2.	अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालय शिक्षकाऐं	57	126.070	15.134	

d, f (153-2) = 151 पर सारणीमान -अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.98

ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.61

उपर्युक्त सारणी में स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R. का मान 0.68 है जबकि d.f 151 पर टी-तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. का मान 1.98 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R.का मान 2.61 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R. का मान सारणी में दिये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिये आवश्यक C.R. के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ता की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और औसत तथा अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाली माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि की तुलना के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

औसत तथा अधिक शिक्षण–अभिक्षमता वाली माध्यमिक विद्यालय शिक्षिकाओं की व्यावसायिक–सन्तुष्टि
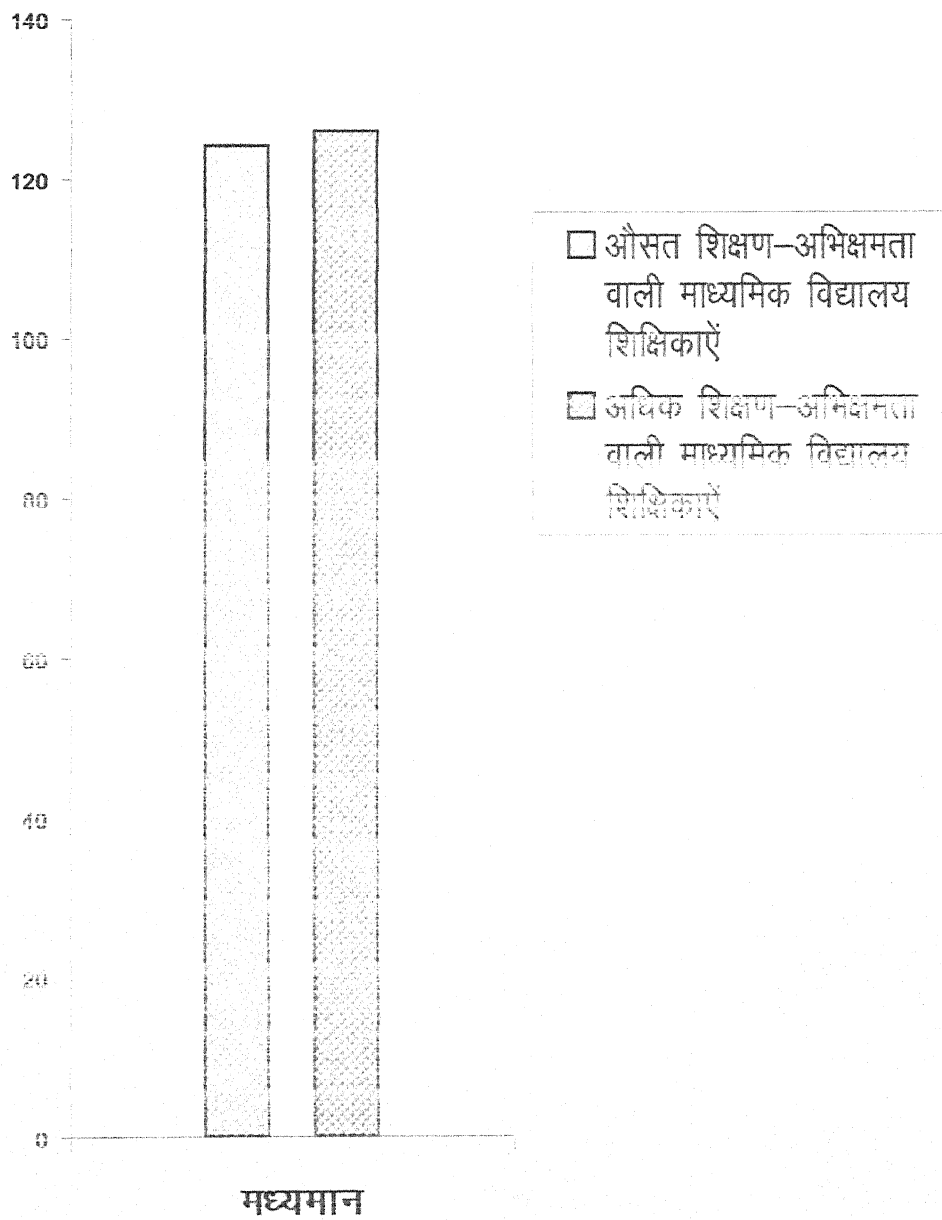
ग्राफ–4.36

चतुर्थ-अध्याय

(प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या)

5.1 शोध से प्राप्त निष्कर्ष -

चतुर्थ अध्याय में परीक्षणों के प्रशासन से प्राप्त आंकडो का विश्लेषण किया गया है। इस विश्लेषण के आधार पर शोध के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं से सम्बन्धित जो परिणाम प्राप्त हुए हैं उनका विवेचन इस अध्याय में किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध में कुल 16 उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं। जिनकी पूर्ति के लिए परिकल्पनाओं का निर्माण कर उनका परीक्षण किया गया है। इस शोध में अध्ययन हेतु कुल 30 शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है। जिसमें 8 मुख्य तथा 22 सहायक परिकल्पनाएँ हैं इनमें से 37 परिकल्पनाएँ स्वीकृत एवं 20 परिकल्पनाएँ अस्वीकृत हुई हैं अध्ययन से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं उनका विवरण निम्नलिखित है -

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 52.93 है (सारणी 4.1) शैक्षिक-उपलब्धि ज्ञात करने के लिए जो आधार लिया गया उसके अनुसार यदि कोई शिक्षक हाईस्कूल, इण्टरमीडिएट, स्नातक एवं परास्नातक स्तर पर प्रथम श्रेणी पाया हो तथा उसनें बी.एड. एवं एम.एड. भी किया हो तो ऐसे शिक्षक की शैक्षिक-उपलब्धि 70 होगी और यदि उसनें चारों परीक्षायें द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण करने के साथ बी.एड./एम.एड. किया हो तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि 50 होगी। इसी प्रकार यदि किसी शिक्षक की हाईस्कूल से लेकर परास्नातक तक सभी में तृतीय श्रेणी है और उसने बी.एड./एम.एड.उत्तीर्ण किया है तो ऐसे शिक्षक की शैक्षिक-उपलब्धि 30 होगी न्यादर्श में जिन शिक्षक शिक्षिकाओं को चयनित किया गया है उनमें से बहुत कम शिक्षक एम.एड. की डिग्री प्राप्त किये हैं इसी प्रकार अधिकांश शिक्षक स्नातक के साथ बी.एड. है ऐसी स्थिति में शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य (52.93) यह दर्शाता है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक-उपलब्धि औसत दर्जे से ऊपर ही है। इसी प्रकार अलग-अलग प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान देखने से पता चलता है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 54.44 अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालयों (पुरुष एवं महिला)की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 51.42 तथा प्राईवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 52.66 है। (सारिणी-4.3) उपर्युक्त तीनों प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक-उपलब्धि औसत दर्जे से ऊपर है।

   उपर्युक्त तीनों प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक-

उपलब्धि में जो अन्तर है उसकी सार्थकता की जांच करने से पता लगा कि सरकारी एवं अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि के माध्यों में जो अन्तर है वह सार्थक है (4.9)। अतः कहा जा सकता है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों से अधिक है। जबकि सरकारी एवं प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों तथा अर्द्धसरकारी एवं प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य जो अन्तर है वह सार्थक अन्तर नहीं हैं अर्थात इन विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि लगभग एक समान है।

2. माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 52.08 तथा शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि का माध्य 54.31 है (4.2)। स्पष्ट है कि पुरुषों की अपेक्षा महिला शिक्षकों की औसत शैक्षिक-उपलब्धि अच्छी है। लेकिन सारणी क्रमांक 4.7 से स्पष्ट है कि शिक्षक-शिक्षिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के बीच में जो अन्तर दिखाई दे रहा है वह सार्थक अन्तर नहीं है।

3. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का मध्यमान 125.98 है (सारणी 4.1)। जो कि यह दर्शाता है कि शिक्षक अपने व्यावसाय से पूर्ण रूप से सन्तुष्ट है। तीनों प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का मध्यमान देखने से पता चलता है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 124.92, अर्द्ध सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) 127.91 तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 125.19 है। सारणी क्रमांक 4.16 से स्पष्ट है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) एवं अर्द्ध सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि के मध्य जो अन्तर है वह सार्थक अन्तर नहीं है इसी प्रकार सारणी क्रमांक 4.17 से स्पष्ट है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) एवं प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि के मध्य जो अन्तर है वह भी सार्थक अन्तर नहीं हैं इसी प्रकार सारणी क्रमांक 4.18 से स्पष्ट है कि अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) एवं प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि के मध्य जो अन्तर है वह भी सार्थक अन्तर नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि सरकारी अर्द्धसरकारी एवं प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों

(पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि उच्च स्तर की है तथा लगभग एक समान है।

4. माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 126.61 है तथा शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का माध्य 124.96 है (सारणी 4.2)। टेस्ट मैनुवल के अनुसार शिक्षक एवं शिक्षिकायें अपने व्यावसाय से पूर्ण सन्तुष्ट है तथा सारणी 4.9 से स्पष्ट है कि इनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि के बीच जो अन्तर दिखायी दे रहा है वह सार्थक अन्तर नहीं है।

5. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण अभिक्षमता का माध्य 76.88 है। (सारणी 4.1) टेस्ट मैनुवल के अनुसार यह निम्न स्तर की है अलग-अलग प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता को देखने से पता चलता है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 74.23, अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 78.09 तथा प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 78.99 है (सारणी 4.3)। उपर्युक्त तीनों प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता निम्न स्तर की है। तीनों प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता में जो अन्तर है उसकी सार्थकता की जांच करने से पता लगा कि सरकारी एवं अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता के मध्य जो अन्तर है वह सार्थक नहीं है इसी प्रकार, सरकारी एवं प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता के मध्यमानों में जो अन्तर दिखायी दे रहा है वह भी सार्थक अन्तर नहीं है इसी प्रकार अर्द्धसरकारी एवं प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शिक्षण-अभिक्षमता के मध्य भी सार्थक अन्तर नहीं है। (सारणी क्रमांक 4.13, 4.14 एवं 4.15)।

6. माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 76.21 तथा शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता का माध्य 77.97 है (सारणी 4.2)। स्पष्ट है कि पुरुषों की अपेक्षा महिला शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता कुछ अधिक है। सारणी क्रमांक 4.8 से स्पष्ट है कि शिक्षक-शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता के मध्यमानों में जो अन्तर है वह सार्थक अन्तर नहीं है।

7. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी

शैक्षिक-उपलब्धि के प्रभाव का पता लगाने पर ज्ञात हुआ कि कम एवं औसत शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर है (सारणी 4.19)। कम तथा अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाले शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक सन्तुष्टि के मध्य भी सार्थक अन्तर है (सारणी 4.20)।

इसी प्रकार औसत और अधिक शैक्षिक उपलब्धि वाले शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि के मध्य भी सार्थक अन्तर है।

सारणी क्रमांक 4.19, 4.20 एवं 4.21 से यह भी स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक-उपलब्धि और उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध है अधिक शैक्षिक उपलब्धि वाले शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि भी क्रमशः अधिक पायी गयी। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जो शिक्षक पढ़ने-लिखने में अग्रणी रहे हैं ये शिक्षण व्यवसाय अपनाकर तुलनात्मक रूप से अधिक सन्तुष्टि है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। (सारणी 4.22, 4.23 एवं 4.24) माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि कम तथा औसत शैक्षिक-उपलब्धि वाली शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर तथा कम एवं अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाली शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है लेकिन औसत एवं अधिक शैक्षिक-उपलब्धि वाली शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। (सारणी क्रमांक 4.25, 4.26 एवं 4.27)

8. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता के प्रभाव का पता लगाने पर ज्ञात हुआ कि शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। क्योंकि सारणी क्रमांक 4.28, 4.29 एवं 4.30 जिनमें क्रमशः कम एवं औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि कम एवं अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि तथा औसत एवं अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की व्यावसायिक-सन्तुष्टि के मध्यमान के बीच अन्तर की सार्थकता की जांच की गयी और पाया गया कि मध्यमानों के बीच यह अन्तर सार्थक अन्तर नहीं है।

इसी प्रकार सारणी क्रमांक 4.31, 4.32 एवं 4.33 जिनमें क्रमशः कम एवं औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाले पुरुष शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि कम एवं अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले पुरुष शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि तथा औसत एवं अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाले पुरुष शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि वाले मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जांच की गयी है, से स्पष्ट है कि इन समूहों के मध्यमानों के बीच जो अन्तर है वह सार्थक अन्तर नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि पुरुष शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

इसी प्रकार सारणी 4.34, 4.35 एवं 4.36 जिनमें क्रमशः कम एवं औसत शिक्षण-अभिक्षमता वाली शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि कम एवं अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाली शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि तथा औसत एवं अधिक शिक्षण-अभिक्षमता वाली शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि के मध्यमानों के बीच अन्तर की सार्थकता की जांच की गयी है से स्पष्ट है कि व्यावसायिक-सन्तुष्टि के मध्यमानों के बीच विभिन्न समूहों में जो अन्तर है वह सार्थक अन्तर नहीं है अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शिक्षण-अभिक्षमता का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

5.2 शोध की उपादेयता -

प्रस्तुत शोध माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि एवं शिक्षण-अभिक्षमता का उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाने के लिए किया गया है। शोध में चुने गये शिक्षक शिक्षिकाओं सरकारी, अर्द्धसरकारी एवं प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों में सेवारत हैं। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि तीनों प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि औसत स्तर से अधिक है सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक शिक्षिकायें और प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक शिक्षिकायें लगभग समान शैक्षिक-उपलब्धि वाले हैं जबकि अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि एवं सरकारी विद्यालयों के शिक्षक-शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

अध्ययन के निष्कर्ष बतलाते हैं कि जिन शिक्षक-शिक्षिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि अच्छी है वे शिक्षण व्यवसाय से उन शिक्षक-शिक्षिकाओं की तुलना में जिनकी शैक्षिक-उपलब्धि कम अच्छी है से अधिक सन्तुष्ट है इस निष्कर्ष से यह बात स्पष्ट होती है कि उन व्यक्तियों को शिक्षण व्यवसाय हेतु चयनित किया जाना चाहिए जिनकी शैक्षिक-उपलब्धि उच्च स्तर की है क्योंकि ऐसे व्यक्तियों में व्यावसायिक-सन्तुष्टि का स्तर ऊँचा रहेगा और वे अपने कार्य को अधिक निष्ठा ईमानदारी एवं लगन से

सम्पन्न करेंगे जिसका प्रभाव बच्चों के समुचित विकास में सकारात्मक रूप में पड़ेगा।

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक-शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि उच्च स्तर की पायी गयी है। सरकारी, अर्द्धसरकारी एवं प्राइवेट तीनों प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक-शिक्षिकायें अपने व्यावसाय से पूर्ण रूप से सन्तुष्ट है यह निष्कर्ष यह संकेत दे रहे हैं कि माध्यमिक विद्यालयों का वातावरण एवं उनकी सेवा शर्तें अच्छी है और उनके चयन हेतु विभिन्न प्रकार के विद्यालयों द्वारा जो मानक तय किये गये हैं वे उपयुक्त हैं और उन पर आगे भी विश्वास किया जा सकता है।

शोध के निष्कर्ष यह भी संकेत करते हैं कि विभिन्न स्तर की शिक्षण-अभिक्षमता वाले माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक-शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है। इससे यह संकेत मिलता है कि जिन शिक्षक-शिक्षिकाओं में शिक्षण के प्रति लगाव है तथा शिक्षण के लिए आवश्यक उच्च स्तर की अभिक्षमता है वे उन शिक्षक-शिक्षिकाओं से जिनमें उच्च स्तर की शिक्षण-अभिक्षमता नहीं है से अधिक सन्तुष्टि नहीं है। इस परिणाम से यह आभाष होता है कि जिन शिक्षक-शिक्षिकाओं में शिक्षण-अभिक्षमता उच्च स्तर की नहीं होती है इसकी प्रतिपूर्ति हेतु विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास से जुड़ी किसी न किसी क्रिया में अपने आपको संलग्न रखकर और लगन एवं परिश्रम से शिक्षण कार्य करके कर लेते हैं इस प्रकार के क्रियाकलापों से वे अपने शिक्षण व्यवसाय में पूर्ण सन्तुष्टि का अनुभव करते रहते हैं।

अध्ययन के निष्कर्ष यह भी बताते हैं कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शैक्षिक-उपलब्धि, व्यावसायिक-सन्तुष्टि और शिक्षण-अभिक्षमता के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात शिक्षण व्यवसाय में दोनों ही लिंगो के व्यक्तियों का प्रवेश होते रहना चाहिए। क्योंकि कोई किसी से किसी क्षेत्र में सार्थक रूप से आगे या पीछे नहीं है।

5.3 <u>सुझाव</u> -

सुझाव को निम्नलिखित दो श्रेणी में बांटा जा रहा है -

(अ) वर्तमान शोध से सम्बन्धित सुझाव -

शोधकर्ता ने समस्या के चुनाव में पर्याप्त सतर्कता बरती थी और यह प्रयाश किया था कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक-उपलब्धि एवं शिक्षण अभिक्षमता का उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर पड़ने वाले प्रभाव का विधिवत अध्ययन किया जाये इसीलिए शोधकर्ता ने उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत आने वाले बुन्देलखण्ड क्षेत्र में अवस्थित सरकारी, अर्द्धसरकारी, प्राइवेट, माध्यमिक विद्यालयों के 550 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का प्रतिदर्श लेकर अपना अध्ययन पूर्ण किया है। अध्ययनोपरान्त शोधकर्ता का मत है कि वर्तमान शोध में और गुणवत्ता लाने हेतु निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दिया जाना चाहिए -

1. शोध न्यादर्श में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को निश्चित अनुपात में सम्मिलित करके उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता था।
2. शोध न्यादर्श में सम्मिलित शिक्षक-शिक्षिकाओं की वैवाहिक स्थिति को भी आधार बनाकर उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए था क्योंकि भारतीय परिवेश में अभी भी महिलाओं को समानता का व्यावहारिक हक प्राप्त नहीं है। जो महिलाएँ विवाहित हैं और नौकरी करती हैं उनके ऊपर घर एवं कार्यक्षेत्र दोनों की जिम्मेदारी होती है जबकि वैवाहिक पुरुषों पर इस प्रकार की जिम्मेदारियाँ नहीं होती। जिस कारण दोनों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि अलग-अलग हो सकती है।
3. शिक्षक, शिक्षिकाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति को आधार बनाया जा सकता था।
4. शिक्षक, शिक्षिकाओं की शिक्षण-अभिक्षमता का सही ऑकलन करने के लिए शिक्षण की प्रमाणिकता का भी पता लगाना चाहिए था।
5. शिक्षक, शिक्षिकाओं की आयु को भी आधार बनाया जा सकता था।
6. शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि एवं शिक्षण-अभिक्षमता उनके शिक्षण अनुभव से भी प्रभावित हो सकती है। अतः अध्ययन में शिक्षक-शिक्षिकाओं के शिक्षण अनुभव को भी आधार बनाया जा सकता था।
7. शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर संस्था के प्रधान (प्रधानाचार्य) की प्रशासनिक शैली का भी प्रभाव ज्ञात किया जा सकता था।
8. विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का विद्यालय की प्रत्येक गतिविधि पर भी प्रभाव पड़ता है और विद्यालय की गतिविधियों से शिक्षक भी प्रभावित होता है जो उसकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि को प्रभावित करती है अतः विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण को भी अध्ययन का आधार बनाया जा सकता है।
9. अध्यापकों का चुनाव करते समय कलावर्ग, विज्ञान वर्ग एवं वाणिज्य वर्ग के शिक्षक-शिक्षिकाओं को निश्चित अनुपात में किया जा सकता था।

(ब) भावी शोध हेतु सुझाव -

प्रस्तुत शोध समस्या से सम्बन्धित निम्न समस्याओं पर शोध कार्य सम्पन्न किये जा सकते हैं-

1. प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि एवं शिक्षण-अभिक्षमता के प्रभाव का अध्ययन।

2. महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि एवं शिक्षण-अभिक्षमता के प्रभाव का अध्ययन।
3. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक-उपलब्धि एवं शिक्षण-अभिक्षमता के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
4. महाविद्यालयीय शिक्षक शिक्षिकाओं की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
5. माध्यमिक स्तर पर कलावर्ग एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
6. बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के कला संकाय, विधि संकाय एवं विज्ञान संकाय के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
7. सह शिक्षा एवं महिला महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
8. ट्यूशन या कोचिंग से जुड़े माध्यमिक विद्यालयीय शिक्षकों एवं ट्यूशन या कोचिंग से दूर रहने वाले माध्यमिक विद्यालयीय शिक्षकों की व्यवसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
9. शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों एवं जिला शिक्षक एवं प्रशिक्षण संस्थान में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
10. सहायता प्राप्त महाविद्यालयों एवं स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षण से जुड़े शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
11. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनके प्रधानाचार्य की प्रशासनिक शैली के प्रभाव का अध्ययन।
12. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि और उनकी शिक्षण प्रभाविकता के मध्य सह सम्बन्ध का अध्ययन।
13. शिक्षामित्र, बी.टी.सी. प्रशिक्षित एवं विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षित प्राथमिक शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
14. माध्यमिक शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर उनके विषय के परीक्षा परिणाम के प्रभाव का अध्ययन।
15. शिक्षकों के जीवन मूल्यों का उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
16. बी.एड. कालेज, इंजीनियरिंग कालेज एवं मेडिकल कालेज के प्राध्यापकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

17. स्ववित्त पोषित कालेजों के बी.एड. विभागाध्यक्ष एवं बी.एड. प्राध्यापकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

18. स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के शिक्षक शिक्षा विभाग के प्राध्यापकों एवं अन्य विषयों के प्राध्याप की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

19. प्राथमिक स्तर पर सहायक अध्यापक, प्रधानाध्यापक, संकुल प्रभारी, बी.आर.सी. प्रभारी के रूप में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

20. महाविद्यालयीय शिक्षकों की शिक्षण में रूचि और उनकी व्यावसायिक-सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन।

21. सहायता प्राप्त महाविद्यालयों एवं स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों में बी.एड. मे अध्ययनरत छात्राध्यापकों की शिक्षण-अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन।

22. प्राथमिक स्तर पर परिषदीय विद्यालय एवं प्राइवेट शिक्षकों की शिक्षण-अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन।

23. प्राथमिक स्तर पर परिषदीय विद्यालय एवं प्राइवेट शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

24. प्राथमिक स्तर के हिन्दी मीडियम एवं इंगलिश मीडियम वाले पब्लिक स्कूलों के शिक्षकों की व्यावसायिक-सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची
एवं
परिशिष्ट

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

आस्थाना, विपिन : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1985

अग्निहोत्री, रवीन्द्र : आधुनिक भारतीय शिक्षा-समस्याएँ और समाधान
जयपुर; राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1987

अग्निहोत्री, ब्रह्मस्वरूप : सर्वेक्षणों के प्रतिचयन सिद्धान्त
लखनऊ; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, 1981

अग्रवाल, एस.के. : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त
मेरठ; मॉडर्न पब्लिसर्स, 1985

अदावाल, सुबोध एवं उनियाल : भारतीय शिक्षा की समस्यायें तथा प्रवृत्तियाँ
लखनऊ; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, 1982

ओझा, आर.के. : औद्योगिक मनोविज्ञान
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर 1986

ओड, एल.के. : शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि
जयपुर; राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1994

ओड, एल.के. : शिक्षा के नूतन आयाम
जयपुर; राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1990

अयोध्या सिंह : भारत का मुक्ति-संग्राम
दिल्ली; नागरी प्रिन्टर्स, 2004

भाई योगेन्द्र सिंह : बाल मनोविज्ञान
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1986

भटनागर, ए.बी. एवं भटनागर मीनाक्षी व अनुराग : भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास
मेरठ; सूर्या पब्लिकेशन, 2006

भटनागर, ए.बी. एवं भटनागर मीनाक्षी एवं अनुराग : शैक्षिक एवं मानसिक मापन
मेरठ; आर.लाल बुक डिपो, 2008

भटनागर, ए.बी. एवं भटनागर मीनाक्षी : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
मेरठ; सूर्या पब्लिकेशन, 1997

भटनागर, सुरेश : शिक्षण अधिगम एवं विकास का मनोविज्ञान
मेरठ; इन्टरनेशनल पब्लिसिंग हाउस, 1977

भटनागर, सुरेश : भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास
मेरठ; आर.लाल बुक डिपो, 2005

भटनागर, आर.पी. व अन्य : शिक्षा अनुसंधान-विधि एवं विश्लेषण
मेरठ; ईगल बुक्स इन्टरनेशनल, 1995

भटनागर, आर.पी. एवं भटनागर, अनुराग : शिक्षण एवं शोध अभियोग्यता
मेरठ; इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2006

भटनागर, सुरेश : आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ
मेरठ; मेरठ पब्लिशिंग हाउस, 1991-92

बैस, एच.एस. : शाला प्रशासन
दिल्ली; दोआबा हाउस, 1990

चौबे, सरयू प्रसाद : शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1972

चौबे, सरयू प्रसाद : ब्रिटिश, रूस, अमेरिका तथा भारतीय-शिक्षा व्यवस्थायें
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1974

दास, अभिलाष : कबीर अमृतवाणी
इलाहाबाद; कबीर पारख संस्थान, 2001

दीक्षित, सीताशरण : उपनिषद
नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, 2001

फ्रांसिस जेय ब्राउन : शैक्षिक समाज विज्ञान
लखनऊ; उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1974

गैरिटी, हैनरी ई. : शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
लुधियाना, कल्याणी पब्लिशर्स, 1984

गुप्ता, एस.पी. : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान
इलाहाबाद; शारदा प्रकाशन, 2003

गुप्ता, एस.पी. : शिक्षा का ताना-बाना
इलाहाबाद; शारदा पुस्तक भवन, 2004

गुप्ता, एस.पी. : सांख्यिकीय विधियाँ
इलाहाबाद; शारदा पुस्तक भवन, 2003

गुप्ता, एस.पी. : आधुनिक मापन तथा मूल्यांकन
इलाहाबाद; शारदा पुस्तक भवन, 1997

जगदीश, स्वरूप : कान्स्टीट्यूशन ऑफ इण्डिया (भाग-दो)
इलाहाबाद; डान्डेल वाला पब्लिकेशन, 1985

जैन, बी.एम. : रिसर्च मैथडोलॉजी
जयपुर; रिसर्च पब्लिकेश्न, 2003

जैन, किशनचन्द्र : शैक्षिक संगठन, प्रशासन एवं पर्यवेक्षण
जयपुर; राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1976

जायसवाल, सीताराम : माध्यमिक शिक्षा-सिद्धान्त
लखनऊ; प्रकाशन केन्द्र, 1987

जोशी, धनंजय : नैतिक शिक्षा एवं नागरिक बोध
नई दिल्ली; कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीव्यूटर्स, 2005

कश्यप, सुभाष : हमारा संविधान
नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2000

कपिल, एच.के. : अनुसंधान विधियाँ
आगरा; एच.वी.भार्गव बुक हाउस, 2006

कपिल, एच.के. : सांख्यिकी के मूल तत्व
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1984

कौल, लोकश : शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली
नई दिल्ली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि., 2005

कृष्ण कुमार : प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति
नई दिल्ली; श्री सरस्वती सदन, 1999

लाल, रमन बिहारी : भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएँ
मेरठ; रस्तोगी पब्लिकेशन, 2004

महेन्द्र वर्मा : बुन्देलखण्ड का इतिहास
मेरठ; सुशील प्रकाशन, संवत 2056

माथुर, एस.एस. : शिक्षा मनोविज्ञान
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1986

माहेश्वरी, अमरनाथ	:	अध्यापक शिक्षा में नीतिगत परिदृश्य नई दिल्ली; एन.सी.टी.ई., 2001
मॉर्गन,सी.टी. (अनुवाद डॉ. निर्मल शर्मा)	:	मनोविज्ञान पटना; बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1971
मल्होत्रा, पी.एल.	:	भारत में विद्यालयीय शिक्षा (वर्तमान स्थिति एवं भावी आवश्यकाताँ) नई दिल्ली; एन.सी.ई.आर.टी., 1986
मुखोपाध्याय, मर्मर	:	शिक्षा में सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबन्धन नई दिल्ली; राष्ट्रीय योजना और प्रशासन संस्थान, 2002
पाण्डेय, रामशकल	:	मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य मेरठ; आर.लाल बुक डिपो, 2000
पुरवार, हरिमोहन	:	बुन्देली बाल लोक साहित्य उरई; बुन्देलखण्ड संग्रहालय समिति, 2001
पुरवार, हरिमोहन	:	बुन्देली लोक सुभाषित उरई; बुन्देलखण्ड संग्रहालय समिति, 2000
राजपाल एवं बैनर्जी, कल्याण	:	उत्तर प्रदेश में विद्यालीय शिक्षा (अवस्थिति, चुनौतियाँ एवं भावी सम्भावनाएँ) नई दिल्ली, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद 2004
रास्तोगी, के.जी. एवं मित्तल एम.एल.	:	भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्यायें मेरठ; रस्तोगी पब्लिकेशन्स, (संस्करण पंचम)
राय, पारसनाथ	:	अनुसंधान परिचय आगरा; लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, 2004
रूहेला, सत्यपाल	:	शिक्षा का समाजशास्त्र लखनऊ; उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1972
रूहेला, सत्यपाल एवं देवेन्द्र	:	उभरते भारतीय समाज में शिक्षा नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, 2005

सफाया, आर.एन. व अन्य : आधुनिक शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्ध
नई दिल्ली; धनपतराय पब्लिसिंग कम्पनी प्रा.लि., 2005

शर्मा, जे.डी. : मनोविज्ञान की पद्धतियाँ एवं सिद्धान्त
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर (नवीनतम संस्करण)

शर्मा, आर.ए. : शिक्षा प्रशासन एवं प्रबन्धन
मेरठ; सूर्या पब्लिकेशन, 2006

शर्मा, आर.ए. : भावी शिक्षकों हेतु आधारभूत कार्यक्रम
मेरठ; सूर्या पब्लिकेशन, 2000

शर्मा, आर.ए. : शिक्षा तथा मनोविज्ञान मे परा एवं अपरा सांख्यिकी
मेरठ; आर. लाल बुक डिपो, 2005

शर्मा, आर.ए. : शिक्षा अनुसंधान
मेरठ; आर.लाल बुक डिपो, 2003

शर्मा, आर.ए. : शिक्षा और मनोविज्ञान में प्रारम्भिक सांख्यिकी
मेरठ; आर.लाल बुक डिपो, 2003

सक्सेना, एन.आर. : अध्यापक शिक्षा
मेरठ; लायल बुक डिपो, 2001

सिंह, बी.पी. : शिक्षण अधिगम एवं विकास के मनोवैज्ञानिक आधार
मेरठ; मॉडर्न पब्लिर्स, 1981-82

सिंह, रामपाल : शिक्षा में नव-चिन्तन
आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1983

सिंह, जगमोहन : प्राथमिक शिक्षा (दिशाएँ और सम्भावनाएँ)
इलाहाबाद; साहित्य संगम, 2000

सिंह, अरूण कुमार : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ
नई दिल्ली; मोतीलाल बनारसीदास, 2006

सिंह, अरूण कुमार : शिक्षा मनोविज्ञान
पटना; भारती भवन, 2007

सिंह, अरूण कुमार : उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान
दिल्ली; मोतीलाल बनारसीदास, 2006

सिंह, द्वारका प्रसाद	:	सांख्यिकी के मूल आधार आगरा; हर प्रसाद भार्गव, 1998
सुलैमान, मुहम्मद	:	शोध प्रणाली विज्ञान पटना; शुक्ला बुक डिपो, 1995
सुलैमान मुहम्मद	:	उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान नई दिल्ली; श्री जैनेन्द्र प्रेस, 2007
सुखिया, एस.पी. व अन्य	:	शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्व आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1990
सैयदैन, के.जी.	:	शिक्षा की पुनर्रचना दिल्ली; राजकमल प्रकाशन,1960
स्टिनेट, टी.एम. (अनुवादक-कृष्णचन्द्र)	:	अध्यापन-वृत्ति दिल्ली; आत्माराम एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, हिन्दी संस्करण, 2000
श्रीवास्तव, रमेशचन्द्र	:	बुन्देलखण्ड (साहित्यिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक वैभव), बाँदा; बुन्देलखण्ड प्रकाशन
श्रीवास्तव, डी.एन.	:	व्यक्तित्व का मनोविज्ञान आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 2005
श्रीवास्तव, डी.एन.	:	अनुसंधान विधियाँ आगरा; साहित्य प्रकाशन (संस्करण चतुर्थ)
तिवारी, गोविन्द	:	शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार आगर; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1985
तिवारी, आर.आर.	:	बुन्देलखण्ड दर्शन .... आगरा; साहित्य प्रकाशन (द्वितीय संस्करण)
वर्मा, महेन्द्र	:	बुन्देलखण्ड का इतिहास मेरठ; सुशील प्रकाशन, संवत 2056
वर्मा, रामपाल सिंह	:	विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा आगरा; विनोद पुस्तक मन्दिर, 1985
वर्मा, आर.पी.	:	सांख्यिकी परिचय आगरा; लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, 1975

वात्स्यायन : भारतीय दर्शन की रूपरेखा
दिल्ली; विवेक प्रकाशन, 1987

शब्दकोष -

मिश्रा, आत्मानन्द : शिक्षा कोश
कानपुर; ग्रन्थम, 1977

बाहरी, हरदेव : शिक्षक हिन्दी शब्द कोश
दिल्ली; रवीन्द्र प्रेस, 1990

भाटिया, कैलाशचन्द्र : शब्दों का ठीक प्रयोग
दिल्ली; प्रभात प्रकाशन, 1992

शोध पत्रिकाएँ-

: प्राथमिक शिक्षक, (शैक्षिक संवाद पत्रिका)
नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र

: भारतीय आधुनिक शिक्षा, (शैक्षिक संवाद पत्रिका)
नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र

: शिक्षा चिन्तन
कानपुर; त्रिमूर्ति संस्थान

: शोध-धारा (मानविकी एवं समाज विज्ञान पर केन्द्रित)
उरई-जालौन; शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान

: स्मारिका (एकादश वार्षिक अधिवेशन)
झाँसी; बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय शिक्षक संघ, 2005

: राधाकमल मुकर्जी, चिन्तन परम्परा
बिजनौर; समाज विज्ञान विकास संस्थान

: शिक्षक,
सुल्तानपुर; माध्यमिक शिक्षक संघ

: विद्यामेघ
मेरठ; विद्या प्रकाशन मन्दिर लि.

: गुणवत्तापरक शिक्षा अभिप्रेरण, उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ द्वारा संचालित (शिक्षा विभाग और यूनीसेफ के सहयोग से)

केन्द्रीय प्रतिवेदन -

: बहुरूप गांधी
नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद, 1971

: प्राथमिक अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता
नई दिल्ली; राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद,

: सबके लिए शिक्षा (विश्व मनीटरिंग रिपोर्ट)
नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान (नीपा), 2002

: उत्तर प्रदेश में विद्यालयीय शिक्षा,
नई दिल्ली; राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 2004

: वार्षिक संदर्भ ग्रन्थ-2007
नई दिल्ली; प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार

: अध्यापक शिक्षा में निर्धारण एवं मूल्यांकन
नई दिल्ली; राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद,

: गाँधी के शैक्षिक विचार
नई दिल्ली; राष्ट्रीय अध्यापक परिषद, 1999

पत्र-पत्रिकाएँ-

: क्रॉनिकल इयर बुक भारत, 2007 नई दिल्ली क्रॉनिकल
नई दिल्ली; क्रॉनिकल पब्लिकेशंस, 2007

: उत्तर प्रदेश; एक अध्ययन, प्रतियोगिता साहित्य सीरीज 2003

: उपविद्यालय निरीक्षक भर्ती परीक्षा, आगरा; साहित्य भवन पब्लिकेशन, 2006

: अमर उजाला, कानपुर संस्करण; 23 जुलाई 2008

: दैनिक वार्षिकी, कानपुर, दैनिक जागरण, 2003

BIBLIOGRAPHY

Agrawal, J.C.	:	Education in India Since, 1991 (Significant Document, Recent Development, Statictics an Ph.D. Theses) Delhi; Doaba House, 1988
Agrawal, J.C.	:	Essentials of Educational Psychology, New Delhi; Vikas Publishing House, Pvt. Ltd., 2005
Allport, G.W.	:	Attitudes; A Handbook of Social Psychology, Won Chester; Mass Univershal Press, 1935
Anastaso, Ann	:	Psychological Testing New York; Mac millan.co.inc, 1976
Aqarari, Y.P.	:	Statistical Methods : Concept; Application and Computation Agra; Bhargava Book House.
Ary, Donald	:	Introduction to Result in Education
Association of Indian Universities	:	University News New Delhi; Association of Indian Universities Theses of The month 3 July 2006-11 Feb. 2007 11 February 2007
Bhandarkar, S.S.	:	Association of Indian Universities, New Delhi;A.I.U. House, 1985
Bhatnagar, R.P.	:	Educational Administration Meerut; International Publishing House, 1978
Best, J.M. and Khan, J.V.	:	Research in Education Delhi; Prentice hall of India, 1993
Buch, M.B.	:	A Suvey of Research in Education Baroda; Centre of Advanced Study in Phychology and Educaiton, 1974
Buch, M.B.	:	Second Survey of Research in Education (1972 to 78) Baroda; Society for Educational Research and development, 1979)
Buch, M.B.	:	Third Survey of Research in Education (1978-83) New Delhi ; N.C.E.R.T., 1987
Buch. M.B.	:	Fourth Survey of Education Research (1983-88) Volume I and II, New Delhi ; N.C.E.R.T., 1991.
Chauhan, S.S.	:	Advanced Education Psychology. Meerut; International Publishing House, 1989

CHopra, Rakesh : Academic, Dictionary of Education
Delhi; Isha Books; 2005

Crow, . and Crow, A. : Educational Psychology.
New Delhi; Eurasia Publishing house, 1963.

Cron bach, Lee. J. : Essentials of Psychological Testing
New York; Harpen an Row, 1966

Dembo, M.H. : Teaching for Learning : Applying Educational
Phychology in Tha Classroom.
Santa Monica, C.A. Goodyear, 1977.

Despande, S.W. and Lodhi, P.H. : Academic Achievment and Some Psychological
Variables.J. of The Institute of Educational Research,
1981

Engelhart, M.D. : Methods of Educational Research, Chicago;
Rand Me Nally & Company, 1972

Garritt, H.E. and Wood Woorthe, R.S. : Statistics in Psychology & Education, Bombay;
Vikils Paper andSimon Pvt. Ltd. 1971

Good Carter, V. : Introduction to Educational Research (IInd Edition)
New York; Appletiòn-Centary-Crofts, 1963

Guilford, J.P. : Fundamental Statistics in Psychology and Educaiton
New York; Me Graw hill book Company, 1965

Guilford, J.P. : Psychometric Methods
New York; Mc Graw hill book Company, 1954

Gupta, S.P. : Job Satisfaction Among Teachers
Allahabad; Sharda Pustak Bhawan, 2006

Kelley, T.L. : Interpretation of Educational Measurement
Yonkers; World book Co., 1939.

Kerlinger, F.N. : Foundations of Behavioral Research,
Delhi; Surjeet Publications, 2004

Kerlinger, F.N. : Foundations at Behavioural Research
Delhi; Surjeet Publications, 2004

Khan, Mohd. Sarif : Education Research
New Delhi; Ashish Publication house, 1990.

Khan, Mohd. Sharif : Educational Administration
New Delhi; Ashish Publishing House, 1980.

Khanna, S.D. Saxena, V.K., : Educational Administration Planning Supervision
an Financing.

Lamba, T.P., Murthy, V.	:	Delhi; Doba House, 1989
Kothari, R.C.	:	Research Methodology, New Delhi; New Age International, 2005
Koul, Lokesh	:	Methodology of Educational Research, New Delhi,; Vikas Publishing house Pvt. Ltd.
Lohithakshan, P.N.	:	Diclionary of Education, apractical Approach, New Delhi; Kanishka Pablishers, Distributors, 2005
Mukerji, S.N.	:	Education in India Today and Tomarrow Agra; Vinod Pustak Mandir, 1991
Morse, M.C. and Wingo, G.M.	:	Psychology n Teaching Bambay; D.B. Taraporevala Sons and Co. Pvt. Ltd. 1970
Nanda, S.K.	:	Eucation for Competitive Examination Delhi; Doaba Book House, 2002
Panday, K.P.	:	Fundamental of Educational Research Varanasi;Vishwavidyalaya-Prakashan, 2005
Panday, K.P.	:	Advanced Educational Psychology for Teachers Ghaziabad; Amitash Prakashna, 1983
Pani, Amarendra	:	Reforms and innovationsin Indian Higher Education New Delhi; A.I.U. 2004
Rai, B.C.	:	School Organization and Management
Rao, D.Bhashara, and Damera, Sridhar	:	Job-Satisfaction of School Teachers 2005
Sabharwal, N.	:	Studies and Investigations of Teacher Education in India, New Delhi; N.C.E.R.T., 1992
Saxena, N.R. Swaroop	:	Principles of Education
Sharma, J.P.	:	Fifth Survey of Education Research (1988-92) Volume I and II, New Delhi; N.C.E.R.T., 2000
Sharma. N.K.	:	Eucational an vocational Guidence, Agra, Vinod Pustak Mandir
Sharma, Neerja	:	Evaluating Childran in Primary Education New Delhi; Discovery Publishing House, 2005
Singh, Jyoti	:	Education and Human Resource Development New Delhi; Deep and Deep Publications Pvt. Ltd. 2004
Srivastava, Ashirbadi Lal	:	For the Effective control o Anaerobic Infection Agra; Shiv Lal Agarwala and Company, 1969

Stodla, Q. and Stordalil, K. : Basic Educational Tests and Measurements New Delhi; Thomson Press (India), Ltd. 1972

Travers, Robert. M.W. : Introduction to Educational Research, New York, Mac Millan, 1978

Tripathi, C.R. : Research Methodology (methods) an Techniques.

Tuckman, Bruce. W. : Conducting Educational Research New York; Harcourt, 1972

Upal, Sweta : Sixth Survey of Educational Research (1993-2000) Vol. I New Delhi; N.C.E.R.T., 2006

Vashistha, K.K. : Association of Indian Universities, New Delhi; A.I.U. House 2002

Yadav, M.S. and : Educationall Research Methodological Perspectives Baroda, Centre of avance study in Education, 1989

Dictionary Eng. clopedia -

Andre M.Colman : Oxford Dictionary of Psychology, United States; Andrew M, Colman. 2005

Brajmohan : Meenakshi, English-Hindi Dictionary Meerut, Meenakshi Prakashna, 1991

Chopra, Rakesh : Academic Dictionary of Education Delhi; Isha Books, 2005

Good, Carter M.V. : Dictionary of Education New Yark; M.G. Graw hill Book Company, 1973 Indigo Dictionary of Education New Delhi, Cosmo Publications, 2005

Lorin, W. Anderson : International Encyclopedia of Teaching and Teacher Education U.K.; Cambridge University Press Cambrige, 1995

Pandit, B.S. : Amit Student Oxford Dictionary Delhi; Student Book Dept. 2000

: Indigo Dictionary of Education New Delhi; Cosmo Publication, 2005

Central document -

: Anweshika Indian Journal of Teacher Education, New Delhi; N.C.T.E., 2004

: Bibliography of Higher Education in India, New Delhi; A.I.U., 2002.

: Conceptual Inputs for Secondary Teacher Education
New Delhi; N.C.E.R.T., 2003

: Educational Psychology,
New Delhi; Prentice Hall of India Pvt. Ltd. 1990

: Govt. of India-Education Commission report (1964-66)
New Delhi; Ministry of Human Resources Development, 1992

: Govt. of India-National Policy on Education,
New Delhi; Ministry of Human Resources Development, 1986

: Govt. of India-Programme of Action,
New Delhi; Department of Education, Ministry of Human Resources Development, 1992

: Indian Education Review,
New Delhi; N.C.E.R.T., 2007

: Journal of Educational Planning and Administration
New Delhi; NIEPA, 2006

: National Curriculum Framework for School Education,
New Delhi; N.C.E.R.T., 2000

: Reforms and Innovations in Higher Education
New Delhi; Association of Indian Universities (A.I.U.), 2001

: Seventh All India School Education Survey,
New Delhi; N.C.E.R.T., June, 2005

शासकीय, अशासकीय, सहायता प्राप्त एवं वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों की सूची

बाँदा

राजकीय विद्यालय

1. राजकीय इण्टर कालेज, बाँदा
2. राजकीय इण्टर कालेज, मटौंध
3. गांधी राजकीय इण्टर कालेज, ओरन
4. राजकीय बालिका इण्टर कालेज, बाँदा
5. राजकीय बालिका इण्टर कालेज, अतर्रा
6. राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बेलगांव
7. राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कालिंजर
8. राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पैलानी
9. राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, फतेहगंज
10. राजकीय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, तिन्दवारी
11. राजकीय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कमासिन
12. राजकीय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बबेरू
13. राजकीय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बिसण्डा

अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालय

14. डी.ए.वी. इण्टर कालेज, बाँदा
15. आदर्श बजरंग इण्टर कालेज, बाँदा
16. आर्य कन्या इण्टर कालेज, बाँदा
17. भगवती ओमर बालिका इण्टर कालेज, बाँदा
18. स्व. कामता प्रसाद शास्त्री इण्टर कालेज, बदौसा
19. परमहंस राजकीय इण्टर कालेज, खपटिहा कला
20. सत्य नारायण इण्टर कालेज, तिन्दवारी
21. मधुसूदन दास इण्टर कालेज, जसपुरा
22. पंडित जवाहरलाल नेहरू कालेज, चन्दवारा

23. जे.पी. शर्मा इण्टर कालेज, बबेरू
24. कैप्टन बद्री प्रसाद इण्टर कालेज, मिलाथू
25. आदर्श इण्टर कालेज, बिसण्डा
26. हिन्दू इण्टर कालेज, अतर्रा
27. ब्रह्म विद्या इण्टर कालेज, अतर्रा
28. राजकुमार इण्टर कालेज, नरैनी
29. सरस्वती इण्टर कालेज, अतर्रा
30. विवेकानन्द इण्टर कालेज, नरैनी
31. जनता इण्टर कालेज, खुरहण्ड
32. किसान इण्टर कालेज, नौहाई
33. पं. जवाहरलाल नेहरू इण्टर कालेज, गिरवां
34. खानकाह इण्टर कालेज, बाँदा
35. इण्टर मीडिएट कालेज, तिन्दवारा
36. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पनगरा
37. विनोबा इण्टर कालेज, कमासिन
38. संगम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, चिल्ला
39. जयभारत इण्टर कालेज, मुरवल
40. भारत भ0स0 इण्टर कालेज, ब्योंजा
41. कैलाशपति इण्टर कालेज, बेर्रांव
42. आदर्श किसान इण्टर कालेज, भभुवा
43. शंकर कृ.स. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पुकारी

वित्तविहीन विद्यालय

44. उच्चर माध्यमिक विद्यालय, पपरेन्दा
45. डा. भीमराव अम्बेदकर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जसपुरा
46. जयदुर्गे उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बीरा
47. विकास उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जामू
48. दिखित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बेन्दा
49. लवकुश उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बबेरू

50. विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बबेरू
51. इन्द्रपाल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पवैया
52. आदर्श बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, भभुवा
53. बा.बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय करहुली
54. सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, बाँदा
55. बद्री प्रसाद महे. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खुटला
56. श्याम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बाँदा
57. आदर्श शिक्षा नि.उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बाँदा
58. एच.एल.उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बाँदा
59. राष्ट्रीय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बाँदा
60. नगरपालिका बालिका उच्चतर माध्यमिका विद्यालय, बाँदा
61. फात्मा गर्ल्स उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बाँदा
62. आदर्श बजरंग विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बाँदा
63. हनुमान बाहुक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कुलकुम्हारी
64. बूटूबाई इण्टर कालेज, अतर्रा
65. सुभाष उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, अतर्रा
66. वेथेल मिशन इण्टर कालेज, नरैनी
67. स्व. फरजन्दअली मेमो. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कबरई
68. महर्षि विद्यापीठ पटेल कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बबेरू
69. बीरांगना लक्ष्मीबाई उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बाँदा
70. सरस्वती बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, केनपथ-बाँदा
71. स्व. हरिप्रसाद सिगरौर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बबेरू
72. उपकार बालिका इण्टर कालेज, ओरन

चित्रकूट

1. राजकीय इण्टर कालेज, बरगढ़
2. राजकीय बालिका इण्टर कालेज, कर्वी
3. राजकीय बालिका इण्टर कालेज, राजापुर
4. राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, घुरेटनपुर

5. राजकीय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मानिकपुर
6. चित्रकूट इण्टर कालेज, कर्वी
7. श्री गंगा प्रसाद जनसेवा इण्टर कालेज, कर्वी
8. सेठ रा.कृ. पोद्दार इण्टर कालेज, चित्रकूटधाम
9. आदर्श इण्टर कालेज, मानिकपुर
10. त्यागी इण्टर कालेज, ऐंचवारा
11. कृषक इण्टर कालेज, भौंरी
12. कौशाम्बी इण्टर कालेज, मऊ
13. महर्षि बाल्मीकि इण्टर कालेज, खण्डेहा
14. सुभाष इण्टर कालेज, इटवां
15. गोस्वामी इण्टर कालेज, छीबों
16. तुलसी इण्टर कालेज, राजापुर
17. ना.रा. सकंटमोचन इण्टर कालेज, बछरन
18. रतननाथ इण्टर कालेज, रसिन
19. आदर्श हलधर इण्टर कालेज, कपना इटौरा
20. पालेश्वर नाथ इण्टर कालेज, पहाड़ी
21. हनुमत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नांदीतौरा
22. बजरंग इण्टर कालेज, सपहा
23. कालिका देवी इण्टर कालेज, पुरवा तरौंहा
24. जे.आर. आर. इण्टर कालेज, कर्वी
25. जे.पी. इण्टर कालेज, कर्वी
26. बी.बी. सरस्वती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कर्वी
27. शंकर इण्टर कालेज, देवकली
28. धीरेन्द्र इण्टर कालेज, राजापुर
29. ज्ञानभारती इण्टर कालेज, कर्वी
30. जी.डी.एन.डी.एस.एन.उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कर्वी
31. जे.एम. कन्या इण्टर कालेज, कर्वी
32. कल्याण भारती इण्टर कालेज, कालूपुर

33. सी.एस.एम. इण्टर कालेज, रगौली
34. स्व. आर.पी. कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पहाड़ी
35. के.एन.जे.एन. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खटवारा राजापुर
36. कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मऊ
37. सतगुरू उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बरद्वारा
38. पंडित शिवकुमार त्रिपाठी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मऊ
39. सरधुवा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सरधुवा
40. जितेन्द्र उच्चतर माध्यमिक विद्याल, राजापुर
41. बाबा प्राणनाथ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पूरबपताई
42. सहज गर्ल्स हाईस्कूल, कर्वी
43. स्व. महादेव उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नांदिन कुर्मियान
44. जे.एम.पब्लिक आवासीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कर्वी
45. स्व. बुइयबाई उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बेड़ीपुलिया कर्वी
46. श्री संजयगांधी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, हन्नाबिनैका मऊ
47. चन्द्रेश उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बरगढ़
48. सेन्ट्रल पब्लिक हायर सेकेण्ड्री स्कूल पराको, राजापुर
49. श्री सुन्दर सिंह पटेल स्मृति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पटेल नगर लालता रोड, मऊ

हमीरपुर

1. राजकीय इण्टर कालेज, हमीरपुर
2. राजकीय इण्टर कालेज, मुस्करा
3. राजकीय इण्टर कालेज, सरीला
4. राजकीय बालिका इण्टर कालेज, हमीरपुर
5. राजकीय बालिका इण्टर कालेज, मौदहा
6. राजकीय बालिका इण्टर कालेज, राठ
7. राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कुरारा
8. राजकीय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सुमेरपुर
9. राजकीय बालिका उच्चतर माध्यमिका विद्यालय, सिसोलर
10. राजकीय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, गोहाण्ड

अशासकीय सहायता प्राप्त

11. श्री विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, हमीरपुर
12. श्री विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, हमीरपुर
13. इस्लामियाँ इण्टर कालेज, हमीरपुर
14. राजाराम इण्टर कालेज, झलोखर
15. गायत्री विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, सुमेरपुर
16. नेशनल इण्टर कालेज, मौदहा
17. रहमानियाँ इण्टर कालेज, मौदहा
18. चौहान पहलवान सिंह इण्टर कालेज, इचौली
19. भष्मानन्द इण्टर कालेज, लोदीपुर निवादा
20. पी.एन.वी. इण्टर कालेज, चिल्ली
21. जी.आर.बी.इण्टर कालेज, राठ
22. बी.एन.बी.इण्टर कालेज, राठ
23. गांधी इण्टर कालेज, गोहाण्ड

हाईस्कूल स्तर पर सहायता प्राप्त इण्टर स्तर पर वित्तविहीन

24. एस.बी.इण्टर कालेज, पौथिया
25. हीरानन्द इण्टर कालेज, बिबाँर
26. गोबिन्द इण्टर कालेज, गहरौली
27. फैज.ए.आम. इण्टर कालेज, राठ
28. रामस्वरूप दास इण्टर कालेज, धगबाँ
29. पंडित परमानन्द इण्टर कालेज, मगरौठ
30. गांधी इण्टर कालेज, मौदहा

सहायता प्राप्त हाईस्कूल

31. बुन्देलखण्ड उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, चिल्ली
32. प्रेम हायर सेकेण्ड्री स्कूल नौगवां
33. आदर्श समदर्शी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खण्डेहीजार

हाईस्कूल स्तर पर सवित्त मान्यता इण्टर स्तर पर वित्तविहीन

34. पंडित लक्ष्मीचन्द्र पालीवाल इण्टर कालेज, इंगोहटा

इण्टर स्तर तक वित्तविहीन विद्यालय

35. श्री कंचनलाल सगुणा इण्टर कालेज, पारा
36. सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, हमीरपुर
37. सरस्वती बाल मन्दिर इण्टर कालेज, राठ
38. परमहंस बुन्देलखण्ड इण्टर कालेज, सुमेरपुर
39. गायत्री विद्या मन्दिर बालिका इण्टर कालेज, सुमेरपुर
40. रामनारायण नौबद्ध दृणोमर वैश्य बालिका

इण्टर कालेज कुरारा (सीधी मान्यता)

41. आदर्श इण्टर कालेज, मौदहा

वित्तविहीन हाईस्कूल

42. चेतनदास उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, राठ
43. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पहाड़ी, भिटारी
44. साधूराम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कन्धोली
45. सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मौदहा
46. मोतीलाल सुमिर तिनदेवी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मौहर
47. रामचरन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कारीमाटी
48. श्री कृष्णराज मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, छानी

सीधे हाईस्कूल वित्तविहीन मान्यता प्राप्त

49. शल्लेश्चर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सरीला
50. सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कुरारा
51. एच.एस. कान्वेन्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कुरारा
52. श्रीपत सहाय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जराखर
53. डा. अम्बेदकर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, गोहाण्ड
54. शान्ति सरस्वती शिक्षा निकेतन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मवईजार
55. श्रीमती विद्यादेवी पालीबाल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मौदहा
56. शिवाजी साहूजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कुछेछा
57. चित्रगुप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, राठ
58. बाबा लल्ली निषाद मेमोरियल विद्यालय परसनी

59. आचार्य श्याम सिंह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पन्थरी
60. बाल विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कुरारा
61. भरत कुमार बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खेडा शिलाजीत
62. हीरानन्द बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बिबॉर
63. रानी अवन्तीबाई बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मुस्करा
64. विवेकानन्द बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, हमीरपुर
65. गुरूदयाल साहू बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, इचौली
66. मॉ शारदा बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, राठ

ललितपुर

1. राजकीय इण्टर कालेज, ललितपुर
2. राजकीय बालिका इण्टर कालेज, ललितपुर
3. श्री वर्णी जैन इण्टर कालेज, ललितपुर
4. पी.एन. इण्टर कालेज, ललितपुर
5. नगरपालिका बालिका इण्टर कालेज, ललितपुर
6. राजकीय बालिका इण्टर कालेज, तालबेहट
7. राजकीय बालिका इण्टर कालेज, महरौली
8. श्री मर्दन सिंह इण्टर कालेज, तालबेहट
9. शान्ति निकेतन इण्टर कालेज, महरौनी
10. सी.बी.गुप्ता इण्टर कालेज, महरौनी
11. स.वि.मा.उ.मा.वि., महरौनी
12. मदनमोहन मालवीय इण्टर कालेज, गुढ़ा
13. जिला परिषद इण्टर कालेज, पाली
14. सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पाली
15. इण्टर कालेज, बांसी
16. किसान इण्टर कालेज, बिरधा
17. सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, मडावरा
18. बुन्देलखण्ड इण्टर कालेज, जाखलौन
19. राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जखौरा

20. राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बार
21. राष्ट्रीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय माताटीला
22. श्री छ.सा.उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नाराहट
23. सरस्वती मन्दिर बालिका इण्टर कालेज, मडावरा
24. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बानपुर
25. सरदार पटल बालिका हाईस्कूल, खितवांस
26. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सैदपुर
27. वर्णी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, गदयाना
28. आचार्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मडावरा
29. संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मडावरा
30. दी. श्री रघु. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, अजीतपारा
31. स्वामी दयानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सोजना

झांसी

1. राजकीय इण्टर कालूज, झांसी
2. राजकीय इण्टर कालेज, समथर
3. राजकीय इण्टर कालेज, सकरार
4. सूरज प्रसाद राजकीय बालिका इण्टर कालेज, झांसी
5. राजकीय बालिका इण्टर कालेज, बरूआ सागर
6. राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, रक्सा
7. राजकीय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बबीना
8. राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कटेरा
9. राजकीय बालिका इण्टर कालेज, रानीपुर
10. राजकीय बालिका इण्टर कालेज, मऊरानीपुर
11. राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शाहजहाँपुर
12. राजकीय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, गुरसराँय

अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालय

13. विपिन बिहारी इण्टर कालेज, झांसी
14. लक्ष्मी व्यायाम मन्दिर इण्टर कालेज, झांसी

15. एस.पी.आई.इण्टर कॉलेज, झांसी
16. सरस्वती इण्टर कालेज, झांसी
17. गुरूनानक खालसा इण्टर कालेज, झांसी
18. क्रिश्चियन इण्टर कालेज, झांसी
19. संत जूड्स इण्टर कालेज, झांसी
20. नेशनल हाफिज सिद्दीकी इण्टर कालेज, झांसी
21. लोकमान्य तिलक कन्या इण्टर कालेज, झांसी
22. आर्य कन्या इण्टर कालेज, झांसी
23. कस्तूरबा इण्टर कालेज, झांसी
24. डा. राजेन्द्र प्रसाद कन्या इण्टर कालेज, झांसी
25. पंडित कृष्ण चन्द्र शर्मा कन्या इण्टर कालेज, झांसी
26. सनातन धर्म कन्या इण्टर कालेज, झांसी
27. डी.ए.वी. हाईस्कूल, झांसी
28. राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन हाईस्कूल झांसी
29. शिक्षक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, झांसी
30. महर्षि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बबीना
31. लाल बहादुर शास्त्री इण्टर कालेज, बबीना
32. श्री कृष्ण आदर्श इण्टर कालेज, बड़ागाँव
33. बड़ागाँव इण्टर कालेज, बड़ागाँव
34. पण्डित रामसहाय शर्मा इण्टर कालेज बरूआसागर
35. श्री गांधी इण्टर कॉलेज मऊरानीपुर
36. दमेले इण्टर कॉलेज, मऊरानीपुर
37. दमेले इण्टर कॉलेज, मऊरानीपुर
38. नगरपालिका बालिका इण्टर कालेज, मऊरानीपुर
39. महावीर जैन इण्टर कालेज, रानीपुर
40. गौरईया इण्टर कॉलेज, गैराहा
41. रघुनाथदास बु.वि.म. इण्टर कॉलेज, मऊरानीपुर
42. पं. जवाहर लाल नेहरू इण्टर कॉलेज, उल्दन

43. आदर्श इण्टर कालेज, मोंठ
44. के.सी.पी. इण्टर कॉलेज, मोंठ
45. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, करगुवां
46. गांधी ग्रामोद्योग उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, भरोसा
47. भागीरथ भारद्वाज इण्टर कालेज, पूंछ
48. सुभाष इण्टर कालेज, पूंछ
49. महन्त रामेश्वर दास उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, अमरा
50. सरदार पटेल इण्टर कालेज, चिरगांव
51. राजमाता लड़ई दुलैया कन्या इण्टर कालेज, चिरगांव
52. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, चिरगांव
53. नगरपालिका कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय समथर
54. महाराजा राधाचरण उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, समथर
55. अखण्डानन्द जनता इण्टर कालेज, गरौठा
56. हनुमन्त कालेज बामौर
57. लोकमान्य तिलक इण्टर कालेज, इस्किल
58. गोस्वामी तुलसीदास इण्टर कालेज, एरच
59. त्यागमूर्ति आत्माराम खेर इण्टर कालेज, गुरसरॉय
60. आदर्श जनप्रिय इण्टर कालेज, टहरौली
61. हरिहर क्षेत्र इण्टर कालेज, लठवारा

वित्तविहीन विद्यालय

62. वीरांगना झलकारी इण्टर कालेज, झांसी
63. एच.एम. मेमोरियल कन्या इण्टर कालेज, झांसी
64. निर्मला कान्वेन्ट हाईस्कूल, झांसी
65. सेन्ट मेरीज हाईस्कूल, झांसी
66. डॉ. बी.आर. अम्बेडकर साइंस इण्टर कालेज, झांसी
67. भानी देवी गोयल सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, झांसी
68. उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत परिषद इण्टर कालेज, झांसी
69. जिला परिषद इण्टर कालेज, भेल

70. सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बरूआसागर
71. पंण्डित दीनदयाल उपाध्याय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, झांसी
72. ज्ञान स्थली पब्लिक इण्टर कालेज, झांसी
73. विलेज इण्टर कालेज, राजगढ़
74. सरस्वती विद्या मन्दिर कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सदर-झांसी
75. भगवती ज्ञान मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, झांसी
76. जनक हाईस्कूल, झांसी
77. जनता कान्वेन्ट हाईस्कूल, हंसारी
78. स्वामी विवेकानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, झांसी
79. सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, दीनदयाल नगर-झांसी
80. गुरु हरकिशन हाईस्कूल, झांसी
81. नेशनल हाफिज सिद्दीकी कन्या इण्टर कालेज, झांसी
82. महाराजा बाल मन्दिर हाईस्कूल झांसी
83. विजय सिंह मेमोरियल हाईस्कूल झांसी
84. सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पारीछा
85. लार्ड महाकालेश्वर हाईस्कूल, झांसी
86. कलावती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, राजगढ़
87. एम.एस. राजपूत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, झांसी
88. दयाल पब्लिक हाईस्कूल, भेल
89. आर.के. कान्वेन्ट हाईस्कूल, झांसी
90. डॉ. कृष्ण गोपाल द्विवेदी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, झांसी
91. गुरूकुल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, झांसी
92. कुलदीप सरस्वती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, झांसी
93. रामलला कन्या हाईस्कूल झांसी
94. महेन्द्र सिंह आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, झांसी
95. सन्नी कान्वेन्ट हाईस्कूल, झांसी
96. डॉ. एस. राधाकृष्णन इण्टर कालेज, झांसी
97. शिवा कान्वेन्ट हाईस्कूल, झांसी

98. आदर्श पब्लिक हाईस्कूल, झांसी
99. एम.डी.वाई मॉडर्न हाईस्कूल तैदोल बरूआसागर
100. शिव उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बम्हौरी
101. विश्वनाथ छिरौल्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पृथ्वीपुर सियावरी
102. सेन्ट मेरी इण्टर कालेज मऊरानीपुर
103. दीपक मेमोरियल कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मऊरानीपुर
104. सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मऊरानीपुर
105. सिद्धेश्वर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सिजारी बुजुर्ग
106. जय बजरंग उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सकरार
107. स्वामी अखण्डा विश्म्भरानन्द महाराज हाईस्कूल चुरारा
108. स्वामी देवानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, भड़रा
109. युग निर्माण इण्टर कालेज, खिल्ली
110. पद्‌मजा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पाण्डोरी
111. बेनी वृन्दावन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कुम्हरिया
112. सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, चिरगांव
113. सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, समथर
114. गौराबाई कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मोंठ
115. रामस्वरूप कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पूंछ
116. छोटेलाल सहारिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, चिरगांव
117. बलू पाल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बंगरा बंगरी
118. सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मोंठ
119. भगवती स्वारूपानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, ककरवई
120. कल्याण बाल विद्या मन्दिर गुरसरॉय
121. गरौठा कन्या हाईस्कूल गरौठा
122. महावीर बाल संस्कार उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, गुरसरॉय
123. छक्कीलाल गेड़ा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टोड़ी फतेहपुर
124. आलोक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पण्डवाहा
125. इण्डियन पब्लिक हाईस्कूल बबीना

126. कृष्णा पब्लिक हाईस्कूल, बबीना
127. जयहिन्द मिशन हाईस्कूल, गरौठा
128. कन्या हाईस्कूल मोंठ
129. सेंट जोसफ हाईस्कूल, झांसी
130. आर.सी.सी. पब्लिक हाईस्कूल, झांसी
131. वीरांगना अवंतीबाई कन्या हाईस्कूल, एवनी

जालौन

1. बालधर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, उरई
2. जयदेवी अवस्थ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, उरई
3. सेठ भगवती प्रसाद उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, एट
4. बाबूराम एम कॉम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, एट
5. रोशन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, उरई
6. राष्ट्रीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, उरई
7. बाल भारती इण्टर कालेज, उरई
8. स्वामी विवेकानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, उरई
9. गणेश उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, उरई
10. एस.आर.इण्टर कालेज, उरई
11. मार्निंग स्टार उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, उरई
12. इस्लामिया इण्टर कालेज, उरई
13. सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, उरई
14. तेज सिंह आशीर्वाद बालिका इण्टर कालेज, उरई
15. शहीद अशफाक उल्ला बालिका इण्टर कालेज, उरई
16. अम्बिका प्रसाद दुबे उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सेर
17. स्वामी वेदानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, ददरी
18. श्री रामचरन दुबे उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, धन्तौली
19. श्री मथुरा प्रसाद यादव उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, गिरथान
20. महादेवा बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पचोखर
21. सनातन बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, उरई

22. महाकवि कालिदास उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, उरई
23. चौधरी चरण सिंह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, उरई
24. अर्चना महेश्वरी बालिका उरई
25. रामजी लाल पाण्डेय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पाण्डेय नगर-उरई
26. हमीर सिंह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पचीपुरा उरई
27. रामप्रसाद उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, परैथा
28. सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, कोंच
29. जे.एन.पी. इण्टर कालेज, रेढ़ण
30. महात्मा ज्योतिवा राव कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खकसीस
31. श्री कृष्ण विद्यापीठ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पिरौना
32. महन्त उदासी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, छानी
33. चौधरी गजेन्द्र सिंह इण्टर कालेज, बाबई
34. जनता उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, छानी खास
35. स्व. गम्भीर सिंह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, छिरिया सलेमपुर
36. डा. अम्बेडकर इण्टर कालेज, जालौन
37. स्वामी विवेकानन्द इण्टर कालेज, जालौन
38. रघुराज उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सिकरी राजा
39. लक्ष्मी नारायण उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सहाव
40. बुन्देलखण्ड इण्टर कालेज, माधौगढ़
41. बाबा दयालदास इण्टर कालेज, एको
42. जवाहर इण्टर कालेज, गोहन
43. जिला परिषद इण्टर कालेज, ऊमरी
44. जनता सनातन धर्म इण्टर कालेज, कुठौन्द
45. लहरी बाबा इण्टर कालेज, बाबली
46. राजमाता वैश्नी जू0 देंव इण्टर कालेज, जगम्मनपुर
47. एमर सिंह इण्टर कालेज, रामपुरा
48. अभिमन्यु इण्टर कालेज, क्योलारी
49. महात्मा गांधी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कुदारी

50. स्वामी विवेकानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, ईगुई
51. एम.एस.वी. इण्टर कालेज, कालपी
52. ठक्करवाबा इण्टर कालेज, कालपी
53. आर्य कन्या इण्टर कालेज, कालपी
54. वीर सिंह इण्टर कालेज, बबीना
55. फतेहचन्द्र स्मारक इण्टर कालेज, उदनपुर
56. बी.एम.टी.इ. का. आटा
57. लाल बहादुर शास्त्री उ.मा. वि. नसीरपुर
58. चौ. गजेन्द्र सिंह इ.का. सिम्हारा कासिमपुर
59. नेहरू औद्यो. इ.का. सरसई
60. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शहीद नगर
61. जनता उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, निवहना
62. इण्टर कालेज, इटौरा
63. नगरपालिका बालिका इण्टर कालेज, कालपी

RAW SCORE SHEET

S.No.	Sex	Sex Code	Inst. Type	Inst. Type Code	Achievem- ent faction	Job Satis- Aptitute	Teaching
1.	Female	1	Private	1	55	136	181
2.	Female	1	Private	1	55	148	56
3.	Female	1	Private	1	50	150	52
4.	Female	1	Private	1	50	146	51
5.	Female	1	Private	1	65	142	40
6.	Female	1	Private	1	50	153	42
7.	Female	1	Private	1	55	168	56
8.	Female	1	Private	1	55	132	220
9.	Female	1	Private	1	40	107	60
10.	Female	1	Private	1	55	122	40
11.	Female	1	Private	1	50	137	38
12.	Female	1	Private	1	55	143	60
13.	Female	1	Private	1	60	121	86
14.	Female	1	Private	1	60	123	78
15.	Female	1	Private	1	60	148	98
16.	Female	1	Private	1	60	136	39
17.	Female	1	Private	1	50	134	220
18.	Female	1	Private	1	55	138	170
19.	Female	1	Private	1	60	132	76
20.	Female	1	Private	1	55	107	51
21.	Female	1	Private	1	45	122	50
22.	Female	1	Private	1	50	136	153
23.	Female	1	Private	1	50	121	38
24.	Female	1	Private	1	50	143	60
25.	Female	1	Private	1	50	126	51
26.	Female	1	Private	1	50	131	38
27.	Female	1	Private	1	50	130	60
28.	Female	1	Private	1	40	104	39
29.	Female	1	Private	1	40	109	41
30.	Female	1	Private	1	50	109	158
31.	Female	1	Private	1	45	103	185
32.	Female	1	Private	1	45	94	39
33.	Female	1	Private	1	50	119	111
34.	Female	1	Private	1	45	102	41
35.	Female	1	Private	1	50	112	51
36.	Female	1	Private	1	50	97	53
37.	Female	1	Private	1	50	135	215
38.	Female	1	Private	1	50	126	77
39.	Female	1	Private	1	65	110	56
40.	Female	1	Private	1	55	124	60
41.	Female	1	Private	1	55	119	154
42.	Female	1	Private	1	65	120	44
43.	Female	1	Private	1	65	135	63
44.	Female	1	Private	1	60	134	80
45.	Female	1	Private	1	65	113	193
46.	Female	1	Private	1	65	121	60
47.	Female	1	Private	1	45	93	52
48.	Female	1	Private	1	35	119	81
49.	Female	1	Private	1	40	117	116
50.	Female	1	Private	1	45	117	53

RAW SCORE SHEET

S.No.	Sex	Sex Code	Inst. Type	Inst. Type Code	Achievem- ent faction	Job Satis- Aptitute	Teaching
51.	Female	1	Private	1	45	116	96
52.	Female	1	Private	1	45	118	152
53.	Female	1	Semi-govt.	2	30	102	55
54.	Female	1	Semi-govt.	2	45	109	55
55.	Female	1	Semi-govt.	2	45	97	88
56.	Female	1	Semi-govt.	2	45	120	210
57.	Female	1	Semi-govt.	2	50	108	38
58.	Female	1	Semi-govt.	2	50	117	55
59.	Female	1	Semi-govt.	2	55	121	38
60.	Female	1	Semi-govt.	2	45	108	83
61.	Female	1	Semi-govt.	2	35	115	57
62.	Female	1	Semi-govt.	2	35	118	112
63.	Female	1	Semi-govt.	2	45	104	50
64.	Female	1	Semi-govt.	2	45	113	91
65.	Female	1	Semi-govt.	2	50	130	39
66.	Female	1	Semi-govt.	2	30	124	103
67.	Female	1	Semi-govt.	2	55	125	65
68.	Female	1	Semi-govt.	2	40	128	145
69.	Female	1	Semi-govt.	2	50	111	69
70.	Female	1	Semi-govt.	2	55	136	37
71.	Female	1	Semi-govt.	2	50	148	39
72.	Female	1	Semi-govt.	2	50	130	51
73.	Female	1	Semi-govt.	2	55	140	41
74.	Female	1	Semi-govt.	2	55	138	58
75.	Female	1	Semi-govt.	2	50	146	90
76.	Female	1	Semi-govt.	2	50	150	59
77.	Female	1	Semi-govt.	2	55	161	52
78.	Female	1	Semi-govt.	2	65	123	39
79.	Female	1	Semi-govt.	2	55	126	220
80.	Female	1	Semi-govt.	2	55	157	172
81.	Female	1	Semi-govt.	2	55	146	38
82.	Female	1	Semi-govt.	2	55	128	54
83.	Female	1	Semi-govt.	2	55	96	38
84.	Female	1	Semi-govt.	2	55	138	56
85.	Female	1	Semi-govt.	2	55	146	56
86.	Female	1	Semi-govt.	2	50	130	76
87.	Female	1	Semi-govt.	2	55	127	38
88.	Female	1	Semi-govt.	2	40	131	111
89.	Female	1	Semi-govt.	2	50	130	52
90.	Female	1	Semi-govt.	2	45	140	220
91.	Female	1	Semi-govt.	2	50	136	60
92.	Female	1	Semi-govt.	2	60	138	51
93.	Female	1	Semi-govt.	2	50	140	78
94.	Female	1	Semi-govt.	2	50	138	55
95.	Female	1	Semi-govt.	2	50	146	47
96.	Female	1	Semi-govt.	2	50	156	56
97.	Female	1	Semi-govt.	2	50	178	139
98.	Female	1	Semi-govt.	2	50	168	170
99.	Female	1	Semi-govt.	2	50	170	51
100.	Female	1	Semi-govt.	2	55	128	60

RAW SCORE SHEET

S.No.	Sex	Sex Code	Inst. Type	Inst. Type Code	Achievem- ent faction	Job Satis- Aptitute	Teaching
101.	Female	1	Semi-govt.	2	60	125	48
102.	Female	1	Semi-govt.	2	65	128	41
103.	Female	1	Semi-govt.	2	65	128	115
104.	Female	1	Semi-govt.	2	65	124	94
105.	Female	1	Semi-govt.	2	65	119	64
106.	Female	1	Semi-govt.	2	65	119	53
107.	Female	1	Semi-govt.	2	65	98	39
108.	Female	1	Semi-govt.	2	60	136	55
109.	Female	1	Semi-govt.	2	60	121	106
110.	Female	1	Semi-govt.	2	60	132	39
111.	Female	1	Semi-govt.	2	45	142	54
112.	Female	1	Govt.	3	55	132	88
113.	Female	1	Govt.	3	65	123	49
114.	Female	1	Govt.	3	65	119	53
115.	Female	1	Govt.	3	55	119	139
116.	Female	1	Govt.	3	45	113	140
117.	Female	1	Govt.	3	45	125	128
118.	Female	1	Govt.	3	45	119	54
119.	Female	1	Govt.	3	55	116	70
120.	Female	1	Govt.	3	45	127	43
121.	Female	1	Govt.	3	55	122	38
122.	Female	1	Govt.	3	65	90	67
123.	Female	1	Govt.	3	60	121	41
124.	Female	1	Govt.	3	65	127	42
125.	Female	1	Govt.	3	65	121	126
126.	Female	1	Govt.	3	50	126	41
127.	Female	1	Govt.	3	65	121	45
128.	Female	1	Govt.	3	65	128	67
129.	Female	1	Govt.	3	60	135	165
130.	Female	1	Govt.	3	60	102	53
131.	Female	1	Govt.	3	65	121	55
132.	Female	1	Govt.	3	50	114	60
133.	Female	1	Govt.	3	55	127	52
134.	Female	1	Govt.	3	60	121	44
135.	Female	1	Govt.	3	65	116	70
136.	Female	1	Govt.	3	65	128	51
137.	Female	1	Govt.	3	50	105	54
138.	Female	1	Govt.	3	60	135	90
139.	Female	1	Govt.	3	65	116	72
140.	Female	1	Govt.	3	60	123	60
141.	Female	1	Govt.	3	60	132	44
142.	Female	1	Govt.	3	60	132	41
143.	Female	1	Govt.	3	55	105	51
144.	Female	1	Govt.	3	60	110	53
145.	Female	1	Govt.	3	50	127	89
146.	Female	1	Govt.	3	60	109	51
147.	Female	1	Govt.	3	55	124	39
148.	Female	1	Govt.	3	65	99	115
149.	Female	1	Govt.	3	65	95	41
150.	Female	1	Govt.	3	60	115	56

RAW SCORE SHEET

S.No.	Sex	Sex Code	Inst. Type	Inst. Type Code	Achievement faction	Job Satis- Aptitute	Teaching
151.	Female	1	Govt.	3	50	134	75
152.	Female	1	Govt.	3	65	120	148
153.	Female	1	Govt.	3	65	132	53
154.	Female	1	Govt.	3	65	103	134
155.	Female	1	Govt.	3	55	120	53
156.	Female	1	Govt.	3	50	127	50
157.	Female	1	Govt.	3	65	127	51
158.	Female	1	Govt.	3	50	126	42
159.	Female	1	Govt.	3	55	132	39
160.	Female	1	Govt.	3	60	123	44
161.	Female	1	Govt.	3	55	127	62
162.	Female	1	Govt.	3	60	124	44
163.	Female	1	Govt.	3	65	112	38
164.	Female	1	Govt.	3	50	137	44
165.	Female	1	Govt.	3	40	132	56
166.	Female	1	Govt.	3	40	126	78
167.	Female	1	Govt.	3	55	121	44
168.	Female	1	Govt.	3	45	137	51
169.	Female	1	Govt.	3	30	132	42
170.	Female	1	Govt.	3	60	123	39
171.	Female	1	Govt.	3	30	143	44
172.	Female	1	Govt.	3	55	147	134
173.	Female	1	Govt.	3	60	137	44
174.	Female	1	Govt.	3	55	108	153
175.	Female	1	Govt.	3	55	124	55
176.	Female	1	Govt.	3	50	131	151
177.	Female	1	Govt.	3	50	134	139
178.	Female	1	Govt.	3	65	135	56
179.	Female	1	Govt.	3	55	110	77
180.	Female	1	Govt.	3	55	122	56
181.	Female	1	Govt.	3	55	158	48
182.	Female	1	Govt.	3	60	146	78
183.	Female	1	Govt.	3	65	130	67
184.	Female	1	Govt.	3	55	121	220
185.	Female	1	Govt.	3	50	132	220
186.	Female	1	Govt.	3	55	143	38
187.	Female	1	Govt.	3	55	158	48
188.	Female	1	Govt.	3	60	110	54
189.	Female	1	Govt.	3	60	111	67
190.	Female	1	Govt.	3	65	117	120
191.	Female	1	Govt.	3	65	111	40
192.	Female	1	Govt.	3	65	133	201
193.	Female	1	Govt.	3	60	97	41
194.	Female	1	Govt.	3	60	116	156
195.	Female	1	Govt.	3	50	118	53
196.	Female	1	Govt.	3	60	119	111
197.	Female	1	Govt.	3	50	119	60
198.	Female	1	Govt.	3	60	114	53
199.	Female	1	Govt.	3	60	99	53
200.	Female	1	Govt.	3	65	97	65

RAW SCORE SHEET

S.No.	Sex	Sex Code	Inst. Type	Inst. Type Code	Achievem-ent faction	Job Satis-Aptitute	Teaching
201.	Female	1	Govt.	3	55	136	181
202.	Female	1	Govt.	3	55	148	56
203.	Female	1	Govt.	3	50	150	52
204.	Female	1	Govt.	3	50	146	51
205.	Female	1	Govt.	3	65	142	40
206.	Female	1	Govt.	3	50	153	42
207.	Female	1	Govt.	3	50	168	56
208.	Female	1	Govt.	3	55	132	220
209.	Female	1	Govt.	3	40	107	60
210.	Female	1	Govt.	3	50	122	40
211.	Male	2	Private	1	50	137	38
212.	Male	2	Private	1	55	143	60
213.	Male	2	Private	1	60	121	86
214.	Male	2	Private	1	60	123	78
215.	Male	2	Private	1	60	148	98
216.	Male	2	Private	1	60	136	39
217.	Male	2	Private	1	50	134	220
218.	Male	2	Private	1	55	138	170
219.	Male	2	Private	1	60	132	76
220.	Male	2	Private	1	55	107	51
221.	Male	2	Private	1	45	122	50
222.	Male	2	Private	1	50	136	153
223.	Male	2	Private	1	50	121	38
224.	Male	2	Private	1	50	143	60
225.	Male	2	Private	1	50	126	51
226.	Male	2	Private	1	50	131	38
227.	Male	2	Private	1	50	130	60
228.	Male	2	Private	1	40	104	39
229.	Male	2	Private	1	40	109	41
230.	Male	2	Private	1	50	109	158
231.	Male	2	Private	1	45	103	185
232.	Male	2	Private	1	45	94	39
233.	Male	2	Private	1	50	119	111
234.	Male	2	Private	1	45	102	41
235.	Male	2	Private	1	50	112	51
236.	Male	2	Private	1	50	97	53
237.	Male	2	Private	1	50	135	215
238.	Male	2	Private	1	50	126	77
239.	Male	2	Private	1	65	110	56
240.	Male	2	Private	1	55	124	60
241.	Male	2	Private	1	55	119	154
242.	Male	2	Private	1	65	120	44
243.	Male	2	Private	1	65	135	63
244.	Male	2	Private	1	60	134	80
245.	Male	2	Private	1	65	113	193
246.	Male	2	Private	1	65	121	60
247.	Male	2	Private	1	45	93	52
248.	Male	2	Private	1	35	119	81
249.	Male	2	Private	1	40	117	116
250.	Male	2	Private	1	45	117	53

RAW SCORE SHEET

S.No.	Sex	Sex Code	Inst. Type	Inst. Type Code	Achievem-ent faction	Job Satis-Aptitute	Teaching
251.	Male	2	Private	1	45	116	96
252.	Male	2	Private	1	45	118	152
253.	Male	2	Private	1	30	102	55
254.	Male	2	Private	1	45	109	55
255.	Male	2	Private	1	45	97	188
256.	Male	2	Private	1	45	120	210
257.	Male	2	Private	1	50	108	38
258.	Male	2	Private	1	50	117	55
259.	Male	2	Private	1	55	121	38
260.	Male	2	Private	1	55	125	87
261.	Male	2	Private	1	65	129	37
262.	Male	2	Private	1	65	127	53
263.	Male	2	Private	1	65	131	40
264.	Male	2	Private	1	65	112	56
265.	Male	2	Private	1	65	117	39
266.	Male	2	Private	1	45	115	38
267.	Male	2	Private	1	50	112	37
268.	Male	2	Private	1	65	134	60
269.	Male	2	Private	1	55	121	135
270.	Male	2	Private	1	50	118	54
271.	Male	2	Private	1	45	120	55
272.	Male	2	Private	1	30	78	55
273.	Male	2	Private	1	60	124	39
274.	Male	2	Private	1	45	112	182
275.	Male	2	Private	1	30	150	170
276.	Male	2	Private	1	60	116	146
277.	Male	2	Private	1	50	120	191
278.	Male	2	Private	1	45	94	162
279.	Male	2	Private	1	55	118	182
280.	Male	2	Private	1	65	93	68
281.	Male	2	Private	1	60	117	46
282.	Male	2	Private	1	55	78	122
283.	Male	2	Private	1	55	124	38
284.	Male	2	Private	1	50	112	60
285.	Male	2	Private	1	50	150	37
286.	Male	2	Private	1	50	147	38
287.	Male	2	Private	1	55	140	43
288.	Male	2	Private	1	60	142	40
289.	Male	2	Private	1	60	138	39
290.	Male	2	Private	1	55	130	56
291.	Male	2	Private	1	65	147	69
292.	Male	2	Private	1	60	146	218
293.	Male	2	Private	1	55	145	38
294.	Male	2	Private	1	55	140	47
295.	Male	2	Private	1	55	138	184
296.	Male	2	Private	1	55	126	180
297.	Male	2	Private	1	50	121	38
298.	Male	2	Private	1	50	122	47
299.	Male	2	Private	1	55	128	77
300.	Male	2	Private	1	50	138	42

RAW SCORE SHEET

S.No.	Sex	Sex Code	Inst. Type	Inst. Type Code	Achievem-ent faction	Job Satis-Aptitute	Teaching
301.	Male	2	Private	1	60	140	47
302.	Male	2	Private	1	50	138	48
303.	Male	2	Private	1	50	146	39
304.	Male	2	Private	1	55	158	56
305.	Male	2	Private	1	50	176	78
306.	Male	2	Private	1	45	167	56
307.	Male	2	Private	1	55	176	78
308.	Male	2	Private	1	50	165	38
309.	Male	2	Private	1	50	156	118
310.	Male	2	Private	1	50	165	109
311.	Male	2	Private	1	50	100	78
312.	Male	2	Private	1	50	120	56
313.	Male	2	Private	1	50	131	216
314.	Male	2	Private	1	45	132	55
315.	Male	2	Private	1	50	138	44
316.	Male	2	Private	1	55	107	51
317.	Male	2	Private	1	45	120	56
318.	Male	2	Private	1	45	121	48
319.	Male	2	Semi-Govt.	2	50	136	51
320.	Male	2	Semi-Govt.	2	45	122	39
321.	Male	2	Semi-Govt.	2	45	125	60
322.	Male	2	Semi-Govt.	2	45	125	55
323.	Male	2	Semi-Govt.	2	65	116	58
324.	Male	2	Semi-Govt.	2	50	132	41
325.	Male	2	Semi-Govt	2	30	125	44
326.	Male	2	Semi-Govt.	2	45	110	56
327.	Male	2	Semi-Govt.	2	40	117	39
328.	Male	2	Semi-Govt.	2	45	109	42
329.	Male	2	Semi-Govt.	2	65	102	50
330.	Male	2	Semi-Govt.	2	30	111	80
331.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	115	60
332.	Male	2	Semi-Govt.	2	65	96	80
333.	Male	2	Semi-Govt.	2	65	117	51
334.	Male	2	Semi-Govt.	2	50	137	111
335.	Male	2	Semi-Govt.	2	45	130	79
336.	Male	2	Semi-Govt.	2	45	125	60
337.	Male	2	Semi-Govt.	2	40	126	70
338.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	120	100
339.	Male	2	Semi-Govt.	2	60	130	83
340.	Male	2	Semi-Govt.	2	50	117	133
341.	Male	2	Semi-Govt.	2	60	130	112
342.	Male	2	Semi-Govt.	2	60	123	184
343.	Male	2	Semi-Govt.	2	40	128	37
344.	Male	2	Semi-Govt.	2	60	125	113
345.	Male	2	Semi-Govt.	2	50	124	79
346.	Male	2	Semi-Govt.	2	60	118	151
347.	Male	2	Semi-Govt.	2	60	123	70
348.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	126	212
349.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	124	197
350.	Male	2	Semi-Govt.	2	45	128	201

RAW SCORE SHEET

S.No.	Sex	Sex Code	Inst. Type	Inst. Type Code	Achievem-ent faction	Job Satis-Aptitute	Teaching
351.	Male	2	Semi-Govt.	2	50	112	43
352.	Male	2	Semi-Govt.	2	50	116	53
353.	Male	2	Semi-Govt.	2	50	109	40
354.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	121	55
355.	Male	2	Semi-Govt.	2	65	115	59
356.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	132	54
357.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	125	41
358.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	137	64
359.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	128	119
360.	Male	2	Semi-Govt.	2	45	112	37
361.	Male	2	Semi-Govt.	2	45	116	55
362.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	109	41
363.	Male	2	Semi-Govt.	2	50	107	64
364.	Male	2	Semi-Govt.	2	50	115	40
365.	Male	2	Semi-Govt.	2	45	132	53
366.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	137	59
367.	Male	2	Semi-Govt.	2	45	89	54
368.	Male	2	Semi-Govt.	2	35	116	64
369.	Male	2	Semi-Govt.	2	40	127	45
370.	Male	2	Semi-Govt.	2	40	118	50
371.	Male	2	Semi-Govt.	2	45	122	69
372.	Male	2	Semi-Govt.	2	40	116	42
373.	Male	2	Semi-Govt.	2	35	116	43
374.	Male	2	Semi-Govt.	2	50	104	53
375.	Male	2	Semi-Govt.	2	40	106	42
376.	Male	2	Semi-Govt.	2	40	128	68
377.	Male	2	Semi-Govt.	2	50	117	96
378.	Male	2	Semi-Govt.	2	45	128	54
379.	Male	2	Semi-Govt.	2	40	119	45
380.	Male	2	Semi-Govt.	2	35	130	37
381.	Male	2	Semi-Govt.	2	40	137	38
382.	Male	2	Semi-Govt.	2	35	104	51
383.	Male	2	Semi-Govt.	2	40	106	168
384.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	165	38
385.	Male	2	Semi-Govt.	2	50	158	37
386.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	161	56
387.	Male	2	Semi-Govt.	2	60	159	164
388.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	168	38
389.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	172	38
390.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	131	76
391.	Male	2	Semi-Govt.	2	60	156	63
392.	Male	2	Semi-Govt.	2	50	141	65
393.	Male	2	Semi-Govt.	2	50	133	70
394.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	131	60
395.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	146	58
396.	Male	2	Semi-Govt.	2	60	148	204
397.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	156	214
398.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	158	167
399.	Male	2	Semi-Govt.	2	45	160	179
400.	Male	2	Semi-Govt.	2	55	131	119

RAW SCORE SHEET

S.No.	Sex	Sex Code	Inst. Type	Inst. Type Code	Achievem- ent faction	Job Satis- Aptitute	Teaching
401.	Male	2	Semi-Govt	2	45	130	52
402.	Male	2	Semi-Govt	2	55	128	105
403.	Male	2	Semi-Govt	2	65	123	39
404.	Male	2	Semi-Govt	2	45	119	81
405.	Male	2	Semi-Govt	2	45	120	80
406.	Male	2	Semi-Govt	2	60	121	60
407.	Male	2	Semi-Govt	2	65	131	60
408.	Male	2	Semi-Govt	2	60	136	68
409.	Male	2	Semi-Govt	2	50	148	56
410.	Male	2	Semi-Govt	2	50	160	52
411.	Male	2	Semi-Govt	2	50	130	60
412.	Male	2	Semi-Govt	2	50	132	58
413.	Male	2	Semi-Govt	2	50	146	56
414.	Male	2	Semi-Govt	2	50	148	43
415.	Male	2	Semi-Govt	2	55	107	219
416.	Male	2	Semi-Govt	2	50	132	219
417.	Male	2	Semi-Govt	2	50	122	38
418.	Male	2	Semi-Govt	2	50	137	76
419.	Male	2	Semi-Govt	2	50	107	56
420.	Male	2	Semi-Govt	2	55	120	111
421.	Male	2	Semi-Govt	2	55	123	110
422.	Male	2	Semi-Govt	2	55	129	37
423.	Male	2	Semi-Govt	2	55	118	37
424.	Male	2	Semi-Govt	2	55	120	38
425.	Male	2	Semi-Govt	2	60	121	39
426.	Male	2	Semi-Govt	2	55	123	111
427.	Male	2	Semi-Govt	2	60	126	155
428.	Male	2	Semi-Govt	2	50	122	182
429.	Male	2	Semi-Govt	2	50	123	138
430.	Male	2	Semi-Govt	2	60	97	60
431.	Male	2	Semi-Govt	2	65	96	60
432.	Male	2	Semi-Govt	2	60	130	37
433.	Male	2	Semi-Govt	2	60	132	47
434.	Male	2	Semi-Govt	2	60	140	39
435.	Male	2	Semi-Govt	2	50	136	202
436.	Male	2	Semi-Govt	2	45	132	163
437.	Male	2	Semi-Govt	2	50	142	60
438.	Male	2	Semi-Govt	2	60	130	51
439.	Male	2	Semi-Govt	2	60	128	37
440.	Male	2	Govt.	3	60	130	39
441.	Male	2	Govt.	3	50	126	41
442.	Male	2	Govt.	3	60	132	38
443.	Male	2	Govt.	3	65	135	39
444.	Male	2	Govt.	3	55	137	38
445.	Male	2	Govt.	3	50	132	38
446.	Male	2	Govt.	3	55	136	98
447.	Male	2	Govt.	3	50	140	39
448.	Male	2	Govt.	3	45	137	151
449.	Male	2	Govt.	3	50	132	38
450.	Male	2	Govt.	3	50	130	37

RAW SCORE SHEET

S.No.	Sex	Sex Code	Inst. Type	Inst. Type Code	Achievem-ent faction	Job Satis-Aptitute	Teaching
451.	Male	2	Govt.	3	50	128	58
452.	Male	2	Govt.	3	55	130	38
453.	Male	2	Govt.	3	50	126	38
454.	Male	2	Govt.	3	50	137	60
455.	Male	2	Govt.	3	60	122	38
456.	Male	2	Govt.	3	45	121	39
457.	Male	2	Govt.	3	55	90	38
458.	Male	2	Govt.	3	55	118	56
459.	Male	2	Govt.	3	60	132	41
450.	Male	2	Govt.	3	55	115	42
461.	Male	2	Govt.	3	50	94	77
462.	Male	2	Govt.	3	50	92	52
463.	Male	2	Govt.	3	50	121	100
464.	Male	2	Govt.	3	50	129	77
465.	Male	2	Govt.	3	60	115	133
466.	Male	2	Govt.	3	50	109	124
467.	Male	2	Govt.	3	65	123	50
468.	Male	2	Govt.	3	55	107	121
469.	Male	2	Govt.	3	50	126	36
470.	Male	2	Govt.	3	50	136	77
471.	Male	2	Govt.	3	45	130	60
472.	Male	2	Govt.	3	45	122	56
473.	Male	2	Govt.	3	45	123	60
474.	Male	2	Govt.	3	55	117	60
475.	Male	2	Govt.	3	45	120	44
476.	Male	2	Govt.	3	55	111	44
477.	Male	2	Govt.	3	45	118	100
478.	Male	2	Govt.	3	50	76	60
479.	Male	2	Govt.	3	50	98	45
480.	Male	2	Govt.	3	50	124	44
481.	Male	2	Govt.	3	45	115	96
482.	Male	2	Govt.	3	40	112	77
483.	Male	2	Govt.	3	60	126	67
484.	Male	2	Govt.	3	55	118	56
485.	Male	2	Govt.	3	40	126	37
486.	Male	2	Govt.	3	30	118	50
487.	Male	2	Govt.	3	50	103	56
488.	Male	2	Govt.	3	55	130	68
489.	Male	2	Govt.	3	50	128	52
490.	Male	2	Govt.	3	50	138	56
491.	Male	2	Govt.	3	50	147	50
492.	Male	2	Govt.	3	55	150	38
493.	Male	2	Govt.	3	50	160	56
494.	Male	2	Govt.	3	50	170	38
495.	Male	2	Govt.	3	55	182	48
496.	Male	2	Govt.	3	50	178	60
497.	Male	2	Govt.	3	50	160	97
498.	Male	2	Govt.	3	50	135	70
499.	Male	2	Govt.	3	45	132	176
500.	Male	2	Govt.	3	60	140	40

RAW SCORE SHEET

S.No.	Sex	Sex Code	Inst. Type	Inst. Type Code	Achievem-ent faction	Job Satis-Aptitute	Teaching
501.	Male	2	Govt.	3	50	146	60
502.	Male	2	Govt.	3	50	149	38
503.	Male	2	Govt.	3	50	138	56
504.	Male	2	Govt.	3	50	137	60
505.	Male	2	Govt.	3	45	130	37
506.	Male	2	Govt.	3	50	127	58
507.	Male	2	Govt.	3	50	111	95
508.	Male	2	Govt.	3	50	126	119
509.	Male	2	Govt.	3	55	138	98
510.	Male	2	Govt.	3	50	140	39
511.	Male	2	Govt.	3	60	143	41
512.	Male	2	Govt.	3	60	128	51
513.	Male	2	Govt.	3	55	127	37
514.	Male	2	Govt.	3	60	126	77
515.	Male	2	Govt.	3	60	124	39
516.	Male	2	Govt.	3	55	122	39
517.	Male	2	Govt.	3	55	120	84
518.	Male	2	Govt.	3	55	121	43
519.	Male	2	Govt.	3	55	78	40
520.	Male	2	Govt.	3	55	97	38
521.	Male	2	Govt.	3	55	102	156
522.	Male	2	Govt.	3	50	117	96
523.	Male	2	Govt.	3	60	138	41
524.	Male	2	Govt.	3	55	148	38
525.	Male	2	Govt.	3	60	150	78
526.	Male	2	Govt.	3	55	151	146
527.	Male	2	Govt.	3	55	153	76
528.	Male	2	Govt.	3	65	143	78
529.	Male	2	Govt.	3	65	173	87
530.	Male	2	Govt.	3	60	180	76
531.	Male	2	Govt.	3	55	136	67
532.	Male	2	Govt.	3	55	135	76
533.	Male	2	Govt.	3	50	148	60
534.	Male	2	Govt.	3	60	156	111
535.	Male	2	Govt.	3	50	97	41
536.	Male	2	Govt.	3	55	138	38
537.	Male	2	Govt.	3	55	178	84
538.	Male	2	Govt.	3	55	160	38
539.	Male	2	Govt.	3	45	130	78
540.	Male	2	Govt.	3	40	122	57
541.	Male	2	Govt.	3	30	120	111
542.	Male	2	Govt.	3	45	117	78
543.	Male	2	Govt.	3	43	111	142
544.	Male	2	Govt.	3	40	113	99
545.	Male	2	Govt.	3	30	83	136
546.	Male	2	Govt.	3	45	84	177
547.	Male	2	Govt.	3	60	126	211
548.	Male	2	Govt.	3	45	126	212
549.	Male	2	Govt.	3	45	82	133
550.	Male	2	Govt.	3	45	94	160

गोपनीय

© APRC : 76.4.50 HE

व्यावसायिक-सन्तुष्टि मापन यन्त्र
(JOB SATISFACTION INSTRUMENT)

Constructed and Standardised By :

Dr. R. S. MISHRA, M.A. (Pol. Sc. and Psychol.)
Lecturer in Health Education
Deptt. of Obst. and Gyanecology
S. N. Medical College, Agra

•

Dr. MANORAMA TIWARI, M. A. Ph-D., D. Litt.
and
D. N. PANDAY, M.A. (Eco.), M. Sc. (Stat.)
Statistian Cum Lecturer, SPM Deptt.
Medical College, Gorakhpur, (U. P.)

व्यक्तिगत सूचनाएँ—

नाम .... आयु .... शिक्षा ....

व्यवसाय .... आमदनी .... ग्रामीण/शहरी ....

वैवाहिक स्तर—विवाहित/विधुर/अविवाहित सम्बन्ध विच्छेद।

निर्देश

1. यह प्रपत्र अनुसन्धान कार्य के लिए है अतः आपके द्वारा बतायी गयी सभी सूचनाएँ गोपनीय रखी जावेंगी। आप कृपया निःसंकोच होकर उत्तर दीजिए।
2. इस प्रपत्र में कुछ कथन दिये हैं तथा प्रत्येक कथन के सम्मुख अधिक असहमत, असहमत, सामान्य, सहमत तथा अधिक सहमत लिखा है।
3. आप प्रत्येक कथन को इन्हीं पाँच आधारों पर सोचिए तथा जिस श्रेणी से सहमत हों उसी श्रेणी में सही (√) का निशान लगा दीजिए।
4. ध्यान रहे कि शीघ्रता के साथ सभी प्रश्नों का उत्तर देना है।

Published By :

Agra Psychological Research Cell
Tiwari Kothi, Belanganj, Agra-282004 (INDIA)
(Phone : 362964)

		अधिक असहमत	असहमत	सामान्य	सहमत	अधिक सहमत
1.	कार्य के घण्टे मेरे स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
2.	मैं अनुभव करता हूँ कि मेरी नौकरी में उन्नति के अच्छे अवसर हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
3.	मेरा कार्य काफी रुचिकर व मेरी पसन्द के अनुकूल है।	☐	☐	☐	☐	☐
4.	वर्तमान कार्य के घण्टे यद्यपि हमारी पसन्द की अन्य चीजों में आनन्द लेने में बाधक होते हैं, फिर भी मैं पसन्द करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
5.	वर्तमान कार्य अच्छा है, परन्तु अवकाश का समय नहीं मिलता।	☐	☐	☐	☐	☐
6.	वर्तमान पद पर रहते हुए अच्छे परिणाम का प्रदर्शन नहीं कर सकता।	☐	☐	☐	☐	☐
7.	मैं अनुभव करता हूँ कि मुझे वर्तमान में अधिक वेतन मिलना चाहिए।	☐	☐	☐	☐	☐
8.	रहने के लिए स्थान न मिलने के कारण प्रायः मैं असन्तुष्ट रहता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
9.	मेरी नौकरी अन्य नौकरी की भाँति सुरक्षित है।	☐	☐	☐	☐	☐
10.	मेरा कार्य सभी सुविधायें प्रदान करता है परन्तु प्रतिष्ठा नहीं प्रदान करता।	☐	☐	☐	☐	☐
11.	मेरे साथी मेरे कार्य में ज्यादा सहायक नहीं हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
12.	मेरी नौकरी का आधार कम वेतन तथा अधिक कार्य है।	☐	☐	☐	☐	☐
13.	मुझसे कम शिक्षित लोग मुझसे अधिक वेतन पाते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
14.	मैं अनुभव करता हूँ कि यह कार्य अन्य नौकरियों के समान सुरक्षित नहीं है।	☐	☐	☐	☐	☐
15.	मैं अन्य लोगों की भाँति अधिक वेतन पाता हूँ जो कि मेरी ही भाँति महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
16.	मेरे साथी सहायक प्रकृति के हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
17.	मुझे इस संस्थान में उन्नति के अधिक अवसर नहीं दिखाई पड़ते।	☐	☐	☐	☐	☐
18.	मेरे कार्य घण्टे ऐसे हैं कि मैं अधिक व्यस्त रहता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
19.	अधिक समय कार्य करने से, मैं अपने कार्य से सन्तुष्टि का अनुभव करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
20.	मेरा कार्य अधिक आकर्षक नहीं है।	☐	☐	☐	☐	☐
21.	मैं प्रतिदिन इस संशय से पीड़ित रहता हूँ कहीं अपनी नौकरी न खो बैठूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
22.	मेरी नौकरी मुझे अच्छे मकान की सुविधा प्रदान करती है।	☐	☐	☐	☐	☐
23.	शीघ्र ही स्थानान्तरण के कारण मुझे अपनी नौकरी कष्टप्रद लगती है।	☐	☐	☐	☐	☐
24.	मैं अनुभव करता हूँ कि मैं पूर्ण उत्तरदायित्व से कार्य करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐

		अधिक असहमत	असहमत	सामान्य	सहमत	अधिक सहमत
25.	अवकाश की सुविधाएँ होते हुए भी प्रार्थना पत्र स्वीकृत नहीं किए जाते।	☐	☐	☐	☐	☐
26.	मैं अपने अच्छे कार्य के लिए मान्यता प्राप्त करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
27.	मैं अपने कार्यों में जनता से बहुत कम सहयोग प्राप्त करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
28.	मैं अनुभव करता हूँ कि मेरी नौकरी मेरे रुचि के अनुसार नहीं है।	☐	☐	☐	☐	☐
29.	मैं इस संस्थान के अन्य कार्यकर्ताओं की तुलना में कार्य कुशल नहीं हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
30.	मैं प्रायः अपनी इच्छानुसार अपना कार्य बदलने का अनुभव करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
31.	मैं इसी वेतन पर दूसरा कार्य करना पसन्द करता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
32.	ग्रामीण क्षेत्र में कार्य करने में बहुत सी समस्याएँ होती हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
33.	आने-जाने की सुविधा न होने के कारण मैं अधिक चिन्तित रहता हूँ।	☐	☐	☐	☐	☐
34.	निर्दिष्ट लक्ष्य न प्राप्त करने पर अधिकारियों द्वारा मुझे दबाया जाता है।	☐	☐	☐	☐	☐
35.	मेरे साथी मेरी खुशियों से प्रसन्न होते हैं।	☐	☐	☐	☐	☐
36.	मैं अनुभव करता हूँ कि मुझे इस संस्था का अभिन्न अंग समझा जाता है।	☐	☐	☐	☐	☐
37.	मुझे इस संस्था में अन्य कर्मचारियों की तुलना में अधिक महत्व दिया जाता है।	☐	☐	☐	☐	☐
38.	आवश्यकता पड़ने पर मुझे मेरे कार्य में सहयोग नहीं मिल पाता।	☐	☐	☐	☐	☐
39.	मैं अनुभव करता हूँ कि मेरा कार्य रुचिकर नहीं है।	☐	☐	☐	☐	☐
40.	कभी-कभी स्थानान्तरण मेरे कार्य में बाधक नहीं बनता।	☐	☐	☐	☐	☐
41.	मैं अनुभव करता हूँ कि मेरा कार्य आरामदायक है।	☐	☐	☐	☐	☐

***

TAT

by

Drs. JAI PRAKASH and R. P. SRIVASTAVA

निर्देश

1. निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान पूर्वक पढ़िये।
2. यदि निर्देशों में कोई बात समझ में न आये तो परीक्षक से अवश्य पूछ लीजिये।
3. कृपया उत्तर-पत्र में अपना नाम, योग्यता, आयु, पद आदि, स्पष्ट लिखिये। इस पुस्तिका में न तो कुछ लिखिये और न ही किसी प्रकार का चिन्ह बनाइये।
4. उत्तर देते समय सामान्य परिस्थिति के विषय में सोचिये, किसी विशेष स्थिति का विचार न कीजिये।
5. उत्तर देने के लिए समय का कोई बन्धन नहीं है, किन्तु जितनी शीघ्रता से हो, काम कीजिये।
6. कृपया प्रत्येक वक्तव्य का उत्तर दीजिये।

उत्तर लिखने की विधि

इस पुस्तिका में 150 वक्तव्य दिये गये हैं जिनके द्वारा आपके प्रशासन सम्बन्धी विचारों का पता लगाने का प्रयत्न किया गया है। प्रत्येक वक्तव्य को पढ़िये और निर्णय कीजिए कि आपका क्या विचार है या आप कैसा अनुभव करते हैं। जैसा भी आपका विचार हो या जैसा भी आप अनुभव करते हों वैसा अपना उत्तर दिए हुए उत्तर-पत्र पर यथा-स्थान लिखिये।

	पू० स०	स०	द्वि०	अस०	पू० अस०
यदि आप दिये हुए वक्तव्य से पूर्ण सहमत हों तो पू० स० के नीचे बने खाने में सही का (√) चिन्ह बना दीजिए।	☐	☐	☐	☐	☐
यदि आप दिये हुए वक्तव्य से सहमत हों तो स० के नीचे बने खाने में सही का चिन्ह बना दीजिए।	☐	☐	☐	☐	☐
यदि आप अनिश्चित या द्विविधा में हों, तो द्वि० के नीचे बने खाने में सही का चिन्ह बना दीजिए।	☐	☐	☐	☐	☐
यदि आप दिये हुए वक्तव्य से असहमत हों तो अस० के नीचे बने खाने में सही का चिन्ह बना दीजिए।	☐	☐	☐	☐	☐
यदि आप दिये हुए वक्तव्य से पूर्ण असहमत हों तो पू० अस० के नीचे बने खाने में सही का चिन्ह बना दीजिए।	☐	☐	☐	☐	☐

जब तक कहा न जाय, कृपया पन्ना मत उलटिये

पू० स० = पूर्ण सहमत, स० = सहमत, द्वि० = द्विविधा, अस० = असहमत, पू० अस० = पूर्ण असहमत

भाग (PART) 1

1. बहुधा अध्यापक को दूसरे के साथ काम करने एवं दूसरों के लिए काम करने में आनन्द मिलता है।
2. सामान्यतया अध्यापक को दूसरों का सहयोग प्राप्त करने में सफलता मिलती है।
3. विद्यालय में और विद्यालय के बाहर दूसरे व्यक्तियों को अध्यापक की आवश्यकता होती है।
4. कक्षा के नियम और उपनियम ऐसे होने चाहिए कि कोई भी उनका उल्लंघन न कर सके।
5. अधिकांशत: विद्यार्थी अध्यापकों को परेशान व नाराज करने के लिए ही दुर्व्यवहार करते हैं।
6. छात्रों को अपने अध्यापकों से खुले रूप में असहमत हो सकने का अधिकार है।
7. यह संसार सहयोग की भावना पर ही चलता है।
8. अच्छी व्यवस्था के लिए दृढ़ शासन की आवश्यकता होती है।
9. विद्यालय की व्यवस्था में छात्र परिषद् का सहयोग अधिक अच्छा है।
10. समाज हमारे लिए है और हम समाज के लिए हैं।
11. यह आशा नहीं करनी चाहिए कि छात्रों को विद्यालय में विनोद मिलेगा।
12. आजकल भी प्राचीन काल की तरह छात्रों को कठिन दण्ड देने की आवश्यकता है।
13. बहुत से विद्यार्थी अध्यापक के लिए बहुत-सी चीजें सरल बना देने का प्रयास करते हैं।
14. विद्यालय के प्रबन्ध एवं व्यवस्था का उत्तरदायित्व केवल उसके प्रधानाध्यापक पर होता है।
15. छात्रों को अध्यापक की सभी बातों को मानना चाहिए क्योंकि अध्यापक कक्षा में सर्वोपरि है।

भाग (PART) 2

16. अध्यापक समाज में विनम्र एवं विचारशील होने का प्रयास करता है।
17. यदि बच्चे की व्यवस्था करने में अभिभावक असमर्थ हो तो अध्यापक द्वारा यह कार्य पूरा नहीं किया जा सकता।
18. बहुत से विद्यार्थी, जब उन्हें स्वयं पर छोड़ दिया जाता है, अधिक प्रयत्नशील हो जाते हैं।
19. सभी बच्चों की एक साथ कक्षा-वृद्धि कर देने से उनके अर्जित ज्ञान का स्तर गिरता है।
20. जो अध्यापक अधिक लोकप्रिय होते हैं वे सम्भवत: अपने विद्यार्थी को अधिक अच्छी तरह समझते हैं।
21. अधिकतर अध्यापक अपने छात्रों के प्रति बहुत ही उदार होते हैं।
22. यदि बच्चों को उन्हीं के ऊपर छोड़ दिया जाय तो वे अपने लिए स्वयं विचार करेंगे।
23. बच्चों के संवेगात्मक जीवन तथा उससे सम्बन्धित समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए।
24. अध्यापकों को अपने छात्रों की घरेलू परिस्थितियों की जानकारी भी रखनी चाहिए।
25. बच्चों की रुचि को स्कूल के काम का आधार बनाना अव्यावहारिक नहीं है।

पू० स०=पूर्ण सहमत, स०=सहमत, द्वि० = द्विविधा, असं०=असहमत, पू० अस०=पूर्ण असहमत

26. बहुत से बच्चों में अत्यधिक कल्पना पाई जाती है।
27. अध्यापक को लड़ाकू और उदण्ड बालकों पर विशेष ध्यान देना पड़ता है।
28. सब बच्चे, बच्चे हैं अतः उनकी समस्याओं का समाधान सामूहिक ढंग से कर देना चाहिए।
29. यह सम्भव नहीं है कि अध्यापक कक्षा के सभी छात्रों की कठिनाइयों को जान सकें।
30. बालकों की वैयक्तिक भिन्नताओं को ध्यान में रखकर पढ़ाना सम्भव नहीं है।

भाग (PART) 3

31. कोई चीज गलत भी हो जाती है तब भी अध्यापक अपने ऊपर संयम रखते हैं।
32. अध्यवसायी छात्र निश्चय ही किसी के धैर्य को हिला देते हैं।
33. कुछ ऐसे भी क्षण होते हैं जब अध्यापक विद्यार्थी के प्रति धैर्य खो दें, तो उसे दोष नहीं दिया जा सकता।
34. बहुधा अध्यापक बार-बार बालकों को एक ही चीज समझाने में असफल होने पर क्रुद्ध एवं अप्रसन्न हो जाते हैं।
35. कक्षा में मन्द बुद्धि के बालक अध्यापक के लिए एक विकट समस्या उत्पन्न कर देते हैं।
36. अध्यापक के चारों ओर घर, विद्यालय, समाज तथा स्वयं की समस्या ही समस्या है। उन पर विजय पाकर वह अपने पवित्र कार्य में धैर्य पूर्वक संलग्न रहता है।
37. कभी-कभी प्रखर बुद्धि के बालक अनुशासन सम्बन्धी असाध्य समस्या उत्पन्न कर देते हैं।
38. बहुधा असफलतायें सफलताओं से अधिक श्रेयष्कर प्रमाणित होती हैं।
39. अध्यापक पर बालक, समाज और राष्ट्र के प्रति इतने अधिक उत्तरदायित्व हैं कि यदि वे अपना धैर्य खो भी दें, तो अनुचित नहीं है।
40. अध्यापक के बार-बार सुधारने पर भी यदि बालक नहीं सुधरता, तो अध्यापक भी उसकी परवाह नहीं करता।
41. कभी-कभी अध्यापक अपने घर का क्रोध स्कूल में बालकों पर उतारा करते हैं।
42. अध्यापक परीक्षा काल में अपने धैर्य एवं संलग्नता को बनाए रखते हैं।
43. बालक सुयोग्य नागरिक बनने के पथ पर हैं, इसलिए अध्यापक धीरे-धीरे धैर्य पूर्वक उन्हें आगे बढ़ाते हुए चलता है।
44. सामाजिक और आर्थिक समस्याओं में फँसकर अध्यापक भी अपना धैर्य खो बैठते हैं।
45. बहुधा अध्यापक विद्यालय के प्रति अपना क्रोध अपने बाल-बच्चों पर उतारा करते है।

भाग (PART) 4

46. अध्यापक नये विचार तथा नवीन विधियों को जानना और उनका प्रयोग करना पसन्द करते हैं।
47. एक अध्यापक से यह आशा नहीं करनी चाहिए कि वह अपने सायंकालीन मनोरंजन की बलि देकर एक विद्यार्थी के घर जाकर मिले।
48. अध्यापक भी गलत हो सकता है जैसे कि छात्र।
49. बालकों में तीव्र जिज्ञासा पाई जाती है।
50. व्यक्तिगत उद्देश्य और सामाजिक उद्देश्य एक दूसरे के पूरक हैं।

पू० स० = पूर्ण सहमत, स० = सहमत, द्वि० = द्विविधा, अस० = असहमत, पू० अस० = पूर्ण असहमत

51. शिक्षा प्रत्येक बालक को समाज में रखकर उसकी विशेषताओं को विकसित कर उसे समाजोपयोगी बनाती है।
52. अध्यापक बालक, विद्यालय, समाज और सरकार के प्रति उत्तरदायी होते हैं।
53. अध्यापक बालकों के उचित विकास के लिए उपयुक्त वातावरण निर्मित करते हैं।
54. वास्तव में अध्यापक शिशुओं, बालकों, किशोरों और प्रौढ़ों में रुचि रखते हैं।
55. कक्षा में बच्चों को जितनी स्वतन्त्रता दी जाती है उससे अधिक देनी चाहिए।
56. शिक्षा का रूप समय और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होता रहता है।
57. अध्यापक विद्यालय में शिक्षक, खेल के मैदान में खिलाड़ी और समाज में सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में रहते हैं।
58. बहुधा बालक कक्षा में अधिक सामाजिक होते हैं।
59. अक्षर ज्ञान को शिक्षा कहना गलत है।
60. अध्यापक का अध्यापन क्षेत्र केवल पुस्तकों तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि इसके आगे भी होता है।

भाग (PART) 5

61. अध्यापक अपने व्यवहार में ईमानदारी तथा निष्पक्षता के ऊँचे विचार रखते हैं।
62. बच्चों के बारे में निर्णय 'देखकर' करना चाहिये न कि 'सुनकर'।
63. अध्यापक में भी कुछ न कुछ कमी होती है।
64. बालकों पर जो प्रतिबन्ध लगाए जाएँ उनका कारण उन्हें बता देना चाहिए।
65. धोखेबाजी द्वारा प्रकट होने वाली बेईमानी सम्भवतः नैतिक अपराधों में सबसे अधिक गम्भीर है।
66. न्याय एवं निष्पक्ष व्यवहार ही कक्षा के अनुशासन को सुव्यवस्थित करते हैं।
67. सत्य, अहिंसा, प्रेम और न्याय ही समाज के चार आधार स्तम्भ हैं, इन्हीं पर समाज खड़ा हुआ है।
68. अध्यापक निर्धन एवं दुर्बल विद्यार्थियों को सम्भवतः अधिक अंक दे दिया करते हैं, जिससे उनका वर्ष बेकार न जाने पाए।
69. आधुनिक युग की सबसे बडी माँग है निष्पक्षता और ईमानदारी।
70. कुछ धनी एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों के बालकों को अपेक्षाकृत अधिक अंक मिल जाया करते हैं।
71. अध्यापक ज्ञान का वह महासागर है जिसमें अगणित नदियाँ बिना कुछ सोचे समझे मिला करती हैं।
72. स्वभाविक रूप से बालक बहुत ही अच्छे पैदा होते हैं किन्तु वातावरण के कारण बुरे बन जाते हैं।
73. वर्गहीन समाज की स्थापना अध्यापक के हाथ में है।
74. छात्र के मूल्यांकन करने में उसकी अवाप्ति (attainment) तथा प्रयत्न में भेद नहीं करना चाहिए।
75. छात्र द्वारा प्राप्त अंकों एवं डिवीज़न को दण्ड के फलस्वरूप कम नहीं करना चाहिए।

पू० स० = पूर्ण सहमत, स० = सहमत, द्वि० = द्विविधा, अस० = असहमत, पू० अस० = पूर्ण असहमत

भाग (PART) 6

76. अध्यापक के विचार तथा उसकी योजनायें दूसरों में अनुकरण की प्रवृत्ति उत्पन्न करती हैं।
77. अध्यापक अपने कार्य में सावधानी, सम्पूर्णता और यथार्थता का ध्यान रखते हैं।
78. अध्यापक को जितना वेतन मिलता है उससे अधिक काम करने की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।
79. अधिकांश छात्र अपने अध्यापकों का ख्याल रखते हैं।
80. विद्यार्थी की असफलता के लिए अध्यापक कदाचित ही दोषी रहते हैं।
81. निर्भीक होने की अपेक्षा लज्जाशील होना अधिक उचित है।
82. सम्भवतः अध्यापक विद्यार्थी के गन्दे और भद्दे वाक्य लिखने को अत्यधिक गम्भीर दोष मानते हैं।
83. सादा जीवन और उच्च विचार अध्यापक का भूषण है।
84. आज भी चरित्र सर्वोपरि है।
85. कार्य करते रहने की प्रवृत्ति की कमी ही सम्भवतः असफलता का सबसे प्रमुख कारण है।
86. अध्यापक की वेष-भूषा तथा आकार-प्रकार सामान्यतया प्रशंसनीय रहते हैं।
87. शिक्षक को धन एवं स्वास्थ्य की अपेक्षा सम्मान अधिक प्रिय होता है।
88. अध्यापक एक सामान्य प्राणी है, उसमें भी चारित्रिक दोष हो सकते हैं।
89. बहुधा सभी अध्यापक निडर और निर्भीक होते हैं।
90. कर्त्तव्य और अधिकार में अध्यापक को आज अधिकार चाहिए।

भाग (PART) 7

91. अध्यापक दूसरों को निर्देश देने तथा अनुशासन रखने में समर्थ होते हैं।
92. अधिकांश बालक आज्ञाकारी होते हैं।
93. साधारण अनुशासन की समस्या को गम्भीर बनाने की अपेक्षा सरलता से कभी-कभी हँसी में सुलझा देना चाहिए।
94. यदि अध्यापक कक्षा में किसी बात पर छात्रों के साथ हँसता है तो कक्षा नियन्त्रण के बाहर हो जाती है।
95. कक्षा में अच्छा अनुशासन स्थापित करने के लिए अध्यापक को कठोर होना चाहिए।
96. अनुशासन सम्बन्धी समस्याओं को रोकने की अपेक्षा उनका सुलझाना अधिक आसान है।
97. अनुशासन सम्बन्धी कठिन समस्या के लिए अध्यापक का दोष बहुत कम होता है।
98. अनुशासन रखना समस्या नहीं है, जबकि अधिकतर अध्यापकों का कहना है कि यह एक बड़ी समस्या है।
99. छात्र अध्यापक को परेशान करना चाहते हैं।
100. कक्षा से भागने वाले विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित नहीं करनी चाहिए।

पू० स०=पूर्ण सहमत, स०=सहमत, द्वि०=द्विविधा, ग्रस०=ग्रसहमत, पू० ग्रस०=पूर्ण ग्रसहमत

101. कक्षा को नियमानुकूल रखने पर बहुत जोर दिया जाता है।
102. गन्दे तथा भद्दे वाक्य लिखते हुए पाए जाने वाले छात्रों को कड़ी सजा देनी चाहिए।
103. बच्चों को यह सीखना चाहिए कि वे बिना प्रश्न किये ही बड़ों की ग्राज्ञा मानें।
104. वाह्य ग्रनुशासन स्व-ग्रनुशासन से ग्रधिक ग्रच्छा है।
105. ग्राजकल ग्रधिकतर ग्रध्यापक ग्रनुशासित न होकर दूसरों को ग्रनुशासित करने पर ग्रधिक जोर दिया करते हैं।

भाग (PART) 8

106. कक्षा में कभी-कभी छात्र बहुत ऊबते हैं।
107. ग्रध्यापक का वेतन ग्रौर सम्मान दोनों कम हैं, पर वे निराश नहीं होते हैं।
108. ग्रध्यापन-कार्य नीरस होता है।
109. ग्रध्यापन-कार्य भी एक विचित्र व्यवसाय है, जिसमें सदैव बच्चों के साथ रहकर बच्चे ही बने रहना पड़ता है।
110. ग्रध्यापक एक बाल-वाटिका का माली है, वह दिन-प्रतिदिन उनके फलने-फूलने की ग्राशा करता है।
111. प्राय: शिक्षक ग्रपने व्यवसाय से सन्तुष्ट नहीं रहते हैं।
112. बहुधा ग्रध्यापक स्वयं प्रसन्न मुद्रा में रहते हैं ग्रौर दूसरों को प्रसन्न बना देते हैं।
113. ग्रध्यापक ग्रपने कार्य एवं विचारों में विश्वास रखते हुए उत्तरोत्तर उन्नति की ग्राशा करते हैं।
114. ग्रध्यापक स्वत: नये वातावरण में बड़ी सुगमतापूर्वक ग्रपने को ग्रनुकूल बना लेते हैं।
115. सामान्यत: ग्रध्यापक प्रत्येक कार्य के ग्राशायुक्त पक्ष की ग्रोर देखते हैं।
116. ग्रध्यापक स्वयं योजना बनाते हैं ग्रौर उसे क्रियान्वित कर शुभ लाभ की ग्राशा करते हैं।
117. ग्रध्यापक वर्तमान से सन्तुष्ट होकर सदैव सुन्दर भविष्य की ग्राशा करते हैं।
118. ग्रध्यापक विनोदमय वातावरण में रहते हैं ग्रौर उसको उत्पन्न करते हैं।
119. कर्म पर ही ग्रधिकार है, इस प्रकार की भावना बहुधा ग्रध्यापक के लिये कोरी कल्पना ही होती है।
120. ग्राज के युग में यदि ग्रध्यापक ग्रपने व्यवसाय ग्रौर जीवन के प्रति उदासीन रहें तो उन्हें दोषी नहीं कहा जा सकता।

भाग (PART) 9

121. विद्यालय की साहित्यिक तथा ग्रन्य प्रकार की गोष्ठियों में ग्रध्यापक का भाग लेना ग्रावश्यक है।
122. ग्रध्यापक का ग्रधिकांश समय ग्रध्ययन ग्रौर ग्रध्यापन में न व्यतीत होकर ग्रन्य कार्यों में व्यतीत होता है।
123. ग्रध्यापक के पास एक निजी छोटा पुस्तकालय होना चाहिए।
124. जैसे बच्चे नई मिठाइयों को देखकर ललचा जाते हैं, वैसे ही ग्रध्यापक नई पुस्तकों को देख कर।
125. समाचार-पत्रों का पठन ग्रध्यापक की एक दैनिक प्रक्रिया है।

पू० स०=पूर्ण सहमत, स०=सहमत, द्वि०=द्विविधा, अस०=असहमत, पू० अस०=पूर्ण असहमत

126. अध्यापक जीवन-पर्यन्त विद्यार्थी बने रहते हैं।
127. पुस्तकें अध्यापक की पूँजी हैं।
128. विद्वत् मंडली में अध्यापक सम्मिलित होकर आनन्द का अनुभव करते हैं।
129. अध्यापक अपनी मासिक आय का एक छोटा भाग पुस्तकें तथा मैगज़ीन खरीदने में व्यय नहीं करते।
130. ज्ञान वह प्रकाश है जिससे सारा संसार आलोकित होता है।
131. यह कहना ठीक नहीं है कि अध्यापक के सच्चे मित्र उनकी पुस्तकें होती हैं।
132. अध्यापकों से यह आशा नहीं करनी चाहिए कि वह अपना समय और धन कहीं दूर आयोजित सभा एवं गोष्ठी में सम्मिलित होने के लिए व्यय करें।
133. सामान्यतया अध्यापक अपने अध्ययन काल में अपने वर्ग के औसत छात्रों से ऊपर रहते हैं।
134. अध्यापक को अध्ययन के लिए समय नहीं मिलता।
135. बहुधा अध्यापक को अपने बारे में जानकारी नहीं रहती।

भाग (PART) 10

136. अध्यापक में स्फूर्ति एवं शक्ति का कोष संचित रहता है।
137. अध्यापक केवल पुस्तकीय ज्ञान देने वाला ही नहीं बल्कि प्रेरणा का केन्द्र है।
138. सम्भवतः प्रेरणा एवं अध्यवसाय की कमी ही असफलता के प्रमुख कारण हैं।
139. जो छात्र अपने कार्य क्षेत्र में उत्साह, जोश और तल्लीनता दिखाते हैं, उन्हें अध्यापक भी चाहते हैं।
140. अध्यापक अन्य कर्मचारियों की भाँति एक कर्मचारी नहीं है, बल्कि वह एक समाज सुधारक तथा नेता है।
141. अधिकांश अध्यापक अपने विचारों को स्पष्ट एवं प्रभावोत्पादक ढंग से प्रकट नहीं कर पाते।
142. आज के अध्यापक से यह आशा नहीं करनी चाहिए कि वह विद्यालय के साथ-साथ समाज में भी अपना कार्य क्षेत्र रखे।
143. अध्यापक अपने कार्य में पूर्ण सावधानी बरतते हैं।
144. बालक एक पुस्तिका है, अध्यापक को उसका अध्ययन शुरू से अन्त तक करना चाहिए।
145. बालक स्फूर्ति, तेज और शक्ति के संगम हैं।
146. अध्यापक अपने व्यवसाय की ही भाँति आलसी और सुस्त हो जाते हैं।
147. अध्यापक नित्य प्रति अपनी बालवाटिका को नवीन पुष्पों से सुसज्जित करने के लिये प्रयास करते रहते हैं।
148. अध्यापक उत्साह तथा जोश में छात्रों से पीछे रहते हैं।
149. बहुधा अध्यापक बालकों में जिज्ञासा जगाने में असफल रहते हैं।
150. वे अध्यापक जिनमें उत्साह का अभाव रहता है, अपने अध्यापन कार्य में सफल प्रतीत होते हैं।